अथधनविवेक.

अथसहज विवेकः

श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंगप्रेस, मे छपीहुई पुस्तके विक्रयार्थ तयार है.



❀ लघुपूजाऽनुष्ठान पद्धति ❀

पूजा तथा अनुष्ठान संबंधी ऐसीपुस्तक आजतक कही भी छपीनही इस १ पुस्तक के पढ़नेसे हरेक बालक पूजा और कर्मकांड मे निपुण होजाताहै और पूजा अनुष्ठान संबंधी कामके लिये दुसरी कोई पुस्तक पढनेकी जरूरत नही रहतीहै पुस्तक परमोपयोगी पास रखने योग्य है मूल्य. ।=)

❀ ग्रह आणि ग्रहाचा परिणाम मराठी ❀

इसमे ग्रहक्यापदार्थहै और ग्रहोका असर मनुष्या दिकपर क्यो और क्योकरहोता है वगेरा ५ विषय के प्रश्नोके उत्तर अति उत्तम प्रकारसे लिखेगये है जिसके पढनेसे सर्व साधारण भी फलित के नमानने वाले नास्तिको को उत्तर देके परास्तकरसकेहै पुस्तक अवश्य देखने-योग्य है. जल्दीकरो पुस्तके बहुत कमरहगई है मूल्य ॥)

परिक्षा विचार ।

मै इस साल परिक्षामे पास होउंगा के नही इसप्रश्न का उत्तर सोप पत्तिक शास्त्रानुसार जाननाहो तो इसपुस्तकको अवश्य देखिये विचार हिन्दी भाषा मे किया गया कीमत ~॥) मात्र

नाडीमानविवाहपटल.

इसमे विवाहमहूर्त विषय विवेचन के ६० श्लोकहै येप्रत्येक श्लोक तक २ पलके बराबरकेहै इसलिये इनसाठही श्लोकोंका १ पाठ पूरा [illegible]याके १ घड़ी याने २४मिनिटहोजाते है अतः इसग्रंथके द्वारा विवाह [illegible]हूर्त का निर्णय और खरीखोटी घड़ीकी पहचानये दोनुकाम एकस[illegible] [illegible]सकेहै पुस्तक बडेकामकी देखनेयोग्यहै मूल्य ~॥) मात्र

अध्यक्ष श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
ज्योतिषकार्यालय—रतलाम.

भाषाटिकासहित.

जातकतत्व प्रारम्भः ।

साम्बंसदाशिवं विष्णुं गणेशंच गुरुंतथा ।
नत्वाजातक तत्वस्य भाषा टीकां करोम्यहं ॥ १ ॥

टीकाकार ग्रन्थादिमें विघ्नविघातार्थ स्वेष्टदेवकों प्रणामरूप मं
गलाचरण करताहै, साम्बसदाशिव एवं विष्णुभगवान और गणेशजी
निजगुरु पूज्यपादमहादेवजी महाराज कों नमस्कार करके में श्रीनि
शर्मा जातकतत्व की भाषाटीका करताहू ॥ १ ॥

श्रीगुरुगणेशाम्बा चरणान्नत्वाप्राचीनार्वाचीन होरात
न्त्रसारमुद्धृत्य महादेवोजातक तत्वं कुरुते ॥ १ ॥

टीका-श्रीगुरु गणेश और जगदम्बाके चरणोंको नमस्कार
प्राचीन और नवीन फलितशास्त्र के ग्रन्थोंका सारलेके महादेव
जातकतत्व ग्रंथ करते है ॥ १ ॥ इस प्रकार निर्विघ्नसे ग्रंथ परिसम
ग्रंथ कार स्वेष्टदेव और निजगुरु गणेशकों नमस्कार करके ग्रं
करते हैं ॥

मस्तकमुखोरो हृदुदरकटिवस्तिलिङ्गोरुजानुजङ्घांघ्रि
मेषादितः कालाङ्गम् ॥ २ ॥

टीका-राशियो के अंग विभागः-मस्तक १ मुख २ स्तनमध्य ३
४ उदर ५ कटि ६ बस्ति [नाभीके नीचेका भाग " पेडू "] ७ ।
जंघा ९ घुटना १० पिंडली ११ पांव [पैर] १२ इनस्थानोंमें क्रम
राशीकों आदिले बारहहि राशी कालपुरुष के अंग में मानना ।

के विभाग में जिस राशीका जिस स्थान पर अमल कहाहै जैसे मेषका मस्तकपर सिंहका पेटपर इत्यादि उनसर्व १२ बाराहिस्थानों में से जिस विभाग की राशीदीर्घहो वह अंग लंबा ह्रस्वराशी हो तो ह्रस्व अथवा जिस राशी को पापग्रह पीडित करते हों वह राशी जिसस्थानउर अमल रखती होगा उस अंगमे कष्ट जानना जैसे कर्क या सिंह पर पापग्र है इनको पापग्रह देखते है इनका स्वामि पापग्रह से युक्तदृष्टहै तं पेटमे व हृदयमें पीडा कहना एवं सर्व अंगोका विचार काल पुरुषं अंगविभागसे जानना ॥ २ ॥

म, शु, बु, च, र, बु, शु, म, गु, श, शगवो मेषादीशाः॥३॥

टीका-मंगल १ शुक्र२बुध ३ चंद्र ४ रवि ५ बुध ६ शुक्र ७ मंगल गुरु ९ शनि १० शनि ११ गुरु १२ मेषादिराशियों के क्रमसे स्वामि कहे हैं ॥३॥ इस सूत्रमे ग्रंथकर्ताने नामैकदेशनामनिर्देशन्याय से १ राशियों के स्वामियों के नाम एक २ अक्षरमे कहेहैं ॥ ३ ॥

क्रूरसौम्यौ नृस्त्रियौ चरस्थिरद्विस्वभावा श्चमेषादेः ॥४॥

सिंहादिचतुष्कयुग्मं कुंभाः शीर्षोदयाः मीन उभयोदयः शे- षापृष्ठोदयाः ॥ ५ ॥

टीका-राशियोंकि क्रूरादिसंज्ञा=क्रूर और सौम्य, पुरुष स्त्री, चरस्थि और द्विस्वभाव, इस क्रमसे मेषादि१२राशियों कि संज्ञाजानना ॥ ४॥ सिंह ५ कन्या ६ तुल ७ वृश्चिक ८ मिथुन ३ और कुंभ ११ शीर्षोदय राशी मीन १२ उभयोदय और मेष १ वृषभ २ कर्क ४ धन ९ मकर १० पृष्ठोदय राशी जानना ॥ ५ ॥

विमिथुनशीर्षोदया दिने शेषारात्रौ बलिनः ॥ ६ ॥

टीका-मिथुनविना शीर्षोदय ५।६।७।८।११ राशि दिनमें बलवा रात्र पृष्ठोदय उभयोदय १।२।३।४।९।१०।१२ रा मे बलवान जानना ॥ ६ ॥

राशीयोकी संज्ञाका चक्र.

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.
पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	उभयो.
रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्री	रात्री	दिन	रात्री

देह धन सोत्थमात्रात्मजारि स्त्रीमृति धर्म कर्म लाभव्य यालग्नाद्भावाः ॥ ७ ॥

टिका—देह १ धन २ सोत्थ (भ्रातृ) ३ मात्र (माता) ४ आत्मज (पुत्र) ५ अरि (शत्रु) ६ स्त्री ७ मृति ८ धर्म ९ कर्म १० लाभ ११ व्यय १२ लग्नकों आदिले क्रमसे बाराहि भावोंके नाम जनना ॥ ७ ॥

ग्रह होरा द्रेष्काण नवांश द्वादशांश त्रिंशांशाः षड्वर्गाः॥८॥

टिका—षड्वर्ग—ग्रह १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ और त्रिंशांश ६ इनको षड्वर्ग कहते है ॥ ८ ॥

समेचंद्रार्कयो विषमेव्यत्ययेनहोरा ॥ ९ ॥

स्वेपुनवर्क्षेशा द्रेष्काणपाः ॥ १० ॥

चरेभेस्वग्मात्स्थिरे नवमभाद्द्विस्वभावे पञ्चमभान्नवांशाः ११

स्वभाद्द्वादशांशाः ॥ १२ ॥

समेशुक्रेज्यार्कि कुजानां पंचाष्टष्ट शरपञ्चत्रिंशांशा विषमेन्यथा ॥ १३ ॥

टी०—१ ग्रह—* राशियों के स्वामि ऊपर कहे उस प्रमाणे लिखना १

नोट—* राशियों के आधीनही समस्त दशवर्गादि गणित और फलादेश और सांप्रतमें मेषलग्नादिक मांडे अतर स्पष्टप्रतीतहोता है एतदर्थ बेतका ज्योतिर्वित आदि ग्रंथोंसे स्पष्ट तुल्य स्पष्टग्रहका साधन प्रथम करना तदुपरांत उन ग्रहोंपर दशवर्ग और फलविचार करना

२ होरा–समराशी में १५ अंशतक चंद्र और १५ से ३० अंशतक रवीकीहोरा जानना विषम राशीमें इससे उल्टा अर्थात् १५ अंशतक रवीकी १५ से ३० अंशतक चंद्र की होरा जानना ॥ ९ ॥

३ द्रेष्काण–राशीके प्रथम द्रेष्काण (०से १० अंशतक) में उसी राशीका स्वामि दूसरे द्रेष्काण (१० से २० अंशतक) में अपनी राशीसे पांचमी राशीका स्वामि तीसरे द्रेष्काण (२० से ३० अंशतक) में अपनी राशी सें नवमी राशीका स्वामि द्रेष्काण का स्वामि होताहै १०

४ नवांश—चरराशी में अपनी राशीमेंहि स्थिरराशी में अपनी राशीसे जो नवमीराशी हो उसकों आदिले द्विस्वभाव राशीमें अपनी राशीसे जो पांचवी राशी हो उसको आदिले नवांश के स्वामी जानना राशीके नवमें भागको नवांश कहते है. एक नवमांश ३।२० (तीनअंश वीसकला) का होता है ॥ ११ ॥

५ द्वादशांश–द्वादशांश के स्वामी अपनी राशीसें ही जानना. एक द्वादशांश ढाई अंशका होता है ॥ १२ ॥

६ त्रिंशांश–समराशी मे शुक्र बुध गुरु शनि मंगल ५। ७। ८।– ५। ५ इन अंशोके क्रमसे त्रिंशांश के स्वामी कहे है विषम राशी मे व्युत्क्रम [उलटे] अर्थात् ५। ५। ८। ७। ५ इन अंशो के क्रम से मंगल शनि गुरु बुध शुक्र त्रिंशांश के स्वामी जानना ॥ १३ ॥

षड्वर्गा एव सप्तमांशसहिताः सप्तवर्गाः १४

विषमे स्वस्मात्समे सप्तमात्सप्तमांशः १५

सप्तवर्ग चक्र। उपरोक्त षड्वर्गों मे सप्तमांश मिलाने से सप्त वर्ग होतेहै॥१४॥ ७ सप्तमांश–विषम राशीमे अपनी राशी से ही और सम राशीमे अपनि राशीसे जो सातमी राशी होव उससे गिननेंसे जो राशी आवे उसका स्वामी सप्तमांशका स्वामी होता है। एक सप्तमांश ४ अंश १७ कलाका होता है ॥ १५ ॥

सप्तवर्गा दशांश षोडशांशषष्ट्यंशयुता दशवर्गाः १६

दशवर्ग— सप्तवर्ग मे दशांश षोडशांश और षष्ट्यंश ये तीनवर्ग

र भी मिलादेने से दशवर्ग होते है ॥ १६ ॥

ओजेस्वस्मात्समे नवमाद्दशमांशः ॥ १७ ॥

चरेजाद्याः स्थिरेसिंहाद्या द्विस्वभावे चापाद्याः षोडशांशाः १८

स्वभात्षष्ट्यंशः ॥ १९ ॥

टीका–दशांश षोडशांश और षष्ट्यंश लाने कि विधि–विषम राशी अपनि राशी से ही समराशी में अपनी राशीसे जो ९ नवमी राशीहो ससे दशमांश के स्वामी समझना (एक दशमांश ३ तीन अंश का ता है) ॥ १८ ॥

टीका–चर राशी में मेष राशीको आदिले स्थिर राशीमें सिंह राशीको आदिले द्विस्वभाव राशी में धन राशी को आदिले ग्रह षोडशांश के जितनी संख्या के विभाग मे होवे उतनी संख्या पर्यंत गिनने से जो राशी आवे उसका स्वामी षोडशांश का स्वामी जानना । एक षोड शांश १ अंश ५२ कला १६ विकला का होता है ॥ १८ ॥

टीक–षष्ट्यंश के स्वामी अपनी राशी से ही जानना । अर्थात जितनी संख्या के षष्ट्यंश विभागमें ग्रह होवे उतनी ही संख्या पर्यंत उस राशी से गिनने से जो राशी आवे वह राशी और उसका स्वामी षष्ट्यंश का स्वामी जानना । एक षष्ट्यंश ० अंश ३० कला का होता है । दूसरी रीति यह है कि अंशोको द्विगुण करना जिनकी कला ३० तीससेकमहोतो उनमें १ शुक्र करना और ३० तीस से अधिक होतो २ दोयुक्त करने से जो आवे उतनीही संख्या का षष्ट्यंश विभाग जानना यह विभाग बारासे अधिक होतो १२ बारा का भागदेना । उदाहरण ॥ जैसे लग्न ५ । १५ । ५५ । ७ है इसके अंश १५ को द्विगुण किये ३० हुवे, अंशोके नीचे कला तीससे अधिक है इसलिये २ मिलाये ३२ हुवे अतः बत्तीस में विभाग मे लग्न है यह १२ से अधिक है बारहका भागदिया शेष ८ रहे लग्न कन्या है अतः कन्या राशी से ८ आठ पर्यंत गिनने से १ मेष राशी आई यह षष्ट्यंश लग्न आया इसका स्वामी भौम ये षष्ट्यंशपतिहुआ इसी प्रकार सर्वत्र जानना ॥ १९ ॥

द्वयादिस्वो चाऽधिमित्रवर्गैः पारिजातोत्तम गोपुर सिंहासन पा
रावतदेवलोक देवलोकैरावतवैशेषिकसंज्ञः क्रमात्. ॥ २० ॥

टीका–पारिजातादि वर्ग संज्ञा लानकीविधि–उपरोक्तरीतीसे दशवर्ग साधन करना और उसमे जितने स्व.उच्च अधिमित्र. ग्रहके वर्ग होवे उन वर्गोंकि संख्या का योग करना वह योग यदि २ होवतो वहग्रह पारिजात २ वर्ग मेहै एवं ३ उतम. ४ गोपुर ५ सिंहासन. ६ पारावत. ७ देवलोक ८ देवलोक. ९ एरावत १० वैशेषिकांश वर्गसंज्ञाजानना. उदाहरण ॥ जैसे सूर्यके दशवर्गमे स्व. २ उच्च १ अधिमित्र ग्रहका वर्ग ३ हे इनका योग ६ हुवा तो सूर्य ६ छठ्ठे पारावतांशसंज्ञ कवर्गमे है ऐसे हि सर्वत्र जानना॥२०॥

हचंरोशास्त्वयुग्मघोरं १ राक्षस २ देव ३ कुबेर ४ रक्षोगणे ५ किन्नरे ६ भ्रष्टे ७ कुलघ्न ८ विषा ९ ऽग्नि १० माया ११ प्रेतपुरीष १२ वरुणे १३ इंद्र १४ कला १५ ऽहि १६ चंद्र १७ चंद्र १८ मृदु १९ मृदु २० पद्म २१ विष्णु २२ वागीश २३ दिगम्बर २४ देवा २५ ऽर्द्र २६ कलिनाश २७ क्षितीश २८ कमलाकर २९ मंदात्मज ३० मृत्यु ३१ काल ३२ दावाग्नि ३३ घोर ३४ यमकंटक ३५ सुधा ३६ ऽमृत ३७ पूर्णेंदु ३८ विषदिग्ध ३९ कुलनाश ४० मुख्य ४१ वंशक्षय ४२ यात ४३ कालरूप ४४ सौम्य ४५ मृदु ४६ शीतल ४७ दंष्ट्राकराल ४८ न्दुमुख ४९ प्रवीण ५० कलाग्नि ५१ दंडायुध ५२ निर्मल ५३ शुभा ५४ ऽशुभा ५५ तिशीतल ५६ सुधा ५७ पयोधि ५८ भ-

भगे ५९ इंदुरेखा ६० युग्मेतु व्यत्ययः ॥ २१ ॥

टी० विषमराशीमषष्ट्यंशेष क्रमसे घोर१राक्षस२इत्यादि क्रमसेजानना और समराशी मे उलटे जानना । अर्थात् विषम राशीका गृह जितनी संख्याके षष्ट्यंश विभागमे होवे उतनीही संख्या पर्यंत क्रमसे घोर १ राक्षसादि गिननेसे षष्ट्यंश होवेगा. और समराशीमे उतनेही षष्ट्यंश विभाग पर्यंत उलटा इंदुरेखा १ भ्रमणादि २ क्रमसे गिननेसे षष्ट्यंश होताहै ॥ २१ ॥

षष्ट्यंशेश चक्रम् ।

घोर १-६० राक्षस २-५९ देव ३-५८ कुबेर ४-५७ रक्षोगण ५-५६ किन्नर ६-५५ भ्रष्ट ७-५४ कुलघ्न ८-५३ विष ९-५२ अग्नि १०-५१ माया ११-५० प्रेतपुरीष १२-४९ वरुण १३-४८ इंद्र १४-४७ कला १५-४६ अहि १६-४५ चंद्र १७-४४ चंद्र १८-४३ मृदु १९-४२ मृदु २०-४१ पद्म २१-४० विष्णु २२-३९ वागीश २३-३८ दिगम्बर २४-३७ देव २५-३६ अर्द्ध २६-३५ कलिनाश २७-३४ क्षितीश २८-३३ कमलाकर २९-३२ मंदात्मज ३०-३१ मृत्यु ३१-३० काल ३२-२९ दावाग्नि ३३-२८ घोर ३४-२७ यमकंटक ३५-२६ सुधा ३६-२५ अमृत ३७-२४ पूर्णेंदु ३८-२३ विषदिग्ध ३९-२२ कुलनाश ४०-२१ मुख्य ४१-२० वंशक्षय ४२-१९ उत्पात ४३-१८ कालरूप ४४-१७ सौम्य ४५-१६ मृदु ४६-१५ शीतल ४७-१४ दंष्ट्राकराल ४८-१३ इंदुमुख ४९-१२ प्रवीण ५०-११ कालाग्नि ५१-१० दंडायुध ५२-९ निर्मल ५३-८ शुभ ५४-७ अशुभ ५५-६ अतिशीतल ५६-५ सुधा ५७-४ पयोधि ५८-३ भ्रमण ५९-२ इंदुरेखा ६०-१.

इन ६० में २६ षष्ट्यंश १ मध्यमे ३३ देव भाग के श्रेष्ठ (शुभ) फलदेने वालेहै ॥

लग्नाम्बुरस्तदशमानिकेंद्राणि ॥ २२ ॥

टीका—लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ और दशम १० (१—४—७—१०) इन चार स्थानोकी केंद्र संज्ञाहै ॥ २३ ॥

स्वायाष्टमात्मजाः पणफराः ॥ २३ ॥

टीका—दूसरा २ग्यारवां ११ आठवां ८पांचवां५ (२—५—८—११) इनचारस्थानोंकि फणफर संज्ञाहै ॥ २४ ॥

त्र्यरि धर्मान्त्या आपोक्लिमाः ॥ २४ ॥

टीका—तिसरा ३ छठा ६ नवमा ९ बारवां १२ (३—६—९—१२) इनचार स्थानोंकि आपो क्लिम संज्ञाहै ॥ २४ ॥

त्र्याय खारयाः उपचयाः ॥ २५ ॥

टीका—तीसरा३छठा६दसवा१०ग्यारवां११स्थानकीउपचय संज्ञाहै२५

धर्मात्मजौ त्रिकोणौ ॥ २६ ॥

टीका— नवम ९ और पंचम ५ स्थानकी त्रिकोण संज्ञाहै ॥ २६ ॥

तुर्याष्टमौ चतुरस्रौ ॥ २७ ॥

टीका—चोथे और आठमे स्थान कों चतुरस्र कहते है ॥ २७ ॥

स्वास्तौ मारकौ ॥ २८ ॥

टीका—दुसरा २ और सातमा ७ येदोनो स्थान मारक संज्ञकहै ॥२८॥

स्वांत्यौ नेत्र संज्ञौ ॥ २९ ॥

टीका—दूसरा २ बारवां १२ स्थान नेत्र संज्ञकहै ॥ २९ ॥

षष्टाष्टमांत्यास्त्रिकाढुष्टाश्च ॥ ३० ॥

टीका—छठा ६ आठमा ८ बारवा १२ इन ३ तीन स्थानोंको त्रिक-स्थानकहतेहै और दुष्टस्थानभी कहतेहै. ॥ ३० ॥

कर्कालिझषान्त्य भागा ऋक्षसंधयः ॥ ३१ ॥

टीका- कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ राशियोंका अंत्य भाग (२९ अंश.) ऋक्ष संधी कहाता है ॥ ३१ ॥

सिंहादि चतुष्कं दीर्घ कुंभादि चतुष्कं ह्रस्वं शेषाःसमाः ३२

टीका—सिंह ५ कन्या तुल ७ वृश्चिक ८ राशी दीर्घ संज्ञक और ..११ मीन १२ मेष १ वृषभ २ राशी ह्रस्व (छोटी) शेष मिथुन ३ ४ धन ९ मकर १० राशी सम संज्ञकहै (नहिदीर्घ और नहि ... अर्थात् दोनोंके मध्यकी) ॥ ३२ ॥

अर्को १ जीवः २ कुज ३ श्चंद्रज्ञौ ४ गुरु ५ मंदारौ ६ शुक्र ७ शनिः ८ सूर्यज्यौ ९ ज्ञार्केज्य-मन्दा १० जीवः ११ शनि १२ रितिक्रमात्तन्वादि कारकाः ॥ ३३ ॥

टीका–लग्नादि बाराहिभावों के स्थिर कारक ॥ लग्नका १ रवि। धन भावका २ गुरु। सहजका ३ मंगल। चतुर्थका ४ चंद्र बुध। पंचम ५ का गुरु। रिपु ६ का शनि मंगल। सप्तम ७ का शुक्र। अष्टम का ८ शनि। नवम ९ का रवि गुरु। दसम १० का बुध सूर्य गुरु शनि। लाभका ११ गुरु। व्यय १२ भावका शनि। भाव कारक जानना ॥ ३३ ॥

कर्के घटैणझषालितुलाः सजलाः शेषाशुष्काः ॥ ३४ ॥

टीका–कर्क ४ कुंभ ११ मकर १० मीन १२ वृश्चिक ८ तुल ७ राशि सजल (जलराशी) है शेष मेष १ वृषभ २ मिथुन ३ सिंह ५ कन्या ६ धन ९ शुष्क राशी है ॥ ३४ ॥

क्षीणे न्द्वर्क यमारराहुशिखिनः पापा स्तन्मात्र युतो-बुधश्च ॥ ३५ ॥

टीका–क्षीणचंद्र* सूर्य शनि मंगल राहु केतु ये पापग्रह है और बुध पापग्रह से युक्त होवे तो वह भी पाप होता है। पाश्चात्य विद्वानगण हर्शल नेपच्युन को भी पापमानते है इनके अतिरिक्त शेष ग्रह [पूर्ण चंद्रमा शुभयुत बुध गुरु शुक्र] शुभ ग्रह जानना ॥ ३५ ॥

मंदज्ञौ क्लीबौ चंद्राच्छौ स्त्रियौ शेषानराः ॥ ३६ ॥

टीका– शनि बुध नपुंसक चंद्र शुक्र स्त्री सूर्य मंगल गुरु पुरुष सज्ञक ग्रहजानना ॥ ३६ ॥

---

* कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की अष्टमी तक क्षीणचंद्र उसके बाद पूर्ण चंद्र होता है.

चंद्रार्कज्याः सात्विका ज्ञाच्छौ राजसौ शेषा स्तामसाः ३७

टीका–चंद्र सूर्य गुरु सात्विक (सतोगुणी) बुध शुक्र राजस (रजोगु
मंगल शनि राहु केतु तामस (तमोगुणी) ग्रहजानना ॥ ३७॥

मेषगो मृग कन्या कर्कान्त्य तुलाः सूर्याद्युच्च भानि
तत्सतमानि नीचभानि दशमतृतीयाष्टाविंश पंचदश
पंचम सप्त विंश विंशांशा अर्कादीनांपरमोच्चनीचभागाः
॥ ३८ ॥

टीका–मेष १ (सू) वृषभ २ (चं) मकर १० [मं] कन्या ६ [बु.]
कर्क ४ [गु.] मीन १२ (शु.) तुल ७ (श.) येराशी क्रमसे सू
दि ग्रहोंकि उच्च राशी कहीहै इनसे सातमी २ राशी [तुल] (
वृश्चिक (चं) कर्क (मं) मीन (बु) मकर (गु) कन्या [शु
मेष [शनि] सूर्यादिग्रहो किनीच राशि जानना और इनही राशीं
क्रमसेः १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० । ये अंश परमोच्च
परम नीच के अंश जानना ॥ ३८ ॥

सिंहगोजांगनाचापतुलघटाः सूर्यादिनां मूलत्रिकोण-
भानि ॥ ३९ ॥

स्व. उच्च. नीच. मूलत्रिकोण राशि चक्र.

वी	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११			स्वराशी.
ष ०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	वृषभ	वृश्चि	उच्चराशी परमोच्चभं
श ०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मे २०	वृश्चि.	वृषभ	नीचराशिप-रम नचांश
ह	वृषभ २	मेष १	कन्या ६	धन ९	तुल ७	कुंभ ११	कुंभ ११	सिंह ७	मूल त्रिको-ण राशी
१० १०	उ. ३ मू.२७	मू.१२ स्व.१८	उ.१५ मू. ५ स्व.१०	मू.१० स्व.२०	मू.१५ स्व.१५	मू.२० स्व.२०	मित्र भेमष.	मित्र भतुल	उच्चमूल त्री कोण स्व रा शि के अंश

पैंगलनेत्रो रक्तश्यामवर्णः पित्तप्रकृतिः समगात्रः प्रतापीः
स्वल्परोमशागर्कः ॥ ४१ ॥

ा-ग्रहोंके स्वरूप ॥ जोग्रह बलवान् हो उसके अनुरूप गुण
रादि स्वरूप जन्मतथा प्रश्न में कहेगतेहैं ॥
पिंगल नेत्र, (नेत्रकांति पिली) रक्तश्यामरंग, पित्तपृकृति, सम
प्रतापी, अल्पकेश कमबोलनेवाला सूर्य है ॥ ४१ ॥

कृःकृशो वर्तुलाङ्गो मेधावी मृदुवाक् शुभदृग्विवेकी
त कफात्मा चंद्रः ॥ ४२ ॥

:-चंद्र=श्वेतरंग, दुर्बल, गोलाकारशरीर, बुद्धिवान, मधुरभाषी,
है, विचारवान, वातकफ, प्रकृतियुक्त चंद्र है ॥ ४२ ॥

ःक्रूरदृक्तरुणः कृशमध्यो रक्तसिताङ्गः पैत्तिकश्चंचलधी
ार प्रतापारः ॥ ४३ ॥

-भौम-दुष्टदृष्टि (खराबनजर) वाला, तरुण (जवान) अ-

चंद्राकज्याः सात्विका शुक्रौ राजसौ शेषा तामसाः॥३

टीका-चंद्र सूर्य गुरु सात्विक (सतोगुणी) बुध शुक्र राजस (रजो
मंगल शनि राहु केतु तामस (तमोगुणी) ग्रहजानना ॥ ३७॥

मेषगो मृग कन्या कर्कान्त्य तुलाः सूर्याधुच्च भानि
तत्सप्तमानि नीचभानि दशमतृतीयाष्टाविंश पंचदश
पंचम सप्त विंश विंशांशा अर्कादीनांपरमोच्चनीचभागाः
॥ ३८ ॥

टीका-मेष १ (सू) वृषभ २ (चं) मकर १० [मं] कन्या ६ [बु
कर्क ४ [गु.] मीन १२ (शु.) तुल ७ (श.) येराशी इनसे स
दि ग्रहोंकि उच्च राशी कहीहै इनसे सातमी २.राशी [तुल] (सू
वृश्चिक (चं) कर्क (मं) मीन (बु) मकर (गु) कन्या [शु]
मेष [शनि] सूर्यादिग्रहो किनीच राशि जानना और इनही रा
क्रमसे: १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० । ये अंश परमो
परम नीच के अंश जानना ॥ ३८ ॥

सिंहगोजांगनाचापतुलघटाः सूर्यादिनां मूलत्रिकोण
भानि ॥ ३९ ॥

स्व. उच्च. नीच. मूलत्रिकोण राशि चक्रं.

रवी	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११			स्वराशी.
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	वृषभ	वृश्चि	उच्चराशी परमोच्चभं
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मे २०	वृश्चि.	वृषभ	नीचराशिप-रम नीचांश
सिंह ५	वृषभ २	मेष १	कन्या ६	धन ९	तुल ७	कुंभ ११	कुंभ ११	सिंह ७	मूल त्रिको-ण राशी
मू२० स्व१०	उ. ३ मू२७	मू१२ स्व१८	उ.१५ मू ५ स्व१०	म१० स्व२०	मू१५ स्व१५	मू२० स्व१०	मित्र भमेष.	मित्र भतुल	उच्चमूल त्री कोण स्व राशि के अंश

पिंगलनेत्रो रक्तश्याम वर्णः पित्तप्रकृतिः समगात्रः प्रतापीः

अल्परोमवागर्कः ॥ ४१ ॥

टीका-ग्रहोंके स्वरूप ॥ जोग्रह बलवान् हो उसके अनुरूप गुण आकारादि स्वरूप जन्मतथा प्रश्न में कहेजातेहै ॥

सूर्य=पिंगल नेत्र, (नेत्रकांति पिली) रक्तश्यामरंग, पित्तप्रकृति, सम शरिर, प्रतापी, अल्पकेश कमबोलनेवाला सूर्य हैं ॥ ४१ ॥

शुक्लःकृशो वर्तुलाङ्गो मेधावी मृदुवाक् शुभदृग्विवेकी

वात कफात्मा चंद्रः ॥ ४२ ॥

टीका-चंद्र=श्वेतरंग, दुर्बल, गोलाकारशरीर, बुद्धिवान, मधुरभाषी, शुभदृष्टि, विचारवान, वातकफ, प्रकृतियुक्त चंद्र है ॥ ४२ ॥

दुष्टदृक्तरुणः कृशमध्यो रक्तसिताङ्गः पैत्तिकश्चंचलधी

रुदार प्रताप्यारः ॥ ४३ ॥

टीका-भौम-दुष्टदृष्टि (खराबनजर) वाला, तरुण (जवान) अ-

वस्था, पतलीकमर लाल और श्वेतरंग का शरीर (गौर) पित्तप्रकृति चंचलबुद्धी, उदार स्वभाव प्रतापि, भौम है ॥ ४३ ॥

गद्गदवाग्घास्यशीलः सुधीर्दूर्वाश्यामाङ्गस्त्रिधातुः पुंश्चलोज्ञः ॥ ४४ ॥

टीका-बुध=गद्गदवचन बोलनेवाला हास्यशील (हसनेवाला) श्रेष्ठ बुद्धि, दूर्वा के रंगसमान श्यामरंग का अंग. वातपित्तकफ प्रकृति, व्यभिचारी बुध है ॥ ४४ ॥

स्थूलोगौराङ्गः कफात्मापिङ्गाक्ष मूर्द्धन्यकचाभियुक्तो विद्वान् गुरुः ॥ ४५ ॥

टीका-गुरु पुष्टशरीर गौररंग कफ प्रकृति पीलीनेत्रकांति और पीलेहि मस्तक के केशोंसे युक्त विद्वान् गुरु है ॥ ४५ ॥

सुखीबली दर्शनीवपुः सुलोचनः कृष्णकुटिल केशः कामीवातकफात्मा श्यामः शुक्रः ॥ ४६ ॥

टीका-शुक्र-सुखी बलवान् दिखनौटे शरीरवाला सुहावने नेत्र का और टेढे (घुंघरवाले) केश अधिककामी, वात कफ प्रकृति श्यामरं के शरीरवाला शुक्र है ॥ ४६ ॥

क्रियासुमन्दुः कातराक्षः कृष्णःकृशादीर्घाङ्गो वृहद्दन्तो-रूक्षतनूरुहो वातात्मा कठिनवाग् निन्द्योमन्दः ॥ ४७ ॥

टीका-शनि-सर्वकामों कि क्रिया में अचतुर डरावने नेत्रोंवाला कालारंग, दुर्बल, दीर्घदेह बडे दांतोंवाला रूक्षशरीर और केश वात प्रकृति कठोरशब्द बोलनेवाला तथा निद्यकर्म करनेवाला शनि है॥४७

अस्थिरक्तमज्जात्वग्वसाशुक्रस्नायूनिसूर्यादीनांधातवः ॥ ४७ ॥

टीका-सूर्यादिग्रहों कि धातु। सूर्यअस्थि (हडी) का चंद्र रुधिर कैश मज्जा (भीतरकी पतलीचमडी) का बुध चमडी का

चर्मोका. शुक्र वीर्यका. शनि नशोंका. अधिपति है. इनको ग्रहोंकेधातु कहते है। जो ग्रह अष्टम मे हैं वा मृत्यु कारक है उसके धातुके कोप अंगमे रोगादिपीड़ा तथा मरण भी होता है ॥ ४८ ॥

सूर्यस्यमन्दाच्छौरिपू ज्ञःसमः शेषाः सुहृद ॥४९॥
चंद्रस्यज्ञार्कौ सुहृदौ शेषाः समाः ॥५०॥
भौमस्य शुक्रार्कि समौ ज्ञोरिः शेषाः सुहृदः ॥५१॥
ज्ञस्येन्दुः शत्रुः शुक्रार्कौ मित्रे शेषाः समाः ॥५२॥
जीवस्य ज्ञाच्छावरी समोर्कजः शेषा मित्राणि ॥५३॥
शुक्रस्य ज्ञार्कजौ मित्रे कुजेज्यौ समौ शेषावरी ॥५४॥
मन्दस्य ज्ञाच्छौ सुहृदौ जीवः समः शेषाःशत्रवः ॥५५॥

टीका–नैसर्ग मैत्रिचक्र। सूर्य के–शनि शुक्र शत्रु बुधसम चंद्रभौम गुरु मित्र हैं ॥ ४९ ॥ चंद्रके–बुधसूर्यमित्र शेष, (मंगल गुरु शुक्र शनि) सम है ॥ ५० ॥ मंगलके–शुक्र शनि सम बुध शत्रु शेष (रवि चंद्र–गुरु) मित्र है ॥ ५१ ॥ बुधके–चंद्रशत्रु शुक्र सूर्य मित्र शेष (मंगल गुरु शनि) समहै ॥ ५२ ॥ गुरुके–बुध शुक्र शत्रु शनि सम शेष (रवि चंद्र मंगल) मित्र है ॥ ५३ ॥ शुक्रके–बुधशनि मित्र मंगल गुरु सम शेष [रविचंद्र भौम शत्रु है ॥ ५४ ॥ शनि के बुध शुक्र मित्र गुरुसम शेष रविचंद्र मगल शत्रु है ॥ ५५ ॥

अन्योन्यस्य पार्श्वत्रयगारतत्काले मित्राणिशेषाः शत्रवः ५६

टीका–तात्कालिकमैत्रिसाधन॥ जिस ग्रहसे जो ग्रह अपने समीप के तीन तीन स्थानमे अर्थात् २ । ३ । ४ और १२ । ११ । १० होवे वह उस ग्रहका तात्कालिक मित्र जानना। और शेष स्थान ५ । ६ । ७ ८ । ९ मे हो वह उस ग्रहका शत्रु जानना ॥ ५७ ॥

उभयथामित्राण्य धिमित्राणि शत्रवस्त्वधिशत्रवो मित्रश त्रवः समा मित्रसमा मित्राणि शत्रुसमाः शत्रवः ॥५७॥

नैसर्गिकमैत्रि चक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
चं मं गु	बु सू	र चं गु	शु सू	र चं मं	बु श	बु शु	मित्र.
बु	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु	सम.
श शु	०	बु	चं	बु शु	र चं	र चं मं	शत्रु.

टीका-पंचधामैत्रिचक्र साधन । उपरोक्त नैसर्गीक और तात्कालि मैत्रिसाधन कर्के देखना उनदोनो मैत्रिमें जो ग्रह मित्रका होवे व अधिमित्र (मित्र मित्र अधिमित्र) दोनो मैत्रिमें जो ग्रह शत्रु होवे व अधिशत्रु (शत्रु शत्रु अधिशत्रु) एक मैत्रिमेंमित्र और दुसरीमे शत्रुहो तो समहोता है (मित्रशत्रु-सम) ऐसेहि मित्र और समहोवे तो मि (सममित्र-मित्र) सम और शत्रु होवे तो (समशत्रु-शत्रु) श होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयदशमौ नवमपंचमौ चतुर्थाष्टमौ सप्तमंपादर्द्धितो ग्रहाः पश्यन्ति ॥ ५८ ॥

टीका-तीसरे ३ दशमे १० एकपाद। नवमे पांचवें ५ द्विपा चोथे ४ आठवे ८ त्रिपाद और सातमें ७ स्थानमे ग्रह पूर्ण दृष्टी देखते है ॥ ५८ ॥

तृतीय दशमौ शनि त्रिकोणं गुरु श्चतुरस्रं भौमश्च विशेषतः पूर्ण पश्यति ॥ ५९ ॥

टीका-ग्रहो कि विशेष दृष्टि । तीसरे ३ दशमे १० शनि । नवमे पांचवे ५ गुरु । चोथे ४ आठवे ८स्थानमे मंगळ विशेष कर्के पूर्ण दृ

से देखते है अर्थात् सर्वग्रहो कि पूर्ण दृष्टि ७ सप्तमस्थान की कही है सो सातमे तो ये शनि गुरु भौम पूर्ण दृष्टी से देखतेहि है विशेष कर [३।१०][९।५][४।८] इन स्थानो में भी पूर्ण दृष्टी से देखते है यह इन ३ ग्रहो कि विशेष दृष्टी कही है ॥ ६० ॥

दिनेशारारंभादस्तकालो निश्यस्ततो वारप्रवेश कालंतः
स्ववारखंडेनहतोष्ट भक्तो लब्धं गुलिकेष्टकालः ॥६०॥

टीका-गुलिक साधनो पयोगि गुलिकेष्टकाल साधन की रीति । दिन के समयका जन्म होवेतो वार प्रवेश कालके आरंभ समय से सूर्यास्त कालपर्यंत की घट्यादिककों और रात्रिका जन्महोवे तो सूर्यास्त समय से वार प्रवेशकाल पर्यंत जितनी घट्यादिक होवे उनको रपने वर्तमान वार के खंडेसे अर्थात् आगेके सूच ६२ में वारो के दिन रात्रि के खंडे कहे है उनमें से जो वार अपना हो उसका दिनका जन्म हो तो दिनके खंडे से और रात्रिका हो तो जो रात्रिका खंडा होवे उससे गुणन करना आठका भागदेना लब्ध आवे वही गुलिकका इष्ट काल होताहै ॥ ६० ॥ वार प्रवेश काल मुहूर्त चिंतामणी में कहाहै उसकी रीती यहहै कि ॥ श्लोक-पादोनरेखा परपूर्व योजन पलैर्युतोना स्ति पयोदिनार्द्धतः । ऊनाधिकास्तद्विवरो द्धवैर्पलै ऊर्द्ध तथा धो दिनपप्रवेशनं ॥ जिस ग्राम का वार प्रवेश काल देखना हो उस ग्राम मे जिस ग्राम की मध्यरेखा लगती हो उस मध्यरेखा और अपने ग्राम के बीचके जितने पश्चिम अथवा पूर्वयोजन का अंतरहोवे उतनीही सख्या मे से चतुर्थांस घटाना शेष रहे इतने ही पलोंको पंदरा घटीमें रेखा से पश्चिम मे ग्राम होतो मिलाना और पूर्व मे अपना ग्राम होतो घटाना शेष रहे वह उस ग्रामका वार प्रवेश कालका ध्रुव होता है । इसध्रुवसे जिस दिनका वार प्रवेशकाल देखना हो उसी दिन के दिनार्द्ध के साथ अंतर करना शेष जितनी पले बचे उतनही पल दिनार्द्ध से ध्रुव अल्प होवे तो दिन चढे और दिनार्द्ध से ध्रुव जादा होवे तो उतनी ही पल रात्रि शेष रहते वार प्रवेश होता है ॥ इस प्रकार वार प्रवेश काल लाना यदि दिनचढे वार प्रवेश हुवा होवे तो जितने पल दिनचढे हुवा उतनी ही पल दिनमान मे से

नैसर्गिकमैत्रि चक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
चं मं गु	बु सू	र चं गु	शु सू	र चं मं	बु श	बु शु	मित्र.
बु	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु	सम.
श शु	०	बु	चं	बु शु	र चं	र चं मं	शत्रु.

टीका-पंचधामैत्रिचक्र साधन। उपरोक्त नैसर्गीक और तात्कालिक मै त्रिसाधन कर्के देखना उनदोनो मैत्रिमें जो ग्रह मित्रका होवे अधिमित्र (मित्र मित्र अधिमित्र) दोनो मैत्रिमें जो ग्रह शत्रु होवे अधिशत्रु (शत्रु शत्रु अधिशत्रु) एक मैत्रिमेंमित्र और दुसरीमे शत्रु तो समहोता है (मित्रशत्रु-सम) ऐसेहि मित्र और समहोवे तो मि (सममित्र-मित्र) सम और शत्रु होवे तो (समशत्रु-शत्रु) श होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयदशमौ नवमपंचमौ चतुर्थाष्टमौ सप्तमंपादर्द्धितो ग्रहाः पश्यन्ति ॥ ५८ ॥

टीका-तीसरे ३ दशमे १० एकपाद। नवमे पांचवें ५ द्विपा चोथे ४ आठवे ८ त्रिपाद और सातमें ७ स्थानमे ग्रह पूर्ण दृष्टी देखते है ॥ ५८ ॥

तृतीय दशमौ शनि स्त्रिकोणं गुरु श्चतुरस्रं भौमश्च विशेषतः पूर्ण पश्यति ॥ ५९ ॥

टीका-ग्रहो कि विशेष दृष्टि। तीसरे ३ दशमे १० शनि। नवमे पांचवे ५ गुरु। चोथे ४ आठवे ८ स्थानमे मंगळ विशेष कर्के पूर्ण

से देखते है अर्थात् सर्वग्रहो कि पूर्ण दृष्टि ७ सप्तमस्थान की कही है सो सातमे तो ये शनि गुरु भौम पूर्ण दृष्टी से देखतेहि है विशेष कर [३ । १०] [९ । ५] [४ । ८] इन स्थानों में भी पूर्ण दृष्टी से देखते है यह इन ३ ग्रहो कि विशेष दृष्टी कही है ॥ ६० ॥

दिनेवारारंभादस्तकालो निश्यस्ततो वारप्रवेश कालांतः
स्ववारखंडेनहतोष्ट भक्तो लब्धं गुलिकेष्टकालः ॥६०॥

टीका-गुलिक साधनो पयोगि गुलिकेष्टकाल साधन की रीति । दिन के समयका जन्म होवेतो वार प्रवेश कालके आरंभ समय से सूर्यास्त कालपर्यंत की घट्यादिकको और रात्रिका जन्महोवे तो सूर्यास्त समय से वार प्रवेशकाल पर्यंत जितनी घट्यादिक होवे उनको अपने वर्तमान वार के खंडेसे अर्थात् आगेके सूत्र ६२ मे वारो के दिन रात्रि के खंडे कहे है उनमे से जो वार अपना हो उसका दिनका जन्म । तो दिनके खंडे से और रात्रिका हो तो जो रात्रिका खंडा होवे सूसे गुणन करना आठका भागदेना लब्ध आवे वही गुलिकका इष्ट ाल होताहै ॥ ६० ॥ वार प्रवेश काल मुहूर्त चिंतामणी में कहाहै उ की रीती यहहै कि ॥ श्लोक-पादोनरेखा परपूर्वयोजन पलर्युतोना स्ति ायोदिनार्द्धतः । ऊनाधिकास्तद्विवरो द्ववपलै ऊर्द्ध तथा धो दिनपप्रवे- नं ॥ जिस ग्राम का वार प्रवेश काल देखना हो उस ग्राम मे जिस ाम की मध्यरेखा लगती हो उस मध्यरेखा और अपने ग्राम के ीचके जितने पश्चिम अथवा पूर्वयोजन का अंतरहोवे उतनीही संख्या े से चतुर्थांस घटाना शेष रहे उतने ही पलोंको पंदरा घटीमें रेखा से श्चिम मे ग्राम होतो मिलाना और पूर्व मे अपना ग्राम होतो घटाना ेष रहे वह उस ग्रामका वार प्रवेश कालका ध्रुव होता है । इसध्रुवसे जिस दिनका वार प्रवेशकाल देखना हो उसी दिन के दिनार्द्ध के साथ अंतर करना शेष जितनी पले बचे उतनही पल दिनार्द्ध से ध्रुव अल्प होवे तो दिन चढे और दिनार्द्ध मे [illegible] तत-

घटादेना एवं रात्रिशेषरहते वारप्रवेश हुआ होतो जितने पल शेष रात्रि रहते प्रवेशहुवा उतनेहि पल दिनमानमे अधिक मिलादेना सो वार प्रवेशकाल से सूर्यास्तकाल पर्यंतका काल होता है। ऐसे हि सूर्यास्तकाल से वार प्रवेश पर्यंत के कालकों जानना। उदाहरण.। जैसे किसी का जन्म सम्वत् १९५२ कार्तिककृष्ण ६ भौमवार कों इष्ट. ३९।३ सू. ६।१२ पर रात्रिका जन्म है इसलिये सूर्यास्त से बुधवारके प्रवेश का कालपर्यंत समय निश्चय करने के लिये बुधवार का प्रवेशज्ञान प्रथम किया रतलाम–और मध्यरेषा उज्जयनी के बीच के अंतरकी योजन संख्या ६ है इसमे से इसी संख्या का चतुर्थांश. १।३० घटाया ४।३० शेष रहे यह पल रेखा सें पश्चिम मे रतलाम होने से १५ घटी मे युक्त की १५।४।३० यह रतलाम का वार प्रवेश ध्रुवक हुवा इसके और बुधवार के दिन के दिनार्द्ध. १४।२।० के अंतरकिया १।२।३० शेष घट्यादि अंतर रहा इसदिन दिनार्द्ध से ध्रुव अधिक है इसलिये १ घडी २ पल ३० विपल रात्रिरहते बुधवार प्रवेशहुआ. अतएव मंगलवार के सूर्यास्त समय २८।५ से सूर्योदय पर्यंत रात्रिमान ३१।५५ है इस मे से वारप्रवेशकाल १।२।३० घटाया शेष. ३०।५२।३० यह सूर्यास्त से वार प्रवेश कालान्तसमय हुआ इसको मंगलवार के रात्रि का जन्म है सयव मंगलवार के रात्री के खंड १ जो आगे सूत्र ६२ में कहाहै उस १ से गुणन किये ३०।५२ ३० हुऐ इस के ८ का भागदिया लब्ध ३।५१।३३ यह गुलिक का इष्टकाल हुआ. इस इष्टपर लग्नस्पष्ट की रीति से स्पष्ट लग्न साधे. ७।२ यह गुलिक लग्न स्पष्ट हुआ ॥ ६० ॥

तत्काल लग्नतुल्यो गुलिकः ॥ ६१ ॥

दिनेकांशाद्यो शाम्नगाङ्क पंचाब्धिविनेन्द्रुमिता गुलिक संज्ञाः ॥ ६२ ॥

टीका–आगेकहुए गुलिकेष्ट पर लग्न की रीति से जो लग्न साधनकरें वह गुलिक होजाता है ॥ ६२ ॥

दिनमे,सूर्यसें रात्रिमें बुधसे ७।६।५।४।३।२।१ क्रमसे गुलिक के खंडे जानना ॥ ६२ ॥

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
७	६	५	४	३	२	१	दिनमें गुलिक खंडा
३	२	१	७	६	५	४	रात्रिमें गु० खं०

अन्योन्यदृष्टौ एकतरदृष्टौ अन्योन्यस्थानस्थितावेकत्रस्थितौ वा संबंधोवगंतव्यः ॥ ६३ ॥

टीका-संबंध=ग्रह आपसमे परस्पर देखते होवें उस्को प्रथम दृष्टि संबंध जानना। एक ग्रहदेखताहोवे दूसरा उसकों नहींदेखता होवे परंतु जो देखता है उसकी राशी मे गयाहो तो उस्को एकतर दृष्टि संबंध २रा० जानना। दोनो परस्पर स्थान में स्थित होवे अर्थात् एककी राशीमें दूसरा और दूसरे की राशी मे पहला होवे उस्को अन्योन्य स्थान सम्बंध ३ राजानना । दोनो ग्रह एकस्थानमे स्थितहोवे उस्को एकत्र स्थित सम्बंध ४ था जानना । ऐसे चारप्रकार के सम्बंध होते है ॥ ६३ ॥

मंदार्कारा: शुष्का श्चंद्राच्छौ सजलौ जलर्क्षगौज्ञेज्योच ६४

टीका-शनी सूर्य मंगल शुष्क और चंद्र शुक्र सजल ग्रह जानना बुध गुरु जलराशीमे जायतो सजल शुष्कराशीमे स्थितहोवे तो शुष्कजानना ॥ ६४ ॥

सर्व ग्रहेभ्योधिकांशादिनात्मकारक स्ततःक्रमेण न्यूनांशा अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र ज्ञाति दारा कारकाः ६५

टीका-सूर्यादि राहु पर्यंत सर्व ग्रहोमे सें जोग्रह अधिक अंशादिक का हो वही आत्मकारक होताहै फेर उससे न्यूनन्यून अंशादिकके ग्रह क्रमसे अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र ज्ञातिदारा कारक जानना ॥६५॥

अंशशब्देनात्मकारकनवांशः ॥ ६६ ॥

टीका-इसग्रंथमे जहां अंश शब्दआवे वहां आत्मकारक ग्रहके नवांश लग्नकी कुंडली जानना इसीकों कारकांश कुंडली कहतेहैं ॥६६॥

ओजर्क्षे क्रमाद्वाल कुमार युवा वृद्धामृताख्या अवस्थाः समर्क्षे व्यत्ययः ॥ ६७ ॥

टीका–विषम राशीमे क्रमसे छछ अंशोके विभागसे बाल १ कुमार २ युवा ३ वृद्धा ४ मृता ५ अवस्था जानना और समराशीमे विपरीत जानना अर्थात् छ अंशका ग्रहहोवेतो मृता १ छैसे १२ तक वृद्धा २ बारीसे १८तक युवा ३ अठारासे २४ अंशतक कुमार २४चोवीससे ३० अंशपर्यंत बाल ५ अवस्था जानना ॥ ६७ ॥

द्वादशांशादंशषट्केवस्थितःपूर्णफलदः ॥ ६८ ॥

टीका–ग्रह जिस राशीमे होवे उस राशीके बारा अंशको आदिलै ६ छअंशके भीतर स्थित हो (अर्थात् १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ १८ अंशका हो) तो वह पूर्ण फलदेता है ॥ ६८ ॥

बलंषड्बलमित्युक्तम् ॥ ६९ ॥

टीका–इस ग्रंथमे जहा बल शब्द आवे वहा केशवीका षड्बल समझना ॥ ६९ ॥

वक्रग उच्चगोवा महाबली ॥ ७० ॥

टीका–जोग्रह वक्रगती होवे वा अपनी उच्चराशीमे स्थितहोवे वह महाबलवान समझना ॥ ७० ॥

स्वर्क्षतुङ्ग मूलत्रिकोणगा नानिष्ट फलदाः ॥ ७२ ॥

टीका–स्वराशी उच्चराशी मूलत्रिकोणराशीमे जो ग्रहस्थितहोते है वे नेष्टफलनहींदेते है (श्रेष्टहीफलदेतेहै) ॥ ७२ ॥

गुरुपूर्ण दृष्टोग्रहो नानिष्टफलदः ॥७२ ॥

टीका–जिसग्रहकों गुरु पूर्णदृष्टीसेदे खताहोवेवह नेष्टफलनही देताहै॥७२

ग्रहर्क्षसंख्या ग्रहसंख्या हता पुनः ग्रहांशसंख्याहता इष्टजन्म नक्षत्रलग्न संख्याभिर्युतार्कनष्टा शेषावस्थाः ॥ ७३ ॥

शयनो १ पवेशन २ नेत्रपाणी ३ प्रकाश ४ गमना ५ ऽगमन ६ सभा ७ गम ८ भोजन ९ नृत्यलिप्सा १०

कौतुक ११ निद्रा १२ अवस्थाः ॥ ७४ ॥

टीका–जिसनक्षत्र का ग्रहहोवे उसनक्षत्र की संख्या को ग्रहकी संख्यासे (सूर्यहोतो १ से चंद्रहोतो २ से इसक्रम से संख्याग्रह की होतीहै) गुणन करना फेर उसको ग्रह जितने अंशका होवे उतनीही अंशसंख्यासे गुणन करना और इसमे इष्टघटी जन्मनक्षत्र की संख्या और जन्म के लग्न की संख्या मिलना १२ बारहका भागदेना शेष १ बैठनो शयन २ उपवेशन ३ नेत्रपाणी ४ प्रकाश ५ गमन ६ आगमन ७ सभा ८ गम ९ भोजन १० नृत्यलिप्सा ११ कौतुक १२ निद्रा अवस्था जानना ७३–७४ उदाहरण। सूर्य ६। १२। २२ यह स्वातिनक्षत्र के द्वितीयचरणमेंहै अश्विन्यादि क्रमसे स्वातिनक्षत्र १५ पंदरहवाहै इसलिये ग्रहर्क्षसंख्या १५ हुई इसको ग्रहसंख्या १ से गुणनकिये १५ हुए फेर सूर्य १२ अंशकाहै इसकारण ग्रहांश संख्या १२ बारासे गुणनकिये १८० आये इसमे जन्म समय की इष्टघटी २९ और मिथुन लग्न के ३ जन्म नक्षत्र पुनर्वसुके ७ मिलानेसे आयाहुआ योग ४९ मिलाया २२९ हुए इसमे १२ बाराका भागदिया शेष १ बचाअतएव सूर्य शयना अवस्थामें है ऐसेहि सर्वग्रहोंकि अवस्था जानना ॥ ७४ ॥

स्वोच्च गोदीप्त स्वभगः स्वस्थो हितभगो हास्ययुक्तः शुभ वर्गगः शांतः स्फुरद्रश्मिः शक्तो मूढोलुप्तोनीचगोदीनः पाप शत्रुभगः पीडितः ॥ ७५ ॥

टीका–अपनी उच्चराशी में जो ग्रह स्थितहोवे वह दीप्त १जानना। औरजो स्वराशी का हो वह स्वस्थ२ मित्रराशी मे स्थितहो वह हास्ययुत ३ एवं शुभग्रहो के वर्ग मे (अर्थात् दशवर्ग मे जिस ग्रहमे अधिक शुभ ग्रहकावर्ग) हो शांत४ और जोबलवान हो वहशक्त५ अस्तका हो वहलुप्त ६ नीचराशीमे स्थितहो वहदीन ७ औरपाप ग्रहकी अथवा अपने शत्रुग्रह कीराशी मे स्थितहो वहग्रह पीडितसंज्ञक ८ जानना ॥ ७५ ॥

इति महादेवकृत जातकतत्त्वे संज्ञातत्त्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

इतिश्री ब्राह्मणवर्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्त्वाख्यजातक ग्रंथेतस्यानु श्रीशिवाङ्क रचित तत्त्वप्रदर्शिनि भाषाटीकायां संज्ञातत्त्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

॥ अथ सूतिका तत्त्वम् ॥

अब सूतिका [प्रसूति समयका] विचार वर्णन करते हैं।

(पिताके परोक्ष जन्मयोग)

चंद्रेणादृष्टेऽङ्गे पितुः परोक्षं जन्म ॥ १ ॥

स्थिरर्केऽष्टमांकायांत्ये चंद्रेण चादृष्टेगे स्वदेशस्थपितुः परोक्षं जन्म ॥ २ ॥

चरेऽर्केतु प्राग्वज्जातस्यपितरि विदेशं गतेजन्म ॥ ३॥

मन्देऽङ्गे वास्तेभौमे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ४ ॥

ज्ञाच्छांतरे चंद्रे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ५ ॥

टीका–पिताके परोक्षमें बालकका जन्मयोग–चद्रमालग्नको नहि देखता होतो पिताके परोक्ष में जन्म जानना ॥ १॥ स्थिराशी । २। ५। ८। ११। का सूर्य । आठमे ८ नवमे ९ ग्यारवे ११ बारवे ।१२। स्थानमें स्थित होवे. और चन्द्रमा लग्नको नहि देखता होतो पित स्वदेश में रहते हुवे भि पिताके परोक्ष में जन्म होवे [जन्म समयमें पिता घरके बाहर कहीं होवे] ॥२॥ चरराशि [मेष तुल मकर कर्क] का सूर्य ८। ९। ११। १२। स्थान में स्थित होवे और चन्द्रमा लग्न कों नहिं देखता होतो पिता विदेश मे गयाथा और पीछे से जन्म हुआ ॥ ३ ॥ शनि लग्न में होवे अथवा सातमे स्थान में मंगल होवे तो पिताके परोक्षमे जन्म जानना [इससूत्र मे दो योग कहेहै १ शनी लग्न में होतो २ रा मंगल सात मे होतो] ॥ ४ ॥ बुध और शुक्रके बीच में चन्द्रमा स्थित होवेतो पिताके परोक्ष में जन्म जानना ॥ ५॥

सर्प वेष्टित योग.

भौमत्र्यंशेचन्द्रे पापलग्ने शुभाःस्वायगाःसर्पवेष्टितो जातः ॥ ६ ॥

[illegible] राशी १।४।८। के द्रेष्काणमें चन्द्र होवे और पापग्रह राशी [१–५–८–१०–११–] का लग्न होवे सर्व शुभ ग्रह दुसरे २

ग्यारमे ११ स्थानमें जायतो सर्प वेष्टित जन्म होता है सर्प वेष्टित का तात्पर्य–सर्पाकार नशोंसे वा तदाकार नालसे भीहै ॥६॥ औरभी सर्वार्थमें सर्पवेष्टितके योगकहे है वे प्रसंगसे बताते है । यदि अष्टमेश लग्नमें राहु सहित होवैतो बालक सर्प वेष्टित होवे १ अथवा केंद्रमे राहु और गुलिकसे लग्नेश्वर युतहोवे २ अथवा लग्नेश अष्टमेशकेंद्रमें युतहो ३ तथा लग्न में पापग्रहका द्रेष्काणहोतो बालक सर्प वेष्टित होवे४ और लग्नमें सर्प वा अंडज द्रेष्काण होवे ५ तथा द्रेष्काण तत्स्वामि युक्तहो और शुभदृष्टिरहितहोतो सर्पवेष्टित जन्महोवे ।६।

वृषाजसिंहगे मन्दे वा भौमे भांशतुल्येवयये नालवेष्टितः॥७॥

टीका–मेष वृष सिंह राशिके लग्नमें शनि अथवा मंगल स्थित होतो उस राशि और नवांशके राशि विभागके समान अंगमें बालक नालवेष्टित होताहै अर्थात् वह राशि वा उसका नवांश कालपुरुषके अंगमें जिसस्थान में होवे उस स्थानमें नाला लिपटा हुवा होता है ॥ ७॥

यमल जन्म योगः

चतुष्पदेर्के शेषेषुसबलेषु द्व्यङ्गगेषु यमलजन्मः ॥८॥

टीका–चतुष्पदराशि (मेष वृष सिंह मकर पूर्वार्द्ध धनका उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे और शेषग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न मे स्थित होवेतो यमल जन्म–(जोडलेजन्म) होवे ८ ग्रंथांतरोमें लिखा है कि आधानलग्नका स्वामी और तृतीय स्थानका स्वामी लग्नमें होतो यमल (दो बालक) उत्पन्न होवेंगे। अथवा आधान लग्नेश तृतीयेशसे युक्तहोकर तीसरे स्थानमें होतेभी वही फल जानना [दो बालक होवेंगे]॥ ८॥

जन्म समये पिता बंधनयोग–

सूर्यात्त्रिकोणास्तगौ मन्दारौपापभगौ जन्मनि पिताबद्धः।९।

टीका–सूर्यसे ९।५।७। नवमे पांचवें अथवा सातवे स्थानमें शनि मंगल दोनोही पापग्रहकी राशि में एकत्र स्थित होवेतो जन्म समयमें पिता बंधाहुआ कहना ॥ ९॥

नौकामध्ये जन्मयोग–

पूर्णेन्दौ कर्के शेलग्ने जीवेतुर्ये नौकां जन्म ॥ १० ॥

टीका-पूर्णचन्द्रमा कर्कराशीका होवे और बुध लग्नमें गुरु चतुर्थस्थानमें स्थित होतो नावमें जन्म होता है ॥ १० ॥

जलासन्न जन्मयोगाः

जलभेंऽगेऽस्ते पूर्णेन्दौ जलासन्ने जन्म ॥ ११ ॥

जलभगावंगचन्द्रौजलासन्ने जन्मः ॥ १२ ॥

जलभगे चन्द्रे साम्बुस्थे जलासन्ने जन्म ॥ १३ ॥

टीका-जलराशी [४ । ११ । १० । १२ । ८ । ७] का लग्न होवे और सातमें स्थानमें पूर्ण चन्द्रमा स्थित होवेतो जलके निकट स्थानमें जन्म होता है ॥ ११ ॥ जल राशिके लग्न और चन्द्रमा दोनो होवेतो जलके समीप जन्म होवे ॥ १२ ॥ जलराशिका चन्द्रमा दशम १० अथवा चतुर्थ ४ स्थानमें स्थित होवे तो जलके समीपमें जन्म जानना ॥ १३ ॥

कारागारे जन्मयोगः

चन्द्रेऽङ्गे मंदेऽन्त्ये पापदृष्टे कारागारेजन्मः ॥१४॥

टीका-लग्नमें चन्द्रमा और बारहवें स्थानमें शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो जेलखानेमे जन्म कहना ॥ १४ ॥

[गर्त में जन्मयोगः]

कर्कालिगेऽर्कजे चन्द्रदृष्टे गर्तेजन्मः ॥ १५ ॥

टीका-कर्क अथवा वृश्चिक राशिके लग्नमे शनि स्थित होवे और उसको चन्द्रमा देखता होवेतो गर्त [खड्डे] में जन्म होता है ॥ १५ ॥

[क्रीडालय देवालय और रेतोंकी जमीनमें जन्मयोग]

जलभे मंदेऽङ्गे ज्ञदृष्टे क्रीडालये कदृष्टेदेवालये चन्द्रदृष्टेसरार्करावन्यां जन्म ॥ १६ ॥

टीका-जलराशी [४ । १० । ११ । १२ । ८ । ७ ।] का शनि लग्नमें होवे और उसको बुधदेखता होतो क्रीडालय (आनंदकी जगह) में जन्म होवे सूर्य देखता होवेतो देवालयमें और चन्द्रदेखताहोवतो रेती बिछी हुई जमीनमें जन्म कहना ॥ १६ ॥

श्मशान, रमणीयगृह, अग्निशाला, राजमंदिर,
शिल्पालयमें, जन्म योग ।

नृलग्नेमन्देकुजदृष्टे श्मशाने सितेन्दुदृष्टेरमणीयगृहे गुरुदृष्टे
ग्निशालायां रविदृष्टे नरेन्द्रामरालयगोकलान्यतमे ज्ञदृष्टे
शिल्पालये जन्मः ॥ १७ ॥

टीका-नर राशी (१ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११) के लग्नमें शनी स्थित होवे और उसको मंगल देखताहोतो श्मशानमे जन्म जानना । शुक्र चन्द्र देखते होवेतो रमणीय स्थानमे जन्म होव । गुरु देखता हावेतो अग्निशाला अथवा रसोई घरमें जन्म कहना । सूर्य देखता होवेतो राजमहलमें तथा देवालयमें तथा गौशालामें जन्म होवे । और बुध जो देखता होवेतो शिल्पालय (कलाभवन सिलावटी सुथारी लुहारी सुनारी चित्रकारी काम जिसमकानमें होतेहोवे वसमकान)में जन्मजानना ॥१७॥

माताछोडदे और दीर्घायु होवे ।

मन्दाराभ्यांपञ्चमेस्तेङ्के चन्द्रे मात्रात्यज्यते गुरुदृष्टेतु
चन्द्रे दीर्घायुः ॥ १८ ॥

टीका-शनि मंगलसे । ५ । ७ । ९ । पांचवे सातवे तथा नवमें स्थानमे चन्द्रमा होवेतो माताउस बालकको छोडदेवे यदि उस चन्द्रको गुरु देखता होवेतो माता छोडदेवे तोभी दीर्घायु होताहै ॥ १८ ॥

माता त्याग करे और मरजाने के योग.

पापदृष्टेचन्द्रेंगे ऽस्ते भौमे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥१९॥
पापदृष्टेङ्के चन्द्रे मंदारौलाभे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥ २०॥

टीका-पापग्रहसे देखा हुआ चन्द्रमा लग्नमे होवे और सातवे मंगल होवेतो माताकेछोड देनेसे मरजाता है ॥ १९ ॥ पापग्रहने देखा हुआ चन्द्रमा लग्न मे होवे शनि मंगल दोनो ग्यारवे स्थानमे स्थित होवेतो माताकेत्यागकर देनेसे मरजाता है ॥ २० ॥

पिता माता संबंधी घरमें जन्म योग

मातापितृमहयोर्बली तत्संबंधीगृहे जन्मः ॥ २१ ॥

टीका-माता पिता ग्रहमसे जोग्रह बलवान होवे उसके संबंधी घरमे जन्म जानना अर्थात् माताग्रह बलवान होवेतो माता संबंधी नाना मामा मासी के घरमें जन्म होवे और पितृग्रहबलवान होतो पितृ संबंधी पिता काका आदिके घरमें जन्म होता है ॥ वृहज्जातकमें "दिवार्क शुक्रौ पितृ मातृ संज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशितद्विपर्यात् । पितृव्य मातृष्वसृ संज्ञितौन्यथा यथौज युग्मर्क्ष गतौ तयोः शुभौ " । अर्थात् दिनमें जन्म होवे उसजीवके सूर्यपिता और शुक्रमाता संज्ञक ग्रह होता है एव रात्र में जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृ संज्ञक और चन्द्रमा मातृ संज्ञक होताहै येही उलटे अर्थात् दिनमे जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृव्य (काका) और चन्द्रमा मातृष्वसृ (मासी) संज्ञक और रातमेजन्म हो तो सूर्य काका और शुक्र मातृष्वसृ (मासी) संज्ञक जानना । इसप्रकार पितृ मातृ संज्ञक ग्रह कहेहै इनहीके बलके अनुसार जन्म स्थान कहना ॥ २१ ॥

वृक्षनदी प्राकारादिमें जन्म योगः ।

सौम्याः सर्वे नीचगा वृक्षनदी प्रकारादिषु जन्म ॥२२॥

टीका-सर्व शुभग्रह नीचराशीमें गये होवेतो वृक्षके नीचे तथा नदीमें वा,किलेके भीतर अथवा कोइ प्राकार (परकोटे) के भीतर जन्म होता है ॥ २२ ॥

मार्गमे जन्म योग.

नीचेगेषुशुभेषुचंद्रेऽङ्गे ग्रहमात्राद्दष्टे टव्यांजन्म ॥ २३ ॥

टीका-शुभग्रह नीचराशिमें स्थित होवे और लग्नमे गयेहुवे चंद्रको कोईभी ग्रह देखता नही होवेतो मार्गमें जानना ॥ २३ ॥

अंधकारे जन्म योग.

चंद्रे तुर्येवा मंदयुतदृष्टे वा जलभांशेन्धकारे जन्म ॥२४॥

टीका-इस सूत्रमे तीनयोगहै । १ चंद्रमा चोथेस्थानमे स्थित होवे तो अंधकारमे जन्म होवे २ अथवा चंद्रमा शनीसे युक्त दृष्टहोवेतो अंधकारमे जन्महो अथवा चंद्रमा जलराशी [४ । १० । ११ ।१२ । ८ । ७ । मे तथा जलराशीके नवमांशमें होवेतो अंधकार (अंधेरे में) जन्म होवे ॥ २४ ॥

बहुदीप गृहे जन्म योग.

सबलेर्के भौमदृष्टे बहुदीपगृहे जन्मः ॥ २५ ॥

टीका-बलवान सूर्यको मंगल देखता होवेतो बहुत दीपकवाले घरमें जन्म कहना ॥ २५ ॥

तैल, वर्ति, दीपज्ञान योग

चन्द्रात्तैल ज्ञानम् ॥ २६ ॥

लग्नाद्दीपवर्ति ज्ञानं ॥ २७ ॥

चरेर्केचर स्थिरेर्के स्थिरो द्विस्वभावे खंडवद्दीपः ॥२८॥

टीका-सूतिका घरमें-दीपकमें तैल चन्द्रके अनुरूप [क्षीण , पूर्ण, सपाप, जैसा चंद्रहो वैसा अल्प अधिक मध्यम] जानना ॥ २६ ॥ और ऐसेहि लग्नके अनुरूपवत्ती कहना ॥ २७ ॥ जन्मसमयमें चर राशीका सूर्य होवेतो चंचलदीप(हातमें चलता फिरता होगा) स्थिर राशीका सूर्य होतो स्थिरदीप (एकस्थानमें रखा हुवा) और द्विस्वभाव राशीका सूर्य होतो खंडवद्दीप(देहलीमें रखाहुवा दीपक) जानना ॥२८॥

मस्तकसे वा पांवसें जन्म ज्ञान ।

शीपादयशिंगे द्वतः प्रसव उभयोदयशिहस्ततो न्यथापादतः ॥ २९ ॥

टीका-जन्म लग्न में शीर्षोदय राशी (३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११) नवांशहो तो मस्तककी तरफसे जन्म कहना । उभयोदय [illegible] (१२) का नवांशहो तो हातसे जन्म अर्थात् प्रथम हस्त निकला और पृष्ठोदय राशी का नवांश होवेतो पांवकी औरसे जन्म जान[illegible]

कष्ट योग-

लग्नचंद्रान्यतरतो बंध्यस्तगेपुक्रूरेपुमातुः कष्टम् ॥ ३[illegible]

टीका-लग्न तथा चंमासे चौथे सातमे स्थानमें क्रूरग्रहहोवेतो मा[illegible] विशेष कष्टहुआ जनाना (क्रूरग्रह-सू. मं. श. रा.) ॥ ३० ॥

सूतिका गृह द्वारज्ञानं ।

केंद्रगस्य वा बलिनो ग्रहस्य दिशिगृहद्वारम् ॥ ३[illegible]

टीका-केंद्र ।१।४।७।१०। स्थानमें जोग्रह स्थितहोवे तथा जोग्र सर्वग्रहोंसे अधिकवलीहोवे उसकी दिशामें सूतिकाग्रहका द्वा जानना ॥३१॥ ग्रहोंकिदिशा वृहज्जातक मे इसप्रकार कही है "प्राग्यारविशुक्र लोहित तमः शौरेन्दु वित् सूरयः" अर्थात पूर्वका स्वामी रवि १ अग्निका शुक्र २ दक्षिणका मंगल ३ नैऋतकाराहु ४ पश्चिमका शनि ५ वायव्यका चंद्र ६ उत्तरका बुध ७ ईशानका गुरु ८ स्वामी जानना ॥ ३१ ॥

गृहज्ञान. ।

काष्टादयं नवं दग्धं चित्रं दृढं रम्यंजीर्णं क्रमादर्कादिषुयो बली तदनुसारी गृहम् ॥ ३२ ॥

टीका-जन्म समयमें सूर्यादि ग्रहोमेंसे जोग्रह अधिक बलीहोवे तदनुसार बालकका जन्म गृह (मकान) जानना. । यदि सूर्य बलवान होवेतो काष्टगृह ऐसेहि चंद्रबलवान होतो नयामकान मंगल० जला हुवा० बुध० चित्र विचित्र गुरु मजबूत. शुक्र० सुंदर शनि० पुराना [जीर्ण] मकान जन्म का कहना ॥ ३२ ॥

गृहके किसभागमे जन्म हुआ.

वृषाजयो रुदये गृहस्य पूर्वभागे युग्मस्याग्नेयां कर्क सिंहयोर्याम्ये कन्यायां नैऋते तुलावृश्चिकयोः पश्चिमेधनुषो वायौ मंदभयो रुत्तरे झषस्यैशान्यां जन्म ॥ ३३ ॥

एवं शय्या ज्ञानम् ॥ ३४ ॥

टीका-जन्म समयमे मेष या वृषभ लग्न होतो घरके पूर्वभागमे और मिथुन होतो घरकेअग्निकोणमे कर्क सिंह राशिका लग्न होतो घरके दक्षिण भागमें कन्या लग्न होतो घरके नैऋत कोणमे तुल वृश्चिक लग्न होतो घरके पश्चिम भागमे धनराशीका लग्न होतो घरके वायु कोणमे मकर कुंभ लग्न होतो घरके उत्तर भागमें मीनराशीका लग्न होतो घरके ईशान भागमे जन्म कहना ॥ ३३ ॥ इसीप्रकार शय्या (सूतिका का पलंग) का विचार जानना ॥ ३४ ॥

शय्या सिर वा पाद विचारः ।

लग्नादिशि शय्याशिर पिपरं कान्ये पुपादाः ॥ ३५ ॥

यत्र पाप स्तत्रो त्पाटः ॥ ३६ ॥

टीका-उपरोक्त लग्नकी दिशाके तरफ पलंग का शिर (शिराध्या) कहना अर्थात् मेष वृष लग्न में पूर्वकी तरफ मिथुन में आग्नि कोणमें ४।५। कर्क सिंह में दक्षिणमें इसी प्रकार बाराहि लग्न में जानना और लग्न से ३।६।९।१२। तीसरा छठा नवा बारवां स्थान पलंग के पाये जानना ॥ ३५॥ इन स्थानो मैं से जिस स्थानमें पाप ग्रह युक्त होवे वहि पलंग का पाया फटाहुवा समझना ॥ ३६ ॥

उपसूति का ज्ञान।

लग्न चन्द्रान्तरगग्रह संख्या उपसूतिका उदगर्द्धेभ्यन्तर गा दक्षिणार्द्धे बाह्याः ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न और चन्द्रके बीचमें जितने ग्रह स्थितहोवे उतनीही संख्या उपसूतिका जानना ग्रह उत्तरार्द्ध [लग्नसे सप्तमभावपर्यंत] मे होवेतो भीतर (सूतिका के समीप में) और दक्षिणार्द्ध (सप्तम से लग्न पर्यंत) मे होवेतो बाहर कहना ॥ ३७ ॥

वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणाः स्वर्क्ष त्र्यंशनवांशोस्थिते द्विगुणा नीचास्तगैरर्द्धमिता उपसूतिकाः ॥ ३८ ॥

मीनाजाङ्केद्वे गोघटाङ्के चतस्र कर्कहयांगेपंच शेषे तिस्रउपसूतिका ॥ ३९ ॥

टीका-लग्न चंद्रके बीचमे जितने ग्रह स्थितहो उतनी उपसूतिका कहीहै उस्मेभि यदि वक्र राशिका अथवा उच्च राशिका ग्रह स्थित होवेतो उनकी संख्या की तीन गुनी उपसुतिका कहना और स्वराशी स्वद्रेष्काण स्वनवांशके ग्रह होतो उनकी संख्यासे द्विगुण संख्या उप सूतिका जानना ॥ ऐसेहि जितनेग्रह नीचराशी के अस्तके होवे उत नी संख्या कि आधि उपसूति का समझना ॥ ३८ ॥ तथा मीन मेष लग्न में जन्म होतो दो २ वृष कुंभ लग्न होतो ४ चार कर्क सिंह होतो पांच ५ शेष ३।६।७।८।९।१०। लग्न होतो ३ उप सूतिका जानना ॥ ९ ॥ इनमें भी सर्वार्थमें लिखाहै कि चन्द्र बुध

गुरु शुक्रादि शुभ ग्रह होतो सुन्दर सौभाग्यवती और शनि र
योग होतो विधवा कृष्ण वर्णा कृष्ण वस्त्रा उपमुनिका जान

बहुरुदितयोगः ॥

गोजाश्वि युग्म सिंहांगे बहुरुदितो जातोन्यथान॥

टीका-वृषभ मेष धन मिथुन सिंह राशीका लग्न होतो जन्म मे बालक बहुत रोया और शेष लग्न मे होतो रुदन नहीं जानना ॥ ४० ॥

निर्जने प्रसव योगः ॥

अंगे चंद्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ॥ ४१ ॥

टीका-लग्नमें चंद्रमा स्थितहोवे और उसको कोईभी ग्रहनहीं होवेतो निर्जन (शून्य) स्थान में जन्म कहना ॥ ४१ ॥

सुख तथा कष्टसे प्रसव योग ॥

खांबुगे, शुभेषु सुखेन प्रसव त्रिकोणास्तगेषु
कष्टतः ॥ ४२ ॥

टीका-दशमें १० और ४ चौथे स्थानमें शुभग्रह स्थित हो हुवा और त्रिकोण ९।५। सप्तम ७ मस्थानमें पापग्रह कष्टसेप्रसवहुवाकहना ॥ ४२ ॥

जन्मसे पूर्व पितृ मरण योगः ॥

तुर्येखेवा मन्दारार्क योगे जन्मतःप्राक्पितृ

टीका- चतुर्थ ४ अथवा १० दशम स्थानमें शनि मंगल नो ग्रहोंका योग होवेतो जन्म के पहले पिता मरण कह

माताके साथ बालक का मृत्यु योग ।

लग्नं षष्टास्ताष्टमगाःपापामात्रासह बालस्य

प्रन्ते चंद्रेसमंदे लग्नाष्टमेभौमे मात्रासह बालस्य

प्रस्ते केंमंदज्ञा न्यतमयुते रंध्राङ्गे कुजे. मा

ते. ४६ ॥

का- लग्न मे छटे सातमे आठमे स्थान मे सर्व पापग्रह स्थितहोवे माता के साथ मे बालक की मृत्यु होवे ॥ ४४ ॥
ण दिनका चंद्रमा शनिसे युक्त होवे और लग्नमे अथवा आठमे म होवे तो माताके साथ बालक की मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥
ग समय का रवि, शनि अथवा बुध से युक्त होवे और लग्नमे १ आठमे मंगलहोवे तो माता के साथ बालक की मृत्यु होवे॥४६॥

महाकष्ट योग.

भौमेमेकर्किमंदेन्दुदृष्टेष्टमेचेज्ये बालस्य महाकष्टम् ॥४७॥

त-मंगल की १ । ८ राशी के सूर्य मंगल शनि होवे और चंद्र दे- होवे ८ आठमे स्थानमे गुरु स्थित हो तो बालक को महाकष्ट है ॥ ४७ ॥

सद्यमृत्यु होनेके योग.

पयारि पापयुतौ बालमृतिः ॥ ४८ ॥
ग्नेशेसार्केनीचगेरन्ध्रे बालस्य सद्योमृतिः ॥ ४९ ॥
होर्केन्द्रेशापनात्रयुतदृष्टे बाल० ॥ ५० ॥
गेर्केपमन्दे एभमौमे बाल० ॥ ५१ ॥
रारभेसेर्के पापैर्दृष्टे बाल० ॥ ५२ ॥
ाष्टमेचंद्रे पापैर्दृष्टेबाल० ॥ ५३ ॥
मांशेचंद्रे शुभैरदृष्टेकोणेपापा बा० ॥५४॥
दार्केन्द्वाराज्यया फाङ्गाष्टमगास्सबलागुरुदृष्टाबाल० ५५।
र्णांत्यास्तांगेपुगापयुतभद्रो बलिशुभायुतदृष्टेबा।०५६।
ङ्केरतेपापाबा० ॥ ५७ ॥
द्रन्ध्रे,लिनः पापाबाल० ॥ ५८ ॥
न्द्रारन्ध्रेकेन्द्राष्टमगाः पापाबाल० ॥ ५९ ॥

कर्कात्यंगे खलाःपूर्वार्द्धे सौम्याःपरार्द्धे वा लमास्ताष्टांत्ये-
सपापेंदौशुभादृष्टे शुभायुतेपुकेंद्रेपुबाल० ॥६०॥
त्रिकेसौम्याःकेंद्रकोणेपापा लग्नेर्केबाल० ॥ ६१ ॥
चन्द्रापयुतेषु सर्वकेंद्रेपुवा० ॥ ६२ ॥
लग्नास्तगौपापौ चंद्रो मिश्रदृष्टोबाल० ॥ ६३ ॥
क्षीणेंदावंत्ये पापेपुलग्नाष्टमगेपु केंद्रेतरगेपु शुभेपुबाल० ६४
पापांतरेचंद्रे रंध्रान्वुसप्तमगे बाल० ॥ ६५ ॥
संध्यायांभांत्यगाः पापाइन्दुहोरायां बाल० ॥ ६६ ॥
रंध्रास्तगौपापौपापमात्र दृष्टौबाल० ॥ ६७ ॥
लग्नान्त्याष्टाङ्केकशाचचंद्रारार्कमन्दा बाल० ॥ ६८ ॥
पष्ठयां जातस्य भौमार्कावेगेमृतिः० ॥ ६९ ॥
षष्टाष्टमनगेचंद्रे पापवर्गस्थे तुर्येऽहोशिशुमरणं ॥ ७० ॥

टीका—बारमे और ६ छठे स्थानमे पापग्रह युक्तहोवे तो बालककी सद्य मृत्यु कहना ॥ ४८ ॥ लग्न का स्वामी सूर्ययुक्त होवे और नीचराशी मे स्थित होकर आठमे स्थान मे जाय तो बालक की सद्य मृत्यु कहना ॥ ४९ ॥ राहु केंद्र १।४।७।१०। मे स्थितहोवे और पाप ग्रह मात्र से युक्त तथा दृष्टहोवे तो बालक की सद्य मृत्यु होतिहै ॥५०॥ सातमें सूर्य लग्नमें शनि आठ में मंगल होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५१ ॥ शनि तथा मंगल की १०।११।१।८ राशिका सूर्य १० दशम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहो से दृष्टहो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५२ ॥ चंद्रमा छठे आठ मे स्थान मे पापग्रहो से दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्रमृत्यु जानना ॥ ५३ ॥ [illegible] के अंत्य अंश (२९ अंश) मे स्थित चंद्रमा शुभ ग्रहो से दृष्ट होवे और ९।५ नवमे पांचमे स्थान मे दो से अधिक पाप ग्रह होवे तो [illegible] शीघ्र मृत्यु कहना ॥५४॥ शनि सूर्य चंद्र मंगल

ये ग्रह बलवान होकर क्रमसें १२।९।१।८। बारमे नवमे लग्न मे आठमे स्थान मे जाय और गुरु इनको नही देखता होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५५ ॥ नवमे पांचवे बारमे सातमे ९ । ५ १२ । ७ तथा लग्न मे पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोवे और बलवान शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट नही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५६ ॥ लग्नमें चंद्रमा और सातमे २ । ३ पापग्रह होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५७ ॥ शनी से ८ आठ मे स्थान मे बलवान ३ पाप ग्रहगये होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५८ ॥ क्षीण चंद्रमा लग्न मे स्थित होवे केंद्र १ । ४ । ७ । १० और अष्टम स्थान मे पापग्रहे युक्त होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५९ ॥ कर्क और वृश्चिक राशि के लग्नमे जन्म होवे पुर्वार्द्ध (लग्नसे सप्तम भावपर्यंत) में पापग्रह स्थितहोवे और उत्तरार्द्ध (सप्तमसे लग्न पर्यंत) में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे, अथवा लग्न सप्तम अष्टम और बारमें स्थानमें पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोके शुभग्रहो सें दृष्ट-नही होवे और केंद्रस्थान में शुभग्रह युतनही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥६०॥ त्रिक स्थान ६।८।१२ मे शुभग्रह, केंद्र १।४।७।१० कोण (९।५) स्थानमे पापग्रह और लग्नमे सूर्य स्थित होवे तो बालक की जल्दी मृत्यु जानना ॥६१॥ चारोहि केंद्र १।४।७।१० स्थानमे पाप ग्रह और चंद्रमा स्थितहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥६२॥

लग्न और सप्तम स्थानमे दो पापग्रह स्थितहोवे और चंद्रमा निभग्रह (शुभ पाप दोनु) सें दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६३ ॥ बारमे स्थानमे क्षीणचंद्रमा, लग्न १ और अष्टम ८ स्थान में पापग्रह, और केंद्रस्थान के शिवाय अन्य पणफर तथा आपो क्लिम स्थान में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६४ ॥ पापग्रहो के बीचमें चंद्रमा ८ । ४ । ७ भाव में गयाहोवे तो बालककी शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६५ ॥ संध्या समय मे जन्म होवे और राशी के अंत्य अंशमे अर्थात् २९ में अंशमे पाप ग्रह गयेहुवे चंद्रकी होरा मे स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ६६ ॥ आठमे और सातमे स्थानमे पापग्रह स्थित होवे और पापग्रह मात्र देखते होवे तो बलक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६७ ॥

चंद्र १ मंगल १२ सूर्य ८ शनि ९ स्थानेमे क्रमसे गयेहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ६८ ॥

छठके दिन जन्म होवे मंगल और सूर्य लग्नमे स्थितहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ६९ ॥

छठे आठ मे स्थान मे चंद्रमा पापवर्ग मे गया हुवा स्थितहोवे और चोथे स्थान में राहुहो तो बालक का शीघ्र मरण होवे ॥ ७० ॥

दश ग्यारा सोला दिन मे मृत्यु योग.

चंद्रा दस्ते भौमार्कौ दशाहे शिशु मरणं ॥ ७१ ॥

मंद भगे जीवेष्टे पापै दृष्टे एकादशाहे शिशुमरणं ॥ ७२ ॥

मन्दे झे पापनाम दृष्टे षोडशाहे शिशु मरणं ॥ ७३ ॥

टीका–चंद्रमा सें सातमे स्थानमे मंगल और सूर्य दोनो स्थितहोवे तो दशमे दिन बालककी मृत्यु होवे ॥७१॥ शनी कीराशि १०।११ का गुरु ८ अष्टम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहों से होवे तो ११ ग्यारमें दिन बालक की मृत्यु जानना ॥७२॥ शनि लग्न में होवे सर्व पापग्रह देखते होवेतो १६ सोलमे दिन बालककी मृत्युजानना ॥७३॥

लग्नांशे शे षष्ठे षष्ठभतुल्य दिनेशिशु मरणं ॥७४॥

टीका–जन्मलग्न जिस राशीके नवमांश मे हो उसका स्वामी छठे स्थान में गयाहोवे तो छठे स्थान मे जो राशि होवे उतने दिन में बालक मरता है ॥ ७४ ॥

एक मास मे शिशु मरण योग.

षष्ठाष्टमगाः सौम्या वक्रग पापदृष्टा मासे शिशुमरणं ॥७५॥

सपापे झे शे यूने मासे शिशुमरणं ॥ ७६ ॥

कुजेंगे जीवेत्ये शुभेषष्ठे मासे शिशुमरणं ॥ ७७ ॥

सपाप जन्मेशे रंध्रे मासेशिशुमरणं ॥ ७८ ॥

लग्नेशस्ते खलविजिते मासे शिशुमरणं ॥ ७९ ॥

मंदार्कारा रंध्रे वा षष्ठे मासे शिशुमरणं ॥ ८० ॥

टीका—छठे आठमे स्थान मे शुभ ग्रहगये होवे वक्रगती मे गये हुवे पापग्रह देखते होवे तो १ मासमे बालक की मृत्यु कहना ॥ ७५ ॥

पापग्रह से युक्त लग्न का स्वामी ७ सातमे स्थानमे स्थितहोवे तो १ एकमास मे बालक की मृत्युहोवे ॥ ७६ ॥

लग्न मे भौम बारमे स्थान मे गुरु, आर शुभ ग्रह छठेस्थान बैठे होवे तो १ अेकमास में बालक की मृत्यु जानना ॥ ७७ ॥

जन्म राशी का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ८ आठ मे स्थान मे गयाहोवे तो १ मास मे बालक का मृत्यु जानना ॥ ७८ ॥

लग्न का स्वामी ७ सातमे स्थान मे पापग्रह से पराजित (हारा) हुवा होवे तो १ मासकी आयु जानना ॥ ७९ ॥

शनी सूर्य मंगल ८ आठ मे अथवा छठे स्थान मे जाय तो बालक की १ एकमास की आयु कहना ॥ ८० ॥

तीन पक्ष से अेकवर्ष पर्यंत की आयु के योग.

ग्रहणेङ्गेशे ऽबले सपापे पक्षत्रयं वा मासत्रयंजीवति ॥८१॥
रंध्रेङ्गेशे पापयुत दृष्टे तुर्यमासायुः ॥ ८२ ॥
सर्वे आपोक्लिमगा विबलाः षण्मासायुः ॥ ८३ ॥
पापर्क्षे सुते इन्द्वर्काराः षण्मासायुः ॥ ८४ ॥

टीका—लग्न का स्वामी ग्रहण समय का होवे और निर्बली होकर पापग्रह से युक्त होवे तो पक्षत्रय (देढ महिना) अथवा तीन महिना बालक जीवित रहेगा ॥ ८१ ॥

लग्नका स्वामी ८ आठ मे स्थान मे पापग्रह से युक्त दृष्टहोवे तो ४ चार मास की आयुबालक की जानना ॥ ८२ ॥

शुभ तथा पाप सर्व ग्रह आपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थान मे जाय और निर्बली होवे तो बालक की ६ छेमास की आयु कहना ॥ ८३ ॥

पापग्रह की राशी (१।८।५।१०।११) मेगये हुवे चंद्र सूर्य मंगल पंचमस्थान मे स्थितहोवे तो ६ छे महिने की आयु जानना ॥ ८४ ॥

धनांत्यगा वा व्ययारिगा वा रंध्रारिगा वा षष्ठांत्यगाः पापाः

षष्ठेऽष्टमे वा मासि मृतिः ॥ ८५ ॥

लग्नद्रेष्काणेशे षष्ठे भतुल्ये मासि मृतिः ॥ ८६ ॥

टीका–दुसरे और बारमे स्थान में १ अथवा १२ बारमे और छठे स्थान मे २ वा आठमें और छठे स्थानमें ३ अथवा ८ आठमे और नवमे स्थानमे ४ सर्व पापग्रह स्थितहोवे तो छठे तथा ८ आठ मे महिने मे मृत्यु कहना ॥ इस सूत्रमे चारयोगक हे है इनमे से कोईभी योग हो तो ६ तथा ८ महिने मे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८५ ॥

लग्न द्रेष्काण का स्वामी ६ छठे स्थान मे स्थितहोवे तो छठे स्थान मे जो राशी होवे उतनेहि संख्या के मासमे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८६ ॥

एक वर्ष से २४ वर्ष पर्यंतके आयु योग.

षष्ठाष्टमगयोः पाप दृष्टयोः पापयो र्वर्षांतरे मृतिः ॥ ८७ ॥

चंद्रज्ञौ केंद्रे मूढमंदारदृष्टौ वर्षांतरेमृतिः ॥ ८८ ॥

लग्नपाच्चंद्रेशेऽष्टमे पापमात्रदृष्टे वर्षद्वयायुः ॥ ८९ ॥

केंद्राष्टषष्ठेवक्रगेग्रहेकुजभे सबलारदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९० ॥

टीका–पापग्रह से देखे हुवे पापग्रह छटे आठमे स्थान मे गयेहोवे तो एक वर्षके बाद बालक की मृत्यु जानना ॥ ८७ ॥

चंद्रबुध दोनो केंद्रमे स्थितहोवे और अस्तके शनि मंगल उनको देखते होवे तो बालक की एक वर्ष के पश्चात् मृत्यु मानना ॥ ८८ ॥

लग्न के स्वामी से चंद्रमा की राशी का स्वामी ८ आठवेस्थान मे स्थितहोवे और पापग्रह मात्र देखते होवे तो २ दो वर्ष की आयु जानना ॥ ८९ ॥

केंद्र और छटे आठवें १।४।७।१०।६।८ स्थान मे वक्रगतिग्रह होवे अथवा वृश्चिक राशीका नाम और उनको बलवान मंगल देखता होवे तो ३ तीन वर्ष कीआयु मानना ॥ ९० ॥

सौम्ये पापांशगे पापदृष्टे पुण्यर्क्षे वर्ष त्रयायुः ॥ ९० ॥

सौम्येऽष्टमे द्वौ मन्देन्द्वर्कैः दृष्टे भृगुदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९१ ॥

पश्चाष्टमे क्रूर्कगेहे चंद्रदष्टे तुर्येब्दे मृतिः ॥ ९३ ॥

टीका–पापग्रह के नवमांशमे गये हुवेसूर्य चंद्रमा तीसरे स्थानमे स्थितहोवे और पापग्रह उनको देखते होवे तो ३ वर्षकी आयुजानना ॥ ९१ ॥

मेष वृश्चिक इराशी का गुरु आठमे स्थान मे जाय और उस्कोशनि चंद्र सूर्य देखते होवे शुक्र की दृष्टि नहिहोवेतो ३ वर्षाकि आयु जानना ॥ ९२ ॥

छठे आठमे स्थान मे कर्कराशी का बुधहोवे और चंद्रमा उस्को देखताहोवे तो ४ वर्ष की आयु जानना ॥ ९३ ॥

सेंदर्केज्यौ वा सेंदर्कार्क्यारा वा समन्देन्द्वच्छाराः पञ्चमाब्दे मृतिः ॥ ९४ ॥

लग्नेराहौ पापभाभदृष्ट युते पञ्चमाब्देमृतिः ॥ ९५ ॥

सुर्येन्दूभेत्रिकेशुक्रे पापदृष्टे षष्ठेब्दे मृतिः ॥ ९६ ॥

लग्नेर्कमन्दाराः क्षीणेन्दावस्ते षष्ठे सप्तमेवाब्देमृतिः ९७ ॥

क्षीणेंदावास्ते लग्नेमंदाराच्छा गुर्वदृष्टाः सप्तमेब्देमृ० ९८॥

पञ्चाष्टमगाः सौम्याः कोणेपापा अष्टमेब्दे मृतिः ॥ ९९ ॥

क्षीणेंदावस्तेशुक्रभे लग्नेमंदारार्कागुर्वदृष्टासप्तमेब्देमृति १००

त्रिकेचंद्रर्कार्कियोगे नवमाब्दे मृतिः ॥ १०१ ॥

टीका–चंद्रमा सूर्य गुरु स युत होवे १ अथवा चंद्रमा सें सूर्य शनि मंगल युक्त होवे २ अथवा शनि सें चंद्र शुक मंगल युक्त होवे ३ तो ५ पांच वर्ष की आयु जानना। इस सूत्रमे ३ योग है इनमेसे कोईभी होवे तो ५ वर्ष की आयु कहना ॥ ९४ ॥

लग्न में राहु सर्व पाप ग्रहों से दृष्ट होवे तो पांच वर्ष की आयु जानना ॥ ९५ ॥

कर्क अथवा सिंह राशी का शुक्र त्रिक स्थान (६।८।१२) में स्थि होवे और पाप ग्रहों से दृष्ट होवे तो छठे वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ ९६ ॥

लग्न में सूर्य शनि मंगल स्थिर होवे और क्षीण चंद्रमा ७ सातवें स्थान मे होवे तो छठे अथवा सात मे वर्ष में मृत्यु होवे ॥ ९७ ॥

सातमें स्थानमे क्षीण चंद्रमा लग्न में शनि मंगल शुक्र स्थित होवे और इनको गुरु नहि देखता हो तो सातमे वर्ष में मृत्यु जानना ॥९८॥

छठे आठ में स्थानमें सौम्य ग्रह (चं. बु. गु. शु.) और ९।१२ स्थानमें पाप ग्रह होवे तो आठमे वर्ष में मृत्यु जानना ॥ ९९ ॥

तुला तथा वृषभ राशी का क्षीण चंद्रमा सप्तम स्थानमे होवे और लग्न मे शनि मंगल सूर्य होवे इनको गुरु नही देखता होवेतो ७ सात वर्ष की आयुमानना ॥ १०० ॥

त्रिक ६।८।१२ स्थान में चंद्र सूर्य शनिका योग होवे तो ९ नव में वर्ष मृत्यु जानना ॥ १०१ ॥

ज्ञभगा इन्द्वर्कारा गुर्वदृष्टा नवमाब्देमृतिः ॥१०२॥

द्यूनेचंद्रे ष्टमेशेङ्गे मंददृष्टे नवमाब्देमृतिः ॥१०३॥

चंद्राङ्गेशावस्ते वा त्रिके भतुल्याब्देमृतिः ॥१०४॥

जन्मेशाद्धगौशुक्रार्कौ वा लग्नेशेषष्ठे भतुल्याब्देमृतिः १०

चंद्राङ्गेशौ मंदार्कयुतौ द्वादशाब्देमृतिः ॥१०६॥

जीवभौमभे भौमेजीवभे वा सूर्यमंदभे मंदेसूर्यभे द्वादशाब्दे मृतिः ॥१०७॥

क्रमान्मेषादिगो विधुरष्टम नवम त्रयोविंश द्वा
विंश पञ्चम प्रथमचतुर्थत्रयोविंशाष्टादश विं
शैकविंशदशमलवस्थो लग्नांकमिताब्देमृतिदः ॥१०८॥

टीका–बुधकीराशी ३।६ के चंद्र सूर्य मंगल होवे और गुरु की द्रष्टी न नहीं होवे तो नववर्ष की उमरमे मृत्यु होवे. ॥ १०२ ॥

सातमे होवे आर ८ आठमे स्थान का स्वामी लग्न मे

स्थित हो कर शनी से दृष्ट होवे तो नव वर्ष की उमर जानना ॥ १०३ ॥
चंद्रमा और लग्न का स्वामी सातमे स्थानमे स्थितहोवे अथवा
कि स्थान ६। ८। १२ मेंगायतो उस स्थान मे जोराशी हो उतने ही
संख्या वर्षमे मृत्यु जानना ॥ १०४ ॥

जन्मराशी के स्वामीसे आठमे स्थानमे शुक्र और सूर्य दोनु जाय १
अथवा लग्न का स्वामी छटे स्थान में गयाहो तो उस स्थानमे जो राशि
हो उतने हि वर्ष की आयु जानना ॥ १०५ ॥

चंद्र और लग्न की राशी केस्वामि शनि सूर्यसे युक्त होवेतो वार१२
र वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ १०६ ॥

गुरु, मंगल की (१।८) राशि का होवे, और मंगल, गुरु की (९।१२)
राशि का होवे १ अथवा सूर्य, शनि की १०।११ राशि का और शनि, सूर्य
की ५ राशि का होवे तो १२ वार में वर्ष मे मृत्युजानना ॥ १०७ ॥
जन्म समय में चंद्रमा मेषके ८ वृषभके ९ मिथुनकर३ कर्कके २२ सिंहके ५
कन्याके १ तुलके ४ वृश्चिक के २३ धनके १८ मकरके २० कुंभके २१
मीनके १० अंश का होवेतो अंश के संख्या के बराबर वर्ष मे मृत्यु
जानना ॥ जैसा के किसी के जन्म समय मे चंद्रमा धनके १८ अंश काहे
तो १८ अठार मे वर्ष मे मृत्यु कहना इसी प्रकार सर्व राशि यो मे
समझना ॥ १०८ ॥

सर्व रिष्ट योगोके भंगयोग।

रात्रौषष्ठाष्टमगश्चंद्रः शुक्ले सर्वारिष्टहरः ॥१०९॥
सौम्य भांशगाः सौम्याः सर्वारिष्टहरः ॥११०॥
मेशेकेंद्रे वा सौम्यैकेंद्रे सर्वारिष्टहरः ॥१११॥
शीर्षोदयगास्सर्वे सर्वा० ॥११२॥
षष्ठाष्टमगे कृष्णचंद्रे दिवा पापदृष्टे सर्वा० ॥११३॥
रवोच्चसुहृत्क्षेचंद्रे सर्वारिष्टहरः ॥११४॥
चंद्रात्खेजीवो व्यये ज्ञाच्छौ लाभे खलाःस० ॥११५॥
कर्काजेइन्दौ केंद्रे सदृष्टे सर्वारिष्टहरः ॥११६॥

कर्काजवृषेङ्गे राहौ सर्वा० ॥११७॥
केंद्रे तदग्रेच सर्वे खेटाः स० ॥११८॥
शुभभे पूर्णेन्दौ सर्वा० ॥११९॥
षष्टाष्टमे चंद्रे शुभवर्गगे स० ॥१२०॥
इन्दङ्गौ सर्व ग्रह दृष्टौ सर्वा० ॥१२१॥
शुभांशे केंद्र कोणे शुक दृष्टे चंद्रे सर्वा० ॥१२२॥
बलिशुभः केंद्रगो लाभेसूर्यः सर्वा० ॥१२३॥
सबलेङ्गपे शुभमात्र दृष्टे सर्वा० ॥१२४॥
जीवेस्वभोच्चगे केंद्रे सर्वा० ॥१२५॥
पापाः शुभ वर्गगाः शुभ मात्र दृष्टास० ॥१२६॥
ष्पापारिगो राहुः शुभमात्रदृष्टयुतः स० ॥१२७॥
सर्वे बलिनो वा नृराशिगा वामिश्रभगा वाशुभभगा
शुभवर्गगाः सर्वारिष्टहरः ॥ १२८ ॥

टीका–॥ शुक्लपक्ष मे रात्रिसमय मे जन्म होवे और छटे आ
स्थान मे चंद्रमा स्थितहोवे तो सर्व रिष्टयोग का नाशकरता है १'
शुभग्रह कि राशि और नवमांश (२।७।९।१२।३।६।४) मे शु
गये होवे तो सर्वारिष्टनाश करते है ११०

जन्म राशी का स्वामी केंद्र १।४।७।१० मे स्थितहोवे अथवा
ग्रह केंद्रमे होवे तो सर्वारिष्टनाश करते है १११

सर्वग्रह शीर्षोदय राशी ३।५।६।७।८।११ मे गये होवे तो सर्वा
नाश करते है ११२

कृष्णपक्ष मे दिन का जन्म होवे और ६।८ छटे आठमे स्थान
चंद्रमा इनाप ग्रहसे दृष्ट होवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११३
चंद्रमा अपनि स्वराशि (४) उच्च राशी (२) तथामित्र ग्र

राशी मे स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरता है ११४

चंद्रमासे दशम स्थान मे गुरु, बारमे स्थान मे बुध शुक्र और ग्यार मे स्थान मे पापग्रह स्थितहोवे तो सर्वारिष्टकानाश करते है ११५

कर्कतथा मेष राशि का चंद्रमा केंद्रमे स्थितहोवे और शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११६

कर्कमेष तथा वृषभ राशी के लग्नमे राहु स्थितहोवे तोसर्वा० ११७

केंद्र १।४।७।१० और पणफर २।५।८।११ स्थान मे सर्व ग्रह स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरते है ११८

पूर्ण चंद्रमा शुभग्रह की राशी का होवे तो सर्वा० ११९

शुभग्रह के वर्ग में गया हुवा चंद्रमा छठे आठमे स्थान मे स्थित होवे तो सर्वा रिष्टकानाश करता है १२०

चंद्र और जन्म लग्न कों सर्व ग्रह देखते होवे तो सर्वा ०१२१

शुभग्रह की राशि के नवांशमे गयाहुवा चंद्रमा केंद्र कोण १।४।७ ।१०।९।५ स्थान मे स्थितहोवे और शुक्र उसको देखता होवे तो सर्वा रिष्टनाश करता है १२२

बलवान् शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० मे स्थितहोवे और ११ ग्यारमे स्थान मे सूर्य होवे तो सर्वा० १२३

लग्नका स्वामी बलवान् होवे सर्व शुभग्रह सें दृष्ट होवे तो सर्वा रिष्ट० ॥ १२४ ॥

केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्वराशी ९।१२ तथा अपनि उच्चराशी ४ मे गयाहुवा गुरुस्थित होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२५ ॥

पापग्रह शुभग्रहो के वर्ग मे गयेहोवे और शुभग्रह मात्र से दृष्ट होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२६ ॥

तीसरे ग्यारमें छठे ३ । ११ । ६ स्थानमे गयाहुवा राहु शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्टहोवे तो सर्वा० ॥ १२७ ॥

सर्व [शुभ पाप] ग्रह बलवान होवे १ अथवा सर्व ग्रह नरराशी [१।३।५।७।९।११] में गयेहोवे २ अथवा सर्व ग्रह अपने मित्रग्रह कि राशी मे स्थित होवे ३ अथवा शुभग्रह की राशी में स्थितहोवे ४ अथवा सर्वग्रह शुभग्रह के वर्गमे गयेहोवे ५ तो सर्वारिष्ट नाशहोवे । इस सूत्र में ५ पांच योग कहे है इनमें से कोई भी १ योग हो तो सर्वारिष्टहर योग जानना ॥ १२८ ॥ इति सर्वारिष्टहर योगाः ॥

अथ जारज योग कहते हैं.

षष्ठाष्टमेशौ चन्द्रारयुतौ तुर्यगौ जारजः ॥ १२९ ॥
षष्ठांशेशौ पापयुतौ जारजः ॥ १३० ॥
षष्ठांशेशयोर्मन्दयोगे शूद्रजो ज्ञयोगे वैश्यजोऽ र्कयोगे क्षत्रजो
जीवशुक्रान्यतरयोगे ब्राह्मणजः ॥ १३१ ॥
अंशेपापमात्र संबंधे जारजः ॥ १३२ ॥
केंद्रसोत्थेश योगे जारजः ॥ १३३ ॥
द्वित्रिपंचारीशा लग्नगा जारजः ॥ १३४ ॥
पापेङ्गे शुभेयूने खेमन्दे जारजः ॥ १३५ ॥
चंद्रेङ्गे सुतेशुक्रे सोत्थेभौमे जारजः ॥ १३६ ॥
लग्नेर्के सुखेराहौ पितृव्यजः ॥ १३७ ॥
लग्ने राव्हारौ पुष्पवंतौयूने नीचजः ॥ १३८ ॥
शून्येषुकेन्द्रेषु जारजः ॥ १३९ ॥
सर्वेद्विषष्ठाष्टांत्येषु जारजः ॥ १४० ॥
जीववर्गहीनेंगे जारजः ॥ १४१ ॥
खेङ्गतुर्येसपापचंद्रे चन्द्रलग्नौ गुर्वदृष्टौ जारजः ॥ १४२
पुष्पवंता वेकभगौ गुर्वदृष्टौ जारजः ॥ १४३ ॥
लग्नाम्बुपंचधर्मप योगे जारजः ॥ १४४ ॥
... ङ्गपेऽबले जारजः ॥ १४५ ॥
...रे लग्नपेऽबले पापदृष्टे जारजः ॥ १४६ ॥
... भौम दृष्टे जारजः ॥ १४७ ॥

चंद्रमंदयोगे जारजः ॥ १४८ ॥

टीका-छठे आठमे स्थानके स्वामी चंद्र मंगल सें युक्त होकर चतुर्थ स्थानमें स्थित होवे तो जारज (व्यभिचारसे उत्पन्न) कहना ॥ १२९॥

छठे और नवम स्थानके स्वामी पापग्रहों सें युक्त होवे तो जारज कहना ॥ १३० ॥

छठे और नवम स्थान के स्वामि शनि से युक्त होवे तो शूद्र सें उत्पन्न कहना एवं बुध से युक्त होवे तो वैश्य से, सूर्य से युक्त होवे तो क्षत्री सें, गुरु से अथवा शुक्रसे युक्त होवे तो ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न जानना ॥ १३१ ॥

कारकांश लग्नमे पापग्रह मातृका संबंध होवेतो जारज ० ॥१३२॥

केंद्र १।४।७। १० स्थान के स्वामी सें तृतीय स्थान के स्वामिका योग होवे तो जारज कहना ॥ १३३ ॥

दूसरा २ तीसरा ३ पांचवा ५ और छटा ६ स्थानके स्वामी लग्न में स्थित होवे तो जारज कहना । स्मरणरहै ये चारोंग्रह लग्न मे होवे तो योग जानना नहींतो योग नहि होता है ॥ १३४ ॥

लग्न में पाप ग्रह ७ सप्तम स्थानमें शुभग्रह और १० दशम स्थान मे शनि स्थित होवे तो जारज होताहै. ॥ १३५ ॥

लग्न मे चंद्रमा पञ्चम स्थानमे शुक्र और तीसरे स्थानमे भौम स्थितहोवे तो जारज जानना ॥ १३६ ॥

लग्न मे सूर्य, चतुर्थ स्थान मे राहु स्थितहोवे तो पितृव्य [काके] से उत्पन्न हुवा कहना ॥ १३७ ॥

लग्नमे राहुमंगल और सप्तम स्थान मे सूर्य चंद्रमा स्थितहोवे तो नीच से उत्पन्न कहना ॥ १३८ ॥

केंद्र १।४।७।१० स्थान में कोईभी ग्रह नहीं होवे तो जारज कहना ॥ १३९ ॥

सर्व ग्रह २।६।८।१२ दूसरे छठे आठमे बाहरवें स्थान मे स्थित होवे तो जारज कहना ॥ १४० ॥

लग्नमें गुरु का वर्ग नहि होवे तो जारज कहना ॥ १४१ ॥

दशमें लग्न में तथा चोथे स्थानमें पापग्रह सें युक्त चंद्रमा स्थित होवे और लग्न, चंद्र, कों गुरु नहि देखता होवे तो जार० ॥ १४२ ॥

सूर्य चंद्र दोनों एक राशी मे स्थितहोवे और इनकों गुरु नही देखता होवे तो जारज कहना ॥ १४३ ॥

लग्न १ चतुर्थ ४ षष्ठ ६ और ९ नवम के स्वामीयों का योग होवे तो जारज कहना ये चारो एक राशि मे जितने नजीक अंशमे होवे उतनाहि योग बलवान जानना ॥ १४४ ॥

नवम ९ और ४ चतुर्थ स्थानमें पापग्रह स्थितहोवे और लग्नेश्वर निर्बली होवे तो जारज कहना ॥ १४५ ॥

चतुर्थ स्थान पाप ग्रहों के बीचमें होवे लग्नपति निर्बली होवे पापग्रह से दृष्ट होवेतो जारज० ॥ १४६ ॥

सप्तमभावकास्वामी धन २ स्थानमे पापग्रह से युक्त होवे और भौम सें दृष्ट होवे तो जारज० ॥ १४७ ॥

चंद्र शनिका योग होव तो जारज होताहै ॥ १४८ ॥

जारज योग के भंग योग.

लग्नपेज्ये वा लग्नदृष्टरि जारजयोग भङ्गः ॥ १४९ ॥

लग्नेजीव युतदृष्टे जारजयोग भङ्गः ॥ १५० ॥

लग्नचंद्रान्यतरो जीवभवर्गान्यतरगो जारजयोग भङ्गः१५१

टीका– लग्नेश लग्नमें युक्तहोवे अथवा लग्न कों देखताहोवे तो जारज योग का भंग जानना ॥ १४९ ॥

लग्नमें गुरु युक्तहो तथा लग्न कों गुरु देखताहोवे तो जारज योगका भंग जानना ॥ १५० ॥

लग्न तथा चंद्रमा गुरु की राशि का अथवा गुरु के दशवर्ग मे होवे तोजारज योगका भंग जानना अर्थात् इनयोगो मे सें कोई १ योगभी होवेतो उपरोक्त जारज योग नही जानना ॥ १५१ ॥

चिन्ह का विचार

यद्व्ययपे कुजार्कौ तत्रारक्तचिन्हम् ॥१५२॥

राव्हर्कजोयत्र तत्र शामचिन्हम् ॥१५३॥

लग्नगाश्चंद्रारान्व्हाः शिरसिचिन्हम् ॥१५४॥

शुक्रेज्ञे रंध्रेराहौ मस्तके वा वाम कर्णे चिन्हम् १५५

आरेज्ञे कोणेमंदे लिंगेगुदसमीपे वा चिन्हम् ॥१५६॥

झेज्यौरंध्रे कोणेशुके सुखेङ्गेमंदे जठरे चि० ॥१५७॥

राव्हच्छौतुर्ये मंदेकुजेवाङ्गे वामपादे चि० ॥१५८॥

यस्य राजयोगो भंग रहितस्तस्य करचरणान्यतरत्र राज चिन्हम् ॥१५९॥

चंद्रार्कौ यदङ्गगौ तदङ्गे चिन्हम् ॥१६०॥

टीका– काल पुरुष के शरीर विभाग के विचार से शरीर के जिस वयवस्थान में सूर्य भौम युक्तहोवे उस स्थानमे लालरंगका चिन्ह जान- ॥ जैसे किसीके लग्न सें ४ चतुर्थ स्थानमें कर्क राशी मे सूर्य मंगल थतहै तो यहस्थान कालपुरुषके हृदयकाहै इसलिये इस कुंडलीवाले हृदयके समीप लालरंग का मश वगेराका चिन्ह कहना एवं सर्व ानो का विचार जानना ॥ १५२ ॥

राहु शनि जिस स्थानमें होवे उस अंगपर श्याम चिन्ह जानना१५३

लग्नमे चंद्र भौम शुक्र युक्त होवेतो मस्तकपर चिन्ह जानना १५४

लग्नमे शुक्र और ८ अष्टम स्थानमे राहु युक्त होवे तो मस्तकपर वा वाम कर्णपर चिन्ह जानना ॥ १५५ ॥

लग्नमें मंगल और नवम पंचम ९।५ स्थानमे शनि युक्त होवे तो गपर अथवा गुदा के समीप मे चिन्ह जानना ॥ १५६ ॥

अष्टम स्थानमे बुध गुरु त्रिकोण स्थान (९।५) मे शुक्र और चौथे लग्नमे शनी युक्त होय तो पेटपर चिन्ह जानना ॥ १५७ ॥

चतुर्थ स्थान मे राहु शुक्र और शनि अथवा मंगल लग्नमे स्थित तो बाये पांव मे चिन्ह जानना ॥ १५८ ॥

जिसके भंग रहित राजयोग पूर्ण होवे उसके हात अथवा पांवों मे चिन्ह जानना ॥ १५९ ॥

चंद्र, रवि, जिस अंगमें युक्त होवे उस अंगमे चिन्ह कहना ॥१६०॥

शुभ जन्म के योग.

यगोंतमेङ्के वा चंद्रेशुभं जन्म ॥ १६१ ॥

सूर्योदने सद्ग्रहे शुभंजन्म ॥ १६२ ॥

एकस्मिन्नपि केंद्रे ग्रह युते शुभं० ॥ १६३ ॥

आत्मकारके सब ले शुभंजन्म ॥ १६४ ॥

टीका– लग्न वर्गोत्तम नवांश मे होवे अथवा चंद्रमा वर्गोत्तमांश में होवे तो जन्म शुभ जानना ॥ १६२ ॥

सूर्य से दूसरे स्थान मे शुभग्रह स्थित होवे तो शुभ जन्म जानना १। अेकभी केंद्र स्थानमें ग्रह युक्त होवे तो शुभ जन्म कहना ॥१६३

आत्म कारक ग्रह बलवान होवे तो शुभ जन्म कहना ॥ १६४ ॥

शरीर की आकृति लक्षण वर्ण विचार.

लग्न नन्दांशप तुल्याकारो वा वीर्याधिक ग्रह तुल्यतनुः१६५

चंद्राक्रांतनवांशप वर्णः ॥ १६६ ॥

टीका–लग्न मे जिस ग्रह की राशी का नवमांश होवे उसग्रह के स्वरूप (संज्ञा तं० सूत्र ४२ से ४८ मे कहे है) के समान शरीर का आकार अथवा जोग्रह अधिक बलवान् होवे उसग्रह के स्वरूप के समान शरीर का आकार लक्षण कहना ॥ १६५ ॥

चंद्रमा जिस राशीके नवमांशमे होवे उसके स्वामी के वर्ग के समान शरीर का गौर श्यामादि वर्ण जानना ॥ १६६ ॥

सत्वादिगुणप्रकृती का विचार.

सूर्योंयस्यत्रिंशांशे, तद्गुणभाक् ॥ १६७ ॥

टीका– सूर्य जिस ग्रह के त्रिंशांशमे होवे उसग्रह का जो सत्वरज तमादि गुणहोवे वैसाही शरीर का गुण जानना ॥ १६७ ॥

इति श्रीमहादेवकृत जातकतत्वे प्रसूतिका तत्वंद्वितीयम् ॥ २ ॥

इतिश्री गणकवर्य्य श्रमन्महादेव कृत जातक तत्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवास रचित तत्वप्रदर्शिनि भाषाटीकायां प्रसूतिका तत्वं द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ प्रकीर्ण तत्वारम्भः ।

आलिङ्गनाय संवृत्तो भवोदेवौ मिथोभिया ।
विश्लेषस्यैकतांयातौ भूयास्तांमंङ्गलायनः ॥ १ ॥

टीका-अथ प्रकीर्णतत्वका आरम्भ करते समय ग्रंथकर्ता मंगला चरण करते है । आलिंगन के लिये प्रवृत्तहुऐ शिवपार्वती परस्पर विश्लेष (जुदे) होने के भय से अेकरूप जिन्होने (अर्द्धनारीश्वर) धारण किया है वे साम्बसदाशिव हमारे मंगल के लिये होवो ॥ १ ॥

तत्रादौ भवानां विचारः।

योभावःस्वस्वामि शुभैर्युक्तोदृष्टो वा तस्यवृद्धिः पापैर्हानि र्मि श्रैर्मिश्रम् ॥ १ ॥

नीचारिस्थोग्रहो भावनाशकः ॥ २ ॥

स्वसुहृत्तुङ्गस्थोभाववृद्धिकरः ॥ ३ ॥

यद्भावात्त्रिके पापास्तद्भावनाशः॥ ४ ॥

यद्भावेशस्त्रिके त्रिकेशो वा यद्भावेतद्भावनाशः ॥ ५ ॥

यद्भावीयकेंद्रार्थकोणस्थानानि शुभपतियुतानि तद्भावपुष्टिः पापयुतानिचेद्धानिर्मिश्रयुतानि मिश्रम् ॥ ६ ॥

यद्भावेशोरिनीचास्तगः शुभैरयुतेक्षितश्चेत्तद्भावनाशः ॥७॥

यद्भावीयरंध्रेश सूर्यशनि गुलिकेश गुलिकांशेशानांमध्ये योधिकबली तत्पाके मूर्तिवित्तादिनाशः ॥ ८ ॥

टीका- प्रथम द्वादशभावों का शुभाशुभ फल विचार के साधारण नियम कहते है। जोभाव अपने स्वामी और शुभग्रहो से युक्त अथवा दृष्टहोवे उस भावकी वृद्धि और पापग्रहो से युक्त वा दृष्टहोवे उस-भाव की हानी तथा शुभ पाप मिले हुवे (मिश्र) ग्रहों से युक्त दृष्ट होवे उसका मिश्रफल जानना ॥ १ ॥

नीचराशी का तथा शत्रु राशी का ग्रह जिसभाव मे स्थितहोवे वह ग्रह उस भवका नाश करता है ॥ २ ॥

स्वराशि का तथा मित्र और उच्चराशी का ग्रह जिसभाव मे स्थित होवे वहग्रह उसभाव की वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

जिस भावसे ६।८।१२ छठे आठवे बारवे स्थान मे पापग्रह गयेहोवे उसभाव की हानी जानना ॥ ४ ॥

जिस भावका स्वामी ६। ८। १२ मे स्थित होवे अथवा जिसभाव मे त्रिक स्थान (६। ८। १२) का स्वामि युक्तहोवे उस भावका नाश कहना ॥ ५ ॥

जिस भावसे १।४।७।१०।२।९।५ स्थान शुभ ग्रह से और अपने स्वामी से युक्त होवे उसभाव की वृद्धि (उत्तम फल) कहना और पापग्रह से युक्त होवे तो उसभावकी हानी तथा मिश्र (शुभपाप) ग्रहसे युक्त होवे तो मिश्र (मध्यम) फल कहना ॥ ६ ॥

जिस भावका स्वामीशत्रु ग्रहकी राशीका अथवा नीच राशीका तथा अस्त का होवे और वह शुभग्रहो से युक्त तथा दृष्टनहिंहोवे तो उस भावका नाश होता है ॥ ७ ॥

जिस जिस भावसे ८ अष्टम स्थानका स्वामी, और सूर्य, शनि, गुलिक की राशीका स्वामी, और गुलिक के नवांश का स्वामी, इनपांचों मेसे जो अधिक बलवान् होवे उसकी दशामे उस उस देह धनादि भाव का नाश जानना । अर्थात लग्न सें ८ स्थान के स्वामी से विचार किया होतो देहका नाश कहना. धनभावसे ८ के स्वामी से होतो धनका ऐसेहि प्रत्येक भाव के फलका नाश कहना ॥ ८ ॥

अथांग विचारः

स्वांशेकेन्द्रेशुभयुते वाशुभदृष्टे देहसौख्यं ॥ ९ ॥

अङ्गेयोगे देह सौख्यं ॥ १० ॥

सपापेकेन्द्रेत्रिके देहसौख्यंन ॥ ११ ॥

लग्नेपापा लग्नेशेच हीनवीर्ये देहसौख्यन्न ॥ १२ ॥

देहकार्श्ययोगाः ।

शनिचंद्रौमेषे देहकार्श्यं ॥ १३ ॥

अन्त्येहेलाव केंद्रगेवक्के देहकार्श्यं ॥ १४ ॥

लग्नेशाधिष्ठित भेशस्त्रिके देहकार्श्यम् ॥ १५ ॥

शुष्कांगे शुष्कग्रहे देहकार्श्यं ॥ १६ ॥

शुष्कयुतेगेशे देहकार्श्यम् ॥ १७ ॥

शुष्कग्रहर्क्षेङ्गेशे देहकार्श्यम् ॥ १८ ॥

लग्नेशांशेशे शुष्केदेहकार्श्यम् ॥ १९ ॥

शुष्काङ्गैःपापैःदेहकार्श्यम् ॥ २० ॥

टिका-अब शरीरका विचार कहते है । लग्नका स्वामी स्वनवांशम होवे शुभग्रह से युक्तहोवे अथवा शुभग्रहो से दृष्टहोवे तो देहका सुख होवे ॥ ९ ॥

लग्नका स्वामी लग्नमे होवे तो देह सुख जानना ॥ १० ॥

पापग्रह से युक्त लग्नेश्वर ६-८-१२ वें स्थान में जायतो देह सुख नहीं होवे ॥ ११ ॥

लग्नमें २-३ पापग्रह होवे और लग्नका स्वामी हीनबली होवे तो देह सुख नहीं होवे ॥ १२ ॥

देहकार्श्ययोग कहते है ।

मेष राशी मे शनि चंद्र युक्त होवे तो देह दुर्बल कहना ॥ १३ ॥

बारमे स्थानमे सूर्य, और केंद्र १।४।७।१० स्थानमें भौम होवे तो देह कार्श्य (कृश) जानना ॥ १४ ॥

लग्नेश्वर जिसराशी मे स्थितहोवे उस राशी का स्वामी त्रिक (६-८-१२) स्थानमे स्थितहोवेतो देह कृश (पतली) होवे ॥ १५ ॥

शुष्क राशी १।२।३।५।६।९ के लग्नमे शुष्कग्रह [रवि मंगल शनि-बुध गुरु.] स्थितहोवे तो देह कार्श्य (पतलीदेह) होवे ॥ १६ ॥

लग्नेश्वर शुष्कग्रह [रविमंगल शनि और शुष्कराशी मे गयेहुवे बुध गुरु.] से युक्तहोवे तो देह कार्श्य [पतली देह] जानना ॥ १७ ॥

लग्नेश्वर शुष्क ग्रह की राशीका होवेतो देह कार्श्य [दुर्बलदेह] जानना ॥ १८ ॥
लग्नपति के नवांशका स्वामी शुष्कग्रह (र. म. श. बु.) होवे तो दुर्बल देह होताहै ॥ १९ ॥

शुष्कराशी [१-२-३-५-६-९] के लग्नमे २-३ पापग्रह युक्तहोवे ता (दुर्बला) देह मनुष्य होता है ॥ २० ॥

देह पुष्टियोग ।

राशीशे सांङ्गनाथे देहपुष्टिः ॥ २१ ॥
तोयर्क्षेङ्गेशेशुभान्विते वा जलखगदृष्टे देहपुष्टिः ॥ २२
शुभर्क्षेङ्गे जलर्क्षेङ्गांशेशे देहपुष्टिः ॥ २३ ॥
लग्नेशुभर्क्षे पापदृग्वर्जिते देह० ॥ २४ ॥
लग्नेगुरुयुते वा गुरुदृष्टे देह० ॥ २५ ॥
जलर्क्षेङ्गे शुभैर्युते वा दृष्टे देह० ॥ २६ ॥
मिथुनांशे देह० ॥ २७ ॥
लग्नगे सबले सत्त्वचरे देह० ॥ २८ ॥

टीका-जन्मराशी का स्वामी लग्नेश्वर से युक्त होवे तो पु शरीरवाला होताहै ॥ २१ ॥

लग्नका स्वामि जलराशी ४।११।१०।१२।७।८ मे स्थितहोके शु ग्रह [चं. बु. गु. शु.] से युक्तहोवे अथवा जलग्रह (चं. शु. बु. गु. मे दृष्टहोवे तो पुष्टदेहवाला होताहै ॥ २२ ॥

शुभग्रह की राशी [४ । ३ । ६ । ९ । १२ । २ । ७] का लग्न हो और लग्न के नवमांश का स्वामी जलराशि का होवे तो पुष्टदे वालाहोताहै ॥ २३ ॥

शुभ राशीका लग्न पापग्रहो से अदृष्टहोवे तो पुष्टदेह मानना ॥२४॥ जन्मलग्न मे गुरुयुक्त होवे अथवा लग्नको गुरु देखताहोवे तो दे मानना ॥ २५ ॥

जलराशी ४।७।८।१०।११।१२ का लग्न शुभग्रहो से युक्त वा दृष्टहोवे तो पुष्ट देह होता है ॥ २६ ॥

कारकांश कुंडलीमे मिथुन लग्न होवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २७ ॥

जन्मलग्न मे बलवान शुभग्रह स्थितहोवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २८ ॥

लग्नादिराशयः शिरः प्रभृतिकालाङ्गेषुकल्प्याः ॥२९॥
यत्राङ्गे दीर्घराशि दीर्घभपश्च तद्दीर्घम् व्यस्तेन्हस्वंमिश्रेमिश्रं
ग्रहानाक्रांतराशिश्चेद्राशिवत् ॥ ३० ॥

दीर्घदेह योग ।

बुधात्सप्तमेभौमे दीर्घदेहः ॥ ३१ ॥
लग्नपेदीर्घभे दीर्घदेहः ॥ ३२ ॥

देह और देहके कोन २ अवयव ह्रस्व दीर्घ है इनका विचार ।

टीका–जैसे मेषादि द्वादश राशि मस्तकादिपादपर्यंत कालपुरुषमे कल्पना की है तैसेहि जन्म लग्नकी राशि को आदिले १२ याराशि मस्तक से पादपर्यंत कालपुरुष के अंगमे कल्पना करना । उदाहरण के लिये कल्पना कीजिये जैसे किसीका जन्मलग्न ५ सिंह राशि हो तो ५ सिंहमस्तक ६ कन्या मुख ७ तुल उर ८ वृश्चिक हृदय ९ धन उदर १० मकर कटि ११ कुंभबस्ति १२ मीनलिंग १ मेष ऊरु २ वृष जानु ३ मिथुन जंघा ४ कर्क अंघ्रि (पांव) स्थान हुआ इसीप्रकार प्रत्येक लग्नसे अंगकी कल्पना करना ॥ २९ ॥

इन उपरोक्त मस्तकादि पादपर्यंत अंगस्थान मे से जिसअंगमे दीर्घ राशि ५।६।७।८ और दीर्घ राशीकास्वामी (बृ. बु. शु. मं.) स्थित होवे वह अंगदीर्घ जानना और औरजिसअंगस्थानमे ह्रस्वराशि ११।१२।१।२ और ह्रस्वराशि का स्वामी स्थितहोवे वह अंग ह्रस्व जानना एवंमिश्र राशि ३।४।९।१० और मिश्र राशि केस्वामि जिसस्थान मे स्थितहोवे उसअंग को सम अर्थात् नही दीर्घ और नही ह्रस्व जानना। यह जिसराशि में जाय उसीराशी के समान ग्रहको ह्रस्व दीर्घ मिश्र समझना ॥ ३० ॥

बुध से सातमे स्थानमें भौम स्थितहोवे तो दीर्घदेह होताहै ॥ ३१ ॥

लग्नकी राशिका स्वामि दीर्घराशि ५ । ६ । ७ । ८ का होतो दीर्घ देह होताहै ॥ ३२ ॥

॥ वामन योग. ॥

मंदात्तुर्ये चंद्रेराश्याद्यभागे वा ल्पतरराश्यंत्यभागेवामनः ३३

लग्नेशेल्पतरभे शुभदृग्घीने वामनः ॥ ३४ ॥

पृष्ठोदयगे चंद्रेतुर्यशनिदृष्टेचाजक्षेशेवामनः ॥ ३५ ॥

सिंहेऽर्काच्छौखेमृगेचंद्रेवामनः ॥ ३६ ॥

आद्यंत्येशेचंद्रेमंददृष्टेसौम्याऽदृष्टेवामनः ॥ ३७ ॥

लग्नेशेल्पर्क्षेलग्नदर्शिनि [illegible]मनः ॥ ३८ ॥

वामन योग कहतेहैं ।

टीका–शनिसें चौथे स्थानमे चंद्रमा राशिके प्रथम भागमे स्थि होवे अथवा ऱ्हस्व राशि के अंत्यभाग मे [२९] अंशमे होवेतो वा (ठिंगना) होता है ॥ ३३ ॥

लग्नेश ऱ्हस्व राशिमे स्थित होवे और उस्को शुभग्रह नहिं देख होवे तो वामन होताहै ॥ ३४ ॥

पृष्ठोदयराशी (१ । २ । ४ । ९ । १० का चंद्रमा चौथे स्थानमे श से दृष्टहोवे और लग्नेश मेष राशी का होतो वामन होताहै ॥ ३५ ॥

सूर्य शुक्र सिंहराशीमे स्थितहोवे और दसमे स्थान मे मकरराशी चंद्रमा होतो वामन होताहै ॥ ३६ ॥

लग्नतथा व्यय १२ स्थान का स्वामिचंद्रमा, शनीसे दृष्टहोवे अ शुभग्रहोंसे अदृष्टहोवे तो वामन होताहै ॥ ३७ ॥

लग्न का स्वामि ह्स्वेराशी मे स्थित होवे अथवा लग्नको देख होवे तो वामन होताहै ॥ ३८ ॥

विकलांग योग ।

केंद्रस्थाः क्रूरा विकलाङ्गः ॥ ३९ ॥

केंद्रगौ पुष्पवंतौ विकलाङ्गः ॥ ४० ॥

लग्नेशुक्रेमंददृष्टे श्रोणिभागे वैकल्यम् ॥ ४१ ॥

तुयशुक्रे मंदाराज्ञान्यतमयुतेजीवेकरचरणकट्यन्य तमेवै–
कल्पम् ॥ ४२ ॥

चंद्रेखेभौमेस्ते मंदेवेशिगे विकलाङ्गः ॥ ४३ ॥

सुतांङ्केभौमे क्रूरैर्दृष्टे हीनाङ्गः ॥ ४४ ॥

मंदेर्थे खचंद्रे ज्ञेस्ते विकलाङ्गः ॥ ४५ ॥

नीचगाः शुक्रेन्दुमंदाः कुम्भेर्के विकलाङ्गः ॥ ४६ ॥

टीका–केंद्रस्थान (१।४।७।१०) मे क्रूरग्रहस्थितहोवेतो विकलांग (विकलशरीरवाला) होताहै ॥ ३९ ॥

केंद्रस्थान १।४।७।१० मे सूर्य चंद्रमा होवे तो विकलशरीर होताहै ॥ ४० ॥

लग्नमे गयाहुवा शुक्र शनि से दृष्टहोवे तो कटि भागमे विकलता होतीहै ॥ ४१ ॥

चौथे स्थानमें शुक्र, होवे और शनि, भौम, अथवा बुध इनतीनो मे से किसीसेभी गुरु युत होवे तो हाथ, पांव, कटि, स्थानमे से किसि अेकस्थानमे विकलता होतीहै ॥ ४२ ॥

चद्रमा १० दशमे भौम ७ सातवें शनिवेशिस्थान [सूर्य से दूसरे] मे होवेतो विकलांग होताहै ॥ ४३ ॥

पांचमे तथा नवमे मंगल होवे और क्रूरग्रहो से दृष्टहोवे तो हीनांग होताहै ॥ ४४ ॥

शनि २ दूसरे चंद्रमा १० दशमे बुध ७ सातवे स्थानमे स्थितहोवे तो विकलांग होता है ॥ ४५ ॥

शुक्र चंद्र और शनि नीच राशी मे स्थित होवे और कुंभराशी का सूर्य होवेतो विकलांग होता है ॥ ४६ ॥

रक्तपित्तरोग योगः

नीचेभौमे रक्तपित्तकोपः ॥ ४७ ॥

टीका–जन्म समयमें भौम नीचराशीका होवेतो रक्तपित्त रोगका कोप होता है। अर्थात नाक, मुख, तथा मलद्वार की तरफसे रुधिर पड़ाकरता है ॥ ४७ ॥

देहदुर्गंधयोग.

मंदर्क्षेशुक्रेदेहदौर्गंध्यम् ॥ ४८ ॥

षष्टेशेज्ञर्क्षे वा नक्रे देहदौर्गंध्यम् ॥ ४९ ॥

ज्ञर्क्षेशुक्रे ज्ञयुते केंद्रे देहदौर्गंध्यम् ॥ ५० ॥

मेषगेचंद्रेङ्गे देहदौर्गंध्यम् ॥ ५१ ॥

टीका-शनि की राशी १०। ११ का शुक्र होवे तो देहमें दुर्गंध होतीहै ॥ ४८ ॥

छठे स्थान का स्वामी बुध की राशि. ३।६ का होवे अथवा मकर राशी का होवे तो देहमे दुर्गंध होतीहै ॥ ४९ ॥

बुधकी राशी ३।६ मे गयाहुवाशुक्र बुधसेयुक्तहोवे और केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवे तो देहमें दुर्गंध होतीहै ॥ ५० ॥

मेषराशी का चंद्रमा जन्म लग्नमे स्थितहोवे तो देहमे दुर्गंध होतीहै ॥ ५१ ॥

लकडी के साहरेचलने का योग.

लग्नेशेंत्ये पापयुतदृष्टे यष्टयाचलति ॥ ५२ ॥

टीका-लग्नका स्वामी १२ बारवें स्थानमें पापग्रह से युक्त तथा दृष्टहोवे तो लकडी के साहारे से चलनेवालाहोताहै ॥ ५२ ॥

विलज्जयोग.

चंद्रज्ञौभौमदृष्टौ विलज्जः ॥ ५३ ॥

शनिंदौसारेत्रिके विलज्जः ॥ ५४ ॥

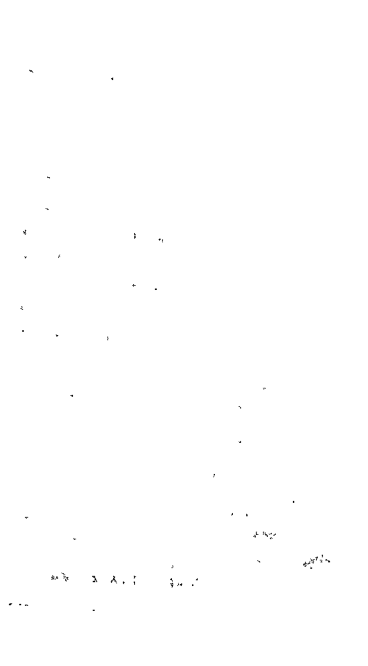
ज्ञाच्छावङ्गे भौमेस्ते विलज्जः ॥ ५५ ॥

जीवेङ्गे भौमदृष्टे विलज्जः ॥ ५६ ॥

टीका-चंद्र और बुध दोनुग्रह भौम से दृष्टहोवे तो विलज्ज होताहै ५३ शनिचंद्रमा मंगल से युक्त होकर त्रिक ६।८।१२ स्थानमे जावे विलज्ज होताहै ॥ ५४ ॥

बुध शुक्र लग्नमें और सातमें स्थानमें भौमहोवेतो विलज्जहोताहै ५५

[illegible] ॥ ५६ ॥



राहुमंदारयोगे हल्कपटी ॥ ६७ ॥

शनि मंगल और राहु इन तीनोंमें से १ अेकभी ग्रह चतुर्थ स्थानमें होतो हल्कपटी होताहै ॥ ६६ ॥

राहु शनि और मंगल इन तिनोंग्रहोंका योग(युति) होतेतो हल्कपटी होताहै ॥ ६७ ॥

निष्कपटीयोग.

सुखे स्वर्क्षोच्चगे शुभे निष्कपटी ॥ ६८ ॥

सुखेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ६९ ॥

तुर्यशुभर्क्षे मित्रान्वित दृष्टे निष्कपटी ॥७० ॥

हृदयेशे गोपुरांशे निष्कपटी ॥ ७१ ॥

पाताले मृदंशादियुते निष्कपटी ॥ ७२ ॥

लग्नेशेंबुगे शुभयुतेक्षिते निष्कपटी ॥ ७३ ॥

लग्नेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ७४ ॥

लग्नपे पारावतांशे निष्कपटी ॥ ७५ ॥

लग्नेगुरौ शुक्रदृष्टे निष्कपटी ॥ ७६ ॥

इन्द्रकौतुर्ये क्षणमात्रंकपटी उर्ध्वं निष्कपटी ॥ ७७ ॥

तुर्येतमसी पापयुतदृष्टे बहिः शुद्धोंतः कपटी ॥ ७८ ॥

तुर्ये बहुपापयुतदृष्टेपूर्ववत् ॥ ७९ ॥

टीका– स्वराशि तथा उच्चराशि में गया हुवा शुभग्रह चोथेस्थान में स्थितहोवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ६८ ॥

चोथेस्थान कास्वामी बलवान् हो तो निष्कपटी होताहै ॥ ६९ ॥

चोथेस्थान मे शुभग्रहकीराशि २।७।३।६।४।९।१२ अपने स्वामी के मित्रग्रहसे युक्त तथा दृष्ट होतो निष्कपटी होताहै ॥ ७० ॥

चोथेस्थान का स्वामि गोपुरादि अंशमें हो तो निष्कपटी होताहै ७१

चतुर्थभाव मृदंशादिक मेंहोवे तो निष्कपटी होताहै ॥ ७२ ॥

लग्नेश्वर चतुर्थ स्थानमे आवे शुभ ग्रहसेयुत तथा दृष्टहोवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७३ ॥

लग्नेश्वर बलवान् होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७४ ॥

लग्न का स्वामि पारावतादि अंशमे होवेतो निष्कपटी होताहै ७५ शुक से दृष्ट गुरु लग्नमे स्थित होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७६ ॥

चंद्रसूर्य का योग चौथे भाव मे होवे तो क्षणमात्र कपटिरहै पश्चात् निष्कपटी होताहै ॥ ७७ ॥

पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट राहु चौथे स्थानमे, स्थितहोवे तो बाहर तो निष्कपटी (शुद्ध) और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७८ ॥

चौथेस्थानमे बहुत पापग्रह युक्तहो तथा ४ स्थानकों देखते होवेतो बाहार से निष्कपटी और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७९ ॥

शूरयोग:

रात्रौ बल्यारेंगे खे वा शूरः ॥ ८० ॥

भौमेस्ते बलवान् शूरश्च ॥ ८१ ॥

टीका-बलवान मंगल, लग्नमे अथवा १० दशमे भावमे जावे और रात्रिसमय का जन्महो तो शूरवीर होताहै ॥ ८० ॥

सातवे स्थानमे मंगल स्थितहोवेतो बलवान और शूर होताहै ॥८१॥

दूसरे ग्रंथोमे लिखाहै तथा अनुभव से देखनेमे आयाहै कि जिसके जन्म लग्नसे तीसरे ३ छठे ६ ग्यारवें ११ स्थानमे भौम शनि रवि राहु स्थित होतेहै वह शूरवीर उद्योगी साहसी हिंमतवान् पराक्रमी होताहै।

कातरयोग.

निर्बलारेणांगे दृष्टे कातरः ॥ ८२ ॥

रात्रौशनौ दशमे कातरः ॥ ८३ ॥

स्वर्क्षगभौमदृष्टेंगे कातरः ॥ ८४ ॥

अंशाद्रिकमेपापेशूरःशुभेकातरः ॥ ८५ ॥

टीका-जन्मलग्नकों निर्बली मंगल देखताहो तो कातर (डरपोक) होताहै ॥ ८२ ॥

रात्रि समय मे जन्महो शनि दशमेस्थानमे स्थितहोतो का(तर)
(डरपोक) होताहै ॥ ८३ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नको देखता होतो कातर होताहै ८(४)

कारकांसश लग्नसे ३ तीसरे स्थानमे पापग्रह स्थितहोतो शूरहो(ता)
और शुभग्रह स्थितहो तो कातर होता है ॥ ८५ ॥

क्रोधियोगः

दिवाबल्यारे खेगे क्रोधी ॥ ८६ ॥

लग्ने अस्ते वा निर्बलारे शनिदृष्टे क्रोधी ॥ ८७ ॥

लग्नेभौमे क्रोधी ॥ ८८ ॥

द्यूनेबलवति भौमे क्रोधी ॥ ८९ ॥

त्रिकोणेल्पवीर्ये राशिपे क्रोधी ॥ ९० ॥

अन्त्याष्टमेङ्गेशे क्रोधी ॥ ९१ ॥

धनेशे गुलिकान्विते क्रोधी ॥ ९२ ॥

टीका- दिनकाजन्म होवे और बल वाले मंगल १० दश मे अथव
१ लग्न मे स्थितहो तो क्रोधी होताहै ॥ ८६ ॥

लग्नमे अथवा सात वे स्थानमे निर्बली मंगल होवे शनि देखत
होतो क्रोधीहोताहै ॥ ८७ ॥

लग्नमे मंगल होतो क्रोधी० ॥ ८८ ॥

सातवे स्थानमे बलवान मंगल होवेतो क्रोधी होताहै ॥ ८९ ॥

जन्म राशिका स्वामी निर्बली होके त्रिकोणस्थान (९।५) में स्थित
होतो क्रोधी० ॥ ९० ॥

लग्न कास्वामि बारवें तथा आठमे स्थानमे जावेतो क्रोधी० ॥ ९१ ॥

धन २ स्थान का स्वामि गुलिकसे युक्तहो तो क्रोधी होताहै ॥ ९२ ॥

कलहप्रियंयोग

केतु युते मोन्धे कलह प्रियः ॥ ९३ ॥

(टीका)- तीसरेस्थान मे केतु युक्त होतो कलह प्रिय होताहै ॥ ९३ ॥

क्षमावान्योग

कर्कालिझषेर्के भौमदृष्टे क्षमावान् ॥ ९४ ॥

तुर्येशेङ्गे वा लग्नेशे तुर्ये क्षमावान् ॥ ९५ ॥

सबलेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९६ ॥

शुभेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९७ ॥

टीक- कर्क वृश्चिक मीनराशि मे गयाहुवा सूर्य भौमसे दृष्टहोवेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९४ ॥

चौथेस्थान का स्वामि लग्नमे अथवा लग्न का स्वामि चौथेस्थान मे जावेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९५ ॥

चौथास्थान बलवान् हो (स्वामि से तथा गुरुबुध सेयुक्त दृष्ट होवे) तो क्षमावान् होताहै ॥ ९६ ॥

शुभग्रह चौथेस्थान मे स्थित होवेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९७ ॥

हास्यासक्त योग

शनिग्रहे ज्ञारो हास्यासक्तः ॥ ९८ ॥

ज्ञेङ्गेऽस्तेजीवे हास्यासक्तः ॥ ९९ ॥

ज्ञांशेगे हास्यासक्तः ॥ १०० ॥

टीका-बुध मंगल कार्यगमकर अथवा कुंभराशी मे होवेतो हास्या सक्त(हसीखुसी मे रहनेवाला) होताहै ॥ ९८ ॥

लग्नमें बुध और सात मे गुरु स्थित होवेतो हास्या० ॥ ९९ ॥

बुधकी राशि ३।६ का नवांश लग्नमें होवेतो हास्या सक्त होताहै १००

द्रोहीयोग.

सोत्थेभौमे ज्ञचंद्र दृष्टे द्रोही ॥ १०१ ॥

लग्नेशेऽते षष्ठे द्रोही ॥ १०२ ॥

लग्नेशे निर्बले द्रोही ॥ १०३ ॥

टीका-तीसरेस्थानमें मंगल होवे औरउसको बुध चंद्र देखते होतो द्रोही होताहै १०१

गोपालयोग

अंशात्वे जीवार्कमात्रदृष्टे गोपालः ॥ १२३ ॥

टीका– कारकांश लग्न से १० दशम स्थान कों गुरु सूर्य के शिवाय और कोई ग्रह नहिदेखते होवे (अर्थात् गुरु सूर्य ही देखतेहो) तो गोपाल न करनेवाला होताहै ॥ १२३ ॥

अविश्वासीयोग

अशांद्धर्मे जीवार्कावविश्वासी ॥ १२४ ॥

टीका– कार कांश लग्न से नवमे स्थानमें गुरुसूर्य स्थितहोवे त अविश्वासि (किसीपर भरोसा नही रखनेवाला) होता है ॥ २४ ॥

कामीयोग.

उच्चगे वा नीचगे वा सिंहपूर्वार्द्धे शुक्रेत्रिकेकामी ॥१२५।

स्वांशे शुक्रे कामी ॥ १२६ ॥

पापदृष्टे शुक्रे कामी ॥ १२७ ॥

युग्मे स्वर्क्षे वा शुक्रे कामी ॥ १२८ ॥

स्वांगमुतेपुधनेशे कामी ॥ १२९ ॥

टीका–वृषराशी (१२)का शुक्र ६ । ८ । १२ जावे १ अथवानीच राश (६) का शुक्र ६।८।१२ में जावे २ वा सिंहराशि के पूर्वार्द्ध (१५ अंशके भीतर) में गयाहुवाशुक त्रिकस्थान (६।८।१२) में स्थितहोवे ३ तो कामी होताहै इस सूत्रमे ३ योग कहेहै ॥ १२५ ॥

स्वनवांश का शुक्रहोवे तो कामी होताहै ॥ १२६ ॥

शुक्र को पापग्रह देखते होवे तो कामी होताहै ॥ १२७ ॥

मिथुनराशि में अथवा स्वराशि २।७ में शुक्रस्थित होवे तो कामी होताहै ॥ १२८ ॥

धन (२) स्थानका स्वामी दसवे १० स्थानमे १ अथवा पांचवे ५ वे स्था में तो कामी होताहै ॥ १२९ ॥

आर्तिकामीयोग

कामुकः ॥ १३० ॥

भौमाच्छयुतो जीवेचारीशे कामाधिक्यं ॥ १३१ ॥

टीका-सात मे स्थानमे शुक हौवेतो अति कामी होताहै ॥ १३० ॥
मंगलशुक्रकायोग कोईभस्थानमे होवे और छठेस्थान कास्वामी
रुहेत तो अतिकामी होताहै इसयोगका संभव कर्क तथा तुललग्न
जन्म पाने वाले कों ही होताहै ॥ १३१ ॥

अल्पकाम वा अल्पवीर्य योग

शनिर्धनुर्विपेलग्ने ऽल्पकामः ॥ १३२ ॥
विषमोदयगेशुक्रेल्पवीर्यः ॥ १३३ ॥
तुर्ये चंद्रशनि अल्पवीर्यः ॥ १३४ ॥
शुक्रेस्तेंगेशद्रष्टेऽल्पवीर्यः ॥ १३५ ॥
शुक्रर्क्षेचंद्रेल्पवीर्यः ॥ १३६ ॥

टीका-धन अथवा वृषभ राशिके लग्नमे शनि स्थित होवेतो अल्प कामी होता है ॥ १३२ ॥
विषम राशो (१।३।५।७।९।११) के लग्नमे शुक्रहोवे तो अल्प वीर्य होता है ॥ १३३ ॥
चंद्र और शनि चोथे स्थानमे युक्तहोवे तो अल्प वीर्य होताहै १३४
सातमे स्थानमे गये हुवे शुक्र कों लग्न का स्वामी देखताहोवे तो अल्प वीर्य होता है ॥ १३५ ॥
शुक्र की राशी २।७ का चंद्रमा होवे तो अल्प वीर्य होता है ॥ १३६ ॥

नपुंसक योग

मंदाच्छौखेरंध्रे वा शुभद्रष्टिराहित्येपण्ढः ॥ १३७ ॥
षष्ठांत्येजलर्क्षेमंदेशुभद्रग्यीनेपण्ढः ॥ १३८ ॥
चंद्रार्कौवामंदज्ञौवाभौमार्कौ युग्मोजर्क्षगा वन्योन्यं पश्यतः
पण्ढः ॥ १३९ ॥
ओजर्क्षगे समर्क्षगभौमेक्षिते पंण्ढः ॥ १४० ॥

चंद्रज्ञौ युग्मौजर्क्षगौ भौमेक्षितौ पंढः ॥ १४१ ॥
पुंभागासितेन्द्वंगानि पंढः ॥ १४२ ॥
मंदाच्छौखे पंढः ॥ १४३ ॥
शुक्रात्पष्टेष्टमेमन्दे पंढोवाताद्दशः ॥ १४४ ॥
अंशेकेतौ मंदज्ञदृष्टेपंढोवाताद्दशः ॥ १४५ ॥
मंदाच्छौ शुभदाग्घी नौरन्ध्रगौ पण्ढो वा तादृशः ॥ १४६ ॥
पष्टांत्येनीचगेमंदेपंढो वा तादृशः ॥१४७ ॥

टीका—शनि और शुक्र ये दोनो दशमे अथवा आठवे स्थान मे स्थि त होवे और शुभग्रहोसे अदृष्टहोवे तो नपुंसकहोता है ॥ १३७ ॥

जलराशि मे गयाहुवा शनि छठे अथवा बारवे स्थान मे होवे और उसपर शुभग्रह की दृष्टिनहि होवेतो नपुंसकहोताहै ॥ १३८ ॥

चंद्र रवि अथवा शनि बुध अथवा मंगल रवि येग्रह क्रमसे सम और विषमराशि मे स्थितहोके परस्पर देखते होवेतो नपुंसकहोताहै अर्थात् चंद्रसमराशिका रवि विषमराशिकाहोवे अथवा शनिसमराशि का और बुधविषमराशिका होवे अथवा मंगल समराशिका और रवि विषमराशिका होवे और ये प्रत्येक परस्पर पूर्णदृष्टिसे देखतेहोवेतो इन तीनों योग मे से अेकभी योगमे जन्महोनेसे नपुंसक होताहै ॥१३९॥

विषमराशि का लग्न समराशि २।४।६।८।१०।१२ मे गयहुवे भौम से दृष्टहोवे तो नपुंसक होताहै ॥ १४० ॥

समराशि का चंद्रऔर विषमराशि का बुधहोवे इनदोनोकों मंगल देखताहोवे तो नपुंसक होताहै ॥ १४१ ॥

शुक्रचंद्र और लग्न येतीनो पुरुषराशि १।३।५।७।९।११ के नवांश मे होवेतो नपुंसक होताहै ॥ १४२ ॥

शनि और शुक्र येदोनो दशमे होवेतो नपुंसक होताहै॥ १४३ ॥

शुक्र से छठे आठवे स्थान मे शनी होवे तो नपुंसक अथवा नपुं सक के समान होताहै ॥ १४४ ॥

कारकांश लग्नमे केतुहोवे और वह शनि बुधसेदृष्ट होवेतो नपुंसक या नपुंसक के समान होताहै ॥ १४५ ॥

शनिशुक्र आठमे स्थानमे स्थित होवे और इनदोनोको शुभग्रह नहीं देखते होवे तो नपुंसक वा नपुंसक के समान होताहै ॥ १४६ ॥

नीचराशिमे स्थित शनि छठे तथा वारवें स्थान में होवे तो षंढ अथवा षंढ के समान होताहै ॥ १४७ ॥

वीर्यच्युति योग

राहौशुक्रेर्कजेवोच्चगेकर्कर्के मेषेचंद्रे वीर्यच्युतिः॥ १४८॥

लग्नेचंद्रे गुर्वर्कजौसुते वीर्यच्युतिः॥ १४९ ॥

कन्योदये मंदज्ञदृष्टे मन्दर्क्षेशुक्रे वीर्यच्युतिः॥ १५० ॥

टीका-राहु शुक्र अथवा शनि अपनी उच्चराशिमे होवे और कर्कराशि का सूर्य मेषकाचंद्रमा होवेतो वीर्यश्राव होतारहताहै ॥ १४८ ॥

लग्नमे चंद्रमा और गुरुशनि पांचवे स्थानमे स्थित होवे तो वीर्यच्युति (विर्यश्राव) होतारहता है ॥ १४९ ॥

कन्याराशी के लग्नकों शनिबुध देखते होवे और शनिकि राशि १०।११ काशुक्रहोवे तो वीर्यच्युतिहोतीहै ॥ १५० ॥

यह योगजिसको होताहै इसके पेशाबमें बाल्यममें वा स्त्रीकेदर्शन स्पर्श मात्रसेहिवीर्यश्रावहोजायाकरताहै

उन्मादयोग

ईज्येङ्गे कुजेस्ते उन्मादी ॥ १५१ ॥

लग्नेशेना मंदत्रिकोणे कुजे उन्मादी ॥ १५२ ॥

मन्देङ्गे व्ययेर्के कोणेचंद्रे वा भौमे उन्मादी ॥ १५३ ।

मृढेनीचेपष्ठे सोत्थेशे पापदृष्टे गरलज उन्मादः॥ १५४ ।

भौमेस्ते जीवेङ्गे उन्मादी ॥ १५५ ॥

क्षीणेंद्वर्कजावंत्ये उन्मादी ॥ १५६ ॥

मंदार्थेशौ सपापौ वातज उन्माद ॥ १५७ ॥

धनेशार्कजौसूर्ययुतौ राजकोपजउन्मादः॥ १५८ ॥

धर्मार्थेशौ भौमयुतौ पित्तज उन्मादः ॥ १५९ ॥

चंद्राकौकोणाङ्गगौकेंद्रेजेवियमारक्षणवारेउन्मादः॥१६०।

इद्वर्केजौलग्ने ज्ञद्रष्टौ विन्हलः ॥ १६१ ॥

टीका-लग्नमे गुरु और सातमे मंगलहोवेतो उन्मादि (विक्षिप्त) होताहै ॥ १५१ ॥

लग्नमे शनि सातवें अथवा नवमे पांचवे मंगलहोवे तो उन्मादि होताहै ॥ १५२ ॥

लग्नमे शनि, बारवे सूर्य, नवमे पांचवे चंद्र, अथवा मंगल स्थितहोवे तो उन्मादी होताहै ॥ १५३ ॥

तीसरे स्थानका स्वामी अस्तका, अथवा नीचराशीका छठे स्थान मे होवे और पापग्रह से दृष्टहोवे तो जहरखानेसे उन्माद होताहै ॥ १५४ ॥

सातमे मंगल और लग्नमे गुरु होवेतो उन्मादी होताहै ॥ १५५ ॥

क्षीणचंद्र और शनि येदोनुबारव स्थानमेहोवे तो उन्माद होताहै॥ १५६॥

शनि और धनस्थानका स्वामि ये दोनो पापग्रहसे युक्तहोवे तो वायुसे उन्माद होताहै ॥ १५७ ॥

धनेश और शनि ये दोनो सूर्य से युक्तहोवेतो राजकोपसे उन्माद होता है ॥ १५८ ॥

शनि और धनस्थान का स्वामि ये दोनो मंगल से युक्तहोवे तो: पित्तजन्य उन्माद होताहै ॥ १५९ ॥

चंद्र और सूर्य दोनो नवमे पांचवे अथवा लग्नमे होवे और केंद्र १।४।७।१० मेगुरु होवे जन्मसमय मे शनि अथवा मंगल की काल होरा होवे या शनि मंगलवार कोदिन जन्म होवे तो उन्माद होताहै ॥ १६० ॥

चंद्र शनि लग्नमे होवे और बुध इनको देखताहोवे तो विन्हल (भ्रमिष्ट) होताहै ॥ १६१ ॥

शीघ्रवार्धक्य चिन्होदय योग

धनेकेतौ शीघ्रवार्धक्यचिन्होदयः ॥ १६२ ॥

टीका-धनस्थानमे केतु होवेतो शीघ्रवृद्धावस्था के चिन्ह उदय होताहै ॥ १६२ ॥

महाति वृद्ध योग

।२६१ केन्द्या लग्नगा प्रकृति वृद्धः ॥ १६३ ॥

टीका-राहु शनि सूर्य गुरु ये चारों लग्न मे होवे तो प्रकृति (वृद्ध स्वाभाविकवृद्ध) होताहै ॥ १६३ ॥

नातिवृद्धनयुवा योग

चंद्राच्छौलग्ने नातिवृद्धो नयुवा ॥ १६४ ॥

टीका-चंद्र शुक्र लग्नमे होवेतो नतोअधिक वृद्ध और नअति (जवानही (मध्यावस्थाका) होताहै ॥ १६४ ॥

वृद्धभी तरुण के समान रहनेका योग.

सबलेभौमेलाभे वृद्धोपितरुणायते ॥ १६५ ॥

टीका-बलवान मंगल लाभ ११ भावमें होवेतो वृद्धावस्थाहोवेतोभी (त)रुणके समान रहताहै ॥ १६५ ॥

रसायन व्यसनी योग.

खे सुखेशे रसायनव्यसनी ॥ १६६ ॥

सुखेशे विबले रसायनव्यसनी ॥ १६७ ॥

टीका-चौथे स्थानका स्वामि १० दशमे स्थानमे होवेतो धातु उपधातु की रसायन बनाना तथा उसका सेवन करने मे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै ॥ १६६ ॥

चौथे स्थानका स्वामि निर्बली होवेतोधातु उपधातु की रसायन बनाना तथा उसका सेवन करनेमे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै १६७

बहुभुक्योग.

सपापे अर्थेशे बहुभुक् ॥ १६८ ॥

सपापेर्थे क्रूरषष्ठयंशे बहुभुक् ॥ १६९ ॥

टीका-धन २ स्थानका स्वामि पापग्रहसे युक्तहोवे तो बहुत भोजन करनेवाला होताहै ॥ १६८ ॥

धन २ स्थान पापग्रहसे युतहोवे और क्रूरषष्ठ्यंशमे होवेतो अधिक भोजन करने वाला होताहै ॥ १६९ ॥

सुखभुक् योग.

सशुभे धनेशे सुखभुक् ॥ १७० ॥

धनेशुभे पापदृग्घीने सुखभुक् ॥ १७१ ॥

धनेशुभदृष्टचाधिक्ये सुखभुक् ॥ १७२ ॥
धनेशे बलवति सुखभुक् ॥ १७३ ॥
वैशेषिकांशेर्थगे वा गुरुदृष्टे सुखभुक् ॥ १७४ ॥

टीका-धनेशशुभग्रहसे युतहोवेतोसुखसे भोजन करनेवाला होताहै
धन २ स्थानमें शुभग्रह होवे और धनस्थान को पापग्रह नहिं दे
हो ये तो सुखसे भोजन करने वाला होताहै ॥ १७१ ॥
धन २ स्थानपर शुभग्रह की अधिक दृष्टि होवेतो सुखसे भोजन क
वाला होताहै ॥ १७२ ॥
धन २ स्थान का स्वामि बलवान होवेतो सुखसे भोजन करने वा
होताहै ॥ १७३ ॥
धनेश वैशेषिकांश (संज्ञाध्यायमेंसूत्र २१ मे कहाहै) मे होवे अथ
धनेश को गुरु देखताहोवेतो सुखसे भोजन करनेवाला होताहै ॥१७४

श्राद्धान्न भोजनकर्तायोग.

धनेशे मंदे नीचगे गुलिक युते सततं श्राद्धभुक् ॥ १७५ ॥

टीका-धन २ स्थान का स्वामि शनि नीचराशि मे होवे और गुलिक
युक्त होवे तो निरंतर श्राद्धान्न भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७५ ॥

अल्पभुकयोग.

धनेशे शुभे वा स्वोच्चे शुभदृष्टेऽल्पाशी ॥ १७६ ॥

टीका-धन २ स्थान का स्वामि शुभग्रह होवे १ अथवा अपनी उच्चराशि
का होवे और शुभ ग्रह से दृष्ट होवे २ तोअल्पभोजनकरनेवाला
होताहै ॥ १७६ ॥

शीघ्र भुक् योग.

सबलेर्थेशे सशुभे शीघ्रभुक् ॥ १७७ ॥
धनेशे चरभे शीघ्रभुक् ॥ १७८ ॥
धनेशुभर्क्षे शुभदृष्टे शीघ्रभुक् ॥ १७९ ॥

टीका-धन २ स्थानका स्वामि बलवान होवे और शुभग्रह से युत हो
तो शीघ्र भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७७ ॥
धन २ स्थान का स्वामि चर राशि १।४।७।१० काहोवेतो जल्दि भोज

न करने वाला होता है ॥ १७८ ॥

धन २ स्थान का स्वामि शुभग्रह की राशि का होवे और शुभग्रह उसको देखतेहोवे तो जल्दी भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७९ ॥

चिरभुक् योग

कोशेपापर्क्षे पापयुतदृष्टे चिरभुक् ॥ १८० ॥

धनेशे स्थिरर्क्षे चिरभुक् ॥ १८१ ॥

टिका-धनभावमे पापग्रह की राशिहोवे और पापग्रह युक्त तथा देखते होवेतो देरतक भोजन करनेवाला होताहै ॥ १८० ॥
धनस्थानकास्वामी स्थिर २।५।८।११ राशिका होवेतो देरतक भोजन करने वाला होता है ॥ १८१ ॥

कदन्नभुक् योग

गुळिकारयोगे कदन्नभुक् ॥ १८२ ॥

टीका-गुलिक और मंगल का योग होवेतो दुष्टान्न (खराबअन्न) भोजन करने वाला होताहै ॥ १८२ ॥

भोजनशूर

लग्नेजीवे भोजनशूरः ॥ १८३ ॥

टीका-लग्नमेगुरुहोवे तो भोजनमेशूर (भोजन करने मे बहादुर) होताहै ॥ १८३ ॥

धीरयोग

भ्रातृपेबलिनिकेंद्रकोणगे सौम्यदृष्टवैशेषिकांशे धीरः १८४

विक्रमेशे शुभर्क्षांशे शुभदृष्टयुते धीरः ॥ १८५ ॥

विक्रमार्केश योगे धीरः ॥ १८६ ॥

सोत्थेशेन्दुयोगेधीरः ॥ १८७ ॥

टीका-तीसरे स्थान का स्वामि बलवान होकर केंद्र कोण १।४।७।१०।९।५ स्थानमे होवे शुभग्रह से दृष्टहोवे वैशेषिकांशमे होवे तो धीर (धैर्यवान्) होताहै ॥ १८४ ॥

तीसरे स्थानका स्वामि शुभग्रह की राशि और शुभग्रहके नवमां

शमें होवे शुभग्रहसे युतदृष्ट होवे तो धीर होताहै ॥ १८५॥

तीसरे ३ और १२ बारमे स्थान के स्वामि का योग होवेतो धीर होताहै ॥ १८६ ॥

तीसरे ३ स्थान के स्वामि से चंद्र का योग होवे तो धीर होताहै ॥ १८७ ॥

पिशुनयोग.

सुतेगेशेपिशुनः ॥ १८८ ॥

पापेङ्गेशेपिशुनः ॥ १८९ ॥

पापदृष्टयाधिकेङ्गे पिशुनः ॥ १९० ॥

टीका-लग्नका स्वामि ५ पांचवे होवेतो चुगलखोर होताहै ॥१८८॥
लग्नका स्वामि पापग्रह होवेतो चुगलखोर होताहै ॥१८९॥
लग्नपर पापग्रहो कि दृष्टि अधिक होवेतो चुगलखोर होताहै १९०

चाण्डालयोग.

पापदृष्टेजीवे सतमसी चाण्डालता ॥ १९१ ॥

नीचभांशेजीवे चाण्डालता ॥१९२॥

टीका-गुरु, राहुसेयुक्तहोवे और उस्को पापग्रह देखता होवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै ॥१९१॥
नीचराशि और नीच नवांशमें गुरुहोवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै१९२

पिशाचजन्मयोग.

ग्रस्तेचंद्रेङ्गे पापाःकोणे पिशाचजनिः ॥ १९३ ॥

टीका-ग्रहणसमय का चंद्रमा लग्नमे होय और ९।५ नवमे पांचवे स्थान मे पापग्रह आय तो पिशाच प्रकृतिवाला जन्मताहै ॥ १९३ ॥

शिल्पियोग.

केंद्रमंदे ज्ञयुते शिल्पी ॥ १९४ ॥

मबलेज्ञे केंद्रे शिल्पि ॥ १९५ ॥

ज्ञेज्यज्ञयोगे शिल्पि ॥ १९६ ॥

टीका-केंद्र१।४।७।१० मे शनि, बुधसेयुक्तहोवेतो शिल्पकार्य करनेवाला होताहै ॥ १९४ ॥
बलवान बुध १।४।७।१० मे स्थानमे होवेतो शिल्पज्ञ होताहै १९५ गुरु और बुधका योग होवेतो शिल्प जाननेवाला होताहै ॥१९६॥ सुथारसिलावट केतयाकलावेगेरा हुनर के कामको शिल्प विद्या कहेतहै

क्षारादिपदार्थ प्रिययोग

ज्ञेज्यौषष्ठे उपदंशप्रियः ॥१९७॥

टीका-छठेस्थानमे बुध बृहस्पति होवेतो अच्छे क्षार पदार्थोंकोप्रिय माननेवाला होताहै ॥ १९७ ॥

सर्वार्थचिंतामणीमेंदूसरेयोगभीकहेहै छठेबुधशुभग्रहसेदृष्टहोवे और षष्ठेशशुभ युक्तहोवे परंतु पापग्रहोके मध्यमे स्थितहोवेतो अच्छे क्षार पादार्थोको प्रियमाननेवालाहोताहै १ छठे गुरु अथवा बुधकी राशीमृद्वंशादिकमे होतो क्षारवस्तुप्रियमाननेवालाहोताहै २

मधुरादिपदार्थप्रिययोग.

षष्ठेशेजीवे शुक्रेवा मधुरादिप्रियः ॥ १९८ ॥

सशुभेज्ञे मधुरप्रियः ॥ १९९ ॥

टीका-छठेस्थानका स्वामि गुरु अथवा शुक्र होवेतो मधुरादि (मीठे-आदि) पदार्थ प्रियमाननेवाला होताहै ॥ १९८ ॥
बुध शुभग्रहसेयुक्त होवेतो मीठा पदार्थ प्रियमानने वाला होताहै१९९ ग्रंथांतरमेंकहाहै कि षष्ठेशगुरु वा शुक्र गोपुरादिअंशकमेहोवेतो मीठा आदिपदार्थ प्रियमाने अथवा शुभग्रह से युक्तशुक्र छठेस्थानमें स्थित होवे २ वा शुभके नवांशमे शुक्रहोवे और शुभग्रहोसेदृष्टहोवेतो ३ वा शुक्र बलवानहोवे बुधसे युतहोवे और पारावतादि शुभनवांशमे स्थित होवेतो नित्य मीठापदार्थका भोजन करनेवाला होताहै ४

मधुरे अरुचि, अम्लपदार्थेच रुचियोग.

सपापेज्ञे मधुरेऽरुचिः ॥ २०० ॥

टीका-पापग्रह से युक्तबुध होवेतो मीठेपदार्थपर अरुचिवालाहोताहै२०० ग्रंथांतरमें कहाहै कि बुध पापग्रहसे दृष्टहोवेतो मीठेपदार्थपर अरुचि

रखनेवाला होताहै १ बुध सहित शुक्र छठे भावमे होवेतो यह मनु खट्टा पदार्थ खानेवाला होताहै २ छठेस्थानमे शुक्र मंगलसे युत होवे १ अथवा छठेस्थानमे शुक्रहोवे और उसको मंगल देखताहोवेतो अथवा छठेगये हुवे शुक्रकोसूर्य देखताहोवेतो ३ यहमनुष्य खट्टापद (दहि इमलि निंबु कढी आदि खट्टेपदार्थ) खानेवाला होताहै.

नीचकर्मा, नीचपथग, म्लेच्छ योग.

लग्नेर्कजत्र्यंशे केंद्रगचंद्रदृष्टे नीचकर्मा ॥२०१॥

द्यूनेर्केलग्नेमन्दे पुण्येसोत्थे भौमे श्रेष्टवर्णोपिनी चपथगः२०

मंदार्कावेकर्क्षगौत्र्यंशे नवांशे त्रिंशांशे वा नीचयोपानुषंङ्ग

न्म्लेच्छोभवति ॥ २०३ ॥

टीका-लग्नमे शनिका द्रेष्काणहोवे और १।४।७।१० मे स्थान गया हुवा चद्र देखताहोवेतो नीचकर्म करनेवाला होताहै ॥२०१.

सातमे सूर्य लग्नमेशनि और ९।३ नवमे तथा तीसरे स्थानमे मंग स्थितहोवेतो उत्तम वर्गकाहो तथापि नीचमार्गमे चलनेवाला होताहै २०

शनि और सूर्य दोनो एकराशिके होवे१ अथवा एकराशिके द्रेष्काणमे वा एकराशिके नवांशमे ३ वा एकराशिके त्रिंशांशमे ४ होवेतो नी जातिकी स्त्रीके संगसे म्लेच्छ होजाताहै ॥ २०३ ॥ टीप-इससूत्र चारयोग कहेहै इन चारयोगमसे जिसके दो योगसे जितने अधिक होवे उतनाहि ये योग बलवान जानना केवल शनि सूर्य दोनो अ राशि के होजाने से ये योग नहि मिलेगा

ज्ञातिपीडायोग.

षष्टाङ्गेशौ लग्नगौ ज्ञातिपीडा ॥ २०४ ॥

लग्नेशेषष्ठे षष्ठेशदृष्टे ज्ञातिपीडा ॥ २०५ ॥

शुक्रेज्यौलग्नेषष्ठेशयुतौ शन्यारतमोदृष्टौ ज्ञातिपीडा २०६

टीका-लग्नेशऔरछठेस्थानकास्वामि ये दोनो लग्नमे होवेतो ज्ञातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०४॥

लग्नेश छठे स्थानमेहोवे और उसको छठे स्थानका स्वामि देखता ...तो ज्ञातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०५ ॥

षष्ठांशसे युक्त शुक्र गुरु लग्नमें स्थितहोवे और इनको शनि मंगल राहु देखतेहोवें तो ज्ञातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०६ ॥

जातिच्युतियोग.

लग्नेशाद्वा लग्नात्त्रिकर्गः पापैर्जातिच्युतिः ॥ २०७ ॥

ज्ञेन्दुर्कजा नीचारिभागगा जातिच्युतिः ॥ २०८ ॥

टीका-लग्नसे अथवा लग्नेशसे ६।८।१२ स्थानमें पापग्रह स्थित होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०७ ॥

बुध, चंद्र, शनि, ये तीनों नीच तथा शत्रु राशिके नवमांशमें होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०८ ॥

जातिपोष्ययोग.

इन्द्वर्कजौ मित्रर्क्षे जातिपोष्यः ॥ २०९ ॥

टीका-चंद्रशनिमित्रराशिकेहोवेतोजातिकोपोषणकरनेवाला होताहै ॥ २०९ ॥

कौतुकियोग.

लाभेशेऽङ्गे कौतुकि ॥ २१० ॥

लाभेशेशुभे वा सबले कौतुकी ॥ २११ ॥

लाभेशुभे कौतुकि ॥ २१२ ॥

टीका-लाभ ११ स्थानका स्वामि लग्नमेंहोवेतो कौतुकिहोताहै २१० लाभस्थानकास्वामिशुभग्रहहोवे व बलवानहोवेतो कौतुकि (खिलाडी) होताहै ॥ २११ ॥

ग्यारमें स्थानमें शुभग्रह स्थितहोवेतो कौतुकि होताहै ॥ २१२ ॥

आलसियोग.

ईज्यमन्दयोगे अलसः ॥ २१३ ॥

लग्नेशे मंदान्विते अलसः ॥ २१४ ॥

लग्नेशे निर्बल अलसः ॥ २१५ ॥

लग्नेशापदृष्ट्याधिक्ये अलसः ॥ २१६ ॥

टीका-गुरु.शनिका योग होवेतो आलसी होताहै ॥ २१३ ॥
लग्नेश्वर शनीसे युत होवेतो आलसी होताहै ॥ २१४ ॥
लग्नेश्वर निर्बली होवेतो आलसी होताहै ॥ २१५ ॥
लग्नपर पापग्रहोंकि दृष्टि अधिकहोवेतो आलसी होताहै ॥२१६॥

कृषिकर्तायोग

अंशाद्धर्मे जिवे कृषिकर्ता ॥ २१७ ॥

अंशादरिगौ पापौ कृषिकर्ता ॥ २१८ ॥

टीका-कारकांशलग्नसे नवमेस्थानमे गुरु होवेतो खेतिकरनेवाला होताहै ॥ २१७ ॥

कारकांश लग्नसे छठे स्थानमे २ दो पापग्रह स्थितहोवेतो खेति करने वाला होताहै ॥ २१८ ॥

खल्वाटयोग

धनुषि वृषेङ्के क्रूरैर्दृष्टेखल्वाटः ॥ २१९ ॥

सपापे पापर्क्षेङ्के खल्वाटः ॥ २२० ॥

कर्केचंद्रे भौमदृष्टे सिंहचापाल्यंगनालग्ने खल्वाटः २२१

टीका-क्रूरग्रहोंसे दृष्ट धन तथा वृषभ लग्नहोवेतो खल्वाट(गंजा) होताहै ॥ २१९ ॥

पापग्रहकि राशिका लग्नपापग्रहसे युक्तहोवेतो खल्वाट होताहै २२०

कर्कराशिमेंगयाहुवा चंद्रमा मंगलसे दृष्टहोवे और ५।९।८।६ राशि का लग्नहोवेतो खल्वाट होताहै ॥ २२१ ॥

शोभननेत्रयोग

नेत्रेशुभे नेत्रेशेचशुभान्वितेङ्केशयुतेशोभननेत्रः २२२

टीका-नेत्रस्थान २।१२ में शुभग्रहहोंर, नेत्रस्थानका स्वामि शुभग्रहसे और लग्नेशसे युक्तहोवेतो अच्छेनेत्रवाला होताहै ॥ २२२ ॥

बुद्बुदलोचन योग.

[illegible]लग्ने मित्रदृष्टेबुद्बुदलोचनः ॥ २२३ ॥

[illegible] और सूर्य लग्नमेंस्थितहोके मित्र (शुभग्रह) दृष्टहो बुद्बुदलोचन (बीरहेनेत्रका) होताहै ॥ २२३ ॥

मिलिताक्षयोग

धने वा व्ययेपापे मिलिताक्षः ॥ २२४ ॥

टीका-दूसरे अथवा बारवें स्थानमे पापग्रह होवेतो मिलिताक्ष होताहै ॥ २२४ ॥

विकलनयनयोग.

सक्रूरार्केन्त्ये वात्रिकोणे विकलनयनः ॥ २२५ ॥

टीका-क्रूरग्रहसेयुत सूर्य बारवेस्थानमे अथवा ९।५ वें स्थानमे होवे तो विकलनेत्र होताहै ॥ २२५ ॥

मंदलोचनयोग.

धनेवाव्येशुक्रे पापयुते काणो वा मंदलोचनः ॥२२६॥

टीका-दूसरे अथवा बारवें स्थानमे शुक्र पापग्रहसे युक्त होवेतो काणा [अेकचक्षु] अथवा मंददृष्टिवाला होताहै ॥ २२६ ॥

वक्रनेत्रयोग.

पुष्पवंतावमदृष्टौ वक्रर्क्षगौ व त्रिके वक्रनेत्रः ॥२२७॥

चंद्रारावेकभागेऽक्षणोश्चिन्हम् ॥ २२८ ॥

टीका-सूर्य और चंद्रमा ये दोना वक्रीग्रहकी राशिमे स्थित होवे और पापग्रह से दृष्टहोवे १ अथवा ६।८।१२ स्थानमेस्थितहोवे तो वक्र नेत्र (टेढेनेत्र) होतेहै ॥ २२७ ॥

चंद्र, और मंगल दोना अेक नवांशमें (बहुतसमीप २ अंशके, अेकराशिमे) होवेतो नेत्रोमे चिन्हहोताहै ॥ २२८ ॥

नेत्ररोगीयोग.

षष्ठेशेवक्रगर्क्षेऽक्षिरोगी ॥ २२९ ॥

ज्ञारर्क्षेलग्नपे ज्ञारदृष्टेऽक्षिरोगी ॥ २३० ॥

रंध्रांगेशौषष्ठे सव्यनेत्ररोगः ॥ २३१ ॥

षष्ठेष्टमेशुक्रे दक्षिणनेत्ररोगः ॥ २३२ ॥

धनेशेशुभेक्षिते लग्नेशो पापयुते सरोगनेत्रः ॥ २३३ ॥

मंदारगुलिकयुते नेत्रेशे नेत्रेरोगः ॥ २३४ ॥
नेत्रेपापा यमदृष्टा नेत्रे रोगक्षतंभवेत् ॥ २३५ ॥
नेत्रेशांशेशेपापर्क्षे रोगहतनेत्रः ॥ २३६ ॥
लग्नाष्टमेशुक्रे क्रूरदृष्टेश्रुपातान्नेत्रपीडा ॥ २३७ ॥
लग्नेभौमेशयने नयनेगदः ॥ २३८ ॥
स्वेशशुक्रयोगे नेत्ररोगी ॥ २३९ ॥
शुक्रात्त्रिकेनेत्रेशे नेत्ररोगी ॥ २४० ॥
त्रिकोणेसूर्येपापदृष्टे निस्तेजोनेत्रः ॥ २४१ ॥

टीका—वक्रगतिग्रह की राशिमे छठेस्थानका स्वामि होवेतो नेत्र होताहै ॥ २२९ ॥

लग्नका स्वामि बुध (३ । ६) अथवा मंगलकी (१ । ८) राशि होवे और बुध मंगल उसको देखते होवेतो नेत्ररोगी होताहै ॥२३

लग्न और अष्टमस्थानके स्वामि ये दोनो छठेस्थानमे होवेतो स (बाये) नेत्रमे रोगहोता है ॥ २३१ ॥

छठे आठमे स्थानमे शुक्रहोवेतो दक्षिणनेत्रमे रोगहोताहै ॥२३२॥

धनेश शुभग्रहसे दृष्टहोवे और लग्नेश पापग्रहसेयुतहोवेतो सरो नेत्रहोताहै ॥ २३३ ॥

दूसरे और बारवेस्थानके स्वामि शनि मंगल और गुलिकसे युक्तहोवे तो नेत्रमेरोग होताहै ॥ २३४ ॥

दूसरे बारवे स्थानमे पापग्रहहोवे और उनको शनि देखताहोवेतो रोगसे नेत्र पीडित होतेहै ॥ २३५ ॥

नेत्रस्थान (२।१२) के स्वामिका नवांशका स्वामि पापग्रहकि राशि का होवेतो रोगसे नेत्रपीडित होतेहै ॥ २३६ ॥

लग्नमे तथा आठमे शुक्रहोवे क्रूरग्रहसे दृष्टहोवेतो अश्रुपातसे नेत्रमे पीडाहोतीहै ॥ २३७ ॥

शयनावस्थामे गयाहुवा मंगल लग्नमे होवेतो नेत्रमे पीडाहोतीहै २३८

धनेश और शुक्र का योग होवेतो नेत्ररोगी होता है ॥ २३९ ॥
शुक्रसे ६।८।१२ नेत्रस्थान का स्वामि होवेतो नेत्ररोगी होता है ॥२४०॥
पापग्रह से दृष्ट सर्य ९।५ नवमे पांचमे स्थानमे होवेतो निस्तेज नेत्रहोतेहे ॥ २४१ ॥

अथ योग

लग्नेशे सार्कशुके त्रिके जन्मांध ॥ २४२ ॥
सूर्ये राहुग्रस्तेंगे मन्दारौ त्रिकोणे जन्मांध ॥ २४३ ॥
नेत्रांगेशौ भान्वच्छयुतौ त्रिके जन्मांधः ॥ २४४ ॥
त्रिकेचंद्रारयोगे पातादन्धः ॥ २४५ ॥
सेज्येंदौ त्रिके सेकादन्धः ॥ २४६ ॥
चंद्राच्छौत्रिके कामांन्धः ॥ २४७ ॥
क्षेन्दुत्रिके शाप्रान्धः ॥ २४८ ॥
इन्दर्कौ सोत्थे वा केंद्रेन्धः ॥ २४९ ॥
पापेंशे भौमे केंद्रेन्धः ॥ २५० ॥
यमर्क्षेत्रे सूर्येन्धः ॥ २५१ ॥
सौम्यात्रिके क्रूरदृष्टा अन्धः ॥ २५२ ॥
कुजेंगे कुंभेन्धः ॥ २५२ ॥
शुक्रांगपयुतौ स्वांत्येगौ त्रिकस्थान्धः ॥ २५४ ॥
शुक्रपापाभ्यांयुक्त भन्द्रोधनेन्धः ॥ २५५ ॥
सुतांयुगौ पापौ अन्धः ॥ २५६ ॥
चंद्रेत्रिके पापदृष्टेन्धः ॥ २५७ ॥
चंद्राकौंन्त्यदेशुभदृग्यांतौ अन्धः ॥ २५८ ॥
सिंहेंकेंजे वा शुक्रेन्धः ॥ २५९ ॥

यमेन्द्वर्काः क्रमादंत्यार्थाष्टमगा नेत्रहीनः ॥ २६० ॥
यथा तथा षष्ठाष्टांत्यधनस्था श्चंद्रार्कारयमा बलीग्रह
दोषजानेत्रहीनता ॥ २६१ ॥
लग्नाच्छुक्राद्वासुतेराहु स्सूर्यदृष्टच्छेन्नेत्रनाशः २६२
मंदेतुर्ये पापैर्दृष्टे नष्टदृष्टिः ॥ २६३ ॥

टीका—लग्नेश्वरसूर्य शुक्रसे युक्तहोकर ६।८।१२ स्थानमे होवेतो जन्मांध होताहै ॥ २४२ ॥

लग्नमे ग्रहण समय का सूर्य होवे और शनि मंगल ९।५ मेंस्थान होवेतो जन्मांधहोताहै ॥ २४३ ॥

नेत्र २।१२ स्थानका स्वामी और लग्नेश ये दोनो सूर्य शुक्र सेयु हो के ६।८।१२ स्थानमे जावेतो जन्मांध होताहै ॥ २४४ ॥

चंद्र मंगल का योग ६।८।१२ में स्थानमे होवेतो पतन (गिरजाने से अंधाहोता है ॥ २४५ ॥

गुरुसे युक्त चंद्रमा ६।८।१२ मे स्थानमे होवेतो सेककरने से अंधा होताहै ॥ २४६ ॥

चंद्र और शुक्र दोनो ६।८।१२ स्थानमे होवेतो कामांध होताहै २४७

युध चंद्रमा ६।८।१२ में स्थानमें होवेतो शास्त्रांध होताहै ॥ २४८ ॥

मंद और सूर्य दोनो ३ तीसरें स्थानमे अथवा १।४।७।१० मे स्थानमे होवेतो अंधाहोताहै ॥ २४९ ॥

पापग्रह कि राशी मे गयाहुआ मंगल १।४।७।१० मेस्थानमे होवेतो अंधाहोताहै ॥ २५० ॥

शनि कि राशी १०।११ का सूर्य ७ सातमे स्थानमे होवेतो अंधा होताहै ॥ २५१ ॥

शुभग्रह ६।८।१२ मे स्थानमे गयेहोवे और उनको क्रूरग्रह देखते होवे तो अंधा होताहै ॥ २५२ ॥

कंन्यादि का शिशक लग्नमे होवेतो अंधाहोताहै ॥ २५३ ॥

... और लग्नका स्वामि ये दोनो २।१२ दूसरे और बारमें स्थानके ... मे युक्त होके ६।८।१२ स्थानमे जावेतो अंधाहोताहै ॥ २५४ ॥

शुक्र और पापग्रहोसे युक्त चंद्रमा धनस्थानमे स्थितहोवेतो अंधा होताहै ॥ २५५ ॥

पांचवे और चोथे ४ इनदोनोंस्थानोमे पापग्रह स्थितहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५६ ॥

पापग्रह से दृष्ट चंद्रमा ६ । ८ । १२ मे स्थानमे स्थित होवेतो अंधा होताहै ॥ २५७ ॥

चंद्र और सूर्य येदोनो बारमे स्थानमे स्थितहोवे और इनको शुभग्रह नहीदेखतेहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५८ ॥

सेंदुरार्किकाहीन अथवा शुक्र लग्नमे होवेतो अंधाहोताहै ॥२५९॥

शनि चंद्र सूर्य, ये तीनो क्रमसे १२।२।८ स्थानमे स्थितहोवे अर्थात् शनि १२ बा.मे चंद्रमा २ दूसरे सूर्य ८ आठमे स्थानमे होवेतो नेत्रहीनहोताहै ॥ २६० ॥

छठे स्थानमे चंद्र अष्टम स्थानमे रवि बारवे स्थान मे मंगल और धन स्थान मे शनि इस प्रकार यथाक्रम तथा विनाक्रम कोईभी स्थानमे इनग्रहोमेसेकोईभी ग्रह स्थित होवेतो इनमेसे जोग्रह अधिक बलवान होवे उसी ग्रहके वातपित्त कफादि दोषसे नेत्रनाश होते है ॥ २६१ ॥

लग्नसेअथवाशुक्रसे पांचवेस्थानमेराहु सूर्यसे दृष्टहोवेतो नेत्रनाश होतेहै ॥ २६२ ॥

चोथे स्थानमे शनि पापग्रहोसे दृष्टहोतो नष्टदृष्टी होताहै॥ २६३ ॥

निशांधयोग

सेंदुः शुक्रस्त्रिकस्थो निशांधः ॥ २६४ ॥

शुक्रेंदुयुतेनेत्रेशेङ्गे निशांधोनतुस्वोच्चशुभैर्युते॥ २६५ ॥

टीका-चंद्रसंयुक्त शुक्र ६ । ८ । १२ मे स्थानमेहोवे तो निशांध (रात्रिमेंअंधा) होताहै ॥ २६४ ॥

नेत्रस्थान २।१२केस्वामी शुक्रचंद्रसेयुक्त होके लग्नमेस्थितहोवेतो निशांध (रातके समय अंधा) होताहै परंतु ये ग्रह स्वराशी उच्चराशि के तथा शुभग्रह से युक्त नहिहोवेतो येयोग जानना. ॥ २६५ ॥

नेत्रनाशयोग

लग्नार्येशौत्रिकेक्षिनाशः ॥ २६६ ॥

चंद्रार्कौ सिंहेङ्गे शन्यारदृष्टे नेत्रनाशः ॥ २६७ ॥

टीका-लग्नेश और धनेश ये दोनो ६।८।१२ स्थानमे होवेतो नेत्र नाश होताहै ॥ २६६ ॥

चंद्रसूर्य, सिंहराशी के लग्नमे स्थितहोवे और शनि मंगल इनको देखते होवेतो नेत्र नाशहोतेहैं ॥ २६७ ॥

वामनेत्रेघातयोग

भौमेन्त्ये वामनेत्रे घातः ॥ २६८ ॥

टीका-बारमे स्थानमे मगल होवेतो वामनेत्रमे घातहोतीहै ॥ २६८ ॥

दक्षनेत्रेघातयोग

मन्देर्थे दक्षनेत्रे घातः ॥ २६९ ॥

टीका-दूसरेस्थानमे शनि होवेतो दक्षिणनेत्रमे घातहोतीहै ॥ २६९ ॥

नृपकोपसे नेत्रोत्पाटनयोग.

लग्ने धनारी कर्मेशाः शुक्रयुता नृपकोपान्नेत्रो त्पाटनं २७०

अच्छाक्षिपौ नीचांशगौ पापयुतौ नृपकोपान्ने० ॥ २७१ ॥

राजारिनाथांशेशौत्रिके लग्नेशयुतौ नृपको० ॥ २७२ ॥

टीका-धनेश षष्ठेश और दशमेश येतीनो ग्रह शुक्रसेयुक्तहोके लग्नमे स्थितहोवेतो राजाके कोपसेनेत्र उखाडे जातेहैं ॥ २७० ॥

शुक्र और नेत्र स्थान २।१२ केस्वामि येदोनो नीचराशिके नवांशमें स्थित होवे और पापग्रहसे युत होवेतो राजाकिकोपसे नेत्रउखाडे जातेहै ॥ २७१ ॥

दशम और छठे भावके स्वामि जिनग्रहोकेनवांशमेंहोवे वेग्रह६।८।१२ में स्थानमे लग्नेश से युतहोवे तो राजाके कोपसेनेत्रउखाडेजावे २७२

नेत्रप्रमादयोग

शुक्रास्तिरो षष्ठगौ शुभैर्नदृष्टौ नेत्रप्रमादः ॥ २७३ ॥

टीका-शुक्र और २।१२ मे स्थानके स्वामी छठे स्थानमे स्थितहो ... शुभग्रह इनकोनहिदेखतेहोवे तोनेत्रप्रमाद (नेत्रस्थिर नहिरह कर इधर उधर चलते हुवे रहनेका) रोगहोताहै ॥ २७३ ॥

काणयोग

लग्ने भौमे वाचंद्रे शुक्रेज्यदृष्टे काणः ॥ २७४ ॥

सिंहेचंद्रेस्ते भौमदृष्टे काणः ॥ २७५ ॥

कर्केर्केसप्तमे भौमदृष्टे काणः ॥ २७६ ॥

चंद्राच्छाव्ययेये वा द्यूने वामाक्षणाकाणः ॥ २७७ ॥

टीका-मंगल अथवा चन्द्रमा लग्नमे होवे और शुक्र गुरु इसको खते होवेतो काणा होताहै ॥ २७४ ॥

सिंहराशिकाचंद्रमा सातमे स्थानमं स्थितहोवे और मंगल से ष्टहोवेतो काणा होताहै ॥ २७५ ॥

कर्कराशिका रवि सातमे स्थानमे स्थितहोवे और मंगल इसको खता होवेतो काणा होताहै ॥ २७६ ॥

चंद्र और शुक्र येदोनो बारमे स्थान मे अथवा सातमे स्थानमे स्थित वेतो वामनेत्र काणा होताहै ॥ २७७ ॥

दंपती काणयोग

व्ययारीगौ चंद्रार्कौ दंपतीकाणौ ॥ २७८ ॥

टीका-बारमे स्थानमं चंद्रमा और छठे स्थान मं रवि स्थित होवेतो पति (दोनो स्त्री पुरुष] काणे होतेहै ॥ २७८ ॥

स्पष्टीकरण.

केवल १२ । ६ स्थान मे चंद्र रवि के स्थित होनेसेही दोनों स्त्रि ीका काणा होना संभवनही । वास्तविक विचारकरनेसे जैसे नाश अंध, काण. आदि जोजो योग पिछाडी कहआयेहै उनमे २। ६।८ स्थान और सूर्य चंद्रपर मंगल शनि आदि पापग्रह कीदृष्टी और योग का विशेष संबंध वर्णितहै. वैसेहि लग्न और सातमे स्था १२।६ येजो स्थान है उसमे सूर्य चंद्र का योग होनेसे दंपति के मे काणत्वहोना संभवहै. परंतु यदि पूर्वोक्त योगानुसार इन १२ । ६ नमे गयेहुवे चंद्र सूर्य पर मंगल शनि आदि पापग्रह की दृष्टी या ग्रह का योग नही होवेतो ये योग नही मिलेगा.

ये कारन नत्रसंबंधी योगोके अध्यवहिनही यथायोदियाहै इसलिये भि इसयोग मे पापग्रह का उल्लेखनहि कियाहै तथापि उसकाबोध

होताहै अनपत्र एस भेरूहोयोगमें पापग्रहोकायोग तथा दृष्टिभि होवेतो योग बलवान होताहै.

इसीप्रकार पिता १० भाइ ३ माता ४ पुत्र ५ स्त्री ७ काका १२ भ्र स्त्री ९ पुत्रस्त्री ११ काकेकिस्त्री ६ मामा ६ मामाकीस्त्री १२ भुवा ११ फुफा ६ मासी ६ मासा १२ साला ९ सालेकपुत्र १ सालाकीस्त्री ३ दादि १ दादा ७ पुत्रकपुत्र ९ इत्यादि स्थानके स्वामियोमेसे जिस २ स्थान कास्वामी रवि शुक्रसे युक्त होके ६।८।१२ स्थानमे जावे और मंगल शनि राहुहर्शल नेपचुन आदि पापग्रहोंसे युक्त दृष्टहोवे तो उस २ को अंधत्व माप्त होवेगा ऐसाबुद्धिमान पंडितोंने विचारकरके कहना ॥ उदाह जैसे १० दशम स्थान ये पिताका स्थानहै इससमभावसे २।१२ भाव और इन स्थानके स्वामि पापग्रह से युक्त दृष्टहोवे और ६ भावकास्वामी रवि शुक्र से युक्त होके पापग्रहोंसे दृष्ट होवेतो अंधाहोताहै

इसीप्रकार प्रत्येक उपरोक्त भावके स्वामी से प्रत्येक भावका वि करके कहना.

बधिरयोग.

मंदात्तुर्येसौम्ये षष्टेशे त्रिके बधिरः ॥ २७९ ॥

सरिपु पूर्णेंदुशुक्रौ बधिरः ॥ २८० ॥

रात्रौज्ञे षष्टे खेशुक्रे बधिरः ॥ २८१ ॥

सितेत्स्ये ज्ञयुते वामकर्णे श्रुतिन्यूनता ॥ २८२ ॥

ज्ञषष्टेशौ क्रूरदृष्टौ बधिरः ॥ २८३ ॥

पापास्थायत्रिकोणे सौम्यैर्नेक्षिता बाधिर्यकराः ॥ २८४ ॥

षष्टेशत्रिके मंददृष्टे बधिरः ॥ २८५ ॥

टीका—शनिसे चोथे स्थानमे बुधहोवे और छठे भावका स्वामी ६।८।१२ भावमें होवेतो बहेराहोताहै ॥ २७९ ॥

पूर्णचंद्रमा और शुक्र येदोनो अपने शत्रुग्रहसे युतहोवे तोबहराहोता इसयोगमेभी पापग्रहका उल्लेखन हिहै तथापिवास्तविकविचार से इनप

पापग्रहोकीदृष्टि तथा पापग्रहोका योगहोवेतो अवश्य बहराहोताहै २८०
रात्रिसमयकां जन्महोवे लग्नसे छठेस्थानमेबुध और दशवें भावमे शुक्रहोवेतो बहराहोताहै ॥ २८१ ॥

बारमेभावमेशुक्र बुधसेयुतहोवेतो वामकर्णसे कम सुननेवाला होताहै ॥२८२॥

बुध और छठेभावका स्वामी इन दोनोको क्रूरग्रह देखते होवे तो बहरा होताहै ॥ २८३ ॥

तीसरे ग्यारवे नवमे पांचवे भावमें पापग्रह जावे और उनको शुभग्रह नहिदेखतेहोवेतो बहरा होताहै ॥२८४॥

छठे भावका स्वामि ६ । ८ । १२ मे स्थानमे होवे और उसको शनि देखता होवे तो बहरा होताहै ॥२८५॥

कर्णच्छेदयोग

हंसार्किचंद्रास्त्रिसुतास्तधर्मगाःसौम्याऽदृष्टयुताकर्णच्छेदः—
॥२८६॥ चंद्रादस्तेमंदे शुक्रार्कौलग्ने कर्णच्छेदः २८७
नीचेभृगौफणियुते कर्णच्छेदः ॥ २८८ ॥

टीका-सूर्य शनि चंद्रमा ३।५।७।९ में स्थान मे स्थितहोवे और शुभ ग्रहोसे दृष्टया युत नहिहोवे तो कर्णच्छेद होताहै (कान कटताहै) २८६
चंद्रमासेसातमे स्थानमे शनिहोवे और शुक्रसूर्य लग्नमे होवेतो कर्णच्छेदहोताहै (कानकटताहै) ॥ २८७ ॥

नीचराशि [६]काशुक्र राहुसे युतहोवे तो कर्णच्छेद होताहै ॥ २८८॥
सर्वार्थमे इनके अतिरिक्त २ दोयोग यह कहेहै कि शनैश्चर मंगल सहित होवे और धनेश लग्नमें होवे १ तथा षष्ठेश और धनेश ये दोनो लग्न मेंहोवे और शनि मंगल १२ बारमे भावमे स्थितहोवे २ तो कानकटे या फुटजावे—एसेहीःविचार पित्रादीभावो कामीकरना, पित्रादिभाव और भावेश एवं उनउन भावोके कारकग्रहोंके साथ उपर्युक्त बधिर तथा कर्णच्छेदादि योग होवे अथवा आगे नाशाछेदादि और भीजो जोयोग कहेजावेगे वे योग होवेतो पित्रादिको को बधिर, तथा कर्ण विच्छेदादि समस्त योगोंका फलकहना ।

नाशाछेदयोग

शुक्रेषष्ठे कुजेऽङ्गे नासाच्छेदः ॥ २८९ ॥

टीका-छठेस्थानमेशुक्र और लग्नमेमंगल होवे तो नासाछेद होताहै ॥ २८९ ॥

मुखदुर्गंधयोग

इंद्वच्छौ मेषगौ लग्नेषष्ठेशे मुखदौर्गंध्यं ॥ २९० ॥

कर्काजगेशुक्रे मुखदौर्गंध्यम् ॥ २९१ ॥

लग्नेइंदौ षष्ठेशे मुखदौर्गंध्यम् ॥ २९२ ॥

टीका-चंद्र और शुक्र मेषराशिमें होवे और लग्नमे ताथ छठेबुधहोवे तो मुखमेदुर्गंध (बदबु) भातीहै ॥ २९० ॥

कर्कवा मेषराशिका शुक्रहोवेतो मुखमे दुर्गंध आतीहै ॥ २९१ ॥

लग्नमे चंद्रमाहोवे और छटे स्थनका स्वामि बुधहावे तोमुखमे दुर्गंध आतीहै ॥ २९२ ॥

मूकयोग

कर्कालिझषेज्ञे सूर्याथस्थचंद्रदृष्टे मूकः ॥ २९३ ॥

ज्ञारिशौ लग्नगौ मूकः ॥ २९४ ॥

जीवारीशावंगे मूकः ॥ २९५ ॥

धनेशेऽपोक्लिमे मूकः ॥ २९६ ॥

टीका-कर्क वृश्चिक तथा मीन इनतिःशब्द राशिमे गयेहुवे बुध को सूर्य नीचे गयाहुवा (अमावाश्याका) चंद्रमा देखता होवेतो मूक (गुंगा) होताहै २९३

बुध और छठे स्थानका स्वामि येदोनो लग्नमे स्थितहोवेतो मूक (गुंगा) होताहै ॥ २९४ ॥

गुरु और षष्ठेश लग्नमे युक्तहोवेतो मूक (गुंगा) होताहै ॥ २९५ ॥

धनेश और गुरुयेदोनो ३।६।९।१२ में स्थानमे होवेतो मूक (गुंगा) होताहै ॥ २९६ ॥- इसी तरहसे पिता माता भाई भौजाई औ मामा आदि संबंधियों का विचार भिन्न २ भावसे किया जाताहै उन २ भाव

स्वामी गुरुसे युक्त होके६।८।१२ जावेतो जिस२भावका स्वामि होवे ।२ को गुंगापन होनेका कहना. शंभुहाराप्रकाशमे लिखाहै कर्क िक और मीनराशी मेपापी ग्रहस्थितहोवे राशीकेअंतमे वा वृषराशी वंद्रमा स्थितहोवे और पापग्रहोंसे दृष्टहोवेतो मूक होताहै और शुभ ासे दृष्टहोवेतो चिरकालके पश्चात् बोलनेवाला होताहै. अर्थात् पांच के उपरांत बोलताहै. १. क्रूरग्रह संधिमे गयेहोवे कोई शुभग्रह नही तिहोवे अथवा चंद्रमापापग्रहोसे युक्त होवेतोजडके समान गुंगाहोताहै.

गुंगस्वर योग

कर्कालिझषगेज्ञे चंद्रदृष्टे सुखेसूर्ये षष्ठेपापदृष्टे गुंगस्वरः ॥ २९७ ॥ शुक्रेन्दुारावज्ञे गुंगस्वरः ॥ २९८ ॥

टीका–कर्कवृश्चिकतथामीनराशिमेंगयाहुवाबुध चंद्रसेदृष्टहोवे, चोथे-थानमे सूर्य होवे और छठेस्थानकोपापग्रह देखतेहोवे तो गुंगस्वर समजनेमे नहीआवे वैसा नाकमे गडबड गडबड बोलनेवाला]होताहै २९७ ॥

शुक्रपक्षमे जन्महोवे और चंद्रमंगल का योग लग्नमे होवेतो गुंगस्वर गुंगा स्वरवाला) होताहै ॥ २९८ ॥

इनउपरोक्तयोगोंसे मूकहोताहै येग्रंथ कारो का मत सत्य है परंतु मूकमनु-योंकि कुंडलिये देखनेसे मूकत्वकिंवा वाणीमें दोष उत्पन्न होनेकाविशेष ारण; जोजो अनुभव से दृष्टिगत होतेहै वे इसमुजिब है

(१) द्वितीय स्थान में पापग्रह युक्तहोवे और उसस्थान का स्वामि ीचराशिका किंवा अस्तंगत होके पापग्रहोंसे दूषित (युक्तदृष्ट) होवे ौर रवि बुध का सिंहराशिमेयोग कोईभीस्थानमे होवे तो निश्चय करके मूक (गुंगा) होताहै

(२) सिंहराशिमें रवि बुध भेकत्र जिसकेहोतेहै उसकी वाणी मे नि-श्चय पूर्वक दोषहोताहै बहुधाजोलोक बोलतेसमय अटकतेहै, उनकी कुंडली मे ये योग होताहै।

अनि बोलनेवाले बोलते समय अटकनेवाले मुख टेढा यांका करके बो लनेवाले बोलनेमेंरक्त आंखमिचकानेवाले वगैरा बोलनेके असंख्यभेदहै

उनकी कुंडली में भी विशेषकर द्वितीय स्थान के ग्रह काही प्रभाव दृष्टि पडताहै

महसित मुख

चंद्रार्कौ मीनस्थौमहसितमुखः ॥ २९९ ॥

धनेशे स्वोच्चगे केंद्रे प्रहसितमुखः ॥ ३०० ॥

कोशेशे सौम्ययुते केंद्रे सुमुखः ॥ ३०१ ॥

टीका-मीनराशिमे चंद्रसूर्य युतहोवेतो महसीत मुख होताहै २ धनेश अपनी स्वराशि तथा उच्चराशि का होके केंद्र १।४।७।१० स्थित होवेतो प्रहसित मुख होताहै ॥ ३०० ॥

धन(२)स्थान का स्वामि शुभग्रह से युक्त होकर १।४।७।१० स्था मे स्थित होवेतो सुमुख होताहै ॥ ३०१ ॥

दुर्मुख योग

धने पापे धनेशेपापयुते नीचारिगे दुर्मुखः ॥ ३०२ ॥

टीका-धन स्थान में पापग्रहहोवे और धनेशपापग्रहसे युक्तहोके नीच अथवा शत्रुराशि का होवेतो दुर्मुख होताहै ॥ ३०२ ॥

दीर्घमुख योग

धनेपापे दीर्घमुखः ॥ ३०३ ॥

टीका-धन स्थान मे पापग्रह होवेतो दीर्घमुख (लंबेमुखवाला) होताहै ॥ ३०३ ॥

वाग्मीयोग

यामित्रेमंदे चंद्रखे वाग्मी ॥ ३०४ ॥

मंदाच्छौवित्ते मंदभेर्के वाग्मी ॥ ३०५ ॥

दिवासिंहज्ञे वाग्मी ॥ ३०६ ॥

रात्रौकर्केज्ञे वाग्मी ॥ ३०७ ॥

... ...कोणेयास्वोचेशुभेक्षितेपुंग्रहयोगेवाग्मी३०८

धनेशेपारावतांशे केंद्रे वाग्मी ॥ ३०९ ॥
सौम्यैशेजीवे वाग्मी ॥ ३१० ॥
ागी शांशे उच्चे गोपुरे वा वाग्मी ॥३११॥
शुभेजीवे वर्गोत्तमे वाग्मी ॥ ३१२ ॥
नेशेपारावतांशे जीवयुते वाग्मी ॥ ३१३ ॥

ा-सातमेशनि दशमेचंद्रमा होवेतो अतिवक्ता (अच्छाबोलने-
व्याख्यानदाता, पुराणवक्ता, शास्त्रानुसार अत्यंतबोलनेवाला)
॥ ३०४ ॥
स्थानमे शनि शुक्र जावें और शनि की राशि १० । ११ का सूर्य
अतिवक्ता होताहै ॥ ३०५ ॥
के समय जन्महोवे और सिंह राशीका बुधहोवे तो अच्छावक्ता
॥ ३०६ ॥
समय मे जन्महोवे और कर्कका बुधहोवेतो अच्छावक्ता होताहै ३०७
धनका स्वामि बुधसें युक्तहोवे और १।४।७।१०।९।५ स्थानमे
थवा धनस्थानकास्वामि अपनिस्वराशी उच्चराशीकाहो शुभग्रह
वे बुधग्रहसे युक्तहोवे तो अच्छावक्ताहोताहै ॥ ३०८ ॥
वकास्वामि पारावतांशमेहोवे १।४।७। १० स्थानमे जावेतो
का होताहै ॥ ३०९ ॥
राशीके नवांशमे गुरुहोवेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३१० ॥
सराशीके नवमांशमेहोवे उसकास्वामी उच्चराशीकाहोवे अथवा
े होवेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३११ ॥
से युक्त गुरु वर्गोत्तमांशमें होवेतो अच्छावक्ता होताहै ३१२
ाका स्वामि पारावतांशमेहोवे गुरुसे युक्त होवेतो अच्छावक्ता
३१३ ॥

जिव्हादोषयोग

ेजिव्हादोषः॥ ३१४ ॥

टीका—छठे स्थानकास्वामीबुध होवेतो जबानमे कोई भीतरहका दा
होताहै ॥३१४॥

ये दोषहोना संभव प्रतीतनहीहोता क्योकीजिव्हाका संबंध धनस्थानसे
है अतएव धनस्थानमे पापग्रह स्थितहोवे धनकोपाप ग्रह देखतेहोवे और
षष्ठेश बुधहोवे पापग्रहो से युक्त दृष्टहोवे शत्रुनीचराशी गतहोवे तो
अवश्य जिव्हामे दोषहोना संभवहै ।

भस्फुटोक्तियोग.

मदेशाद्धने केतावस्फुटोक्तिः ॥ ३१५ ॥

टीका—सातमे स्थानके स्वामी से धनस्थानमे केतु होवे तो स
बोलनेवाला नहि होताहै ॥ ३१५ ॥

गद्गदवाक्ययोग.

मंदर्क्षे मंददृष्टे गद्गदवाक् ॥ ३१६ ॥

टीका—बुध १०।११ राशिका होवे और शनि उस्को देखता होवे
गद्गद वाक् (प्रेमसे जैसे गद्गद स्वरहोके बोलता है वैसेही गद्ग
कंठसे बोलने वाला) होताहै ॥ ३१६ ॥

लल्लरोक्तियोग.

धर्मेशे शुक्रे लल्लरोक्तिः ॥ ३१७ ॥

धनेशे विबले क्रूरांशे लल्लरोक्तिः ॥३१८॥

पापेधने वा पापदृष्टे क्रूरांशे पापयुते लल्लरोक्तिः ॥३१९॥

टीका—नवमस्थानका स्वामि शुक्र होवेतो लल्लरोक्ति (जिसप्रकारसे
जबानटूटकजावे उसप्रकारसे बहुतदेरतक जबानचलेकरे और पीछे
बोलसके ऐसा) अटक के बोलनेवाला होताहै ॥ ३१७ ॥

केवल नवमेश्वर शुक्रहोनेसे ये योग मिलना असंभवहै ।

धनेशशनिवक्री होवे और क्रूरग्रह के नवांशमें होवेतो लल्लरोक्ति (अटके
के बोलने वाला) होताहै ॥ ३१८ ॥

... पापग्रह होवे अथवा धनस्थान को पापग्रह देखतेहोवे
के नवांशमे होवे और पापग्रहसे युतहोवे तो लल्लरोक्ति (अटके

भटक के बोलने वाला). होताहै ॥ ३१९ ॥

परुष वाक्योग.

मंदेन्दुयोगे परुषवाक् ॥ ३२० ॥

टीका-शनि, चंद्रका योग कोईभिस्थानमे होवेतो परुषवाक् (कठोर वचन बोलने वाला) होताहै ॥ ३२० ॥

दंतविकारयोग

गोजधनेगे क्रूरैर्दृष्टे वा युते दंतविकारः ॥ ३२१ ॥

सप्तमेपापाः सौम्यैरदृष्टा दंतविकृतिः ॥ ३२२ ॥

चंद्रार्कर्यर्को वा पापा अस्ते दशनाभिघातः ॥ ३२३ ॥

सप्तमेशाद्धनेराहौ स्थूलदंतः ॥ ३२४ ॥

धनारीशौयुतौ सपापौ दंतरोगी ॥ ३२५ ॥

सुतेंगेराहौ दंतुरो दंतरोगीवा ॥ ३२६ ॥

टीका-पापग्रहोसे दृष्ट अथवा युक्त वृषभ,मेष, वा धनराशि कालग्न होवे तो दंतविकार (दांतमे बीमारी) होती है ॥ ३२१ ॥

सातमे स्थान मे गये हुवे पपाग्रहोंको शुभग्रह नाहिदेखतेहोवे तो दंतविकृति (दांतमे विकार) होता है ॥ ३२२ ॥

चंद्र शनि और सूर्य सातमे स्थान मे जावे अथवा पपाग्रह सातमे बैठे होवे तो दातगिरजावे अथवा टूटजातेहै ॥ ३२३ ॥

सप्तमेशसे दूसरे स्थान मे राहुहोवे सोमोटेदांतवाला होताहै ३२४

धनेश और षष्ठेश येदोनो, पपाग्रहे.से युतहोवेतो दंतरोगी होताहै ३२५

पांचमे अथवा लग्नमे राहुहोवे तो बडे दातवाला दंतुर, अथवा दंत रोगी होताहै ॥ ३२६ ॥

हस्तनाश हस्तपीडा योग

शकुजजीयुतौ दिवातुर्यगे शुक्रेच हस्तनाशः ॥३२७॥

शन्यारौराहुयुते चारीगो हस्तनाशः ॥ ३२८ ॥

देष्यंते मंदेशुक्रयुते हस्तनाशः ॥ ३२९ ॥

मंदेन्द्वर्काः षष्ठाष्टमगा हस्तपीडा ॥ ३३० ॥

टीका–शनि १ मंगल २ बुध ३ गुरु ४ येचारो भेकस्थानमेयुतहोवे दिनके समयका जन्महोवे और चोथेस्थानमे शुक्र स्थितहोवे तो हातका होता है ॥ ३२७ ॥

शनिभौर मंगलराहुके भोग्यांशमें स्थितहोवे और छेठस्थान में ज तो हस्तनाश होताहै ॥ ३२८ ॥

छठे स्थानमे शत्रुराशीका शनि शुक्रसेयुतहोवे तो हस्तनाश होत ॥ ३२९ ॥

शनि चंद्र भौर सूर्य ये तीनोहि छठे या भाठमे स्थानमे स्थितहों तो हातमे पीढाहोती है ॥ ३३० ॥

कुब्जयोग

तुर्येऽङ्गेशे वक्रभेल्यांशे कुब्जः ॥ ३३१ ॥

टीका–मेषतथा वृश्चिक राशिका लग्नेश्वर चतुर्थस्थानमे जावे और यह वृश्चिकराशि के नवांशमें स्थित होवे तो कूबडा होताहै ३३१

कठिन चित्त योग

रंध्रेस्थिरे ज्ञेज्यशुक्राः कठिनचित्तः ॥ ३३२ ॥

टीका–बुध गुरु और शुक्र येतीनोही भाठमे स्थानमे स्थिर राशि २।५।८।११ के होवे तो कठोरचित्तवाला होता है ॥ ३३२ ॥

विरुद्धचित्तयोग.

सुखेक्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरुद्धचित्तः ॥ ३३३ ॥

टीका–चतुर्थस्थानमे क्रूरग्रह स्थितहोवे और सुखेश क्रूरग्रहसे युत होवेतो विरुद्धचित्त होताहै ॥ ३३३ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३३४ ॥

[illegible] ॥ ३३५ ॥

[illegible] ३३६

[illegible] ॥ ३३७ ॥

टीका-शुक्र और मंगल आठमेस्थानमे युक्तहोवे तो वायुके कोप
अंडवृद्धिहोतीहै ॥ ३३४ ॥

शुक्र और मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशिकेहोवेतो वायुसे अंडवृ
होतिहै ॥ ३३५ ॥

चंद्र और शुक्र मेष अथवा वृश्चिक राशिमे होवे और उनको श
गुरु देखतेहोवेतो कललज (रक्तऔर जलवीर्य के कोपसे) अंडवृ
होतिहै ॥ ३३६ ॥

कारकांश लग्नमे गुलिक युक्तहोवे और केवल बुधहीउसको देख
होवेतो स्थूल (बडे) अंडका होताहै ॥ ३३७ ॥

जंघाक्षतियोग.

पूर्णेन्द्वारौषष्ठे जङ्घाक्षतिः ॥ ३३८ ॥

शनीन्द्वाराव्यये जंघाक्षतिः ॥ ३३९ ॥

टीका- पूर्णचंद्रमा और मंगलका योग छठेस्थानमेहोवेतो जंघाक्ष
(पीडलीमे पीडा) होती है ॥ ३३८ ॥

शनि चंद्र और मंगल बारमे स्थानमे स्थितहोवेतो जंघाक्षति (पि
डलीमेपीडा) होतिहै ॥ ३३९ ॥

पंगुयोग.

झपाल्यजकर्कमृगान्यतमगौइन्द्वर्कजौ सपापौनवमपंचमग
वा पंगुः ॥ ३४० ॥

षष्ठेसूर्यारमंदाः पंगुः ॥ ३४१ ॥

मंदारीशौव्यये पापदृष्टौ पंगुः ॥ ३४२ ॥

रंध्रांकेशौ सपापौ तुर्ये पंगुः ॥ ३४३ ॥

कर्केचंद्रार्कजौ शुभादृष्टौ पंगुः ॥ ३४४ ॥

मंदाच्छयुतौ शुभादृष्टौ पंगुः ॥ ३४५ ॥

दारेशोरौरेसपापे पंगुः ॥ ३४६ ॥

इति प्रथमविवेक.

टीका–मीन १२ वृश्चिक८मेष, १कर्क४मकर १० इन राशिमे से कोईभ राशिमे चंद्र शनि पापग्रहो से युक्तहोवे १ अथवा पापग्रहोसे युक्तचंद्रर्शा ९।५ मे स्थानमे स्थितहोवे २ तो पंगु (पांगला) होताहै ॥ ३४० ॥

सूर्य मंगल और शनि छठेस्थानमे ऐकत्रित होवेतो पंगु (पांगला होताहै ॥ ३४१ ॥

शनि और षष्ठेशये दोनो बारमेस्थानमेहोवे और पापग्रह इनको देखत होवेतो पंगु होताहै ॥ ३४२ ॥

अष्टमेश और नवम स्थानका स्वामिये दोनो चोथेस्थानमे पापग्र से युक्तहोवे तो पंगु होताहै ॥ ३४३ ॥

चंद्र शनि कर्क राशिमे स्थितहोवे और शुभग्रह उनको नहि देखते होवेतो पंगु होताहै ॥ ३४४ ॥

कोईभि स्थानमे शनि शुक्र का योग होवे और उनको शुभग्रह नहि देखते होवेतो पंगु होताहै ॥ ३४५ ॥

सप्तम स्थानकास्वामि शनि, पापग्रहसे युक्तहोवेतो पंगुहोताहै ३४६

पांवपर १२ वा स्थान मीनराशी और शनि का अमलहै इसकारण येतीनो पापग्रहोसे युत दृष्टहोवे नीचतया शत्रुकिराशी केहो और ऊपर कहेहुवेयोगबनतेहोवेतो अवश्यपंगु वापावमेकोइभी तरहकी पिडा होनेका संभवहै.

इसके शिवाय और क्यादेखना ?

उपरोक्त योगोके शिवायमम भाई कोलाभ, भाईकेपुत्रकीस्त्री, माताका पिता (नाना) माताकाराज्य, मीत्रकाबाप, पुत्रकाशाला, पुत्रकेछोटे भाईकीस्त्री, पुत्रकाभाग्य, सालेकापुत्र, मालिककीमाता, बापकीमाता, (दादी) सुसरेकापिता, मामिकामृत्यु, काकेकामारकेश, गुरुकापुत्र, सुसेरकाराज्यव्यापार, सासुकीमाता, आदि का विचारभी उपरकहे हुवे योगोके अनुसारही प्रथम भावमे देखना.

शरीर के लक्षणोंपरसे ।

लग्नचंद्र और ग्रहोंकी परिक्षा करना अतिमहत्वका कामहै और वह प्रथमभावसे संबंधरखता है अतः यहां इसका दिग्दर्शनकरादेना आवश्यक है।

शरीर और शरीरके अवयव, वर्ण, चेहरा, नेत्र, स्वर, दंतपंक्ति, वाणी केश, हाव भाव शरीर के उपरकेचिन्ह आदि के सहायतासे लग्न व चंद्र और ग्रहोकि परिक्षा होतीहै इसमे कुछभी शंकानहीहै किंतु अवलोकनशक्ति जिसमानकीहोतीहै उसीमानसे इसकाममे यशमिलताहै. अतएव शरीरलक्षणपरसे यहपरिक्षा केसे करना ऐसे उपयोगी विषयका परिज्ञान सर्व साधारणोको प्राप्त होनेके लिये कईवार अनेक मनुष्यों पर अनुभव कियेहुवे योग सर्वसाधारणों केअनुभवार्थ प्रकाश करतेहै जिससे लग्न खराहै किंवा खोटा इसका निर्णयभी भलीप्रकार कुंडली तथा शरीर लक्षणपर से करसकेगे. ।

नीचेलिखे हुवे लक्षण जिस जिस समय जिन २ के शरीरपर देखनेमे आवें उसी उसी समय अमुक लग्न व अमुक राशी है ऐसा निःशंसय कहनेमे हरकत नही इन लक्षणोमे सर्व मनुष्यमात्र आसकेगे ऐसा कह नहीसक्के क्योकि ईश्वरीकृतीका वर्गीकरण करणां अत्यंत कठिणही नही किंतु अशक्य है । अतः आज पर्यंत जितने समझमे और अनुभवमे आयेहै उतनेही योग लिखेहै अभ्यासि मनुष्योने इनका योग्य उपयोग करके अपना अपना ज्ञान बढाना चाहिये ।

मेष—अश्विनी, भरणी, कृतिका का अेकचरण मिलके मेषराशी होतीहै, ऐसेही प्रत्येक राशी २। नक्षत्रो की होतीहै इन प्रत्येक नक्षत्रोका स्वरूप भिन्न २ है इसकारण इसराशीके तथा प्रत्येक राशीयोके लक्षण जो जो लिखेहै उनमे परस्पर विरोध देखने मे आवेगा । अमुक नक्षत्र का अमुकलक्षण कहनेमेआना कठीणहै तथापि प्रत्येक राशीयोके मनुष्यो मे जो जो लक्षण देखने मे आयेहै वे सर्व लिखेहै इसकारण विरोध के तरफ नक्षत्रोंके भिन्नत्वसे देखके विचार करना ।

चालचलन बावले के समान एकांत अधिकप्रिय, हसना बहुत कम और वहभी सिर्फ चेहरेपर दिखनेवाला, बोलना अटकतेहुवे, नादे खासेनही, शब्दफिका घोगरा (रोत्या मनुष्यके समान) होठके बाहर निकलेहुवेदांत किंवा दांतो केसाथ दुसरी छोटीलाईन वा दांतोके पीछे एकदोतीन एकके पीछेएक ऐसेदात होवे, दांतो की नीचेकी पंक्तीबकरी

केदांत के समान छोटी व गोलहोवे, शरीर की मुद्रा गुस्सेवाले मनु
केसमान, बहोतेजचलनेवाला और दोडनेवाला, दूरदूर की मुसाफ
करनेवाला, वारंवारस्थलांतर करनेवाला, किरणेका उद्योग धंधा कर
वाला, शरीरपतला, वर्णताम्रके समान, दांतोंमेसेमूनपडनेवाल
किंवा अन्यकोईभी प्रकारका दंतरोगवाला, जितना कहे उतना
करने वाला (खुदकीबुद्धि नहि) स्वतःविचारनकरतेहुवे दूसरा क
माफिक सुनके अलमकरनेवाला क्रोधविशेष परंत क्रोध का भा
अत्यतकम, नेत्रलालरंगके, तथा कछुपीले (पिंगट) मस्तकतथा
अथवाकोनसेहिशिरोभागपरकिसीभीतरहकीनिशानीहोवे प्रकृति
बहुधा ज्वरका तथा रक्तका विकारवाला, तामसी, जिद्दी,
इष्टअंतपर्यंत चलानेवाला, मनमेआवे उसका कुछ विचार
कामकरनेवाला, शरीरके अवयव मजबूत, ऐसा इसराशीका स्व
सर्वराशियोमे यह राशी जल्दी पेहचानमे आसक्तीहै और इसरा
मनुष्यभी बहुत देखनेमे आतेहै ।

इसराशीमे यदि रवि होवेतो सफेत, हरा, और कालामिले हुवे
जैसे किसी किसी अंग्रजो के नेत्र होतेहै वैसे नेत्रहोवे, रवि और
एकत्रहोवेतो विशेष उपरोक्तरंग केनेत्र होवे, केवल मंगलहोवेतो
केश तांबेकेसमानव पिंगट होवे, इसराशीमे जो अकेला रवी लग्नमे
तो वह मनुष्य ऊंचा शरीरका और संतप्तहोवे, व मस्तकशूलकीपीडा
इसराशीके लग्नमे केवलमंगल होवेतो शरीरके कोईभी भागसे रक्तस्राव
विकारहोवे, मुख व छाती का भाग विशेषलालहोवे, मस्तकमे गूमडे
टाट वगेरा विकारहोके उस की निशानीरहै, किंवा पडनेसे जखम
उसकी निशानीरहै, अथवा माताके व्रणहोवे, ।

रवि किंवा मंगल इसराशीमे दूसरेस्थानमेहोवेतो विशेषकाला हरा
सफेदामिलेहुवेरंगकेनेत्र (कोई२अंग्रेजोके जैसे होतेहै वैसे)होवे, व
मनुष्यके सरीखेहोवे, और नेत्रपीडा (आंखआनेकी) विशेष आदत
चौथे अथवा छठे स्थानमे ये ग्रह होवेतो अपघातहोवे, आग्निभय
पेट पर दाग (डामके) निशानहोवे, भयंकर तापआवे, छोटी माता
बडीमातसे विशेषपीडाहोवे अम्लपित्तरोगहोवे या अग्निसे जलने
दुःखहोवे, ।

इसराशिमे लग्नमे शनिहोवेतो बोलतेसमय जबानविशेषे अटके अथव
दूसरी कोईभी खोटहोवे दांतचंदकरके बोले किंवा टेढामुंह करके बोले
नेत्रमैले बारीक व ढूंढेहोवे और कुछ पिंगट होवे ।
शनिकेसाथ रवि अथवा मंगलकायोग होवे किंवा रवि मंगल दोनुक
योग होवेतो नेत्र मांजरे (बिल्लीकेनेत्रके समान) होवे, इसराशीमे रा
अथवा शनीकोईभी स्थानमे होवेतो शब्द फीका खोखरा होताहै ।

वृषभ—कृत्तिका के तीन चरण रोहणी व मृगके दोचरण मिलके
वृषभ राशी होती है इसराशी के मनुष्य क्वचित मिलते है ।
शरीरकाबांधा खुबसूरत व मध्यमऊंचा, दांतसफेत, वर्णसफेत
और व तेजस्वी, चेहरामोहक, व सुंदर, नेत्रसफेतहोके तेजस्वी प्रकृ
निरोगी गालऔर हातकामणीबंध (कलई) गोल और भरीहुई, वि
तः शरीरमे वर्तुलत्व तेजवअतिस्वच्छता येगुण विशेष नजरआते
चेहरेपर छायाका चिन्हभीहोजावे इसराशी किस्त्रिया अति तेजस्व
और गौर होती है.

इसराशिमे गुरु चंद्र किंवा शुक्रहोवेतो शरीर का और दांतका व
स्फटिक के समान शुभ्र व तेजस्वी होताहै.
उपरोक्त वर्णन जैसा रोहिणी भागमे अच्छामिलेगा वैसा इतर भाग
नही मिलेगा.

मिथुन - मृगके दो चरण, आर्द्रा व पुनर्वसुके तीनचरण मिल
मिथुनराशी होती है इसराशी के मनुष्य बहुत नजरआते है
चेहरासुंदर और दाढीकभागकीतरफ छोटापन मस्तकपीछेकेभाग व
तरफ नारेलसरीखालंबा शरीर दुबलापतला व ऊंचा, वर्णहरामिलाहु
काला, नेत्रकाले, केशबारीक, स्वरमंजुल, वाणीस्पष्ट, विशेषबोलनेवाल
वक्ता (व्याख्यानदाता) विद्वान, विद्याव्यासंगी, भाषाशास्त्र उत्तमजान
वाला, शास्त्री, पुराणी, श्लोक दोहे वगैरा का उपयोग बोलने
विशेष करने वाला, और कमर बाहर निकालकेनमताहुवा चलने वा
होवे, येइस राशी के लक्षण है–

कर्क—पुनर्वसुका एक चरण, पुष्य व अश्लेषा मिलके कर्कराशी है
तीहै. इसराशी इनम पानीमेंफिरनेवाला, बाग बगीचे का शोकीन, नहाया

केनजकि जन्म पानेवाला अथवा रहनेवाला, फिरनेका धंधाके वाला, गायन जानने वाला, आगेके दांत चोडे व मोठे, और इसके बाहरदिसनेसरीसे, चेहरा गोलऔरमोहक, हातकेपंजेडगिये और पांव ये अवयववडेहोवे, वहातेजदोडनेवाला जल्दी गये बांके पांवरखके चलनेवाला, शूर, अभद्र बोलने वाला, चैनकरने वाला स्त्रीयोंका शोकीन दोस्त्रियोंवाला, वर्णकालासांवला, बांधासाधारण मजबूत, बंधायिमध्यम, व्यसनी और अनेक स्त्रीयोको भोगनेवाला इस प्रकार के लक्षण इस राशी के है.

इस राशी के लग्न में गुरू होवेतो वर्णगोरा व बांधाशरीर अच्छा होता है और निर्धन शनी होताहै, इस राशी में शुक्र व चंद्र लग्न मेंतो अती चैनी होताहै, और गाने का बजाने का तथा नाटक विशेष शोकीन होताहै, मंगल शनी व राहु होवेतो व्यसनी हल विचार का व रोगी प्रकृति का होता है, चतुर्थ तथा षष्ट स्थान में राशी में ये ग्रह होवेतो दुःख दारिद्र और विपत्ति भोगने वाला पुरुष पेटमे दुखने का तथा उदर रोग वाला होता है.

सिंह—मघा पुर्वा व उत्तरा का १ चरण मिलके सिंह राशी होती है, दांतभातिशय मजबूत, छाति चोडी व भरदार, कपाल विस्तीर्ण और कुछेक आगे निकला हुवा, चेहरामोंगेके पाससेसूक्ष्म दृष्टी से देखने से सिंह सरीखा दीखे, नाकऊंचा, शरीरमजबूत, कवाइदा शरीर, वर्णकाला, शब्दमोठा, निधडकछातिका, धेडर, सभासदोंसे अलगण्य होके वद्धारमे नियमितचलने, वाला अधिकारि (आग्रह वर) प्रकृवान, छातिकोभाग निकालके चलने वालाओर महाराई वाला, बडा मजबूत बलवान, किल्ला पर्वत और अरण्य इनमें कोईभी कारण बश निवास करने वाला, व इनमें प्रीतिरखने वाला, इस प्रकार इस राशी का स्वरूप है ।

इस राशी मे गुरु चन्द्र शुक्र बुध ये ग्रह होवेतो वर्णगोरा होता है. चेहरेका इकेरा सहन में गोल (दबदबा) बैठ जाता है कपाल भव्य मोटा व मस्तक का भागभी बडा होता है

रवि होवेतो बहुधा वर्ण काला होता है, पण शरीर मजबूत व अतिशय पुष्ट होताहै. मंगल होवेतो प्रकृति अति उष्ण होताहै, शरीर बहुत बल

:वान मजबूत होता है, वर्ण तांबेके समान होता है, नेत्र पीले, शरीर का दिखाव लढ़ाउमनुष्य के समान, और अति गंभीरदिखताहै, दूसरे मनुष्य को अपने ताबेमें रखनेवाला कपाल अधिक आगे निकला हुवा और कपाल पर उंचापणा, तेजस्वी, क्रूरस्वभावका, अमलदार, (बडा आफिसर) सनापति होने योग्य, अपघात, दुःखाप्ति, और रक्त स्राव इनका भय विशेष, ऐसा होता है.

शनि किंवा राहु होवेतो शरीर परिश्रम सहन करने की शक्तिवाला होता है परंतु रोगिष्ट रहता प्रमुखत्व प्राप्त नही होवे शत्रुभय विशेष होवे.

कन्या—उत्तरा के तीनचरण हस्त और चित्राके दोचरण मिल के कन्या राशी होतीहै. लम्बावाला खडा रहे और चले उस वक्त गर्दन टेढीरक्खे, आलसी, धीमा, चलते समय हातजादे हिलावे, हंसताहुवा बोले, चेहराचौडाव गोल, चालहातीसरीखीघूमती, स्रीयों के लक्षण. विशेष, स्वरवारीक, विद्वान, हस्तकलाकुशल, पहनने के कपडे वगेरा का विगड ने करने की विशेष चिंता नही करने वाला, इस प्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

तुला—चित्रा के दो चरण स्वाती और विशाखा के तीन चरण मिलके तुल राशी होतीहै. चेहरा, हात, पांवकी नलिये ओरएकंदर शरीर अधिक लंबा होता है, पांवकी नलियें वाकदार, शरीरउंचा और दुबला पतला, वर्ण बहुधा काला, स्वर पतला, मुंह बंद करके हंसने वाला, अनुकरण करने योग्य, गिनतीके और तुलेहुवेवचन ठहरके बोलने वाला, वृत्तिसात्विक बोलते समय उभीगर्दनजादे हिलाताहै खडा रहे और चले उस समय कमर नमाके आगे झुका हुवा दिखता है, विद्वान, और शास्त्रज्ञ, ऐसा इस राशी का स्वरूप है।

लग्न मे रवि इसराशी का होवेतो शरीर विशेष ऊंचा व काला होताहै, चंद्र होवेतो शरीर के अवयव जादे लंबे और गोरे होते है, गुरु शुक्र व बुध होवेतो दिखनोटा सुंदर शरीर होता है.

वृश्चिक—विशाखा का एक चरण अनुराधा ज्येष्ठा मिलके वृश्चिक राशी होती है. कमर के उपर के भागकी अपेक्षा नीचे का भाग छोटा होता है, औरउसी प्रमाणे कितनेक अवयवभी छोटे होतेहै, ऊंचाइ

कम होतीहै नाक मोटा और फूला हुवा स्वभावगहरा और सुन्नस रखने वाला, सर्वदांतबडे, वर्णगोरा, मुखकाजबाडा मोठा, इस तरह का इस राशी का स्वरुप है.

धनु—मूल पूर्वाषाढा और उत्तराषाढाका एक चरण मिलके धनराशी होतीहै. छाति आगे करके घूमते चलनेवाला कसाहुवा शरीर, शरीरकी आकृति विशेषमजबूत और सुडोल, नाक चंपेकीकलीके समानतीखा शरीरनदुबला न आदिपुष्ट, बहुतहीमजबूत, गला व दाढी ये भाग मानो किसीने हातसे दुरुस्त किये होवे वैसे कोरदारसुन्दर गरदन जाडी भरी हुई, भुजदंडभरेहुवे, पहलवान के समान, और हाथकी ई जाडी घोडेपर बैठनेवाला, लडाई दंगे में पीछे न हटने वाला, बोलने मे बलका गर्व विशेष रखनेवाला, वर्णसाधारणगोरा, लडाई मे बहादुर, नेत्रपीले, ऐसा इस राशी का स्वरुप है.

इस राशी मे मंगल होवेतो प्रकृति अत्यंत उष्ण होति है और अर्श (बवासीर) अथवा दूसरा रक्त विकार का कोईरोग, अपघात किंवा कोईभी दुःख की प्राप्ति होतीरहे, शुक्रहोवेतो शरीर तेजस्वी होवे देवी मनुष्यकेसमान दिखनेवाला होता है, बुध वा गुरु इस राशी मे होवेतो साफसुथरा तेजस्वी सुन्दर स्वरूप वाला होता है, शनि वा राहु होवेतो सुडौलसशक्त होवे परंतु रोगिष्ट रहे.

मकर—उत्तराषाढा के तीनचरण, श्रवण, धनिष्ठाके दोचरण मिलकर मकर राशी होती है, कितनेक समय शरीर पतला, छोटा गर्दन ऊंट सरीखी लंबी, असंबद्ध और अविचार से बोलनेवाला एकही बात में मन गुंथा रखनेवाला, अंगविशेष हास्यास्पद, एकदम बडे आवाज से और मध्य मे बहुतधीरज मे भाषण करने वाला, कितनेक समय शरीर अति स्थूल, (मजबूत) शरीर के कितनेक अवयव पावकी अपेक्षा अधिक मोटे, बालोंसे जकडा हुवा शरीर, स्नान संध्यादि धर्म अनिच्छासे करने वाला, परमेश्वरकी सगुण भक्ति करने वाला, समाजने के तरफ विशेष लक्ष देने वाला, बडी बडी, गुच्छेदार मूछे रखनेवाला, भौंके केस बांके, दूर दूरदेशोंकी मुसाफरी करने वाला जवाहरातके सरीखा किंवा बहुतपानीक, शरीरके मान से मस्तक बहुत बडा, इसप्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

इस राशी मे जब मंगल अंतके भागमें होवेतो शरीर बडा भारी व अति लट्ठ होता है वर्ण, तांबेके समान होवे और शरीर पर अतिशय केसहोते है.

कुंभ—धनिष्ठा के दोचरण शततारका, पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरण मिलके कुंभ राशी होतीहै, शरीर सूक्ष्म, बहुधा मस्तकपर तालुके भागमे केशनहीहोवे. कपालके दोनुबाजुके भाग जादे छोटे दिखतेहे, चेहरा दिखाउ सुंदर, विद्याव्यासंगी, बडाकल्पना करने वाला, गंभीर व तात्विक विचार करने वाला, कायदेकापंडित इस प्रकार इस राशीका स्वरूप है. इसराशीका शनि लग्नमे होवेतो शरीरपुष्ट, ऊंचा, और मजबूत, होताहै.

मीन—पूर्वा भाद्रपदा का अेक चरण उत्तरा भाद्रपदा व रेवती मिलके मीन राशी होती है. शरीर विशेषठेगणा, मस्तक व कितनेक शरीर के अवयव बहुत छोटे, जननेंद्रियचारीक, वर्णसाधारणगोरा, इसप्रकार के इस राशी के लक्षण हे.

इस प्रमाणे राशी के सामान्य लक्षण है एक राशी के सर्वही लक्षण एक ही मनुष्य में मिल जावेगे ऐसा नही समझना चाहिये किंतु जिस समय एक दो लक्षण स्पष्ट देखने मे आवे उस समय उस राशी का निश्चयात्मक ज्ञान होवेगा।

लग्न अमुक राशिका व चन्द्र अमुक राशीका है ऐसा निश्चयात्मक कहते आना मुश्किलहै तथापि दोनो मेसे एक कायम होने बाद दूसरे का ज्ञान उसने होसकेगा इस काममे अवलोकन व विचार शक्ति बढाने का ज्यों ज्यों विशेष अभ्यास होता जावेगा त्यो त्यो लग्न व चन्द्रकी परिक्षा होने मे परिज्ञान अधिक बढता जावेगा।

ग्रह परिक्षा.

कुंडली मे ग्रह कहींभी क्योन बैठेहो राशिपरत्व और स्थानपरत्व शरीरपर परिणाम अवश्य करते है इस परिणाम का बरोबर ज्ञान होने से किसी समय लग्न का ज्ञान नहीभी होवेतो वह इस परसे होसका है इस कारण थोडेसे अनुभव किये हुवे योग नीचे दिये है.

१ कपाल अधिक आगे दिखेतो सिंह राशीका मंगल लग्न में है ऐसा जानना—

२ नेत्र पीले और लाल दिखेतो अग्नि राशी (मेष-सिंह-अथवा धन)मे रवि अथवा मंगल ग्रह है ऐसा जानना नेत्र बहुत बडे और आगे आये हुवे (निकले हुवे) दिखने के लक्षण मंगल के ही है यह निश्चय जानना—

३ नेत्र गोल होवे और आगे हुवे दिखते होवेतो सप्तम मे मंगल है एसा समझना.

४ कपाल मे दर्द, अर्श (बवाशिर) नेत्रो मेआरक्तपणा, चेहरेपर अधिक लाली, एसा लक्षण होवेतो मंगल लग्न मे है एसा जानना.

५ गर्दन के भागपर लाल रंगका दाग, किसीभी कारण से उत्पन्न हुवे जखम का निशान होवे अथवा जल जानेका तथा रक्त विकार के गाठ वगेरा का चिन्ह होवे माताके व्रणका चिन्ह होवे इस प्रकार के लक्षण देखने मे आवेतो लग्न मे अथवा चन्द्र के पास मंगल होगा और ये योग मेष राशी पर हुवा होगातो अवश्य कुछ निशान होवे होगा.

६ नेत्र मे पीडा होती रहती होवे विशेषतः आखोकी पलको मे दाने पडजाने का विकार होवेतो मंगल धनस्थान मे है असा जानना.

७ शरीर का कोनसाहि भाग टुटा हूवा काटा हूवा अथवा जलाया हूवा होवेतो धन राशी मे मंगल है एसा जानना.

८ काला हरा और सफेद मिले हुवे रंग के नेत्र जैसे किसी २ अंग्रेज के होते है वैसे होवेतो रविमंगल किंवा हर्शलमंगल ये नेत्र स्थान में अथवा कुंडली मे कहींभी एकत्र होवेंगे.

९. नेत्र अति तेजस्वी स्वच्छ काले व पाणीदार होवेतो शुक्र दूसरे स्थान मे अथवा नेत्रस्थानमे होवेगा एसा समझना.

१० नेत्र मलिन अतिकाले गहूल रंगके (गुगले) छोटे बडे इस प्रकार के होवेतो लग्नमें अथवा दूसरे स्थान मे चंद्रसे युतशुक्रजानना.

११ शुक्र के समानही चंद्रकेही नेत्र होते है यह अवलोकन अभ्यास शक्ती से इनदोनो ग्रहोका फरक समझ नेमे आताहै लिखते नहीं बनता।

१२ नेत्र मे हरेपणा अधिक होवेतो रवि शनि,मंगल शनि,व हर्शल शनि, का योग लग्नमे अथवा दूसरे स्थानमे कर्क, सिंह, धन, मेष, राशी मे है एसा जानना.

१३ दात शुभ्र स्वच्छ व तेजस्वी होवेतो चंद्र गुरू और शुक्र लग्न तथा दूसरे स्थान मे समझना.

- १४ आर्द्रमुख व होठपर चर्बी व लालपणा विशेष होवेतो लग्नमे तथा दूसरे स्थानमे चंद्रसमझना.

१५ बोलते वखत अटकता होवे तथा जीभ मे विकार होवेतो लग्नमे अथवा दूसरेस्थानमे राहूपापयुत समझना.

१६ दातबंदकरके अथवा मुखजादे नहीखोलके मुहमेही बोलताहोवे तो लग्नमे शनिहै ऐसाजानना.

१७ लिखनेके समय मुहवांकाटेढा करके लिखताहोवे तो दूसरस्थानमे राहु का संभव जानना.

१८ जिबान आगे करके बोलता होवे रकारका उच्चार उत्तम नहीकर सक्ता होवे किंवा अन्यकोई बोलने की खोड होवेतो चंद्रराहुसंयुक्तजानना अथवा लग्नमे राहूजानना.

१९ दंतपंक्ति धनुष्या कार व अतिशय वांकदार होवेतो लग्नमे राहू होताहै.

२० दमा सर्दीका बिकार व वातबद्ध शरीर होवेतो शनिचंद्र जलराशीमे अेकत्र समझना.

२१ बोलतेवखत संकारताहोवे व वारंवार खांदेसे गरदन घसताहोवे तो चंद्र शनि कुंभराशिमे एकत्र जानना.

२२ हमेशा सरदी से नाकवहता होवे वा बहुधा बोलते समय नाकमे कुछ अटकगयाहोवे वैसा करेतो शनिचंद्र मकर राशिमे अथवा जलराशि (कर्क वृश्चिक मीन) मे जानना.

२३ पेट बहुतबढादिखे किंवा पेटपर बहुतसेकेश होवेतो चौथेस्थान मे चंद्र अथवा गुरु इनदोनोमेसे एक का संभव जानना.

२४ अम्लपित्तका रोगहोवे तो रविमंगल ये दोनो मेषराशी के होके लग्न चतुर्थ वा षष्ट स्थानमे जानना.

२५ अपस्मार (मृगी) होवेतो चंद्रमा शनिसे युक्तहै और सामने मंगलहै किंवा चंद्रमा मंगलसे युक्तहै और सामने शनिबेठाहै वा छठे स्थानमे चंद्र और बारमे स्थानमे मंगल गया है एसा जानना.

२६ वस्त्रा भरणसे शरिरको सजानेवाला, न्यारे न्यारे रंगके अनेक प्रकार के पोषाख पहननेवाला, और शोकीन,ऐठवान,अत्तरकाशोकीन, ऐश करनेवाला होवेतो लग्नमे शुक्रहोनेका संभव जानना.

२७ तुंद (तोंद) वाला शरीर, गोरा, सत्वगुणी, श्रेष्ठबुद्धिका, कफ प्रकृति, विनचूक कामकरनेवाला, स्मरणशक्तिअपूर्व, अश्रांतश्रमकरने वाला, भव्य, बिलकुलनिर्व्यसनी, गंभीर, सभ्य कीर्तीमान्, विद्वान सफेदकपडेपहननेवाला, दांत व नेत्र स्वच्छ, विद्याव्यासंगी, प्रौ विचारका होवेतो लग्नमे गुरु जानना.

२८ अंडवृद्धि का विकार होवेतो वृश्चिक राशिके शनिको मंगल देखता है किंवा वृश्चिक राशिमे गयेहुवे चंद्रको शनि और मंगल देखते होंगे एसा जानना.

२९ जाली फूल पत्ते कतरना वलणदार [मरोडदार सुन्दर] अक्षर लिखना नाम्मनसे अक्षर लिखना ड्राइंग वगेरा कोईभी तरहकी हस्त कौशल्यका काम करताहोवे तो कन्याराशीमें शुक्र अथवा चंद्रमाका संभव जानना.

३० वकील बेरीस्टर सोलीसीटर वा जज होवेतो मिथुन कन्या, किंवा मकर कुंभ, किंवा धन मीन, इनलग्नमे जन्म जानना.

अथवा इन लग्नमें जन्मनहीहोवेतो बुध गुरु व शनि तो अवश्य उ- गोक्त राशीमें समझना—तथा शनि और गुरु ये दोनो ग्रह उसकी कुंडलीमें मुख्यत्वसे तीन स्थितिमें अवश्य होवेंगे.

१ शनि गुरु एकराशीमें पडकर नजीक नजीक अंशमेंहोवे.

२ शनि गुरु परस्पर एकसे दूसरा सातवे स्थानमे होवे.

३ येही ग्रह परस्पर नवम पंचमहोवे और मेष तुल मिथुन धन कुंभ किंवा सिंह राशिके होके १।७।२।८।५।११।३।९ स्थान मेंरहे है ऐसाजानना.

३१ इंजनियर तथा एल. सी. परिक्षा पास कियाहुवा ओव्हरसियर होवेतो उसके मिथुन तुल या कुंभ राशीका मंगल और शुक्र १।३।५ ९।११ मे स्थानमे है, रवि और शुक्र एक राशी में नजीक नजीक अंशके है, और लग्न अथवा चंद्र चरराशिके है ऐसा जानना।

३२ शिक्षक का धंदा करनेवाला होवेतो लग्न अथवा चंद्र से दशवे स्थानमें गुरु समझना.

३३ असिस्टंट ड. नौकरी करने वाले गार्ड गार्ड गार्ड किंवा टेला (इन्स्पेक्टर) होवेतो मेष लग्न किंवा मेषका चंद्रहै ऐसा समझना

३४ [illegible] संटरा तुना सीटा वगैरा का विशेष शौकीन होवेतो मक

राशीमे गुरु अथवा चंद्रहै एसाजानो

३५ राजकीयसंकट आयेहोवे तो रवि अथवा चंद्र इनका भें
किंवा हर्शल का केंद्रयोगहे अथवा रवि या चंद्र शनि अथवा ह
युतहै ऐसाजानो

३६ सर्जन डाक्टर होवेतो वृश्चिक राशीमे चंद्र मंगल अथव
अथवा वृश्चिक राशी लग्नमें या दशमेहै ऐसाजानो।

३७ निपुत्रिक होवेतो शनि व गुरु एकराशीपर है एसाजान
३८ संतती मूलमे होतिही नहीहोवे अथवा बहुत कम होति
पंचम भावके आरंभमे सिंह कुंभ अथवा मेष राशीहै एसाजान
३९ संतती जल्दी जल्दी होती होवेतो पंचममे कर्क मकर वृ
मीनराशिहै एसा समझो

४० कन्या प्रजा अधिक होतीहोवेतो लग्न चंद्र पंचम स्थान
ये कर्क मकर वृश्चिक वा मीन राशीमेहै एसाजानो

४१ लडके अधिक मरते होवे तो गुरू व मंगल ये एक रा
बहुत नजीक नजीक अंशके अथवा मंगल की पूर्ण दृष्टि योग
है ऐसा जानना।

४२ गर्भपात होते होवे बालक जन्म के बाद अल्प काल मे
होवे स्त्री के प्रसुती समय में बालक अडताहोवे किंवा वा
काट के निकाल नेका प्रसंग आताहोवेतो पंचमस्थानमे वा
स्थानमे राहु मंगल व हर्शल ये ग्रहहै ऐसाजानना. परंतु कर्क
मेष, राशी का राहु होवेतो संतान जल्दी देताहै और हानीभी न
४३ सर्व लडकेहि होतिहोवेतो पंचममे पुरुष राशि है और
भी पुरुष राशी में है अथवा पांचमे व एकादशस्थानमे पुर
एसाजानना.

४४ संतती एकदफ्त होने बाद फेर बहुत वर्ष पीछे बालक
पंचममें तथा एकादशमे शनिहै एसाजानना.

४५ पीठपर बहुत भाई बहन होवेतो तीसरे स्थानमे कर्क,
वृश्चिक, मीन, ये राशी है ऐसाजानो.

४६ पीठपरके भाई बहन जीवते नहीहोवेतो तीसरे स्थानमे
मेष सिंह धन वा वृश्चिक राशिका, होनेका संभवहै.

४७ ज्येष्ट म पीठपरका (छोटा) भाई व बहन मृतहोवे अथवा उन के गर्भगत हुयेहोवेतो तीसरे स्थानमे रवि या मंगल है एसा जानना.

४८ भाइयोंमे एकता नहीहोवे किंवा भाइयोंका कोईभी तरह का सुख नहीहोवेतो तीसरे अथवा ९ नवमे स्थानमे मंगल है एसाजानना

४९ कानसे कम सुनताहोवे तो मिथुन तुल या कुंभ राशीका शनि तीसरे ग्यारमे अथवा नवमे स्थानमे जानना.

५० कान फुटाहोवेतो शनि मंगल व रवि ये ग्रह तीसरे ग्यारवे किंवा नवमे स्थानमे एकत्र अथवा, उलट पुलट ये एक एक ग्रह एक एक स्थानमे होने का संभव जानना ।

५१ जन्म होनेके पश्चात् ७ सात वर्ष केभीतर किंचित पहले कोईभी समय जो कुटुंबमे एक अथवा अधिक अकस्मात् मृत्यु हुवे होवेतो दूसरे स्थानमे हर्शल है ऐसा जानना ।

५२ हर्शल का स्वाभाविक धर्म ऐसाहै कि यह जन्म कालमे जिस स्थानमे होवे उस स्थानपर जिस व्यक्तिका विचारकिया जाताहै उसी व्यक्तिका अकस्मात् मृत्यु होताहै ।

५३ मा बापका मृत्यु एकसाथ एकही समयमे होवेतो चतुर्थ स्थान में शनि चंद्र योग होवे और चोथे अथवा दशमे स्थानमे हर्शल होना चाहिये-इससंबंधके औरभी योगहै वे इससंबंधमे क्रमसे अगेआवेंगेही

५४ जिनके भगंदर सर्वांगमे जखम किंवाव्रण, गर्मी व दूसरे भयंकर जननेंद्रियके विकार होवेतो उनके छठेस्थानमे वृश्चिक राशीमे शनि किंवा मंगल होवेगा ।

५५ लग्नकार्यमे जो भांजगडपडीहोवे किंवा अकस्मात् लग्न निश्चय हुये हुवे बिखरजावे किंवा अन्य विघ्न आयेहोवे तो सप्तममे हर्शल होनेका संभवहै

५६ जिनको दिगंत कीर्ति प्राप्तहोतीहै उनके नवम स्थानमे गुरु चंद्र योग होताहै ।

५७ जो मनुष्य अपने पीछे अपना नाम कायम रखने वालेहोतेहै उनके नवमस्थानमे अथवा चंद्रसे नवमस्थानमे शनि, गुरु रवि व हर्शल इन चंद्रग्रहोमेसे एकादा भी ग्रह, बलवान गये विनारह तानही

५८ साधारणतः श्रीमंत मनुष्योंके ग्रह उदील (उत्तमसेलग्नपर्यंत)

भागमे किंवा धनभाग (नवमेसे तीसरे स्थानके आरंभ पर्यंत) मे बहुत ग्रह स्थित होतेहै ।

५९ द्रव्य कितनाही मिले तथापी हातमे टिकतानही विनाकारण खर्चहोजावे कर्जहोजावे वगेरा बाते संपत्ति संबंधमे बनतीहोवे तो लग्न के तथा चंद्रके दुसरे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै बाजवी रीतीसे खर्च करतेहुवेभि पैसा की तंगीरहे और कर्जा करनापडता होवेतो लग्नसे अथवा चंद्रसे बारवे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै ।

६० कुटुंब बडाहोवे किंवा बहुत मनुष्यो का उपजीवन स्वतःके आधारपरहोवे तो दुसरेस्थानमे गुरु होने का संभव होताहै

६१ कुटुंब मे कलह होताहरहताहोवे तो दुसरेस्थानमे रवि होनेकासंभवहै

६२ वडीलार्जित संपत्ति के संबंधका झगडा पेदाहोवेतो दुसरेस्थानमे मकर राशिका रविहोनेका संभवहै.

६३ वाहन (सवारी) तथा चतुष्पदका व बगीचेवगेरा कृषी का शोख होवेतो चतुर्थस्थानमे गुरु शुक्र अथवा बुध होनेका संभवजानना

६४ नाक मुख दांत पेढीये वगेरा मेसे कोइभी अवयवसे रुधिर जानेका विकार होवेतो मेषराशिके २६ अंशके भागे का लग्न होताहै ।

६५ स्त्री अति सुंदर व गोरी होवेतो सप्तममे अथवा लग्नमे शुक्र होवे अथवा गुरुहोवे क्वचित चंद्रभीहोता है ।

६६ स्त्री श्यामवर्णकी दुबले पतलेबांधेकी और बडी संतप्तक्रुरस्वभाव की होवेतो सप्तममे अथवा दुसरे स्थानमे मंगल होताहै ।

६७ बालबच्चे सुस्वरूप होवेतो पांचमे अथवा एकादश स्थानमे शुक्र होनेका संभवहै ।

६८ बच्चे रोगी रहते होवे तो पांचमे स्थानमे शनि अथवा मंगल होनेका संभवजानना ।

६९ कथा बांचनेवाला तथा व्याख्यान दाता शास्त्री किंवा वैय्याकरणी होवेतो मिथुन राशीका लग्न अथवा चंद्र होताहै ।

७० स्त्रीउठके चली गई होवे किंवा किसीभीकारणसे स्त्रीसे बेबनाव होवेतो सप्तम स्थानमे हर्शल जानना ।

७१ यदिकोई मनुष्य किसीके गोद (दत्तक) गयाहोवेतो उसकी कुंडली मे नीचे लिखेहुवे योगोमेसे एकआद योग निश्चय होवेगा ।

(१) कर्क किंवा सिंहराशीमे पापग्रह.
(२) चंद्र किंवा रवि ये पापग्रहोसे युक्त अथवा दृष्ट.
(३) चतुर्थ अथवा दशम मे पापग्रह.
(४) मेष सिंह धन किंवा मकर इन राशियोमेसे कोईभी राशी चतुर्थ अथवा दशम स्थानमे.
(५) चंद्र के चतुर्थ स्थानमे पापग्रह.
(६) रविके दशमे अथवा नवमे पापग्रह.
(७) चंद्र अथवा रवि ये शत्रुक्षेत्री शत्रुग्रहसे युक्त.

७२ जोडले (दोबच्चे साथहोवे) बच्चे बहुधा एकलग्न और ए राशीमे जन्मपाते है उनके लग्नमे राहु होताहै और वह राहु क मीन मिथुन अथवा धन राशी मे होताहै मीन और मिथुन ये रा राशि चक्रमे युग्म (जोडली) राशीहै इसकारण जोडले बालको कुंडली मे इनराशीमे लग्न, चंद्र, राहु, किंवा शुक्र, अथवा ल स्वामी, होतेहै ऐसा देखनेमे आताहै कन्या और धन ये राशी भ क्रमसे । मीन और मिथुन राशी की सातमी राशी है इसकारण व रोक्त लग्न चंद्र राहु आदि इन राशियोमे भी देखनेमे आतेहै !

७३ ललाई लिये हुवे गौर कांती, मुखपर व छातीपर लाली, ने पाणीदार, चित्र विचित्र पोषाख धारण करने का हौस निर्मल तेजास्विता, बूट, स्टाकिंग घडयाल, छत्री, लकडी ये वापरने का हौ होवे तो शुक्र और मंगल का योग होने का संभव होता है ।

७४ चेहरा ऊंचाकम, चोडाजादा, हास्यमुख, टापटीपसे मर्द वाला वक्तृत्वविशेष स्वच्छ वस्त्र पहिनने का व शरीर स्व रखने का और विद्या व्यासंगका हौस होवे तो लग्न में बुध है ए जानना ।

७५ शरीर दुबला पतला कफ प्रकृती, गौरा व पाणीदार अनियं बोलने वक्त जिसके मुहमेसे थुंक उडता होवे या लाळ पडती है दांतस्वच्छ पोषाख मलिन नेत्रसफेद, प्रवासी, अलंकार व सुगंधीद्र धारण करनेवाला ये लक्षण होवेतो लग्नमे चंद्र होनेका संभवहै ।

७६ निर्दयपनी होवेतो लग्नमे बुध गुरु शुक्र अथवा चंद्र इनमे भी एक ग्रह समझना ।

७७ जगतमे लोग भगवे गिनेजातेहो जो राजा, संस्थानिक, जाहागि रदार, इनामदार, किंवा बडी तनख्वाह के सरकारी मोठे नोकर, (ब ऑफ़िसर) बहुतलोकोपर अधिकार रखनेवाला, तथा बहुतलोग जिसव मानदेवे और अपने उपर मुख्यमाने तथा जोलोग खासगीधं चलानेवाले होवे उनको भी जगतमे राजा अथवा प्रजाके पाससे मा मान मिले, प्रजाकेलोको के तरफ से यही अपना खरा अग्रगण्य है ऐ समझ राजा सरीखा मान जिसको मिलताहो, उत्तम व्याख्यान दात उत्तमपुराणिक, बडा शास्त्री, उत्तम हरीदास, वगेरा मानपानेवाले लो तथा जिनके हाथनीचे विशेष लोक काम करतेहो. जो प्रधान हो कोईभी मुख्य पदपररहनेवाले होते है, उनकी कुंडली मे सिंह अथ कर्क ये राजाराशि अवश्य बलवान् हुये बिना रहती नही। और जैस जिसका अधिकार और मान बडा होवे उसो माफिक इन राशिमे रा चंद्र गुरु बुध किंवा शुक्र ये सर्व ग्रह किंवा इनमेंसे एकभी कोई ग्र युक्त हुये विना रहतानही.

(१) लग्न सिंह होवे इस राशि मे रवि, चंद्र, गुरु, बुध किंवा शु मेसे कोई एक ग्रह वा सर्वग्रह युक्त होवे और दशमे इनमे कोई ग्रह होवेतो मुख्यत्व प्राप्त करणेका कारण होताहै.

(२) मंगल सिंह राशि का होवे या दशमे सिंह राशिका जावेतो उ मनुष्य को मुख्यत्व शीघ्र मिले और उसका मान अधिक और तनख्वाह जल्दीर बढतीजातीहै

(३) सिंहराशि मे राहु शनि ये दो ग्रह मात्र अच्छेनहीहै ये ग्रह वे तो मनुष्य जिस खाते मे होवे उस खाते मे मुख्य की जग उसको जल्दी मिलने वालि नही और तरक्की (प्रमुशन, पग बढना) भी जल्दी होता नही

(४) सिंहरादि १।३।४।५।९।१० स्थान मे स्वाभाविक बलवान है इ स्थानो मेसे कोईभी स्थानमे येराशि होवे और इसमे गुरु, मंग रवि, चंद्र बुध, या शुक होवे तो अनुक्रम उत्तोतर पहिले अपेक्षा दूसरा निर्बल योगहोताहै

(५) सिंहराशि मे कोई भी ग्रहनही होवे तोभी केवल सिंहराशि उपरोक्त स्थानमे होवेतो मुख्यपद देताहै उपरोक्त बडेमनु

कि कुंडली मे सिंहराशि कोई भी उपरोक्त स्थिती में जोनही होवेतो फिर फल ज्योतिष का महत्वही क्याहै ।

(३) जिस प्रमाणे सिंहराशि का वर्णन कियाहै उसीप्रमाणे कर्क राशि काभि महत्व है फक्त इसराशीमे कोइभी पापग्रह का योगनही होना चाहिये शुक्र, बुध, चंद्र, गुरु, ये ग्रह इसराशिमे उतरोत्तर बलवान होते है

(७) कुंडालि मे ये दोनु [४।५] राशि उत्तम स्थितीमे होवेतो अति उत्तम योग होताहै

एक राशि बलवान दूसरी निग्रह होवेतो उत्तम योग

एकराशि बलवान दूसरी बलहीन होवेतो मध्यम योग

परंतु कर्क राशि बलवान और सिंह निर्बल होवेतो निर्बल योग

(८) लग्न बलवान होवे और इन दोनुराशी का पूर्वोक्त योग कुंडलीमे कहीभी होवे तो इनके फलका अनुभव स्थान बलके योग्यतानुसार मिलेगा।

लग्नबलवान नही होवे और ये राशी कुंडलीमे कहीभी बलवान होवेतो जो हल के प्रकार की मुख्यपणे की जगह होवे वह जगह मिलतीहैं परंतु जिनके लग्न बलवान नही होवे और ये राशी भी बलवान नही होवे तो उसका जीवनतो निरर्थक ही होताहै.

इनके शिवाय जितने अनेक योग इस पुस्तकमे लिखे है उन सब योगोका इसी प्रमाणे मनुष्य केशरीर लक्षण सुख दुःखादि जीवन क्रमके योग मिलाके अनुभव करने का सतत अभ्यास करते रहने से कुंडली देखनेकी जिसमानकी अवलोकन व विचार शक्ति ज्यों ज्यों अधिक बढेगा त्यों त्यों अद्भुतफल कहनेका और सहजमे मनुष्य की कुंडली के ग्रहोंकि परिक्षा करनेकी योग्यता उतनेही मानसे बढतीजावेगी । इतिशम्

इति प्रथम विवेक टीका समाप्तः

अथ धनविवेक.

धनेगेशे खेलाभपे धनेशांशेशे शुभे नामतोधनी ॥ १ ॥
चंद्राच्छुभै रुपचयगैः सद्योधनी ॥ २ ॥
खार्थपौ युतौ केंद्र कोणगौ सद्योधनी ॥ ३ ॥
खेशांशेशायेशौ युतौ सद्योधनी ॥ ४ ॥
सिंहासने धनेशे धनी ॥ ५ ॥
धनेशात् धनांगपेशौ केंद्रगौधनी ॥ ६ ॥
चतुर्षु स्वर्क्षगेषुधनी ॥ ७ ॥
बल्यर्थेशः खायांकगो धनी ॥ ८ ॥
चंद्रार योगे धनी ॥ ९ ॥

अथधन भावका विचारकहतेहैं

टीका–लग्नेश धन २ स्थानमे, लाभ ११ पति दशमस्थानमे धनस्थान केस्वामि का नवमांशका स्वामि शुभ ग्रहोवे तो नाम मात्र से धनवान् होताहै अर्थात्पास कुछनहि होते हुवेभी धनवान समझाजावेगा. ॥ १ ॥

चंद्रमासे ३।६।१०।११ स्थानमे शुभग्रह स्थितहोवेतो शीघ्रधनवान होताहै ॥ २ ॥

दशमे स्थानका और धनस्थान का स्वामि एक राशिमे युतहोके १।४।७।१०।५।९ में स्थानमे स्थित होवेतो शीघ्र धनवान होताहै ॥ ३ ॥

दशमस्थान के स्वामि का नवांश का स्वामि और लाभ ११ स्थान का स्वामि एकत्र युतहोवे तो शीघ्र धनवान होता है ॥ ४ ॥

धन २ स्थानका स्वामि सिंहासनांश मे होवेतो धनवान होताहै ॥५॥

धनस्थान का स्वामि जाहा बैठाहोवे उससे दूसरे स्थानका स्वामि और लग्नका स्वामि येदोनो १।४।७।१० मे स्थानमे जावे तो धनवान होताहै ६

चारग्रह स्वराशि मे गये होवेतो धनवान होताहै ॥ ७ ॥

बलवान धन २ स्थानका स्वामि १०।११।९ में स्थानमें जावेतो धनवान होता है ॥ ८ ॥

चंद्र और मंगलका योग होवेतो धनवान होता है ॥ ९ ॥

स्वल्प धन योग

केंद्र कोणेंऽंशे क्रूरषष्ट्यंशे स्वल्पधनं ॥ १० ॥

लाभेशांशेशेक्रूरषष्ट्यंशेशुक्रजीवान्यतरयुतदृष्टे स्वल्पधनी ॥ ११ ॥

टीका—दूसरे स्थानका स्वामि क्रूर षष्ट्यंश मेंहोवे और १।४।७।१०।९।५ मे स्थानमें स्थितहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ १० ॥

लाभेश जिसग्रह के नवांशमें होवे वहग्रह क्रूर षष्ट्यंशमें होवे और शुक्रअथवा गुरु से युत दृष्टहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ ११ ॥

बहुधन योग वा महाधनी योग

सौम्ये रुपचयगे बहुधनः ॥ १२ ॥

लग्नेशांशे शांशेशे बलाढ्ये वैशेषिकांशेशुभदृष्टेबहुधनः १

खेशांशेशे वैशेषिकांशे सार्थेश लाभेश दृष्टयुते बहुधनी १४

केंद्र चतुष्टये शुभान्विते महाधनि ॥ १५ ॥

लग्नार्थायेशा वैशेषिकांशे महाधनी ॥ १६ ॥

कर्केज्ञे मंदेलाभे महाधनी ॥ १७ ॥

स्वर्क्षसुते लाभेमंदे महाधनी ॥ १८ ॥

लाभेजीवे स्वर्क्षेर्के पंचमे महाधनी ॥ १९ ॥

स्वर्क्षगुरौ पुत्रेचंद्रे महाधनी ॥ २० ॥

सिंहेर्केज्ञे गुर्वारयुते माहाधनी ॥ २१ ॥

कर्केज्ञे चंद्रे गुर्वारयुते महाधनी ॥ २२ ॥

भौमेंगे स्वर्क्षे मन्दाच्छज्ञयुते महाधनी ॥ २३ ॥

जीवेंगे स्वर्क्षे चंद्रारयुते महाधनी ॥ २४ ॥
स्वर्क्षेज्ञेंक्षे मंदाच्छयुत दृष्टे महाधनी ॥ २५ ॥
स्वर्क्षेशुक्रेंगे चंद्रार्कयुत दृष्टे महाधनी ॥ २६ ॥
कन्यायांयमाराराव्हच्छा महाधनी ॥ २७ ॥

ोका-लग्नसे ३।६।१०।११ मे स्थानमे सर्व शुभ ग्रहगये होवेतो बहुत कामालिक होताहै ॥ १२ ॥

ग्नेश जिसग्रह के नवांश मेहोवे उसग्रह के नवांशका स्वामि बलवान और वैशेषिकांशमे स्थितहोकर शुभग्रहसे दृष्टहोवेतो बहु धनवान ाहै ॥ १३ ॥

ग्नेश के नवांश का स्वामि वैशेषि कांशमे स्थितहोके दूसरे और ११ स्थानके स्वामि योंसे दृष्टहोवे वा युत होवेतो बहुधनकामालिक ाहै ॥ १४ ॥

बारोही केंद्र १।४।७।१० स्थानमे शुभग्रह युतहोवे तो महाधनी होता ॥ १५ ॥

लग्न १ धन २ औरलाभ ११ इनतीनो स्थानोंके स्वामि वैशेषिकां होवे तो महाधनी होताहै ॥ १६ ॥

कर्कराशीका बुधहोवे और शनिग्यारमे स्थान मे होवेतो महाधनी ाहै। इस सूत्रमे कर्कका बुधका स्थाननहिंकहाहै इससे कोई स्थानमे कर्कका बुधबैठनेसये योगहोसकताहै परंतुमेरे विचारमे यदि र्कका बुध पांचमे स्थानमेहोतो अधिक बलवान योगहोना संभवहै १७

स्वराशि १०।११ मे स्थितशनि ५ मे अथवा ११ मे स्थानमे होवेतो हाधनी होताहै ॥ १८ ॥

ग्यार मे स्थानमेगुरु और स्वराशि का ५ सूर्य पांचमे होवेतो महा नी होताहै ॥ १९ ॥ यह योग मेष लग्नमें होना संभवहै

स्वराशि (९।१२) का गुरु होवे और (५) पांचमे स्थानमे चंद्रमा वेतो महाधनी ॥ २० ॥

इस योगमेभी गुरुका स्थान नही कहाहै परंतु यदि गुरुलग्नमे होवे तो ी सनझमे ये योग अधिक बलवान होना संभवहै कारण लग्नमे

१२ का गुरु होनेसे ५ मे कर्क का चंद्र हो सकताहै इससे दोनो स्वक्षे का नवम पंचम योग होताहै और इन दोनो केंद्र त्रिको धिपोका दृष्टी संबध होताहै सो मीन लग्न मे यह योग अधिक बलवा जानना चाहिये।

सिंह राशि का सूर्य लग्नमे गुरु मंगलसे युत होवे तो महा धनिहोताहै २१

कर्कराशि का चंद्रमा लग्नमे गुरु मंगळ से युतहोवेतो महाधनी होताहै ॥ २२ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नमे होवे और शनि, शुक्र, बुध, इनतीनो से युतहोवे तो महा धनी होताहै ॥ २३ ॥

स्वराशि ९।१२ का गुरु लग्नमे होवे और चंद्र मंगल से संयुत होवे तो महा धनी होताहै ॥ २४ ॥

स्वराशि(३।६) काबुध लग्नमे शनि शुक्रसे युतहोवे या दृष्टहोवे तो महाधनी होतहै ॥ २५ ॥

स्वराशि(२।७)काशुक्रलग्नमे होवे औरचंद्रसूर्य से युतदृष्टहोवेतो महाधनी होताहै ॥ २६ ॥

कन्या राशिमें शनि,मंगल राहु और, शुक्र, ये चारोग्रह स्थितहोवेतो महाधनवानहोताहै ॥ २७ ॥

सहस्रनिष्के शयोग।

लग्नपांशेशेधनपांशेशेच सौम्येगुरुदृष्टे सहस्रनिष्केशः २८

लग्नपेर्थे लाभेशेकर्मगे गुरुदृष्टे सहस्रनिष्केशः ॥२९॥

अंगेशांशेशे गोपुरे कर्मेश दृष्टेसहस्रनिष्केशः ॥ ३० ॥

टीका– लग्नेश केनवांशकास्वामी औरधनेशकेनवांशकास्वामी शुभ ग्रहहोय और उनको गुरुदेखताहोवेतो एक हजार निष्कका स्वामी होताहै ॥ २८ ॥

निष्क = अशर्फि (मोहर) को कहतेहै अमरमे लिखाहै " दीनारेऽपिच निष्कोऽस्त्री" कोई२लोग निष्क का अर्थ रुपया भी करतेहै परंतु शास्त्रदृष्ट्या और अनुभवसे निष्कका अर्थ असर्फिहोहोना युक्ति युक्त है इसकारण इसग्रंथमे जहां निष्क शब्द आवे वहां असर्फि मानना।

लग्नेश धन२स्थानमेहोवे लाभेश ११दशमास्थितहोवे और गुरुसेदृष्ट होवेतो एकहजार असर्फी का मालिक होताहै ॥ २९ ॥
लग्न के स्वामी का नवांश का स्वामि गोपुरांशमे होवे और उसको दशमेस्थानका स्वामी देखता होवेतो एक हजार असर्फीयोका स्वामि होताहै ॥ ३० ॥

द्विसहस्र निष्केशयोग

कर्मेशस्य नवांश सप्तांशेशौ बलाढयौ जीवाच्छदृष्टौ द्विसहस्र निष्केशः ३१

धनायेशौ सौम्यपष्ठ्यंशे बलान्वितौ द्विसहस्रनिष्केशः ३२

टीका–दशमस्थान के स्वामि का नवांशका स्वामिऔर सप्तमांशका स्वामी येदोनोबलवानहोवे ,गुरुशुक इनको देखते होवेतो दोहजार असर्फीयोका स्वामिहोताहै ॥ ३१ ॥
धनेशऔर लाभेशयेदोनोशुभषष्ठ्यंशमेहोवे और बलवानहोवेतो दो हजार असर्फीयोकामालिकहोताहै ॥ ३२ ॥
धनभावेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमेहोवे वहग्रह धनेशजिसग्रहकेनवांशमे होवे उससेयुतहोवे और वहसर्वोत्तमबलवानहोवेतो आठहजार मुद्रा (मोहर) कास्वामी होताहै॥

अयुत निष्केश योग।

लग्नेशस्यत्र्यंशेश युक्तसप्तमांशेशो वैशेपिकांशे अयुतनिष्केशः ॥ ३३ ॥

टीका–लग्नेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमेहोवेवह लग्नेशके सप्तमांशके स्वामि से युत होवे औरवैशेपिकांशमे होवेतो दसहजार असर्फीयो का मालिकहोता है ॥ ३३ ॥

अयुताधिकनिष्केशयोग।

शुक्रेस्वांत्ये जीवेर्थवैशेपिकांशङ्गेरो अयुताधिकनिष्केशः ३४
गुर्वंगेशौभने वैशेपिकांशे केंद्र कोणेवायुताधिकनि० ॥ ३५॥

टीका- बारहवें अथवा दूसरे स्थानमें शुक्र, और दूसरे स्थानमें बृहस्पतिहोवे और लग्नेश वैशेषिकांशमे होवेतो दसह जारसे अधिक द्रव्यकास्वामी होताहै ॥ ३४ ॥

गुरु और लाभ स्वामिये दे नं वैशेषिकांशमे स्थित होकर धनभाव मेनावे अथवा १।४।७। १०।९।५ मे स्थाने स्थितहोवेतो दसह जारसे अधिक द्रव्यका स्वामी होताहै ॥ ३५ ॥

लक्षाधीशयोग ।

कर्मेशस्य त्र्यंशेशस्य सप्तांशेश ऐरावतांशे लक्षाधीशः ३६

टीका-दशमेश जिसग्रहकेद्रेष्काणमें होवे उसके सप्तमांश का स्वामि ऐरावतांशमे होवेतो लक्षाधीश होताहै ॥ ३६ ॥

द्विलक्षेशयोग

सशुभेकेंद्रचतुष्टयेधनपेपारावतेसिंहासनेवाऽलक्षद्वयेशः ३७

टीका-चारो केंद्र १।४।७।१० स्थानमें शुभग्रह स्थित होवे और धनेश पारावतांशमे अथवा सिंहासनांशमे होवेतो दो लक्षद्रव्याका स्वामि होताहै ॥ ३७ ॥

त्रिलक्षाधिपयोग

लग्नायेशौ वैशेषिकांशगौ सौम्यपट्टचंशगौच त्रिलक्षाधिपः ॥ ३८ ॥

धनायधर्मेशाबलिनः केंद्रगास्त्रिलक्षाधिपः॥ ३९ ॥

टीका-लग्नेश और लाभेश ये दोनो वैशेषिकांशमे होवे और सौम्यष ष्ट्यंश मे स्थितहोवे तो तीन लक्ष का स्वामि होताहै ॥ ३८ ॥

धन २ लाभ ११ और नवम ९ स्थान के स्वामि बलवान होवे और ये तीनो १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवे तो तीन लक्ष का मालिक होताहै ॥ ३९ ॥

कोटीशयोग ।

लग्नांशेश भाग्येशौ परमोच्चांशगौ लाभेशेवैशेषिकांशगः कोटीशः ॥ ४० ॥

टीका– लग्नके नवांशकास्वामि और भाग्येश येदोनो परम उच्चांश मेजावे और लाभेश वैशेषिकांशमेस्थित होवेतो कोटीश (एककरोड का स्वामी) होताहै ॥ ४० ॥

बाल्ये बहु धन लाभयोग ।

सांकार्धेशौ केंद्रगौ लग्नेशस्यांशेशस्येश्वरेणदृष्टौ बाल्ये बहुधनलाभः ॥ ४१ ॥

लग्नार्थायगैः शुभैर्बलाढ्यैर्धनेशस्यांशेशेनदृष्टैर्बाल्येबहुधन लाभः ॥ ४२ ॥

टीका– नवमेश और धनेशकायोग १।४।७।१०मे स्थानमेंसे कोई भी स्थानमे होवे और उनको लग्नेशके नवांशका स्वामि जिसराशीमि होवे उसराशीका स्वामी देखता होवेतो बालपणेकी अवस्थामे बहुतधन का लाभ होताहै ॥ ४१ ॥

लग्न १ धन २ और ग्यारमे भावमे सर्वशुभग्रह बलवान् होके स्थित होवे और उनको धनेश के, नवांशका स्वमी देखताहोवेतो बालपणेकी अवस्थामे बहुतधनका लाभहोताहै ॥ ४२ ॥

निध्याप्तियोग

लाभेशेङ्गे लग्नेशेर्थे धनेशेलाभे निध्याप्तिः ॥४३॥

लग्नेशेशुभेर्थे निध्याप्तिः ॥४४॥

कोशेशे रंध्रेनिध्याप्तिः ॥४५॥

टीका—लाभेश लग्नमे, लग्नेश धनस्थानमे, धनेश लाभस्थानमे, होवेतो गडेहुवे धनकालाभ होताहै ॥ ४३ ॥

लग्नका स्वामी शुभग्रह धन २ स्थानमे स्थित होवे तो गडेहुए धनकी प्राप्ती होतीहै ॥ ४४ ॥

धन स्थानका स्वामि आठमे स्थानमे स्थितहोवेतो गडे हुवे धनका लाभ होताहै ॥ ४५ ॥

स्वोपार्जित धनाप्तियोग.

सर्वग्रहाधिकबले लग्नपेकेंद्रे जीवयुते वैशेषिकांशेर्थेशे स्वोपार्जितधनः ॥ ४६ ॥

अंगेशांशेशोबली धनपमित्रं सत्केंद्रकोणगः स्वो० ४७

लग्नायपयुक्तोर्थेशः केंद्रकोणेशुभदृष्टः कालबलान्वितः स्वोपार्जितधनः॥ ४८ ॥

टीका–लग्नका स्वामि सर्वग्रहोंसे अधिक बलवान् होके १।४।७।१० में स्थानमे गुरुसे युक्तहोवे और धनेश वैशेषिकांशमे स्थितहोवेतो अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहै ॥ ४६ ॥

लग्नेश के नवांश का स्वामि बलवान होवे तथा धनभाव के स्वामिका मित्र शुभग्रहहोवे और केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमेस्थित होवे तो अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहै ॥४७॥,

धनभाव का स्वामि लग्नेश.और लाभेश से युक्तहोके केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमे स्थितहोवे और शुभग्रह से दृष्टहोवे, कालबलसे युक्तहोवे तो अपने बलपराकम से कमायाहुआ धनप्राप्त होताहै ।४८

भ्रातृधनाप्तियोग.

बलान्वितौस्तोत्थगो धनाङ्गपौ पुंग्रहदृष्टयुक्तौ वैशेषिकांशग सोत्थेशतयुतदृष्टौ भ्रातृधनाप्तिः ॥ ४९ ॥

टीका–धनेश और लग्नेश ये दोनो बलवान् होके तीसरे स्थानमे स्थितहोवे पुरुषग्रहसे युक्त अथवा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमे स्थित, तृतीयेश से युत वा दृष्टहोवे तो भाईका धनप्राप्तहोता है ॥ ४९ ॥

मातृधनलाभयोग.

तुर्येशयुतदृष्टे धनेशे जननी धनलाभः ॥५०॥

टीका–धनेश चतुर्थस्थानके स्वामी से युत वा दृष्टहोवे तो माताका धनलाभ होता है ॥ ५० ॥

बंधुतः कृषेर्वाधनलाभयोग.

धनेशेसुखेशयुतदृष्टे वैशेषिकांशेबन्धुतःकृषेर्वाधनलाभः ५१

टीका-धनेश चौथेस्थानके स्वामिसे युक्त वा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमे होवेतो बंधु से वा कृषिकर्म से धनलाभ होताहै ५१

पुत्रतःधनाप्तियोग.

सुतेशतत्कारकाभ्यांयुतदृष्टेवार्थेशेबलिनिसुततोधनाप्तिः ५२

टीका-धनस्थान का स्वामि पंचम स्थानके स्वामि से और पंचमके कारकसे युत वा दृष्टहोवे या धनेश बलवान्होवे तो पुत्रसे धनप्राप्ति होतीहै ॥ ५२ ॥

सुपुत्रार्जित धनाप्तियोग.

वैशेषिकांशेङ्गेशे बलाढ्ये सुपुत्रार्जितधनाप्तिः ॥५३॥

टीका-लग्नेश वैशेषिकांशमे होवे और बलवानहोवे तो सुपुत्रार्जित धनकीप्राप्ति होतीहै ॥ ५३ ॥

शत्रुतोधनाप्तियोग.

षष्ठेशतत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिशत्रुतो धनाप्तिः ५४

टीका-षष्ठेश से तथा उसके कारकसे धनेश युत वा दृष्टहोवे और बलवान्होवे तो शत्रुसे धन प्राप्तिहोती है ॥ ५४ ॥

भार्यातोधनाप्तियोग.

जायेश तत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिभार्यातो धनाप्तिः ५५

टीका-बलवान् धनेश सप्तम भावके स्वामि और सप्तम भावके कारकसे युत वा दृष्टहोवेतो स्त्री से (स्त्री संबंध से) धनाप्तिहोति है ५५

पितासे धनाप्तियोग.

खेशतत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिपितृतोधनाप्तिः ॥५६॥

टीका-बलवान् धनभावका स्वामि दशमेश और दशमभावके कारक ग्रह से युत वा दृष्टहोवेतो पितासे धनकी प्राप्तिहोतीहै ॥५६॥

तुर्येर्के पितृधनाप्तिः ॥५७॥

टीका-चतुर्थ स्थानमे सूर्य स्थितहोवेतो पिताके धनकी प्राप्ति होतीहै ॥ ५७ ॥

धनाप्तियोग.

कोशेशेयलवतियस्यकारकेण यद्भावेशेनवा युतेदृष्टे तद्द्वारा धनाप्तिः ॥ ५८ ॥

टीका–धनस्थानका स्वामि बलवान् होकर जिस भावके कारक से अथवा जिस भावके स्वमी से युत या दृष्टहोवे उसभावसे जिस २ पितृ मातृ भ्रात्रा दिव्यक्तिका विचार कियाजाता है उस२ व्यक्तिकेद्वाराधन की प्राप्ति होवेगा ऐसाजानना ॥ ५८ ॥

धनलाभ प्राप्तिदिशा.

लाभेश दिशायाधनाप्तिः ॥ ५९ ॥

लाभ गत राशि दिशातो धनाप्तिः ॥ ६० ॥

टीका–लाभ ११ स्थानका स्वामि जिस दिशाका मालिक होवे उसी दिशासे धन प्राप्ति होतिहै दिशाके स्वामी बृहज्जातकमे "प्रागाद्या रवि शुक्र लोहित तमः शौरिंदु वित्सूरयः "इस प्रकार कहेहैं अर्थात् लाभेश रवि होवेतो पूर्व दिशासे शुक्रहोवे तो अग्निकोणसे मंगलहोवेतो दक्षिणदिशासे राहु होवेतो नैऋतकोणसे शनिहोवेतोपश्चिम से चंद्र होवेतो वायुकोणसे बुध होतो उत्तरसे गुरुहोतो ईशान कोणसे धनलाभ होताहै ॥ ५९ ॥

एवं लाभस्थान मे जो राशी स्थितहोवे उसराशी की जो दिशा होवेउसी दिशासे धनकी प्राप्ति कहना अर्थात १ । २ राशिहोतो पूर्वसे ३ अग्नि कोणसे४।५ होतो दक्षिणसे ६ होतो नैऋतसे ७।८ होतो पश्चिमसे ९ होतो वायुकोणसे १०।११ होतो उत्तर दिशासे १२ मीन राशि होवे लाभ स्थानमेतो ईशान कोणसे धनलाभहोवेगा कितनेोका यहभिमतहैकि १।५।९ राशिहोतो पूर्वसे २।६।१० दक्षिणसे, ३।७।११ पश्चिमसे, ४।८।१२ उत्तर से प्राप्ति होतीहै ॥ ६० ॥

धनलाभयोग

लाभेशे केंद्र कोणे लाभेपापे धनलाभः ॥ ६१ ॥

लाभपेधने धनपेलाभे धनलाभः ॥ ६२ ॥

धनायपौ केंद्रगौ धनलाभः ॥ ६३ ॥

लाभेपेपारावतायंशे धनलाभः ॥ ६४ ॥

लाभेशेंशे केंद्रकोणे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६५ ॥

शुभांतरे लाभेशेंशे धनलाभः ॥ ६६ ॥

लाभपस्यांशेशे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६७ ॥

ज्ञाच्छा वर्थे धनलाभः ॥ ६८ ॥

रंध्रेसौम्या धनलाभ : ॥ ६९ ॥

मेषे चंद्रे घटेमंदे नक्रे शुक्रे चापेर्के पैतृकं धनं नलभते ७०

टीका–लाभेश १।४।७।१०।९।५ मे स्थान मै स्थितहोवे और ग्यारहवें स्थानमें पापग्रह बेठहोवे तो धनलाभ होताहै॥ ६१ ॥

लाभेश धनभावमे और धनेश लाभ भावमे स्थितहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६२ ॥

दूसरे २ और ग्यारहवे ११स्थानके स्वामी १।४।७।१०.मे स्थानमे स्थित होवे तो धनलाभ होताहै ॥ ६३ ॥

लाभ (११) भाव का स्वामी पारा वतादि अंशमे होवेतो धनलाभ होताहै॥ ६४ ॥

लाभ ११ भावका स्वामी कारकांश कुंडली मे १-४-७-१०-९-५ मे स्थानमे स्थित होवे शुभग्रह से संबंध कर ताहोतो धनलाभ होताहै ६५

लाभ ११ भावेश कार कांश लग्नमें शुभ ग्रहो के मध्यमे होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६६ ॥

लाभेशका नवांशका स्वामि शुभग्रह सेसंबंध करताहोतो धनलाभ होताहै ॥ ६७ ॥

बुध और शुक्र धन भाव मेगये होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६८ ॥

आठमे भावमे शुभ ग्रह गयेहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६९ ॥

मेष राशि मे चंद्रमा, कुंभ राशिमे शनि मकर राशीमे शुक्र, धनराशि मे सूर्य कपसे स्थितहोवेतो पिताका धन [संपत्ति] नहिमिलेगा ॥७०॥

परांगना आसक्तिमे द्रव्यनाश योग

अंशादकेराहौपरांगनासक्तेर्द्रव्यनाशः ॥ ७१ ॥

टीका-कार कांश लग्नसे ९ नवमे स्थानमें राहु होवेतो परस्त्री की आसक्ती के कारण से धनका नाश होताहै ॥ ७१ ॥

ज्ञाति विवाद से धनहानी योग

व्ययेज्ञे ज्ञातिविवादाद्धनहानीः॥ ७२ ॥

टीका-बारह १२ वे स्थानमें बुध स्थित होवेतो ज्ञाति संबंधी विवाद से धनहानि होतिहै ७२

मिथ्याकोशांतकृतयोग

सक्रूरेंत्येशे मिथ्याकोशांतकृत् ॥ ७३ ॥

टीका-व्यय १२ स्थान का स्वामि पापग्रह से युत होवेतो फजूल काममे धन कोसरच करके संपत्तिकानाशकरनेवाला होताहै ॥ ७३ ॥

राजदंडाद्धनक्षयोग

लग्नेशेल्पबलेसूर्ययुतेर्थेशेंत्येनीचेवा पापदृष्टे राजदंडाद्धन क्षयः ॥ ७४ ॥

लाभेशेंत्येन्त्येशेर्थे त्रिकेर्थेशे वा नीचगे राज० । ७५ ॥

षष्ठेर्थेशे सपापे नीचगेराजकारकयुते वाराज०॥ ७६ ॥

धनेशेंत्ये व्ययेशेर्थे सपापेंगेशेरिगेराजदं० ॥ ७७ ॥

लाभेखेशेंगेशयुते दुःषष्ठयंशे राजदं० ॥ ७८ ॥

टीका-लग्नेश अल्प बलीहोवे धनस्थानका स्वामी बारवें १२स्थानमें सूर्य से युतहोवे और नीचराशी का होवे अथवा पापग्रहसे दृष्टहोवेतो राजदंड (जुरवाना देनेसे) धनका नाशहोता है. ॥ ७४ ॥

लाभेश बारवें १२ स्थानमें और बारवेंस्थानका स्वामि २धनभावमें होवे १ अथवा धनेश ६।८।१२ मे स्थानमें नीचराशी का होवेतो राज दंड से धननाश होताहै ७५ (इससूत्रमें २ योगकहेहैं)

धनभावका स्वामि नीचराशी मे स्थितहो के छठे स्थानमें पापग्रह के साथ युक्त होवे अथवा राजकारक ग्रह से युतहोवे तो राजदंड से धनक्षयहोताहै ॥ ७६ ॥

धनस्थान कास्वामी १२ बारहवे स्थानमे, बारमे स्थानका स्वामीधन स्थान मे होवे और पापग्र सेयुत लग्नका स्वामीछठे स्थानमेहोवेतो राजदंडसे धनक्षयहोताहै ७७

दशम भावका स्वामि ग्यारवे ११ स्थानमे लग्नेश से युत होवे और वह दुष्ट[अशुभ]षष्ठ्यंश मे होवेतो राजदंड से धनक्षय होताहै ७८

चौराग्नि भूप कृत धन नाशयोग.

धनायपौ कुजदृष्टौ पापांशगौ हीनबलौ सपापौ चौराग्नि भूपकृतो धननाशः ॥ ७९ ॥

धनेशांशे शांशेशसपापेत्रिकेलग्नेशदृष्टे चौराग्नी भूप कृतो धननाशः ॥ ८० ॥

टीका-धन २ और लाभ ११ भावके स्वामि ये दोनोही भौमसे दृष्ट होवे पापग्रह के नवांश मे होवे,निर्बली होवे, और पापग्रह से युत होवे तो चौरसे अग्निसे वा राजा से धन का नाश होताहै ७९

धनभावकास्वामी जिस ग्रह के नवांशमे होवे उसके नवांशका स्वामि पापग्रह से युत होकर ६।८।१२ स्थानमे स्थितहोवे और उस्को लग्नकास्वामि देखता हो,वेतो चौरसे[चोरिहोनेसे]अग्निसे(लायलगनेसे) राजा से (राजाकि नाराजीसे) धनका नाश होताहै ८०

लोकाप वाद मूलसे धनक्षययोग.

सपापे खेशेरिगेक्रूरषष्ठ्यंशे धनायपयुते लोकापवाद मूलक धनक्षयः ॥ ८१ ॥

टीका- दशम भाव का स्वामी छटे स्थानमे पापग्रह सेयुतहोवे क्रूर षष्ठ्यंशमे होवे धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी योंसे युतहोवेतो लोकापवाद के कारण धननाशहोताहै. ८१

निर्धनयोग

धनेशांशेशे त्रिके सपापे क्रूरषष्ठ्यंशे निर्धनः ॥८२॥

सपापा धनधनेशांशेशा निर्धनः ॥ ८३ ॥

व्ययेशांशे धनेश युतदृष्टे निर्धनः ॥ ८४ ॥

नीचेर्के केंद्रे सपापे निर्धनः ॥ ८५ ॥

कोशेशांशे शांशेशे कालदंडांशे निर्धनः ॥ ८६ ॥

लाभे लाभपे वा पाप संबंधे निर्धनः ॥ ८७ ॥

टीका–धनेश का नवांशका स्वामि जिसराशिमे स्थित होवे उस स्वामी ६।८।१२ मे स्थानमे पापग्रह से युतहोवे और क्रूरषष्ठ्यंशमे हो तो निर्धन होताहै ८२

धन २ भाव धनभाव का स्वामि और लाभ ११ भावपति येतीनो पापग्रह से युत होवे तो निर्धन होताहै ८३

बारवे स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामि धनेश से युत होवे वा दृष्ट होवेतो निर्धन होताहै ८४

नीचराशि का सूर्य केंद्र (१।४।७।१०) मे पापग्रह से युत होवेतो निर्धन होता है ८५

धनेश के नवांशका स्वामि का नवांशका स्वामि कालदंडांशमे होवे तो निर्धन होताहै ८६

लाभेश लाभ ११ भावमे पापग्रह संबंध करताहोवेतो निर्धन होताहै ८७

पाप मूलक धननाश योग

व्यये व्ययेशे वा पापसंबन्धे पापमूलक धनक्षयः ॥८८॥

टीका–व्यय १२ स्थानका स्वामि बारमे स्थानमें होवे अथवा पापग्रह से संबंध करताहोवेतो पापकर्ममे धननाश होताहै ८८

धर्म मूलक धनक्षय योग

अंत्यपेत्येशे शुभसंबंधे धर्ममूलक धनक्षयः ॥ ८९ ॥

शुक्रज्यौ वाचंद्रज्ञौ व्यये धर्ममूलक धननाशः॥ ९० ॥

टीका–बारवे स्थानका स्वामि बारवे स्थान मे स्थित होवे अथवा शुभग्रह से संबंध करता होवेतो धर्म कार्यमे धननाश होताहै ८९

शुक्र गुरु अथवा चंद्र बुध व्यय १२ स्थान मे स्थित होवे तो धर्म कार्य मे धन का नाश होता है ९०

भ्रातृकृत धननाशयोग

अंत्येशेल्पबले भौमसंबंधे भ्रातृकृतो धननाशः॥ ९१ ॥

टीका-व्ययस्थानकास्वामि निर्वलीहोवे और मंगल से संबंध करता वेतो भाई धनकानाश करताहै ॥ ९१ ॥

मातृकृतधननाशयोग

सुखेश संबंधेंत्येशे मातृकृतो धननाशः ॥ ९२ ॥

टीका-बारमे स्थानका स्वामि निर्वलीहोवे और सुखेस ४ से बंध करताहोवेतो माता धननाशकरतीहै ॥ ९२ ॥

पुत्रकृतधननाशयोग

व्ययपेल्पबले पुत्रेश संबंधे पुत्रकृतो धननाशः ॥९३॥

टीका-व्ययेश निर्वलीहोवे और पुत्रेश (पंचमेश) से संबंध करताहोवेतो त्र धनको नाशकरताहै ॥ ९३ ॥

शत्रुकृत धन नाश योग.

व्ययेशे बलहीने गुलिकादियुते वा षष्ठेशसंबंधे शत्रु तो धननाशः ॥९४॥

धनेशेरिगे शत्रुकृतो धननाशः ॥ ९५ ॥

टीका-व्यय १२ स्थानका स्वामि निर्वली होवे और गुलिक शनि मंगल राहु आदिपापग्रहसे युतहोवे अथवा षष्ठेश से सम्बंध करता होवे तो शत्रु के सबब से धनका नाश होताहै ॥ ९४ ॥

टीका-धनस्थानका स्वामि छठेस्थानमें जावेतो शत्रु धनका नाश करताहै ॥ ९५ ॥

जाया कृत धननाशयोग

क्रूरांशेन्त्येशेल्पबलेजायेशसम्बंधेजायाकृतोधननाशः ९६

टीका-बारवे स्थानका स्वामि क्रूर ग्रह [सू० मं० श०] केनवांश मे स्थितहोकर निर्वली होवे और सप्तमेश से सम्बंध करता होवे तो स्त्री धनकानाश करती है ॥ ९६ ॥

पितृकृतधननाशयोग

व्ययेशे खेश संबंधे पितृकृतो धननाशः ॥ ९७ ॥

टीका-व्ययेश भल्नवलीहोवे और दशमेशसे संबंधकरताहोतो पिता धनकानाशकरताहै ॥ ९७ ॥

धननाशयोग

धनेज्ञे चंद्रदृष्टे धनहानीः ॥ ९८ ॥

क्षीणेंदावर्थे ज्ञदृष्टे संचित धननाशः ॥ ९९ ॥

राव्हर्कजावर्थे शुक्रेंदुयुतराशीशयुते कुमार्गव्ययः १००

कोरे कुजेर्थनाशोग्निचौरादितः ॥ १०१ ॥

त्रिकोणेजीवे भोजने धननाशः ॥ १०२ ॥

कोणेश संबंधी योर्थगेहेग्रह त्रिके शयुतो धननाशकः१०३

टीका-धनभावमेबुध, चंद्रमासे दृष्टहोवेतो धनहानि होतिहै ॥ ९८ ॥ क्षीणचंद्रमा धनभावमे होवे और उस्कोबुधदेखता होवेतो संचित कियेहुवे धनका नाश होताहै ९९

धनभावमे राहु शनि शुक्र और चंद्रमा, जिसराशिके होवे उस के स्वामि से युत होवेतो कुमार्ग मे धनका खर्च अधिक होताहै १००

धनभाव मे मंगल होवेतो अग्नि अथवा चौर वगेरा से धनकानाश होताहै १०१

नवमें पांचमे भावमे गुरुहोवेतो भोजन के (जीमने जिमाने के) काममे धनकानाश होताहै १०२

जोग्रह धनभावमे, नवमे पांचमे स्थानके स्वामी से सम्बंध करताहोवे और ६।८।१२ स्थानके स्वामी से युत होवे वहधननाश कारक जानना १०३

निर्धनयोग

लाभार्थात्ययेराहुः शयने निर्धनो भ्रमतेमहीम्॥ १०४ ॥

लग्नेशेरंध्रेरंध्रेशेंगे मारकेशयुते निर्धनः ॥ १०५ ॥

पष्ठेशेगे लग्नेशेपष्टे मारकेशयुते निर्धनः १०६

चंद्रार्कावंगेमारकेश युतदृष्टे निर्धनः १०७

टीका-शयना वस्थान मे गयाहुवाराहु ग्यारवें दुसरे अथवा बारमे ।ावमे जावेतो धनकेलिये भूमिपर भटकताफिरता रहेनेपरभी निर्धन ।ोताहै १०४

लग्नेश आठमे और अष्टमेश लग्नमे दूसरे तथा सातमेस्थानके स्वा ।मि युत होवेतो निर्धन होता है १०५

छठेस्थान का स्वामि लग्नमे और लग्नका स्वामी छठेस्थान मे दूसरे ।था सातमे स्थानके स्वामी से युत होवेतो निर्धन होताहै १०६

लग्नमे चंद्र और सूर्य ये दोनो दूसरे तथा सातमे स्थान के स्वामि ।े युत तथा दृष्टहोवे तो निर्धन होताहै ॥ १०७ ॥

दरिद्रीयोग.

धनकारकात् धनेवेदेशरेपापे दरिद्री १०८

स्वकारकात त्रिषष्टे शुभे दरिद्री १०९

खेशुभा धनेपापा दरिद्री ११०

टीक-धनकारक (गुरु) से दूसरे, चौथे, तथा पांचवें, स्थानमे ।ापग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ॥ १०८ ॥

धनकारक [गुरु] से तीसरे, छठे स्थानमे शुभग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ॥१०९॥

दूसरे भावमे पापग्रह और दशमे शुभग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ११०

महादरिद्रीयोग.

धर्मशेत्र्येत्येरोर्थे तृतीयगेषुपापेषु महादरिद्री १११

केंद्रगाभंश्रेय्यमंदागुळिकाशसुर्तात्याष्टमगोमहादरिद्री ११२

एकभस्थौ पुण्यवंता यन्योन्यांशगौ महादरिद्री ११३

पुण्यवंतोष्टे शेपानीचर्क्षगा राजपुत्रोपि दरिद्री ११४

शेद्वारयमा नीचगा भृगेशुक्रेराजपुत्रोपि दरिद्री ११५

नीचेर्ककोणे रंध्रेभौमे राजपुत्रोपि दरिद्री ११६

टीका–नवमें स्थानका स्वामि बारमे, बारमें भावका स्वामी धनभावमें, और तीसरे भावमे दोहीन पापग्रहजावे तो महादरिद्रीहोताहै १११

चंद्र गुरु और शनि १।४।७।१० मे स्थानमे जावे और गुलिक व मंगल ये दोनो पांचवे बारवे तथा आठमें स्थानमें होवेतो महादरिद्री होताहै ११२

सूर्य और चंद्रमा ये दोनो एक राशीमे होवे और सूर्य, चंद्रके नवांश मे व चंद्रमा सूर्यके नवांशमे (कर्क राशीके नवांश मे सूर्य और सिंह राशी के नवांशमे चंद्रमा) होवेतो सदादरिद्री होताहै ११३

सूर्य और चंद्रमा ये दोनो कुंभराशीमे होवे और शेष सर्व ग्रह नीच राशीमे गये होवे तो राजाका पुत्र होवेतो भी दरिद्री होताहै ११४

बुध, चंद्र, मंगल, शनि ये चारो नीचराशीके होवे और मकर राशी का शुक्र होवे तो राजाका पुत्रहोवे तो भी दरिद्री होताहै ११५

नीचराशीका सूर्य नवमे तथा पांचमे होवे और आठमे भावमे मंगल होवेतो राजाकापुत्रभी दरिद्रीही होताहै ११६

सर्व संपन्नमान् योग.

अंगेशोगुरु शुक्रवियुतः केन्द्रगः सर्वसम्पदन्वितः ११७

स्वोच्चेस्वमित्रेवा शुभभे शुभैर्दृष्टेङ्गेशे संपत्तिमान् ११८

धनेशेज्यौ धनेकेंद्रे संपत्तिमान् ११९

देवलोकांशेर्के सबलेङ्गेशे सम्पत्तिमान् १२०

लग्नेशेबलवति शुभवर्गेकेंद्रयुते सम्पत्तिमान् १२१

लग्नेर्के शुभैर्दृष्टे खेङ्गेशे सम्पत्तिमान् १२२

केन्द्रार्थकोणे लग्नेशज्ययोगे सम्पत्तिमान् १२३

लाभस्थेपुसौम्येषु सम्पत्तिमान् १२४

धर्मेशेङ्गे तुर्यांकेशौ स्वभावांबलान्वितौ सम्पत्तिमान् १२५

टीका-लग्नका स्वामि गुरु, बुध शुक्र से युक्त होके १।४।७।१० मे स्थानमे स्थित होवेतो सर्वसम्पदन्वित होताहै ११७

लग्नेश्वर स्व, उच्च, तथा अपने मित्र, राशीका अथवा शुभ ग्रहकी राशीका होवे और उस्को शुभग्रह देखते होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै ११८

धनभावका स्वामी और गुरु ये दोनो १।२।४।७।१० स्थानमे जावे तो सम्पत्तिमान् होताहै ११९

देवलोकांश मे सूर्यहोवे और लग्नेश्वर बलवान् होवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२०

लग्नेशवलवान्होवे शुभग्रहोंके वर्गमे जावे केन्द्रकेस्वामि से युतहोवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२१

लग्नमे सूर्य शुभग्रहोसे दृष्टहोवे और लग्नका स्वामी दशम भावमे होवेतो सम्पत्तीमान् होताहै १२२

लग्नेश्वर और गुरु इन दोनुका एकराशिमे योग १।४।७।१०।२।९।५ स्थानमे होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२३

ग्यारमे और पांचवे स्थानमे सर्व शुभग्रह गयेहोवेतो सर्व सम्पत्तिमान् होताहै १२४

नवमस्थानका स्वामि लग्नमे होवे चतुर्थका स्वामि चतर्थ को और नवमका स्वामि नवमभावको देखता होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२५

बहूकुटुंबीयोग.

सतौम्येर्थेशेर्थे केन्द्रेवा कुटुम्बी १२६

धनेधनेशे वा शुभसम्बन्धे कुटुम्बी १२७

टीका-धनभावका स्वामि शुभग्रह से युक्तहोके दूसरे भाव मे होवे अथवा केंद्र १।४।७।१० स्थानमे जावेतो कुटुम्बवाला होताहै १२६

धनभावका स्वामिधनभावमे होवे अथवा धनेश शुभग्रहसे सम्बंध करताहोवेतो बडेकुटुंबवाला होताहै १२७

विंशतिजन पालक योग.

धनेशे शुभैर्युते पारावतांशे विंशतिजनपालकः १२८

टीका- धनभावका स्वामी शुभग्रहोसे युतहोवे और पारावतांशमे स्थित होवे तो बीस मनुष्यो कों पालनेवाला होताहै १२८

पंचाशज्जनपालकयोग.

धनेशेगोपुरांशे धनेशांशपेशुभे सिंहासनांशे पञ्चाशज्जन पालकः १२९

टीका–धनेश गोपुरांशमे होवे और धनभावके स्वामीका नवांशका स्वामि शुभग्रहहोवे और यह सिंहासनांशमे गयाहोवेतो पचास मनुष्य को पालने वाला होताहै १२९

त्रिशतजनपालकयोग.

धनेशेसिंहासने वा पारावतांशे जीवयुतदृष्टे त्रिशत जन पालकः १३०

टीका–धनभावपति सिंहासनांशमे होवे अथवा पारावतांशमेहोवे और गुरुसे युत किंवादृष्टहोवे तो तीनसो मनुष्यो को पालन करनेवाला होताहै १३०

अनेकजनपालकयोग.

सिंहासनांशेजीवे गोपुरांशेशुक्रे धनेशे ऐरावतांशे ऽनेकजन पालकः १३१

टीका–सिंहासनांशमे गुरु, गोपुरांशमे शुक्र, और ऐरावतांशमे धनेश होवेतो अनेक मनुष्योंको पालन करनेवाला होताहै १३१

अनादरयोग.

सपापेऽष्टमेशे पापदृष्टे पापांतरे पापर्क्षे वा रन्ध्रे यातथाभूते पारभवान्वितोऽन्यथा सद्मानः १३२

टीका–अष्टमेश अथवा अष्टमस्थान पापग्रहसे युतहोवे, पापग्रहसे दृष्टहोवे, पापग्रहोंके बीचमेंहोवे या पापग्रहकी राशीमें गयाहोवे तो अनादर पानेवाला होताहै (कहींभी आदरनही होवे) और शुभग्रहसे युतदृष्ट शुभग्रहोंके बीचमें शुभग्रहकी राशीका अष्टमेश अथवा अष्टम भावहोवेतो सर्वत्र आदरपानेवाला होताहै १३२

सम्मानयोग

वृषेर्के मीनेचन्द्रे मेषेन्दे कर्कभौमे सम्मानः १३३

भाग्येशे व्यये केन्द्रेपापे धनादिहीनः १३४

टीका–वृषभराशी का सूर्य, मीन का चंद्र, मेष का शनि, और कर्क का मंगल, होवेतो संपदारहित होताहै १३३

नवमे भावका स्वामी बारमे होवे और १।४।७।१० स्थानमे पापग्रह गये होवेतो धनादि सम्पत्तीहीन होताहै १३४

परिवारक्षय योग.

लग्नान्त्यास्ते सर्वे परिवारक्षयः १३५

इतिद्वितीय धनविवेकः

टीका— लग्नमे बारमे और सातमे स्थानमे सर्व ग्रह गयेहोवे तो परिवारकाक्षय होताहै (परिवारके सर्वलोकोका नाश होजाताहै) १३५

विशेषप्रकारके धनयोग

(१) भाग्येश लाभेशयोग.	(१२) लाभेश धनेशयोग.
(२) भाग्येश दशमेशयोग.	(१३) लाभेश चतुर्थेशयोग.
(३) भाग्येश चतुर्थेशयोग.	(१४) लाभेश लग्नेशयोग.
(४) भाग्येश पंचमेशयोग	(१५) लाभेश पंचमेशयोग.
(५) भाग्येश लग्नेशयोग.	(१६) लग्नेश धनेशयोग.
(६) भाग्येश धनेशयोग.	(१७) लग्नेश चतुर्थेशयोग.
(७) दशमेश लाभेशयोग.	(१८) लग्नेश पंचमेशयोग.
(८) दशमेश चतुर्थेशयोग.	(१९) धनेश चतुर्थेशयोग.
(९) दशमेश लग्नेशयोग.	(२०) धनेश पंचमेशयोग.
(१०) दशमेश पंचमेशयोग.	(२१) चतुर्थेश पंचमेशयोग.
(११) दशमेश धनेशयोग.	

ये इक्कीस प्रकारके और भी विशेष धनयोगहैं येसर्वयोग व्ययस्थान केसिवाय धनभागमेहोवे अथवा चतुर्थपंचम स्थानमेहोवे तोपूर्णउत्तम. फल देनेवालेजानना।

७ सातमे स्थानमे धनयोगहोवेतो पूर्णफल आठमेबारमे होवेतो आधाफल ६ छटेहोवेतो चतुर्थांशफल होतासमझना. नवग्रहो ग्रहबहुतनीच २ (बहुतसे ५ अंशकेफरकसे) होवेतभियोगजानना.

दारीद्र्ययोग.

[१] षष्ठेश धनेशयोग.
[२] षष्ठेश लग्नेशयोग.
[३] षष्ठेश चतुर्थेशयोग.
[४] व्ययेश धनेशयोग.
[५] व्ययेश चतुर्थेशयोग.
[६] व्ययेश लग्नेशयोग.
[७] षष्ठेश दशमेशयोग.
[८] व्ययेश दशमेशयोग.
[९] षष्ठेश पंचमेशयोग.
[१०] षष्ठेश सप्तमेशयोग.
[११] व्ययेश पंचमेशयोग.
[१२] व्ययेश सप्तमेशयोग.
[१३] षष्ठेश भाग्येशयोग.
[१४] षष्ठेश तृतीयेशयोग.
[१५] व्ययेश भाग्येशयोग.
[१६] व्ययेश तृतीयेशयोग.
[१७] षष्ठेश लाभेशयोग.
[१८] षष्ठेश अष्टमेशयोग.
[१९] व्ययेश लाभेशयोग.
[२०] व्ययेश अष्टमेशयोग.
[२१] षष्ठेश व्ययेशयोग.

ये इकवीस प्रकारके विशेष दारिद्र्ययोगहै. येयोग धनस्थानमे वा दारिद्र्यभागमेहोवेतो पूर्णबलवानजानना व्ययस्थानमेहोवेतो पादोन (पौन ४५) और दुसरेस्थानमे होवेतो अर्धबलजानना.

उपरोक्त समस्त धन और दारिद्र योगों का विचार करने से जितने जोजोयोग आवे वे क्रमसे (धनयोग) धनयोगके तरफ और दारिद्र्ययोग दारिद्र्ययोग के तरफ जुदे २ अंक २ बाजु क्रमसे लिखना और उनके बला बलका विचार करके देखना यदि धनयोगकी अपेक्षा दारिद्र योग अधिक बलवान होगये होवेतो धनयोग होतेहुवेभी दारिद्र योगकी प्रब लता ही रहेगी। भेवं यदि दारिद्र योगकी अपेक्षा धनयोग अधिक सं-ख्या का और बलवान् होवेतो धन योगकी प्रबलता होनेके कारण दा रिद्र योग होतेहुवेभी धनयोग की ही प्रबलता होवेगा.

इसप्रकार उभय योगोंमेसे जोयोग बलवत्तर होवे वही फल लाबल के तारतम्यानुसार जानना.

इनमेभी विशेष सूक्ष्म विचार पूर्वक देखने से धन और दारिद्र्य ग के बलाबल के तारतम्य भेदसे ही श्रीमंतका दरिद्री और दरिद्री श्रीमंत तथा श्रीमंतके महा श्रीमंत और दरिद्री के महा दरिद्री हि उनका विचार इसप्रकार जानना.

१. किंवा श्रीमंत स्थिति मेसे कोईभी स्थितिमे जन्म भयोंनहो

परंतु इतना निश्चित है कि गरीब स्थिती मे जन्म होके जोमनुष्य श्री मंत हो जाते है उनके धनयोग श्रीमंती की स्थिती में जन्म पानेवाले मनुष्यके धन योगसेभी बलवत्तर होते है। ऐसे दोमनुष्यों कि कुंदली देखनेसे जान पडेगा कि पहिला श्रीमंत व दूसरा चाहि कितनाही श्री मंत है तथापि सामान्य दिखेगा। इसी प्रमाणे जन्मभर सामान्य स्थिति भोगने वाले कि अपेक्षा किंवा जन्म दरिद्री मनुष्यकीअपेक्षा जो मनु ष्य श्रीमंत के यहां जन्म लेके आगे बिलकुल दरिद्री होनेवाले है उन के यह दारिद्य योग करने वाली स्थितिमें अधिक बल वत्तर होवेगे।

देशकाल व जातिपरत्व से धनयोग के फल मिलते है हिंदुस्थान मे जन्म पाये हुवे मनुष्य के जो उत्तम धनयोग होवे वही योग जो आज के समय मे अमेरीका जर्मन अथवा इंग्लंड देशोमे किसी मनुष्य के होवेतो वह कोटयाधीशहोये विना रहेगानही और हिन्दुस्थान मे उसी उत्तम धनयोग वाला बहुत हुवा तो लक्षाधिश होजाताहै ऐसेहि यह हिंदुस्थान मभी यदि किसी भिल्ल वगेरा नीच जातीवाले के आजावे तो वह बहुत हुवातो बेफिकी से पेटभर खाने कमाने वाला होसक्ता है इससे अधिक उसकी श्रीमंतीकी दोड जानेवाली नही सारांश, धन योग का फल परिस्थिती के प्रमाणसे प्राप्तहोवेगा।

ज्योशिष शास्त्र से हि इस बातका निर्णय होना चाहिये यह बात बराबरहै परंतु इतनी सूक्ष्मता समझने कि मनुष्य मे सामर्थ्य नहीं इस लिये अपनेको देश,काल, जाति, परिस्थिती, के तरफ लक्ष देके विचार करने के शिवाय दूसरा साधन नही.

कुंडलीमे भाग्यभवन को आदिले धनभाव पर्यंत ६ स्थान "धनभाग" और सहजभावसे अष्टमभावपर्यंत ६ स्थान "दारिद्यभाग" केजानना

१ धन योग और दारिद्ययोग ये दोनोंयोग यदि धनभागमेंहोवे और धनयोग उत्तम प्रबल बनेहोवेतो मनुष्य गरीब के घरमे जन्मपाकर भी गरीबी की स्थिती से निकलके श्रीमंतो (उन्नती) पायेविनारहेगानही परंतु यदि दारिद्ययोग की शक्ति अधिकहोवेतो वहकितनाहि उलट सुलट प्रयत्नकरेगा तथापि मूलकीस्थितीमे विशेष बदलाता होनेवाला नही, और दारिद्ययोग यदिबिलकुलही नहीहोवेतो वहमनुष्य आमर णांत श्रीमंतीभोगेगा और रंककाराव हुयेविना रहेगानही, धनयोगही मूलमेनहीहोवेतो किसी तरेसे कष्टसे पेट भरता रहेगा.

२ धनयोग और दारिद्र्ययोग यदि ये दोनुयोग दारिद्र्यभागमेंहुये होवे ऐसे समय यदि धनयोग की शक्ति अधिक बलवान् होवेतो मनुष्य गरीब स्थितीमें होतेहुवे भि उन्नतिपानेमें अग्रसर होवेगा परंतु उसका स्वरूप (मर्यादा) सामान्यरहेगा और समयभी अधिक लगेगा ऐसा मनुष्य नं० १ के योग के मनुष्यों की अपेक्षा कम योग्यताका होवेगा. और यदि दारिद्र्ययोगमूलमेंही नहीं होवेतो मनुष्य मूलमें गरीब होवेतो प्रयत्न से धनवान् होवेगा और धनवान् स्थितिका होवेतो किंचित् धन बढ़ावेगा अथवा जो स्थितिहै वही कायम रहेगा। धनयोग बिलकुल नहीं होवेतो आमरण दारिद्र्यभोगकरेगा अथवा श्रीमान के कुलमें जन्म लिया होवेगा तो दिनादिन कंगाल होता जावेगा।

धनयोगकी अपेक्षा दारिद्र्ययोगकी शक्ति अधिक होवेतो किसी समय ठीकस्थिति किसीसमय दुःखी स्थिति भोगना पड़ेगा.

३ धनभागमे धनयोग व दारिद्र्यभागमे दारिद्र्य योग सम समान शक्ति के होवेतो मनुष्य कितनेक दिन गरीब स्थितीको व कितनेक दिन श्रीमंती स्थिति को भोगेगा। यदि धनयोग की शक्ति अधिक होवेतो गरीबीसे निकलके उन्नती पावेगा और धनवानस्थितीका होवे तो किंचित धनवढानेवाला होवेगा। दारिद्र्ययोग की शक्ति अधिकहोवे तो उसके नसीबमे या जन्म दारिद्र्यभोगना पड़ेगा.

यदि ये योग धनवान के होवेतो "भरमभारी और टिपारा खाली" ऐसी स्थिति उसके आयुष्यमे जावेगा; अर्थात् पईसा नहींरहेगा और केवल भरम बनारहेगा।

४ दारिद्र्यभागमे धनयोग व धनभागमे दारिद्र्ययोग होवेतो मनुष्य सधनघरमें जन्म पावे तो आगेदरिद्रीहोवेगा व जन्ममें दरिद्री होवेतो बहुत समय बाद किंचित दारिद्रसे पिंडछुटेगा.

ये योग जिसप्रकार जन्म लग्नपर से देखे वैसेही चंद्र कुंडली पर भी देखना और तारतम्यसे सांपत्तिक स्थितिका विचार करना।

इसप्रकार धनयोगका विचार करके निर्णय करने से जो अनुमान ठेरायाजावेगा वह सहसा चुकनेवालानहीं यह विचार ज्योतिषीकी अपेक्षा मित्र जो स्वयं करेगा तो बिनचूक अनुमान बंधसकेगा।

धनयोगों के शिवायमे धनभावमे भाईकी स्त्री का मामा, भाईकी काकीसाटु, भाईको दुराफरी वा धनहानि खर्च, मामाकि भाईकीस्त्री, माताकोलाभ, मित्रक पुत्रकीस्त्री. मित्रकोलाभ, पुत्रकीसासु, पुत्रके मित्रकी स्त्री, पुत्रकोराज्यसुख. शत्रुके भाईकीस्त्री, स्त्री की मृत्यु, दादा की मृत्यु, दादाको धन सुख, सुसराकोलाभ, आदिबातोका भि विचार करना.

इतिद्वितीय धनविवेक..का समाप्तः

अथ सहजविवेकः ।

बहुभ्रातृभगिनीयोग.

लग्नलग्नेशान्यतरत हयावगे सेन्द्वारेज्ये बहुभ्रातरः केतोतुबहु भगिन्यः ॥ १ ॥
सोत्थेशे स्वर्क्षसौम्यदृष्टे भ्रातृमान् ॥ २ ॥
सोत्थपे सशुभेकेन्द्रे भ्रातृसुखम् ॥ ३ ॥
सोत्थेशुभैर्युते वा दृष्टे सोत्थेशेबलिनिभ्रातृलाभः ॥ ४ ॥
भ्रातृपे कारके वा बलिनी शुभसम्बन्धे भ्रातृलाभः ॥ ५ ॥
गोपुरे सोत्थेशे कारके सिंहासने शुभर्क्षे भ्रातृलाभः ॥ ६ ॥
परावते भ्रातृे केन्द्रे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ ७ ॥
सोत्थपे सौम्यभांशे भ्रातृलाभः ॥ ८ ॥
सोत्थेसोत्थपे पराढ्ये भ्रातृलाभः ॥ ९ ॥
मृदंशादियुते सोत्थे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ १० ॥

वैशेषिकांशे सोदर्यपे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ ११ ॥
पुंभांशे सोदर्यकारकेशौ पुंग्रहदृष्टौ भ्रातृलाभो—
वैपरीत्ये भगिनीलाभो मिश्रे उभयलाभः ॥ १२ ॥

टीका—लग्न तथा लग्नेश से तीसरे और ग्यारवे स्थानमें बुध चन्द्र मंगल गुरु जावे तो बहुत भाइ का सुख होताहै और केतु गया होवे तो बहुत भगिनी का सुख होता है. १

तीसरे भावका स्वामि स्वराशीका होवे शुभ ग्रह देखते होवे तो भाई का सुखवाला होताहै २

तीसरे भावका स्वामि शुभग्रह से युतहोवे और केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमें गयाहोवे तो भाई का सुखहोता है ३

तीसरा भाव शुभग्रहो से युतहोवे अथवा शुभग्रहो से दृष्टहोवे तीसरे भावका स्वामि बलवान् होवेतो भाई का लाभहोता है ४

तीसरे भावका स्वामि अथवा भ्रातृकारक बलवान् होवे शुभग्रह से सम्बंध करताहोवे तो भाईकी प्राप्ति होती है ५

तीसरे भावका स्वामि गोपुरांशमे होवे भ्रातृकारक सिंहासनांशमे होवे और शुभग्रह की राशी मे गयाहोवे तो भाई की प्राप्ती होतीहै ६

भ्रातृस्थान का स्वामि पारावतांशमे होवेऔर केंद्र (१।४।७।१०) स्थान मे स्थितहोकर शुभग्रह से युत दृष्टहोवेतो भाई का लाभ होताहै ७

तीसरे भावका स्वामि शुभराशी और शुभराशी के नवांशमे होवेतो भाई का लाभ होताहै. ८

तीसरे स्थानमे तीसरेभावका स्वामी गयाहोवे बलवान् होवेतो भाई का लाभहोता है ९

तीसरे भावका स्वामि मृदंशादिक से युतहोवे और शुभग्रह से युत दृष्ट होवेतो भाई लाभ होताहै. १०

तीसरे भावका स्वामि वैशेषिकांशमे होवे शुभग्रहसे युतदृष्ट होवेतो भाई का लाभ होताहै ११

तीसरे भावका स्वामि और भ्रातृकारक ग्रह ये दोनो पुरुषराशी (१।३।५।७।९।११) और पुरुषराशी के नवांशमे गये होवे इनको पुरुषग्रह (र. मं. गु.) देखते होवेतो भाईका लाभहोवेगा और इनसे विपरीत

होवे अर्थात् दोनोग्रह स्त्री राशी और स्त्री राशी के नवांशमे गये होवे और इनको स्त्री ग्रह (चं. शु. श.) देखते होवेतो भगिनी का लाभ होवेगा। और मिश्रग्रह देखते होवे मिश्रराशि नवांशमे दोनो ग्रहगये होवे तो दोनो का (भाई बहनका) लाभ होवेगा १२

भ्रातृ भगिनी संख्या विचार.

सोत्थराश्यंश दशाद्भ्रात्रादि संख्या ॥ १३ ॥
सोत्थगग्रह स्वांशका भ्रात्रादि संख्या ॥ १४ ॥
सोत्थेशकारयुत भांशवशाद्भ्रातसंख्या ॥ १५॥
सोत्थेशयुतभांशवशा त्तत्संख्या ॥ १६ ॥
स्त्री खेटैर्धर्मगै भगिन्यो नृखेटैर्भ्रातरः ॥ १७ ॥
ज्ञेज्यौधने कन्यायांराहौ भ्रातृत्रयम् ॥ १८ ॥

टीका–तीसरे स्थानमे जितनी राशीहोवे वा जितने नवांश गये होवे उतनेहि भाई बहन की संख्या जानना १३

तीसरे भावमे गयेहुवे ग्रहके नवांश की संख्या के अनुसार अर्थात् जितने नवांशगये होवे उतनेहि भाई बहन कीसंख्या जानना १४

तीसरे भावका स्वामि और कारक ये दोनो जितनी संख्याके राशी अथवा नवांशमे होवे उतनीही संख्या भाई बहनकी जानना १५

तीसरे भावका स्वामि जितनी राशी और नवांशमे गयाहोवे उसके वशात्भाईबहन की संख्या जानना १६

नवमे भावमे जितने स्त्री ग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या बहिन जानना और जितने पुरुषग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या के भाई जानना यदिग्रह वक्रअथवा उच्चराशी के होवेतो तीनगुनी संख्या जानना एवं स्वक्षेत्री होवेतो द्विगुण संख्या जानना ऐसेहि नीच शत्रुक्षेत्री होवेतो आधी संख्या जानना १७

बुध गुरु धनभावमे गयेहोवे और कन्याराशीका राहु होवेतो तीन भाई जानना १८

भ्रातृहीनयोग.

विक्रमेशारौ त्रिकस्थौ भ्रातृहीनः ॥ १९ ॥
पष्टेसोत्थपारौ पापभगौ पापयुतौवा भ्रातरउत्पद्यनश्यंति २०
भ्रातृकारके नीचर्क्षांशे पापदृष्टे दुःषष्ट्यंशे भ्रातृहानिः २१
सोत्थेपापयुत दृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २२ ॥
भ्रात्रीशेपापांतरे भ्रातृहानिः ॥ २३ ॥
पपांतरेसोत्थे नीचखेटान्विते वा शुभादृष्टे भ्रातृहानिः २४
सोत्थपांशेशे षष्ठे नीचास्तारिगे भ्रातृहानिः ॥ २५ ॥
भ्रातृकारके पापान्तरे भ्रातृहानिः ॥ २६ ॥
भ्रातृपे सोत्थे क्रूरषष्ट्यंशे पापदृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २७ ॥
सहजेशांशेशेश्वरांशेशेषष्टे भ्रातृहानिः ॥ २८ ॥
सोत्थेशांशेश्वरांशेशे नीचास्तारिभेभ्रातृहानिः ॥२९॥
सोत्थपे वा कारकेत्रिके पापेक्षितयुतेस्वोच्चेवा भ्रातृहानिः३०
सोत्थगैःपापैर्नाल्ये भ्रातृहानिः ॥ ३१ ॥
सोत्थपेतत्कारके वा पापैर्युते वा भ्रातृहानिः ॥ ३२ ॥
सिंहेकेंद्रे भ्रातृहानिः ॥ ३३ ॥
धनगाःपापाःसहजेराहौ भ्रातृहानिः ॥ ३४ ॥
भौमारसोत्थेपापे भ्रातृसुखं ॥ ३५ ॥

टीका–तीसरे भावका स्वामि और मंगल ये दोनु ६।८।१२ स्थानमें गयेहोवेतो भ्रातृहीन होवे १९

तीसरे स्थानका स्वामि और मंगल ये दोनोग्रह छठेस्थानमें पापग्रहकी राशीकेहोवे अथवा पापग्रहसे युक्तहोयतो भाई उत्पन्नहोके नाश होवे २०

भ्रातृकारकग्रह नीचराशी तथा नीचराशी के नवांशमे होवे, पापग्रह से दृष्टहोवे दुष्ट षष्ट्यंश मे होवे तो भ्रातृहानि होवे २१

तीसरा भाव पापग्रह से युत दृष्टहोवे तो भ्रातृहानि होवे २२

तीसरे भावका स्वामि पापग्रहोंके मध्यमे (बीचमे) होवेतो भ्रातृहानिहोवे २३

तीसरा भाव पापग्रहो के बीचमेहोवे नीचराशीमे गयेहुवे ग्रहसे युतहोवे अथवा शुभग्रहोंसे अदृष्टहोवेतो भ्रातृहानी होवे २४

तीसरे भावके स्वामिका नवांशका स्वामी छठेस्थानमे नीच अस्त तथा शत्रुराशी मे गया होवे तो भ्रातृहानि होवे २५

भ्रातृकारक ग्रह पापग्रहो के बीचमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे २६

तृतीयेश तृतीयभावमे पापग्रहोंसे दृष्टहोवे वा क्रूरषष्ट्यंशमेहोवे तो भाईयोका नाशहोवे २७

तृतीयेश के नवांशके स्वामीका नवांशका स्वामी छठेस्थान में गयाहोवे तो भ्रातृहानिहोवे २८

तृतीयेश के नवांशका स्वामी जिसराशी के नवांशमे होवे उसका स्वामी नीच अस्त तथा शत्रु ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो भ्रातृ हानी होवे २९

तीसरे भावका स्वामि अथवा कारकग्रह त्रिकस्थान (६।८।१२) में पापग्रह सेयुक्त दृष्टहोवे अथवा अपनी उच्चराशीमे स्थितहोकेभि ६।८।१२ स्थानमे पापग्रहसे युक्तदृष्टहोवेतो भ्रातृहानी होवे ३०

तीसरे भावमे पापग्रहोका योग अधिक होवेतो बाल्यावस्थामे भ्रातृहानि होवे ३१

तीसरे भाव का स्वामी अथवा भ्रातृकारकग्रह पापग्रहों से युत होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३२

सिंहराशी का सूर्य नवमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे ३३

धनभावमे दो तीन पापग्रह गयेहोवे और तीसरे भावे राहु होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३४

मंगल से तीसरे स्थानमे पापग्रह गये होवे तो भाई का सुख नहिहोवे३५

भनुजोत्पत्तियोग.

लग्नांत्यगौपापौ अनुजोत्पत्तिः ॥ ३६ ॥

टीका-लग्न और बारमे भावमे पापग्रहगये होवे तो छोटे भाईका जन्म होवे ३६

भनुजहीनयोग.

सोत्थेमंदे भौमदृष्टे ऽनुजहीनः ॥ ३७ ॥

टीका–तीसरे भावमे शनि जावे उसको मंगल देखता होवेतो छोटा भाई नहीहोवे कदाचित होयभीतो जीवित नहीरहे ३७

भ्रातारोगीयोग

सहजेऽज वर्गे भौमदृष्टे भ्रातारोगी ॥ ३८ ॥

टीका—तीसरे भाव मे चंद्रमाका वर्ग अधिक होवे और उसको मंगल देखता होवे तो भाई रोगी रहे ३८

भ्रातृतःस्नेहयोग

सोत्थांगेशौमित्रे भ्रातृस्नेहः शत्रुचेद्वैरम् ॥ ३९ ॥

टीका—तीसरे भवका स्वामी और लग्न का स्वामी येदोनो ग्रह परस्पर मित्र होवेतो भाई के साथ मित्रता रहेगा और येदोनो परस्पर शत्रुग्रहहोवे तो भाई केसाथ शत्रुता रहेगा ३९

राजप्रेष्ययोग.

अंशे रविशुक्रदृष्टे राजप्रेष्यः ॥ ४० ॥

अंशात्खे ज्ञदृष्टेयुते राजप्रेष्यः ॥ ४१ ॥

टीका–करकांश लग्नको रविशुक्र देखतेहोवेतो राजाकी नोकरी करने वालाहोताहै ४०

कारकांश लग्नसे दशम भाव बुधसेयुतदृष्ट होवेतो राजाकी नोकरी करने वाला होताहै ४१

विवरण–हलकारा, चपराशी, सिपाही, हवालदारको, आदिले नीचे दर्जेके मुत्सद्दीगिरी की नोकरी करनेवालोंमेसे कोइभी काम करने वालेको प्रेष्यकहतेहै।

भृतकयोग।

सुर्यारमंदैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मगैर्भृतकः ॥ ४२ ॥

मन्दांशे नीचभेशुक्रे व्ययेचंद्रार्कौ भृतकः ॥ ४३ ॥

दशमगैः पापैःसौम्या दृष्टैर्भृतकः ॥ ४४ ॥

टीका-सूर्य, मंगल, शनि, येतीनों दशमे भावमें जावे और इनको शुभ ग्रहनही देखतेहोवे तो कोई भीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४२

नीचराशी का शुक्र शनिकि राशी के नवांशमे होवे और चंद्र सूर्य बारवेस्थनमे गयेहोवेतो कोईभीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४३

दशमे भावमेंहोतीन पापग्रहजावे औरउनको कोई शुभग्रहनही देखताहोवे तो कोईभी तरहकी मजूरी करने वालाहोताहै ४४

दासान्वितयोग

षष्टेशेमाने ख्वेशेमन्दयुते केन्द्रे दासान्वितः ॥ ४५ ॥

राज्ये शुभदृष्टयाधिक्ये दासान्वितः ॥४६ ॥

टीका-छठेस्थानका स्वामीदशमे भावमेहोवे दशमभावकास्वामि शनीसे युतहोवे केन्द्र(१।४।७।१०)स्थानमें गयाहोवेतो नोकर चाकरोसे युतहोवे ४५

दशमे भावपर शुभग्रहो कीदृष्टि अधिकहोवेतो नोकर चाकरो से युतहोवे ४६

बहुदासान्वितयोग.

कर्मेशांशेशे मंदे षष्टपसंबंधे बहुदासान्वित : ॥ ४७ ॥

नृपेर्के शुभकर्मपदृष्टे बहुदासान्वित : ॥ ४८ ॥

टीका-दशमे भावके स्वामिके नवांशकास्वामिशनि छठे भाव स्वामिसे संबंध करताहोवेतो बहुतनोकरोंसेयुतहोवे ४७

दशमे स्थानमे सूर्य होवे औरउसको दशमेस्थान का स्वामि शुभग्र देखताहोवेतो बहुत दासो (नोकरो) वालाहोताहै ४८

विक्रमीयोग.

सहजे शुभ दृष्टयाधिक्ये वा पापयुते वा सहजपे बला ढ्ये विक्रमी ॥ ४९ ॥

सहजपे केन्द्र कोणे विक्रमी ॥ ५० ॥

सोत्थांगेशयोगे विक्रमी ॥ ५१ ॥

टीका–तीसरे भावपर शुभग्रहोंकि अधिक दृष्टि होवे १ अथवा तिसरे भावमें पापग्रह युतहोवे २ अथवा तिसरे भावका स्वामी बलवान होवेतो पराक्रमी होताहै ॥ ४९ ॥

तिसरे भावका स्वामी केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमें जावे तो पराक्रमी होताहै ॥ ५० ॥

तीसरे भावका स्वामि और लग्नका स्वामि इन दोनो का योगहोवे (दोनो अेक राशिमे ५ अंश के अंतर से अधिक अंतर के नहीहोवे) तो पराक्रमी होताहै ॥ ५१ ॥

प्रसिद्ध कर्मा जीवी योग.

अंशे मंदे प्रसिद्ध कर्मा जीवी ॥ ५२ ॥

टीका–कार कांश लग्नमें शनि गयाहोवे तो प्रसिद्ध कर्म करके जीवन व्यतीत करने वालाहोवे ॥ ५२ ॥

काष्ट पाषाणादि विक्रेता योग.

षष्टेशे सोत्थे काष्ट पाषाणादि विक्रेता ॥ ५३ ॥

टीका–छठे स्थानका स्वामि तीसरे भावमे जावेतो लकडीवा लकडी का बनाहुवा सामान और पाषाण (पत्थर) वगेरा का सामान बेचनेवाला होताहै (स्टेशनरी सामान बेचनेवाला भी इसी योगमे होताहै) ५३

भिक्षुकयोग.

मेषचंद्रे भौमदृष्टे भिक्षुकः ॥ ५४ ॥

चंद्रे शुभदृग्धीने दासोथवा भिक्षुकः ॥ ५५ ॥

सर्वे ग्रहे नीच मूढांशगैः कर्मान्यगे भिक्षुकः ॥ ५६ ॥

अंत्ये गुरौ केंद्रेशनौ लग्नेज्जे भिक्षुकः ॥ ५७ ॥

टीका–मेषराशी मे चंद्रमाहोवे उसको मंगल देखता होवेतो भिक्षुक भीखमांग के पेटभरने वाला) होता है ५४ ॥

चंद्रमाको शुभग्रह नहीदेखते होवेतो दास अथवा भिक्षुक होताहै ५५

सर्वग्रह नीचराशि अथवा नीचराशिके नवांशके तथा अस्तके होवे र दशमे स्थानके बिना दूसरे कोई भी स्थानमे जावेतो भिक्षुक ...े ॥ ५६ ॥

बारमे भावमे गुरु, केंद्रमे शनि, लग्नमे चंद्रमा गयाहोवेतो (भिक्षुक) भीखमांगकेपेट भरने वालाहोताहै ॥ ५७ ॥

निंद्यकर्मा जीवी तथानीच कर्माजीवीयोग.

चन्द्राद्धनेपुत्रेजीवे छमेशुभे वा पापेनिंन्य कर्माजीवी५८

एकस्मिन्ग्रहे मित्रभगेपराजीवी ॥ ५९ ॥

राज्येङ्गेशो त्रिकोणार्थे मन्देपापैर्मृत्युगे नीचवृत्याजीवी ६०

टीका-चंद्रमासे दूसरे अथवा पांचमेस्थानमे गुरुहोवे, और आठमे स्थानमे शुभ अथवा पापग्रह गयाहोवेतो निन्द्यकर्मकरनेसे आजीविका होवे ॥ ५८ ॥

एकभीग्रह अपने मित्र ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो पराजीवी अर्थात् दूसरेके आधारपर नीर्वाहचलाने वालाहोताहै ॥ ५९ ॥

लग्न का स्वामि दशमे स्थानमे और २।५।९ स्थानमे शनि और आठमे स्थानमे पापग्रहगये होवेतो नीचवृत्तीके कर्मसे जीवननीर्वाह करने वालाहोवे ॥ ६० ॥

पित्रादितःअर्थाप्तियोग.

लग्नाद्वाचंद्रा दर्काद्यैर्दशमगैः पितृ जननो शत्रुमित्रभ्रात् स्त्री भृत्ये भ्योऽर्थाप्तिः ॥ ६१ ॥

टीका- लग्नसे अथवा चंद्रमासे दशमे स्थानमेंसूर्य गयाहोवेतो पितासे, चंद्रमाहोवेतो मातासे, मंगलहोवेतो शत्रुसे, बुधहोवेतोमित्रसे, गुरुहोवेतोभ्रातासे, शुक्रहोवेतास्त्रीसे, शनिहोवेतोनाकरचाकरसे, धनकी प्राप्ति होतीहै ६१

सारावली में विशेषफल इसीप्रकार लिखाहै

चंद्रसे दशमे सूर्य होवेतो—सिद्धारंभ, धनसमृद्ध, उत्तमसत्व, नृपति ज्ञानअथवाख्यात पुष्टदेहिहोवे.

„ „ भौमहोवेतो—साहसनिरत, प्रत्यंतनिवासी, विषयलुब्ध क्रूर निषादचरितहोवे.

„ „ बुधहोवेतो—विद्वान, धनवन, बहुभुज, नृपति कपाल, शिल्पज्ञ, प्राज्ञ, होवे.

चंदसे दशमें गुरुहोवेतो—सिद्धार्थ, धार्मिक, धनसमृद्ध, उत्तमचरित, नरेंद्रसाचिव, प्रख्यातहोवे.
" " शुक्रहोवेतो—सुभग, ललितस्वर, वित्तवंत, सिद्धारंभ, नृपपूजितहोवे.
" " शनिहोवेतो—रोगी, निःस्व, दुःखान्वित, प्रजाहीन, वमेम, नित्योद्विग्नमनहोवे.

वृत्तिविचार.

लग्नेन्दुर्कोप्यः खेशस्यांशेश वशाद्वृत्तिंवदेत् ॥ ६२ ॥

टीका– लग्न चंद्र और सूर्य इनतीनो मेस जो अधिक बलवान् होवे उससे दशम स्थान के स्वामी का नवांश का स्वामि जोग्रहहोवे उसीकधर्मानुसारवृति (धंधा)कहना अर्थात् वह जिनर वर्णवस्तुधातु दिशा समय आदिका कारकहोवे उन्हीउन्ही वस्तु ओंके व्यवसाय (धंधाकरने) वालाहोवेगा । कितनेकमतहैकि धंधेकाविचार" भेद्कर्मस्पदपतिगांशनाथवृत्त्या" "कर्मेशस्थनवांशराशिपवशाद्वृत्तिंवदेत्" इत्यादिवचनसे रवि चंद्र योजिस ग्रहके नवांशमेहोवे उसके धर्मानुसार धंधाकहना, तीसरामतयहहैकि कुंडलीमे लग्नचंद्रमेसे जोबलवानहोवे उससेजोदशमस्थानहै उसकाअधिपति जिसग्रहके नवांशमे होवे उसकेधर्म प्रमाणसेधंधाकहना। इनतीनोमेंसे प्रथमरीति लग्न चंद्र और सूर्य मेंसे जो अधिकबलसम्पन्नहोवे उससेदशमस्थानका अधिपति जिस राशिके नवांशमे हो उसकेस्वामी के धर्मप्रमाणे धंधा कहना यहिपूर्वोक्तकल्पना अधिकआरूढ औरयुक्तियुक्त है अतएव इसिप्रमाणे धंधकी कल्पनाकरना

ग्रहोंकाधर्म.

सूर्यांशे भेषज्य सुगन्धिसुवर्णोर्णा मुक्तामणिपण्येन मंत्रोपदेश रमवाद विनोद मार्गं र्वावृत्तिः ६३
चंद्रांशेशङ्ख मुक्ता प्रवालादि वाणिज्येन कृषि मृद्वाग्विनोद मार्गं राज्याङ्गना श्रयेन वृत्तिः ६४
भौमांशे मनःशिला हरितालहिंगलुकाञ्जनादिभि :शङ्खचक्र

कुन्त चापतोमराद्यैः साहसे रिंगिनिक्रियपास्वचळ क्रियारम्भे
नेनाप्तिः ॥ ६५ ॥

ांशेऽक्षराविन्यासेनगणितेन य-त्रयोगेनकाव्येनचित्रपुस्तक
त्रच्छेद् बाणमाल्यरचना गन्धयुक्तिप्रभृतिभिर्वृतिः ६६
ीवांशे देवब्राह्मण पंडितेभ्यःसुवर्ण लवणांजन गजायाकरे-
ःक्रियावादेनयज्ञदानतीर्थोपवासगुरुसेवनादिभ्योवृतिः६७
क्रांशे वज्रमरकत पद्मरागेन्द्र नीलप्रभृतिः रौप्येणलोहै
भिःश्रेष्ठमहिषिभिः सुवर्ण गजाश्वव्यापारेण वृत्तिः ६८
न्यंशे अध्वगमना दिकेन वध्यघातिकया स्वशरीर ताड-
येन भारवाहेण स्वकुलानुचित कर्मभिःवृत्तिः ॥६९॥

—लग्नचंद्र तथा सूर्यसे दशम स्थान के स्वामि का नवांश का
सूर्य होवेतो—वैद्यकी (वैद्य अथवा डाक्टरी कामसे,) अत्तर
ासुगंधी पदार्थोसे, सुवर्णके लेनदेनसे, ऊनी कपडोंके व्यापार
ी मणि वगेरा की दुकान से अच्छी सलाह या रायदेनेसे, घी
कर वगेरा षट्रस के व्यापारसे, मुकद्मेबाजीसे, हसी खुशी
तमाशोके रस्तेसे अथवा कितनोकका मत है कि इनके शिवाय
न्दी और धान्यके व्यापारसे वृत्ति होवे ६३

द्र अथवा सूर्य से दशम स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामी
ो—शंख मोती प्रवाल आदि वस्तुके व्यापार से खेतीके काम-
ीचेमिट्टीके बरतन खिलौने आदि मिट्टीके व्यापारसे अच्छि
ऽ हसि खुशि के रस्तेसे तथा राजाज्ञाके आश्रयसे अथवा
ा मत है कि पाणी सरीखे पतले पदार्थ या पाणीसे उत्पन्न
पदार्थोंके व्यापारसे तथा वस्त्रके व्यापारसे वृत्ति [धन्धा]

द्र अथवा सूर्यसे दशम स्थानके स्वामीका नवांश का
ाठ, हवेतो—मेनसिल हरताल, हिंगलू सुरमा वगेरा के

व्यापारसे तलवार चक्र भाला धनुष्य तोमर बन्दूक तोप आदि अस्त्र शस्त्रोंके व्यापारसे साहस कर्मोके करनेसे, अग्नि के सहायतासे होनेवाले सुनार, लुहार, आदिके काम से लड़ाई में वाद विवाद आदि सबल क्रियारंभसे तथा कितनेक के मतसे चौरी, सिपाहि. बिजली, सम्बन्धी कामकरने से, रसोई करनेसे, तथा खटीक का काम करने से वृत्ति होवे ॥ ६५ ॥

लग्न चन्द्र अथवा सूर्य से दशमे स्थान के स्वामी का नवांशका स्वामि बुधहोवेतो–सुन्दर अक्षर लिखनेसे गणित के काममें (हिसाबके कामसे) यंत्रकला कौशल्य के काम से कविता करने से ड्राइंग (चित्र लेखन) के कामसे पुस्तककी बंधाई पुस्तकबनाई आदि कामसे पत्रके पुष्प पत्ती आदि काटके बनानेके कामसे बाणरचना तथा पुष्पके हार गजरे गेंद पंखे शय्या आदि रचना के कामसे धूप अगरबत्ती उबटना आदि सुगंधी पदार्थोंके व्यापार से तथाकितनेक के मतसे वक्तृत्व (व्याख्यान तथा बोलनेके कामसे) शास्त्राध्ययन और ज्योतिष के धंधासे तथा बुद्धिसामर्थ्यके धंधेसे शिक्षक के कामसे बुकसेलर के कामसे कागद के व्यापारसे वर्षासन अथवा नेमणुक लेकर रहनेवाला ऐसा धंधा करने से वृत्ति होवे ॥ ६६ ॥

लग्नचंद्र अथवा सूर्य से दशमे स्थानके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुहोवेतो–देव ब्राह्मण तथा पंडित के संबंधी देवपूजन यज्ञ याग अनुष्ठान तथा शास्त्रीय पुराण कथा वार्ता व्याख्यानादि धर्मोपदेशके कामसें सुवर्ण लवण सुरमा आदिके तथा हाथी के व्यापारसे भूगर्भस्थ खदानोंके व्यवसायसे कर्मकांडादि क्रियाधारसें दान तीर्थ उपवास गुरु सेवनादि कार्यसे तथा शिक्षक संन्यासी वेदांती योगी हरदास वकील बेरिस्टर सोलीसीटरके काममें मसलतदार भक्त साधु मंहदेदार माजिस्ट्रेटतथा न्याया धीश के काममें व लोकोमे मुख्या आदि के काम से वृत्ति (धंधा) होवे ॥ ६७ ॥

लग्न चंद्र तथा सूर्य से दशमेस्थान केनवांश का स्वामि शुक्रहोवेतो–हीरा मरकतमणि पद्मराग इंद्रनीलमणि आदिके व्यापारसे चांदी, लोहा, सोना, सुंदर गौ, भैंस, गज, अश्व, आदि के व्यापारसे तथा दूध दही गुड व खारपदार्थ के व्यापारसे तथा कितनेक के मतसे दारू

काममे रहने वाला, कपडे सुगंधीपदार्थ व फूल बेचने वाला नाटक मे पार्टलानेवाला अलंकारदागदागीनेबेचना तथातय्यार करनेका धंधाकरनेवाला होवे ॥ ६८ ॥

लग्न चंद्र तथा सुर्य से दशमे स्थान के स्वामिके नवांश का स्वामी शनिहोवेतो– चपरासी हलकारा तथाजिन को रस्तेमे जादा चलना फिरनापडे वैसे कामकरनेवाला, ओहदेदारकेकाममें खून हिंसा व चोरी करने से अपने शरीर को ताडनादि दुःखदेनेसे हमाली मजूरी आदि स्वकुलानुचित कर्म करने सें तथा छापाखाने का मालिक अथवा उसमें नोकरी करनेसे खेती व बागबगीचेका काम करनेसे देवालयमें नोकरी करने से कभी कभी ईश्वरभक्ति मंदिरमेंपूजा करनेका और सम्वाद पहुचानेका धंधा करनेवाला होवे ॥ ६९ ॥

पाश्चात्यलोक धंधाके विचार करने मे जन्म कुंडली मे दशमस्थानमे गई हुई राशी तथा बलवान् राशि और राशियोंमे गयेहुवे ग्रहोके धर्मा नुसार वृत्तिका निर्णय करते है। उनलोगोका कथन है कि मेष, वृषभ सिंह, व मकर ये राशी धातु इमारतबांधना सोनारका काम और [यां]त्रिकविद्या इनका बोधकरती है.

मिथुन तुल व कुंभ ये तीनो शास्त्रीय राशिये है इसकारण जिसकाममे [त]र्क, शास्त्र, व बुद्धिचातुर्य का उपयोग विशेषहोवे वैसे काम के करने[वा]ले लोक उत्पन्न करती है.

कर्क वृश्चिक व मीन ये राशी होटल (वीसी, उपहारगृह) का धंधा [क]रने वाले तरेहवार सर्वप्रकार की दारू व मादक पदार्थ बेचनेवाले [अ]थवा तय्यार करनेवाले दारूके व्यापारी खलाशी तथा मच्छीमारने[वा]ले वा बेचनेवाले लोक उत्पन्न करती है.

वृश्चिक राशि ये विशेष करके रसायन शास्त्र वेत्ता व प्रसिद्धवैद्य (बडे मोटे विज्ञडाक्टर) और भांजगड करने का धंधा करनेवाले [ल]ोक उत्पन्न कारतीहै.

कन्या और धन ये राशि संवाद पहुचानेकाकाम किरकोल सामान [क]ा व्यापारी पुस्तके बेचनेवाला और छापनेवाला खोद काम करने[वा]ला कलाभिज्ञ लोक तय्यार करती है.

वृषभ कन्या व मकर राशि कृषि संबंधी व बाग बगीचे संबंधी [वि]शेष विज्ञानजानने वाले लोक तय्यार करती है.

मेष सिंह धन ये अग्निराशी अग्निसे अथवा वाफसे अथवा बिजलीसे चलनेवाले कारखानेका धंधे करनेवाला, हथियारोंका कारखाना चलानेवाला लढाव व भयंकर रितिके कामकरनेवाले लोक तय्यार करती है। जब बहोतसे ग्रह इन राशियो मे बलवान् होवे तो ऐसा धंधा करनेवाला होता है.

जब बहुतसे ग्रह कर्क वृश्चिक और मीन इन जलराशियोंमें गयेहोवेतो पाणीसरीखी पतलीदवा सोडावाटर लिमोनेट, अर्क, गुलाबजल, लवेंडर और तेरहवार अनेक प्रकाकरी दारूबचनेवाला बलालोका धंधा करनेवाला तथा मच्छीका वेपारी होताहै.

जो बहुत ग्रह शास्त्रीय राशीमे गयेहोवेतो उत्तम विद्वान ग्रंथकर्ता लेखक संपादक अथवा कपडेका वेपारी होवेगा.

जो बहुतग्रह पृथ्वी (वृष कन्या मकर) राशी मेहोवेतो इमारत बांधनेका काम खेतीका काम भूमि संबंधका व्यवसाय करने मे प्रवीण होताहै.

जब बहुत ग्रह मेष सिंह धन इन अग्निराशीमेगये होवेतो लुहार सुतार सोनार कारीगर का कामकरनेसें घोडा वगेरा चतुष्पदका व्यापारी चाबुकसवार ईंजनीयर व लोह का काम करनेवाला दलाल और सेनामे हरके प्रकार की नोकरी करने वाला होताहै।

बुध मंगल व शनि बलवानहोकर एकत्र होवेतो मनुष्य चोर लुटारु बदमाश बे कायदे शिर काम करने वाला बहुत बुरे लोकों का अगुआ होताहै.

शुक्र बुध मंगल एकत्र होवेतो खोदाइका बारीक नकाशीका काम करनेवाला चित्र कारीका काम करने वाला कारीगर मनुष्य होताहै.

चंद्र शनीसें दुषित हुवा होवेतो उस मनुष्यने स्वतंत्र धंधाकरना नही पांतीदार होवेतो उसमे आगेहोनानही ऐसा मनुष्यने नोकरी करनाहि अच्छाहै इसीमे भाग्योदयहोवेगा.

पश्चात्य ज्योतिषी इसतरह के आधारपर धंधेकीकल्पना करते है। राशिवग्रह इनका उपरोक्ततत्वानुसार विचार करके लग्न चंद्र व सूर्य सें दशमस्थानगतराशि, उसकास्वामी, उसके नवांशकीराशी, और उसराशा का स्वामि, दशम स्थानस्थग्रह, और अधिक ग्रह जिन राशीयोमे जावे उनका विचार करके, धंदे का विचार देशकाल जाति कुल रिवाज और परिस्थितीको ध्यानमेरखके करनेसे बहुत करके धंदे की कल्पनाठीक होवेगा।

लग्नाद्दशमेश श्चारवशाद्यद्भिन्नवांशे वर्तते तदीशोक्तावृत्तिः प्रत्यहं ॥ ७० ॥

द्रव्यदा मित्रारिस्वभान्यतरत्रयत्रगतास्ताद्दशमित्रारिस्वो-योगद्वाराधनाप्तिः ॥ ७१ ॥

धनदोर्क स्तुङ्गे बलिनि स्वविक्रमा द्धनम् ॥ ७२ ॥

लग्नार्थायगे स्सौम्ये बलिभि र्बहुप्रकारै र्धनाप्तिः ॥ ७३ ॥

इति तृतीय विवेकः

टीका- जन्म लग्नसे दशम स्थान का स्वामी गोचरमे राशि भ्रमण-वशात् जिस समय जिसराशी के नवांशमे होवे उसके स्वामिके धर्मा-नुसार प्रत्यह वृत्ति कहना ॥ ७० ॥

द्र० देनेवाला ग्रह अपने मित्र ग्रहकीराशिमे गयाहोवेतो मित्र द्वारा शत्रु कीराशिमे गयाहोवेतो शत्रुद्वारा स्वराशीमे गया होवेतो अपने उद्योग द्वारा धन प्राप्तिहोतीहै ॥ ७१ ॥

धनदेने वाला सूर्य अपनी उच्चराशिमें गयाहोवे बलवानहोवे तोअपने पराक्रमसे धनकी प्राप्ति होवेगा ॥ ७२ ॥

लग्न धन और लाभ स्थानमे बलवान् शुभ ग्रह गये होवेतो बहुत तरहसे धनाप्ति होवेगा ॥ ७३ ॥

इसके सिवाय पराक्रम, भाइके सालेकापुत्र, माईकेपुत्रकीस्त्रीका भाई, मामाकापिता, माताकाव्यय, माताकाकाका, माताकीसुसाफरी, माताकी नानी, मित्रकीमामी, मित्रकाकाका, मित्रकाव्यय, पुत्रकेपुत्र-कीस्त्री, पुत्रकालाभ, शत्रुकापिता, सालेकीस्त्री, स्त्रीकाभाग्य, नोकर-चाकर, उरुस्थल, पिताकारोगशत्रु, दादीकाभाई, दादाकाभाग्य, आदिकाविचारभी तीसरे भावसेहिकरना।

इति तृतीय विवेक टीका समाप्ता।



अथचतुर्थविवेकः

मातृदुग्धशोषयोग.

वृश्चिकांशे मातुर्दुग्धशोषः ॥ १ ॥

सोत्थपेग्निके सचन्द्रेपरस्त्री स्तन्यपानं ॥ २ ॥

टीका–कारकांश लग्न वृश्चिकराशीका होवेतो माताका दूध सूकजावे अर्थात् माताकेदूध कमनीहतोर ॥ १ ॥

तीसरे भावका स्वामी ६।८।१२स्थान में होवे और चंद्रमा संयुक्त होवेतो परस्त्रीका स्तनपानकरके परवरिश होवेगा ॥ २ ॥

मातृसुख नाशयोग

खेकुजेदृष्टमेजांथे बलाढ्ये मातृ सुखंन ॥ ३ ॥

पष्टेष्टमेचंद्रे स्तेभौमे सपापे मातृ सुखंन ॥ ४ ॥

शुक्रे वाचंद्रेपापान्तरे पापयुतदृष्टे मातृसुखंन ॥ ५ ॥

सुखे सुखेशे वापापांतरे पापयुतदृष्टेवा मातृसुखंन ॥ ६ ॥

चंद्रास्ते सपापे शुक्रे मातृसुखंन ॥ ७ ॥

मंदे पापयुते पापर्क्षे मातृसुखंन ॥ ८ ॥

पुत्रेचंद्रे मातृसुखंन ॥ ९ ॥

चन्द्रारौखे धर्मेवा मातृसुखंन ॥ १० ॥

सपाप चंद्रेस्ते मातृसुखंन ॥ ११ ॥

गुरावेके धनेमन्दे राहौयूने मातृसुखंन ॥ १२ ॥

जीवेर्केर्येमंदे सोत्थे राहौ माता नजीवति ॥ १३ ॥

सोत्थेस्तर्के लग्नेभौमे माता नजीवति ॥ १४ ॥

पापांतरेचंद्रेवाचंद्राच्चतुर्थगस्थाः पापामाता नजीवति १५

सुखे मंदे पाप दृष्टे शीघ्रं मातृ नाशः ॥ १६ ॥

टीका—दशमे भावमें मंगल आठमे स्थानमे युलयान् गुरुहोवेतो माताका सुखनहीं होवे ॥ ३ ॥

छठे अथवा आठमे स्थानमे चंद्रमा होवे और पापग्रह सयुत मंगल सातमे गया होवेतो माताका सुखनहीं होवे ॥ ४ ॥

शुक्र अथवा चंद्रमा पाप ग्रहोंकेबीचमें होवे अथवा पाप ग्रहो संयुत दृष्ट होवेतो माताकासुखनहींहोवे ॥ ५ ॥

सुखेश सुख भावमे गया होवे अथवा सुखेश पाप ग्रहोंके बीचमे होवे वापापग्रहोंसे युतदृष्ट होवेतो माताका सुख नहींहोवे ॥ ६ ॥

चंद्रमासे सातमे स्थानमे पापग्रहसंयुतशुक्र गया होवेतो माताकासुख नहीहोवे ॥ ७ ॥

शनि पापग्रहोंसे युतहोवे और पाप ग्रहकी राशी मेंगयाहोवेतो माताका सुख नहींहोवे ॥ ८ ॥

चंद्रमा पांचमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नहीहोवे ॥ ९ ॥

चंद्र और मंगल येदोनो नवमे अथवा दशमे भावमे गयेहोवेतो माता कासुख नहींहोवे ॥ १० ॥

पाप ग्रह संयुत चंद्रमा सातमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नहीहोवे ॥ ११ ॥

लग्नमें गुरू धनमें शनि सातमेराहु होवेतो माताका सुखनहीहोवे १२

लग्नमेगुरु धनमेशनि तीसरे स्थानमेराहु गया होवेतो माता नहींजीवे ॥ १३ ॥

तीसरे अथवा सातमे स्थानमें सूर्य और लग्नमें मंगल गयाहोवेतो मातानहींजीवे ॥ १४ ॥

पापग्रहोंके बीचमें चंद्रमा होवे अथवा चंद्रमासे चोथे औरसातमे स्थानमें पापग्रह गयेहोवेतो माता नहींजीवे ॥ १५ ॥

सुख (४) स्थानमे शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो शीघ्र माताका नाश होवे ॥ १६ ॥

मातुर्दीर्घायुयोग.

सुखेमदे शुभदृष्टे चिरेण मातृनाशः ॥ १७ ॥

सुखेशुभेकारकेशुभयुतेबलाढ्येवासुखेमातुर्दीर्घायुः १८

चंद्रे बलाढ्ये वा शुक्रे शुभयुतदृष्टे मातुर्दीर्घायुः ॥ १९ ॥

शुक्रे वाचन्द्रे शुभांशे केन्द्रे मातुर्दीर्घायुः ॥ २० ॥

सुखपांशेशांशपे केन्द्रे बलाढ्ये मातुर्दीर्घायुः ॥ २१ ॥

टीका– चौथेस्थान मे शनि शुभ ग्रह से दृष्टहोवेतो माताका नाश बहुत वर्षों पीछे होवे ॥ १७ ॥

चतुर्थ भावमे शुभग्रह होवे बलवान्मातृकारक ग्रह शुभग्रहसंयुत होवे अथवा वहमातृ कारकग्रह सुखस्थानमें गयाहोवेतो माता दीर्घायु होवे ॥ १८ ॥

चंद्र बलवान् होवे अथवा शुक्र शुभग्रहसे युत दृष्ट होवेतो माता दीर्घायुहोवे ॥ १९ ॥

शुक्र अथवा चंद्रमा शुभग्रहके राशिके नवांशमे होवे और केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमे गयेहोवेतोमाता दीर्घायुहोवे ॥ २० ॥

चतुर्थ स्थानके स्वामि केनवांशका स्वामी जिसग्रहके नवांशमेंहोवे वहग्रह बलवान् होकर केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमे जावेतोमाता-दीर्घायुहोवे ॥ २१ ॥

पिता माता सहैव मृत्यु योग.

लग्नाम्बुधर्मेशास्त्रिकोणकेन्द्रगाःपितामात्रासहैवाम्रियते २२

टीका–लग्न चतुर्थ और नवम स्थानके स्वामि १।४।५।७।९।१० इनस्थानोमेगये होवेतो पिताकिमृत्यु माताके सायहीहोवे ॥ २२ ॥

मातृ वधयो.

रात्रौ चंद्रात्रिकोणे मन्दे मातृवधः ॥ २३ ॥

टीका-रात्रिके समय जन्महोवे और चंद्रमासे ९।५ स्थानमे शनि गयाहोवेतो माताका वधहोवे ॥ २३ ॥

माता पतिव्रता योग.

सुखेशेर्के बलाढ्ये माता पतिव्रता ॥ २४ ॥

सुखे वैशेषिकांशे शुभदृष्टे माता पतिव्रता ॥२५॥

तुर्येशे शुभार्कदृष्टे माता पतिव्रता ॥ २६ ॥

टीका– सुखमे बलवान् सूर्य होवेतो माता पतिव्रता होवे ॥ २४॥

...ष्टेन वैशेषिकांशमे होवे शुभग्रहों से दृष्ट होवेतो माता प्रतिग्र...
॥ २५ ॥
...र्येश शुभग्रहहोवे उसको शुभग्रह और रवि देखता होवतो मा...
...ता होवे ॥ २६ ॥

माता जारिणियोग.

...शे कुजेनयुते चंद्रेसुखे पापदृष्टे माता जारिणी ॥२७॥
...ावे राहुयुते सपापे माता जारिणी ॥२८॥
...का- षष्ठेश और मंगल इनदोनो से युत चंद्रमा सुख स्थानमे जावे
...इनको पाप ग्रह देखेत होवेतो माता जारिणी (पतिव्रत धर्महीना).
॥ २७ ॥
...ख स्थानका स्वामि राहु और पापग्रहोसे युत होवेतो माता
...णी होवे॥ २८ ॥

मातृ स्नेहयोग.

...ग्न सुखेशा यन्योन्यमित्रे शुभेक्षित युते मातृस्नेहः२९
...र्येशे केन्द्रेशुभदृष्टे दाशुभ दृग्युते मातृस्नेहः ३०
...का-लग्न और सुख स्थान कास्वामि येदोनो परस्पर मित्रग्रह होवे
... शुभग्रहों सेयुततथा दृष्टहोवेतो मातासेप्रीति अधिक रहेगा २९
...र्येशकेंद्र (१।४।७।१०) स्थानमें गया होवे और उसको
...दा देखताहोवे अथवा केंद्रमे गया हुवा सुखेश शुभग्रहसे युत दृष्ट
...तो मातासे स्नेह रहेगा। इनयोगोंके विपरीत होवेतो मातासे वैर
...गा ऐसा मानना ॥ ३० ॥

द्विवि मतायोग.

...ारे द्विमातरः सौम्ये एका ॥ ३१ ॥
...का- चतुर्थ स्थानमे पापग्रहगया होवेतो दोतीन माताहोवे और
... ग्रहगया होवेतो एक माता होवे ॥ ३१ ॥

चतु ष्पदसुखयोग।

...वृषांशे चतुष्पदाः सुखदाः ॥ ३२ ॥
...सुखे शुभ दृष्टायपि कपे चतुष्पदाः सुखदाः ३३

टीका-बारवीमे लग्न वृषभ राशिका होवेतो मनुष्यकु (गाय भैंस घोड़ा वगेरा) का सुख होवेगा. ॥ ३२ ॥

सुखस्थानपर शुभग्रहोंकि दृष्टि अधिक होवेतो मनुष्यको सुख होवेगा ॥ ३३ ॥

बाल्येसुखीयोग.

जीवे केन्द्रेङ्गपे पापाढ्ये बाल्येसुखी ॥ ३४ ॥

धर्मशुभेङ्गपापे धर्मशुभे स्वर्क्षे बाल्यसुखी ॥ ३५ ॥

टीका-गुरु केन्द्रस्थानमे होवे और लग्नका स्वामि पापग्रहसंयुत गयाहोवेतो बाल्यावस्थामे सुखी रहेगा ॥ ३४ ॥

नवमे भावमे शुभग्रह लग्नमे पापग्रह धनभावमे शुभग्रह देखतेहोवे मे होवेतो बाल्यावस्थामे सुखीरहेगा ॥ ३५ ॥

षोडशाब्दात्परंसुखी योग.

शुभर्क्षेङ्गपे शुभेक्षिते वा गोपुरेषोडशाब्दात्परंसुखी ३६

टीका-लग्नका स्वामि शुभग्रहकी राशिमेजावे शुभग्रहों से दृष्टहोवे अथवा गोपुरांशमे गयाहोवेतो १६ सोलावर्षकी उमर होनेबाद सुखी होवेगा ॥ ३६ ॥

विंशतिवर्षोर्ध्वंसुखीयोग.

लग्नेशेचापे वा लग्नेशांशेशे वा तथास्थितेलाभेशे विंश-

तिवर्षेभ्यः परंसुखी ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न कास्वामि धनराशिका होवे १ अथवा लग्नेशके नवांशका स्वामि धनराशिका होवे २ अथवा लाभेश वा लाभ स्थानके स्वामिकानवांशका स्वामि धनराशिमे गयाहोवेतो (इनतीनोंयोगोंमेसे कोइ भीएक योगहोवेतो) वीस वर्षकी उमर होनेके बादसुखी होवेगा ॥ ३७ ॥

त्रिंशद्वर्षतः परंसुखीयोग।

लग्नेशांशेशेकेन्द्रे तथालाभेशांशेशे वा त्रिंशद्वर्षतः परं-

सुखी ॥ ३८ ॥

टीका- लग्नके स्वामिका नवांशका स्वामी केंद्र (१।४।७।१०) मेंगया होवे १ तथा लाभ (११) स्थानके स्वामिका नवांशका स्वामि केंद्र (१।४।७।१०) मेंगयाहोवेतो २ तीस वर्षकी उमर होजाने केपश्चात् सुखी होवेगा ॥ ३८ ॥

आद्यवयसिसुखयोग.

लग्नाद्यातुर्यगाः शुभाआद्ये वयसि सुखम् ॥ ३९ ॥

लग्नेशुक्रे पूर्वार्द्धेसुखी ॥ ४० ॥

केंद्रस्था गुरुजन्मतनुपा यौवने सुखी ॥ ४१ ॥

टीका- जन्मलग्नसेचतुर्थभावपर्यंत (१।२।३।४) शुभग्रह गयेहोवेतो उमरके आदिभागमें सुखीहोवेगा ॥ ३९ ॥

लग्नमेंशुक्र गयाहोवेतो आयुके पूर्वार्द्धमे सुखीरहेगा ॥ ४० ॥

केंद्र(१।४।७।१०) स्थानमें गुरु और जन्मलग्नका स्वामिगयाहोवेतो यौवना वस्थामे सुखीरहेगा ॥ ४१ ॥

बाल्येदुःखीततःसुखीयोग.

पापाधने केन्द्रेशुभे लग्नेशेउत्तमांशे बाल्येदुःखिततः सुखी ॥ ४२ ॥

टीका- धनभावमें पापग्रह, केंद्र (१।४।७।१०) मेंशुभग्रह गयेहोवे और लग्नेश उत्तमांशमें होवेतो बालपणेमें दुःखीरहे और पीछेसुखीरहेगा. ॥ ४२ ॥

मध्यवयसीसुखीयोग.

पञ्चपादाष्टमगाःशुभामध्यवयसिसुखी ॥ ४३ ॥

टीका- पंचमस्थानसे आठमेस्थान पर्यंत (५।६।७।८) सर्वशुभग्रह गयेहोवेतो मध्यावस्था में सुखीरहेगा ॥ ४३ ॥

आद्यमध्यवयसोसुखीयोग.

शुभखगैर्दशनान्त्यलाभगैः केन्द्रेसिंहासनेजीवे आद्य मध्यवयसोः सुखी ॥ ४४ ॥

छग्नार्थसोत्थे शुभदृष्टियुते शुभेक्षे जीवेसाराबवे आयमध्य वयसोःसुखी ॥ ४५ ॥

टीका- लग्न (१) व्यय (१२) और लाभ (११) स्थानमेंसर्वशुभ ग्रहगयेहोवे और सिंहासनांशमें गयाहुवा गुरु केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमेंगयाहोवेतो आद्य और मध्यदोनो अवस्थामें सुखीरहेगा ४४ लग्नधन और तृतीयस्थान शुभग्रहोसे युतदृष्टहोवे लग्नमेंशुभग्रहकी राशिहोवेगुरुपारावतांशमें गयाहोवेतो आद्यमें।रमध्यदोनोअवस्थामे सुखीरहेगा ॥ ४५ ॥

अंत्यतयामध्यांतवयसोः सुखीयोग.

धर्मादारिःखगाः शुभा अन्त्येवयसिसुखी ॥ ४६ ॥

देवलोकांशेशुक्रे गोपुरेलग्ने शुभदृष्टे मध्यान्त्य वयसोः सुखी ॥ ४७ ॥

टीका- नवमस्थानसे बारमेस्थान पर्यंत (९।१०।११।१२) सर्वशुभ ग्रहगयेहोवेतो अंत्यावस्थामेंसुखीहोवे ॥ ४६ ॥

देवलोकांशमे शुक्रहोवे गोपुरांशमे लग्नहोवे औरशुभग्रहसे दृष्टहोवेतो मध्य और अंत्यदोनो अवस्थामेसुखीरहेगा. ॥ ४७ ॥

आजीव सुखीयोग.

वर्गोत्तमेङ्गेशे वा स्वोच्चांशके वा स्वमित्रत्र्यंशे वा शुभयुतदृष्टे आजीवसुखी ॥ ४८ ॥

टीका-लग्नकास्वामी वर्गोत्तमांशमें (जिसराशीकाजन्मकुंडलीमेंहोवे उसीराशीका नवांश कुंडलीमेभी) होवेतो १ अथवालग्नकास्वामी अपनिस्वराशि व उच्चराशि केनवांशमेंहोवे २ अथवा लग्नकास्वामी अपने मित्रग्रहके द्रेष्काणमें होवे अथवा शुभग्रहों से युतदृष्ट होवेतो आजन्म (जीवे जहांतक) सुखी रहेगा ॥ ४८ ॥

सुखीयोग.

शुभेङ्गेशुभदृष्टे पापयोगरहिते सुखी ॥ ४९ ॥

पञ्चसुस्ववर्गेषु महासुखी ॥ ५० ॥

तालेशेजीवदृष्टेसुखी ॥ ५१ ॥
शुभेसुखेसुखी ॥ ५२ ॥
सुखेशेशुभान्तरेसुखी ॥ ५३ ॥
नीवेबलिनी तुर्यपयुतेसुखी ॥ ५४ ॥
केन्द्रकोणेसशुभेसुखेशे सुखी ॥ ५५ ॥
तालेशे मृदंशेसुखी ॥ ५६ ॥
लग्नेशाज्जीवे बलिनिसुखी ॥ ५७ ॥
गोपुरायंशेम्बुपे जीवेचसुखी ॥ ५८ ॥
शुभांशेतुर्येशे धनोपचयगेसुखी ॥ ५९ ॥
शुभान्तरेचन्द्रेसुखी ॥ ६० ॥

का–लग्नमें शुभग्रह होवे और उनको शुभग्रह देखतेहोवे कोईभी ग्रहका योग नहिंहोवेतो सुखीहोवे ॥ ४९ ॥
न्म कुंडलीमें पांचग्रह स्वराशिके (स्वक्षेत्री) होवेतो महासुखी ॥ ५० ॥
सुखस्थानके स्वामीको गुरुदेखता होवेतो सुखी होवे ॥ ५१ ॥
सुखस्थानमें शुभग्रह स्थितहोवे तो सुखीहोवे ॥ ५२ ॥
सुखस्थानका स्वामी शुभग्रहोंके मध्यमे होवेतो सुखीहोवे ॥ ५३ ॥
लवानगुरु सुखेशसें युतहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५४ ॥
सुखेशशुभग्रह से युत होकर केन्द्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमे होवेतो सुखी होवे ॥ ५५ ॥
सुखेश मृदंशमे गयाहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५६ ॥
लग्नके स्वामीसे गरु अधिक बलवान् होवेतो सुखीहोवे ॥ ५७ ॥
सुखेश और गुरु ये दोनों गोपुरादि शुभांशमें होवेतो सुखीहोवे ५८
सुखेशशुभग्रहकी राशिके नवांश में होवे औरवह २।३।६।१०।११ में स्थानमेंगयाहोवेतो सुखीहोवे ॥ ५९ ॥
चंद्रमा शुभग्रहोंके मध्यमे होवेतोसुखीहोवे ॥ ६० ॥

दुःखी योग.

ज्ञराब्हर्काः सुतस्था स्तुर्येभौमे रन्ध्रेमन्दे दुःखी ॥६१॥

लग्नगाः पापा दुःखी ॥ ६२ ॥

पापे तुर्येजीवे त्पबलिनिसधनोपिदुःखी ॥ ६३ ॥

सपापे सुखपे ऽबले सधनोपिदुःखी ॥ ६४ ॥

पापांशेम्बुपेनीचगे सधनपुत्रोपिदुःखी ॥ ६५ ॥

सभौमार्काम्बुपे क्रूरांशे शुभदृग्घीनेनित्यं दुःखी ॥६६॥

भौमार्कौनीचारिभागगौ सुखेपापदृष्टौ क्रूरांशेममादा ङ्गृहार्थं नाशोदुःखीच ॥ ६७ ॥

रंध्रेशेलाभे बाल्येदुःखी ॥ ६८ ॥

लग्नेर्कजे ष्टमेराहौ षष्टे भौमे दुःखी ॥ ६९ ॥

पापान्तरे चन्द्रे दुःखी ॥ ७० ॥

लग्नेशेन्त्ये खेपापे चंद्रार योगे दुःखी ॥ ७१ ॥

टीका- पंचमस्थानमे बुधराहुऔरसूर्य, चोथेस्थानमेंभौम, आठवे स्थानमें शनि गयाहोवेतो दुःखीहोवे ॥ ६१ ॥

लग्नमें पापग्रहगये होवेतो दुःखीहोवे. ॥ ६२ ॥

सुखस्थानमे एकपापग्रहजावे और गुरू अल्पबलीहोवे तोसधन होनेहुवेभीदुःखीहोवेगा ॥ ६३ ॥

सुखस्थानका स्वामि पापग्रहसे युतहोवे औरबहुतनिर्बलीहोवे तो सधन होनेहुवे भी दुःखीहोवे ॥ ६४ ॥

सुखस्थान का स्वामि नीचराशी मे गयाहोवे और पापग्रहकी राशी के नवांशमे होवेतो सधनं और पुत्र वाला होनेहुवे भी दुःखीहोवेगा ६५

सुखस्थान का स्वामि पापग्रह केनवांशमेहोवे सूर्यमंगलसेयुतहोवे और शुभग्रहोंमे दृष्टनहीहोवेतोनित्य दुःखीरहेगा. ॥ ६६ ॥

सूर्य और मंगल येदोनो नीचशत्रु और पापग्रहकी राशिनवांशमे

स्थितहोकर सुखस्थानमेंजावे और पापग्रहोंसे दृष्टहोवेतो अपनेप्रमादसे गृह धन आदि का नाशहोवे और दुःखीहोवे ॥ ६७ ॥

अष्टमस्थान का स्वामि ग्यारवे स्थानमे गयाहोवेतो बाल्या वस्थामे दुःखीहोवे. ॥ ६८ ॥

लग्नमेंशनि, आठमेंराहु, छठेस्थानमेंभौम, स्थितहोवे तो दुःखीहोवे ६९

पापग्रहोंके मध्यमे चन्द्रमागयाहोवे तो दुःखी होवे ॥ ७० ॥

लग्नेशवारमे स्थानमे, और पापग्रह दशमे स्थानमे, गयाहोवे और चंद्र मंगलका योग कोई भी स्थानमें हुवा होवेतो दुःखी होवे ॥ ७१ ॥

मूषिका मार्जार श्वादिदुःखदयोग.

मेषांशे मूषिका मार्जारं दुःखदम् ॥ ७२ ॥

सिंहांशे श्वादयो दुःखदा ॥ ७३ ॥

कन्यांशे ग्निकणा दुःखम् ॥ ७४ ॥

टीका-कारकांश कुंडलीमे मेष राशिका लग्नहोवेतो मूषिका (चूहे) और बिल्ली दुःखदेवेगे ॥ ७२ ॥

कारकांश कुंडलीमें सिंहराशिकालग्न होवेतो श्वान वगैरा दुःख देवेगे ॥ ७३ ॥

कारकांशलग्न कन्याराशीका होवेतो अग्निकेकण (तणख्या) वगैरासे दुःखहोवेगा ॥ ७४ ॥

प्रसादवान्योग.

तुर्येंशाचन्द्राच्छौ प्रासादवान् ॥ ७५ ॥

तुर्येंशादुच्चग्रहे प्रासादवान् ॥ ७६ ॥

अंशात्तुर्येराहुर्कजौ प्रासादवान् ॥ ७७ ॥

टीका-कारकांश कुंडलीमें चतुर्थस्थानमें चन्द्रशुक्रकायोग होवेतो प्रासाद (राजाओंके महल के समानमहल) वालाहोवे ॥ ७५ ॥

कारकांशलग्नसे चतुर्थस्थानमे उच्चराशीका ग्रहगया होवेतो प्रासाद वालाहोवे ॥ ७६ ॥

कारकांश लग्नसे चतुर्थस्थानमे राहु शनिकायोग होवेतो प्रासाद वाला होवे ॥ ७७ ॥

इष्टिकागृहयोग.

केत्वारौतुर्येशा दिष्टकागृहं ॥ ७८ ॥

टीका–कारकांशलग्नसे चतुर्थस्थानमे केतु मंगल का योग होवे ईटसेपनाहुया मकानहोवे ॥ ७८ ॥

काष्ठगृहयोग.

सुखेंशाज्जीवे काष्ठगृहम् ॥ ७९ ॥

टीका–कारकांश लग्नसे सुखस्थानमे गुरुगयाहोवेतो लकडीका मकान (जिस्मे लकड़ीज्यादे लगीहोवे वैसामकान) होवे ॥ ७९ ॥

तृणगृहयोग.

सुखेंशा दर्के तृणगृहम् ८०

टीका–कारकांश लग्नसे सुखस्थानमें सूर्यगयाहोवेतो तृणगृह (घास काघर) होवे ॥ ८० ॥

विचित्रगृहयोग

धर्मपेकेन्द्रे गेहेशेस्वोच्चमित्रगे तुर्येतुंगगेग्रहेविचित्रगृहम्८१

खतुर्येशौ चन्द्रमन्दयुतौ विचित्रम्वेश्म ८२.

टीका–नवमेभावकास्वामी केन्द्र (१।४।७।१०)स्थानमें, चतुर्थस्थानकास्वामी स्वउच्च अथवामित्रराशिका होवे और चतुर्थभावमें उच्च राशिमें गयाहुया कोईभी ग्रहस्थितहोवे तो विचित्रगृहहोवे ॥ ८१ ॥ दशम और चतुर्थका स्वामि येदोनों चन्द्रशनिसे युतहोवे तो विचित्रगृहहोवे ॥ ८२ ॥

हर्म्यप्राकारादियुतगृहयोग.

सोत्थेसौम्ये तुर्येशेबलिनि गृहेशेशे बलपूर्णे हर्म्यप्राकारादि युतगृहम् ८३

तुर्येपेसिंहासने गोपुरे मृद्वंशे वा हर्म्यप्राकारादियुतगृहम्८

टीका–तीसरेभावमें शुभग्रहहोवे चतुर्थेश बलवानहोवे और चतुर्थस्थानके स्वामिका स्वामि (चतुर्थभावकास्वामिजिसराशिमेंगयाहो उसकास्वामी) पूर्णबलवानहोवे तो देवता,राजा, और बडे२धनवानो रहनेयोग्य चौगिर्दकिलेसेवेष्टित उत्तममहलहोवे ॥ ८३ ॥

चतुर्थभावका स्वामि सिंहासनांश गोपुरांश अथवा मृदंशमें गयाहोवे तो राजाओंकेरहनेयोग्य उत्तम महल होवे ॥ ८४ ॥

देविकवेश्मयोग.

गृहेशे पारावते गोपुरे वा चन्द्रगुरुदृष्टे देविकवेश्म ८५

लग्नांबुर्थेशा यावन्तः केंद्रकोणेतावन्तो गृहाःशोभनाः ८६

टीका–चतुर्थभावकास्वामि पारावतांशमें अथवा गोपुरांशमें होवे और वह चन्द्रगुरुसे दृष्टहोवे तो देवताओंकेसमान यद्वादेवतायुक्त उत्तम महलहोवे ॥ ८५ ॥

लग्नेशचतुर्थेश और धनेश इन तीनोंग्रहोंमेंसे जितनेग्रह केन्द्रकोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानमें गयेहोवे उतनेहीगृह अच्छे सुंदरहोवे ८६

गृहलाभयोग.

लग्नेशेम्बुगे सुखेशेङ्गे गृहलाभः ८७

गेहेशेबलाढ्ये केन्द्रे शुभदृष्टे गृहलाभः ८८

सुखेशे वैशेषिकांशे परमोच्चगे गृहलाभः ८९

तुर्येशांशेशगांशेशे केन्द्रे गृहलाभः ९०

लाभार्थेशौ तुर्येतुर्यपे वैशेषिकांशे शुभदृग्योगेबव्हर्थगृहं लभ्यते ९१

टीका– लग्नेशचतुर्थभावमें और चतुर्थेशलग्नमें गयाहोवेतो गृह लाभहोवे ॥ ८७ ॥

चतुर्थेश बलवान्होके केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गयाहोवे शुभग्रहसे दृष्टहोवेतो गृहलाभहोवे ॥ ८८ ॥

परमोच्चराशिमें गयाहुवा सुखेश वैशेषिकांशमें गयाहोवेतो गृहलाभहोवे ॥ ८९ ॥

चतुर्थेश के नवांशका स्वामी जिसराशिमें गयाहोवे उसराशी के स्वामी का नवांश का स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गयाहोवे तो गृहलाभ (घरकालाभ) होवे ॥ ९० ॥

धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी चतुर्थभावमेंहोवे और चतु भावकास्वामी वैशेषिकांशमें गयाहोवे शुभग्रहसे युतदृष्टहोवे तो बहु धनसहित घरकालाभहोवे ॥ ९१ ॥

अकस्माद्गृहलाभयोग.

तुर्याङ्गपौ तुर्येऽकस्माद्गृहाप्तिः ॥ ९२ ॥

टीका–लग्न और चतुर्थभावका स्वामी ये दोनो चतुर्थ भावमें गये होवेतो अकस्मात् गृहका लाभहोवे १ यदिये दोनो लग्नमें गयेहोवे और अपनी उच्च, मित्र, तथा स्वराशीमेंहोवे शुभग्रहो से दृष्टहोवेतो अव श्य विनाप्रयत्नकियेही घरका लाभहोवे ॥ ९३ ॥

दत्तकयोग

गृहलाभ योगमेंभी. २ भेदहै । १ धर्मार्थ किंवा बक्षीस कोई मकान मिलजावे अथवा अपनेदूर नजीक रिस्तेवालेका मकान दत्तकनजाते हुवेभी अपने कबजेमे आजावे २ दूसरा अपने जन्मदाता मातापिताको छोड दूसरे मातापिताके यहांदत्तक (गोंदमे) जानेसे घरऔरसंपति कालाभहोवे ।

उपरोक्त गृहलाभयोगोमेसे दूसदत्तकजानेके योगमे जन्मदाता माता पिताके सुखकी हानी और दूसरे माता पिताके घर और संपति व लाभ होनेकी विशेषता होनेसे दत्तक गयेहुवे कितनेही मनुष्योंकि कुंड लियोंपर तात्विकविचारद्वारा विचारकरनेसे जो ७ नियम दत्तक योगके अनुभवमे आयेहे वेइसग्रंथके पाठकोंके अनुभवार्थ प्रकाशित करनेमे आतेहै ।

(१) कर्क अथवा सिंहराशिमें पापग्रहगयेहोवे ।
(२) चंद्र अथवा रवि पापग्रहोंसे युक्तकिंवा दृष्टहोवे ।
(३) चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रहगयेहोवे ।
(४) मेष, सिंह, धनु किंवा मकर इनराशियोमेसे कोईभीएकराशि चतुर्थ अथवा दशमभावमे गईहोवे ।
(५) चंद्रके चतुर्थस्थानमें पापग्रह गयेहोवे ।
(६) रवीके दशमस्थानमें अथवा नवमस्थानमें पापग्रहगयेहोवे ।
(७) चंद्र अथवा रवीये शत्रुक्षेत्री शत्रुग्रहसे युक्तहोवे तोदत्तकजाने

गृहलाभहोवेगा । जोलोग दत्तकगयेहै अथवाजोजानेवालेहै उनकी-जन्मकुंडलीमें इन ७ योगोंमेसे अेक दो तीनयोग अवश्यदेखनेमें आवेगा, यदि अेकभी योगनहींदिखनेमें आवे तो जोतिषको झुठामाननेवालोका कथन सत्यसमझना ।

गृहनाशयोग.

यावन्तः पापाः स्वाम्बुस्वान्त्यनाथैः सहिता स्त्रिकस्था स्तावन्तोगृहा वन्हिनादह्यन्ते ॥ ९३ ॥

राह्वर्कौअंशे कुजमात्रदृष्टे गृहदाहः ॥ ९४ ॥

तुर्येशेषष्ठे पापदृष्टेगेहनाशः ॥ ९५ ॥

गेहेशांशेशेषष्ठे गेहनाशः ॥ ९६ ॥

तुर्याङ्गार्थेशा यावत्पापैर्युता स्तावन्तो गेहानांनाशो-नतुशुभदृष्टे ॥ ९७ ॥

केन्द्र केणेर्के गेहे शैथिल्यप्रयुक्त पात भयम् ९८

तुर्येशेरन्ध्रे स्वयमेव गेहं पातयति ९९

टीका–जितने पापग्रह दशम, चतुर्थ,धन, और बारमे, भावके स्वामियोसे युक्त होके ६।८।१२ स्थानमेगये होवे उतने हीघर अग्निसे जलजांगे ९३

कारकांश लग्नमे राहु सूर्यगयेहोवे और इनको केवल मंगलही देखता होवे तो अग्निसे घर जलेगा ९४

चतुर्थेश छठेभावमें पापग्रह से दृष्टहोवेतो घरका नाशहोवे ९५

चतुर्थेश के नवांश का स्वामीछठे स्थानमे गयाहोवे तो घरकानाशहोवे. ९६

चतुर्थ लग्न ओ धन इनतीभाव के स्वामि जितने पापग्रहो से युतहोवे उतनेही घरो का नाशहोवे औरयदि ये शुभग्रहोसें दृष्टहोवेतो घरकानाशनहीं होवेगा ९७

केन्द्र कोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानमें रविस्थितहोवेतो पुराना घरहोनेकेसबबसे पडनेका भयहै ९८

चतुर्थेश आठमे भावमें गयाहोवेतो गुप्तही परकोटावाला होवे ९९

बहुगृहवासयोग.

तुर्यतत्पौचरर्क्षे कारके वा तथा बहु गृहवासः १००

टीका–चतुर्थभाव और उसका स्वामि ये दोनो चर राशी के होवे अथवा चतुर्थभावका कारक (चंद्र बुध) चरराशी का होवे तो बहुत घरमे रहनवाला (अेकघरमे कभी स्थिर वास नही करने वाला)होवे १००

स्थिरवासयोग.

गृहतत्पौ स्थिरे तथा कारके वा स्थिरवासः १०१

शुभषष्ठ्यंशे तुर्ये स्थिरवासः १०२

टीका–चतुर्थभाव और उसकास्वामी येदोनो स्थिरराशीके होवे अथवा चतुर्थभावका कारक [चद्रबुध] स्थिरराशीके होवेतो अेकही घरमें स्थिरवास करनेवालाहोवे. १०१

चतुर्थभाव शुभषष्ठ्यंशमे होवे तो अेकही घरमे स्थिरवास करनेवालाहोवे १०२

बहुक्षेत्रवान् योग.

खे सुखेशे कर्मेशेम्बुगे बलिनिभौमे बहुक्षेत्रवान् १०३

बलाढ्यौ खाम्बुपौ परस्परसुहृदौ बहुक्षेत्रवान् १०४

तुर्यतत्पौ शुभयुतौ बहुक्षेत्रवान् १०५

तुर्येशेसुते गोपुरांशे बहुक्षेत्रवान् १०६

टीका· चतुर्थेशदशमेभावमें और दशमेशचतुर्थस्थानमे गयाहोवेमंगल बलवान्होवतो बहुतजमीनवाला (बडाजागीरदार) होवे. १०३

दशम और चतुर्थ भावके स्वामी बलवानहोवे और आपसमेंदोनो मित्रग्रहहोवे तो बहुतजमीन वालाहोवे १०४

चतुर्थभाव और चतुर्थ भावकास्वामि येदोनो शुभग्रहसेयुत होवेतो बहुत जमीनवालाहोवे १०५

चतुर्थेश पंचमभावमें गोपुरादि अंशमे गयाहोवे तो बहुत जमीनवाला (र. २) होवे १०६

क्षेत्राप्तियोग.

बलिन्यङ्गेशेऽम्बुगे बलिन्यम्बुपेऽङ्गे शुभदृग्योगे स्वपराक्रमात्क्षेत्राप्तिः १०७

भ्रातृपेण तत्कारकेण वा युते तुर्येशे भ्रातृतःक्षेत्राप्तिः १०८

स्त्रीकारकेऽम्बुगे क्षेत्रपेद्यूने तयोर्मैत्र्यां कलत्रतःक्षेत्राप्तिः १०९

षष्ठेशेतुर्ये सत्येषष्ठे षष्ठेशतःक्षेत्रपेधिकबलेशत्रुतःक्षेत्राप्तिः ११०

गेहेशेस्वराशौ बलिन्युपचयगेशुभदृष्टे बहुक्षेत्राप्तिः १११

टीका—बलवान्लग्नेशसुखभावमें,औरबलवान्चतुर्थेश लग्नमेंगयाहोवे शुभग्रहसे युतदृष्टहोवे तो अपनेपराक्रमसे जमीनकी प्राप्ती होवे १०७

तृतीयभावकेस्वामीसेअथवातृतीभावकेकारक(मंगल)सेचतुर्थ भाव कास्वामि युतहोवेतोभाईसे जमीनकीप्राप्तिहोवे १०८

स्त्रीकारकग्रह [शुक्र] सुखभावमें औरसुखभावकास्वामी सातवें भावमें गयाहोवे येदोनो परस्परामित्रग्रहहोवेतो स्त्री से अथवा स्त्रीके संबंधसे जमीनकीप्राप्ती होवे. १०९

छठेभावका स्वामि चतुर्थभावमें औरचतुर्थभावकास्वामि छठेभावमें गयाहोवे छठेभावके स्वामीसे चतुर्थेश अधिक बलवान् होवेतो शत्रुसे जमीनकी प्राप्तिहोवे ११०

चतुर्थेश स्वराशिकाहोवे और बलवान्होकर ३।६।१०।११में भावमें शुभग्रहसे दृष्टहो के गयाहोवे तो बहुतजमीनकी प्राप्तिहोवे १११

क्षेत्रादिनाशयोग

गेहेशेनीचारातिमूढगेपापान्तरेपापदृष्टेक्षेत्रादि नाशः ११२

पापान्तरे कुजे पापदृष्टे क्रूरांशेक्षेत्रादिनाशः ११३

तुर्येशे क्रूरषष्ट्यंशे तुर्येपापे क्षेत्रादिनाशः ११४

तुर्येशेत्रिके क्षेत्रादिनाशः ११५

गेहेशेर्ये सपापे नीचारिभे क्षेत्रादिनाशः ११६

कर्मेशेम्बुगे सपापे क्षेत्रनाशः ११७

क्रूरमृत्युयमाद्यंशे सपेम्बुगे क्षेत्रनाशः ११८

सेशसूर्येम्बुगे राजकोपात् क्षेत्रनाशः ११९

वित्तेशांशेशराशिश्वरेणसहितेऽपारेम्बुपे राजकोपात् क्षेत्रनाशः १२०

टीका-चतुर्थेश नीच शत्रु राशीका अथवा अस्तंगतहोवे पापग्रहोंके बीचमें और पापग्रहोंसे दृष्टहोवे तो जमीनजायदादका नाशहोवे ११२

पापग्रहोंके मध्यमें मंगलगयाहोवे पापाग्रहोंसे दृष्टहोवे और क्रूरग्रहकी राशिकेनवांशमे हुवेतो जमीनजायदादका नाशहोवे ११३

चतुर्थेश क्रूरषष्ठ्यंश (पापषष्ठ्यंश) मेंहोवे और चतुर्थस्थानमें पापग्रहगयाहोवेतो जमीनजायदादका नाशहोवे ११४

चतुर्थेश ६।८।१२में भावमेंगयाहोवेतोजमीनजगेराका नाशहोवे ११५

चतुर्थेश धनभावमे पापग्रहसे युतहोवे नीच तथा शत्रुराशि गयाहोवे तो जमीन जायदादआदि सम्पत्तिकानाशहोवे ११६

दशमभावका स्वामि पापग्रहसे युतहोके चतुर्थभावमे जावेतो जमीनका नाशहोवे ११७

क्रूर,मृत्यु,यम, आदि दुष्टषष्ठ्यंशमे गयाहुवा दशमभावकास्वामी चतुर्थभावमें गयाहोवेतो जमीनका नाशहोवे ११८

सूर्य और चतुर्थभावकास्वामी येदोनो दशमें भावमेगये होवेतो राजके कोपसे जमीनका नाशहोवे (राजाजमीनजप्तकरलेवे) ११९

धनेश के नवांशका स्वामी जिसराशिके नवांशमें होवे उसकेस्वामीसे और पापग्रहमें चतुर्थभावका स्वामी युतहोवे तो राजाके कोपसे जमीनका नाशहोवे १२०

भूमिविक्रेतायोग.

गेहेशेतुङ्गे थेशेपापेनीचारिभे भूमिविक्रेता १२१

टीका-चतुर्थेश उच्चराशिमें और नीच तथा शत्रु राशिमे गयाहुवा

धनभावका स्वानि पापग्रहहोवे तो जमीन बेचने वालाहोवे १२१

पुत्रतःमित्रतायोग.

सुताङ्गेशमित्रत्वे पुत्रोमित्रम् १२२

टीका–पंचमेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो पुत्रसे मित्रतारहै १२२

स्त्रीतःप्रीतियोग.

द्यूनाङ्गेशमित्रत्वे स्त्री मैत्री १२३

टीका–सप्तमेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो स्त्रीसे मित्रतारहै १२३

बहुजनमैत्रीयोग.

सुखाङ्गेशमित्रत्वे बहुजनमैत्री १२४

सुखेशुभदृग्याधिक्येबहुजनमित्रता १२५

टीका–सुखेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो बहुत मनुष्यों से मित्रताहोवे १२४

चतुर्थ भावपर शुभग्रहोंकि दृष्टि अधिकहोवे तो बहुतजनोंसे मित्रताहोवे १२५

सुहृत्पोष्ययोग.

द्वयोर्मित्रक्षेत्रगयोः सुहृत्पोष्यः १२६

टीका– केहनी दोग्रहमित्रराशिमें गयेहोवेतो मित्र का पोषणकरने वालाहोवे १२६

बन्धुपूज्ययोग.

सुखेसौम्ये सौम्यदृष्टे शुभकारकेबलिनि बन्धुपूज्यः १२७

गेहेजीवे गेहपे शुभयुते जीवदृष्टे बन्धुपूज्यः १२८

तुर्येस्वोच्चे स्वमित्रभे वा खेटे गुरुदृष्टे बन्धुपूज्यः १२९

मित्रभेस्वर्क्षगे बन्धुपूज्यः १३०

टीका–चतुर्थभावमें शुभग्रह शुभग्रह शुभग्रह सें दृष्टहोवे और शुभ कारक[चंद्र गुरु]बल बलवान होवेतो बन्धु वर्गका पूज्य (माननीय) होवे १२७

चतुर्थ भावमें गुरुग्रहहोवे चतुर्थभावका स्वामि शुभग्रह से युत और गुरुसे दृष्टहोवे तो बन्धु वर्गकापूज्य (माननीय) होवे. १२८

कोइ भी ग्रह चतुर्थ भावमें अपनी उच, स्व, अथवा मित्र राशि में गया होवे और गुरु से दृष्टहोवे तो बन्धु वर्ग का पुज्यहोवे १२९

कोइ भी तीनग्रह अपनी स्वराशि मे गयेहोवे तो बंधु वर्ग कापुज्य होवे १३०

बन्धूप कार कर्ता योग.

केन्द्र कोणे सुखेशे वैशेषिकांशे पापदृग्योगहीने बन्धूप कारकृत् १३१

तुर्ये सौम्याःबन्धूपकारकृत् १३२

धनेशे लाभेत्रिकोणे गेहेशुभदृष्टे बन्धूपकारकृत् १३३

गेहेशे केन्द्रे शुभांशे बन्धुपकार कृत् १३४

चतुर्थ ग्रहेषु सुहृद्गेहगेषु बंधुपोष्यः १३५

टीका–वैशेषिकांश मे गयाहुवा चतुर्थेश केन्द्र कोण [१।४।५।७।९।१ स्थानमें गयाहोवे और पापग्रहो से युत दृष्ट नही होवे तो बन्धु व का उपकार करने वाला होवे १३१

चतुर्थभावमें अधिकशुभग्रह (बुध गुरु शुक्र) गये होवे तो बन्धु व का उपकार करने वाला होवे १३२

धनभावका स्वामी नवमेंपांचमे अथवा लाभभावमे गयाहोवे औ चतुर्थभावशुभग्रहसें दृष्टहोवे तो बन्धुजनपर उपकार करनेवाल होवे १३३

चतुर्थभावका स्वामी शुभग्रहके नवांशमहोवे और केन्द्र (१।४।७।१० स्थानमेंगयाहोवे तो बंधुजनपर उपकारकरने वालाहोवे १३४

कोइभी चारग्रह अपने मित्रग्रह की राशिमेंगयेहोवेतो बंधुजन के पोषणकरने वालाहोवे १३५

बंधुभिस्त्यज्यतेयोग.

तुर्यपे क्रूरषष्ठ्यंशेल्पवीर्ये बन्धुभिस्त्यज्यते १३६

–चतुर्थेश पापग्रहसें युतहोवे क्रूरषष्ठ्यंशमेंहोवे औरअल्पवली अथवा नीच शत्रु राशिमें गयाहोवेतो बन्धुजनोसे त्याग १३६

बन्धुमध्येकुत्सितयोग

धुनाथे बहुपापयुते तथैव कारके बन्धुमध्ये कुत्सितः १३७

का–चतुर्थेश बहुत पापग्रहोसे युतहोवे और चतुर्थभावका कारक (बुध) भीबहुतपापग्रहोसे युतहोवे तथाचतुर्थ भावभीपापयुतहोवे न्धुजनो मे निन्द्यहोवे १३७

बंधुद्वेषीयोग

पापर्क्षेतुर्ये नीचास्त खगयुते शुभदृग्योगहीनेबन्धुद्वेषी १३८

का–चतुर्थभावमें पापग्रह की राशिहोवे औरउसमे नीच अस्त मिगयाहुवा ग्रहयुतहोवे किसीशुभग्रहसेंयुत दृष्टनहीं होवेतो बन्धु का द्वेषीहोवे १३८

पर्यंकशायीयोग.

अन्त्येशेशुभ सम्बन्धे शुभवर्गे स्थोच्चेना पर्यंकशायी १३९

व्ययेशेपापेपिशुभवर्गे शयनसुखम् १४०

का–बारवे भावकास्वामी शुभग्रहसेंसंबन्ध (संज्ञातंत्रसूत्र ६४मेंकहे गे) करताहोवे शुभग्रहोके दशवर्गमेंहोवे अथवा अपनी उच्चराशि ाहोवे तो पलंगपर शयनकरनेवाला (उत्तमशयनसुखवान्) १३९

ारवेभावकास्वामि पापग्रहहोवे और यदिवहशुभग्रहो के वर्गमे- होवे तो शयनकासुख अच्छाहोवे १४०

शयनसुखाभावयोग

व्ययेशेपापसम्बन्धे शयनसुखाभावः १४१

स्थनेशेनिके शयनसुखाभावः १४२

नीचेक्षेशे शयन सुखाभावः १४३

देहेशेमन्दमान्द्यगुयुते शयनसुखाभावः १४४.

इतिचतुर्थविवेकः

टीका–व्ययेश पापग्रहसे सम्बन्धकरताहोवेतो शयनकासुखनहीं े १४१

लग्नेशछिद्र (६।८।१२) स्थानमें गयाहोवेतो शयनका सुखनहीं होवे १४२

लग्नेश नीचराशी का होवे तो शयनका सुखनहींहोवे१४३

लग्नेश शनि गुलिक तथा राहुसंयुतहोवेतो शयन का सुखनहीं होवे १४४

इसकेसिवाय गाईकेधनकाविचार' पुत्रकाव्यय, पुत्रका सुसाहरी पुत्रकाशयनसुख. स्त्री का पिता, मालिककीस्त्री' हृदय, दादाकाराज्य मानव्यपार, दादीकी माताका सुख, दत्तकलानेकाविचार आदिविषय भीचतुर्थभावसेदखना ।

इतिचतुर्थविवेकस्यटीकासमाप्ता:

अथपञ्चमविवेकः ।

बुद्धिमान्योग.

सुतर्क्षेशुभे शुभदृष्ट युते बुद्धिमान् १

सुतेशेतुङ्गे वा शुभान्तरे बुद्धिमान् २

गुरौकेन्द्रे कोणे बुद्धिमान् ३

शुभभे सुतेशे सुतेजीवे बुद्धिमान् ४

ज्ञे सुते वा सुतेशे बलिनि केन्द्रगा बुद्धिमान् ५

टीका-पंचम भावमें शुभग्रह की राशी शुभग्रहसे युतदृष्ट-होवेतो बुद्धिमान् होवे १

पंचम भावका स्वामि अपनी उच्चराशिमें गयाहोवे अथवा शुभग्रहों के मध्यमें होवे तो बुद्धिमानहोवे २

गुरू केन्द्र कोण [१।४।७।१०।९।५]स्थानमें गयाहोवे तो बुद्धिमान् होवे ३

पंचमेश शुभग्रहकीराशि [३।६।२।७।९।१२।४ इनराशि योमेसें कोई भीराशी]मेंगयाहोवे और पंचम भावमें गुरु होवे तो बुद्धिमान् होवे ४

६१.

बुध पाँचमे भावमें गयाहोवे, १ अथवा पंचमेशबलवानहोवे २अथवा पंचमेश बलवानहोके केन्द्रमे गयाहोवे ३ तो बुद्धिमान होवे ५

विशेष बुद्धिमान् योग.

पुत्रेशे केन्द्रे शुभान्विते धारणादिपटुः ६

सुतेशे कारके मृदंशादियुते शुभदृग्युते धारणादिपटुः ७

सुतेशे गोपुरादौ धारणादिपटुः ८

सुतकारके गोपुरादौ पेरङ्गितज्ञो मेधावी ९

टीका-पंचमेश केन्द्र(१।४।७।१०) स्थानमें शुभग्रहसे युत होवेतो धारणादिपटु [कोईभीबात भेकवखत सुनलेनेसे याद रखने समझने आदिमे विशेषचतुर बुद्धिवाला] होवे ६

पंचमेश और पंचमका कारक[गुरु]मृदुअ दिशुभषष्ठ्यंशमे होवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो धारणादिपटु होवे ७

पंचमेश गोपुरादि अंशमें होवेतो धारणादिपटु होवे ८

पंचमका कारक [गुरु] गोपरादि अंशमें होवेतो दूसरेके अभिप्राय को उसकीचेष्टा परसेहीसमझलेने वाला और मेधावी (धारणावति बुद्धिवाला), होवे९

क्षिप्रोत्तरदानशीलयोग.

हेन्द्राराणा मुपरि बलिग्रह दृष्टौ क्षिप्रोत्तरदानशीलः१०

टीका-बुध चंद्र और मंगल इनतीनोंग्रहोंपर बलवान शुभग्रहकीदृष्टि होवेतो हाजरजबाब (तुरंतउत्तर जबाबदेनेवाला) होवे १०

चंचल धी योग.

लग्न कोणे चन्द्रार्कौ चंचलधीः ११

केन्द्रे जीवे चंचलधीः १२

सौम्येर्ये ऽष्ठ्ये पापदृष्टे चलचित्तः १३

टीका-लग्नमे तथा ९।५ भावमे रवि चंद्र गयेहोवेतो चंचल बुद्धि वालाहोवे ११

केन्द्र स्थानमें गुरुगयाहोवे तो चंचल बुद्धिवालाहोवे १२

धनभावमें बुध निर्बलीहोके गयाहोवे और यह पापग्रहसे दृष्टहोवेतो चलचित्त [अस्थिरचित्त वाला] होवे १३

सात्विकयोग.

सप्तोत्थपे ज्ञे सात्विकः १४

टीका-तृतीय भावके स्वामीसे बुध युक्तहोवे तो सात्विक मति वाला होवे १४

सुवाक्योग

व्ययेशेऽङ्गे सुवाक् १५

टीका-व्ययेश लग्नमें गयाहोवे तो अच्छा सुंदर बोलने वाला होवे १५

विस्मयशीलयोग.

त्रिके चन्द्रे शुक्र दृष्टे विस्मयशीलः १६

सपापे सुतपे विस्मयशीलः १७

धी कारके सपापे वा क्रूरषष्ठपे विस्मयशीलः १८

टीका-त्रिकस्थान [६।८।१२]में गयाहुवा चंद्रमा, शुक्रसे दृष्टहोवे तो विस्मरण बुद्धिवाला होवे १६

पंचमेश पापग्रहसे युक्तहोवे तो विस्मरण बुद्धिवालाहोवे १७

बुद्धिकारक ग्रह (बुध गुरु) पापग्रहसेयुक्तहोवे अथवा बुद्धिकारक क्रूरषष्ठेशमें गयाहोवेतो विस्मरण बुद्धिवाला होवे १८

हीनधीयोग.

लग्ने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधीः १९

सुतेशे क्रूरषष्ठपे हीनधीः २०

मंदारार्का चन्द्रं पश्यन्ति मौर्ख्यकराः २१

टीका-लग्नमेंगयाहुवा चंद्रमा शनिमंगलसे दृष्टहोवे बुद्धिहीनहोवे १९

पंचमेश क्रूरषष्ठपस्थानमें होवेतो बुद्धिहीनहोवे २०

शनि मंगल और सूर्य येतीनों चन्द्रमाको देखते होवेतो मूर्खहोवे २१

मदयोग

केन्द्रगा चन्द्रेन्दु गुलिका मदः २२

धनेगुलिकार्कौ पापदृष्टौ वा सार्कजेसोत्थपेजडः २३

सपाप धनेशे खे सभाजडः २४

सतमसि सोत्थपे जडः २५

सुतेमन्दे लग्नेशे मन्ददृष्टे सुतेशेसपापेजडः २६

गुलिकार्कजौसुते शुभयोगहीने जडः २७

सुतेजीवे मेधानाशः २८

टीका-शनिचंद्र और गुलिक येतीनो केन्द्र (१।४।७।१०) मेंगयेहो-वेतो जड़बुध्दि [महामूर्ख] होवे २२

धनभावमें गुलिक और सूर्य गयेहोवे इनदोनो को पापग्रहदेखतेहोवे १ अथवा तृतीयभावका स्वामि शनिसेंयुतहोवेतो जड़बुद्धिहोवे २३

पापग्रहसेयुतधनेश दशमे भावमे गयाहोवेतो सभामेजड़होवे अर्थात् सभामेकुछबोलनहोसके २४

तीसरेभावका स्वामि राहुसे युत होवेतो जड़होवे २५

पंचमभावमेगयाहुवा शनि, लग्नेश को देखताहोवे और पंचमेश पापग्रहसेयुतहोवे तो जड़होवे २६

पंचमभावमें गुलिक शनिकायोग किसीशुभग्रहसेयुतनहींहोवे तो जड़होवे २७

पंचमभावमें गुरूगयाहोवेतो मेधानाश (धारणावालिबुद्धिकानाश) होवे २८

याज्ञिकयोग.

अंशेकेतौशुक्रमात्रदृष्टेयाज्ञिकः २९

टीका-कारकांश लग्नमे केतु केवलशुक्रसे दृष्टहोवे तो यज्ञादिकर्म कांड करानेवालाहोवे २९

मांत्रिकयोग.

अंशात्कोणे पापद्वये मान्त्रिकः ३०

अंशात्कोणे पापद्वये पापदृष्टौभुतादिनिग्रहकर्ता ३१

अंशात्कोणेपापे शुभदृष्टेनुग्राहकः ३२

टीका-कारकांशलग्नसे पांचमे और नवमे स्थानमे क्रमसे अेकर पापग्रह दोनोस्थानमे गयेहुएहोवेतोमांत्रिक (मंत्रवेत्ता) होवे ३०.

कारकांशलग्नसे नवमेपांचमें दोनोस्थानमेएकर पापग्रहगयेहोवे और उनकों पापग्रह देखते होवेतो भूतादिकों का निग्रह (प्रतिबंध) करनेवालामांत्रिक होवे ३१

कारकांशलग्नसें नवमे पांचमेस्थानमें गयेहुवेदोनो पापग्रह शुभग्रहसें दृष्टहोवेतो लोकोपरमंत्रादिद्वारा अनुग्रह करनेवालाहोवे ३२

भिषक्योग.

अंशे ज्ञेन्दुशुक्रदृष्टे वा धनेभिषक् ३३

शुक्रेन्दुदृष्टेशे रसवादी ३४

सशुभराव्हर्कांशेशेपापयुतेविषवैद्यः ३५

टीका-कारकांश लग्नकों बुध, चंद्र, शुक्र ये तीनो ग्रहदेखते होवे। अथवा धनभावकों ये तीनोग्रह देखते होवे तो भिषक् [वैद्य] होवे ३३

कारकांशलग्न शुक्रचन्द्रसें, दृष्टहोवेतोरसायनका उपयोग करनेवाला रसवैद्य होवे ३४

कारकांशलग्न में राहु रवि, शुभ और पाप दोनो ग्रहोसे युत होवेतो विषवैद्य [विषका विशेष उपयोग करनेवाला वैद्य] होवे ३५

लग्न, रवि, चंद्र, मंगल, और दशम भाव इन पांचोंमें से अेक तीन किंवा पांचोहि वृश्चिक राशिमे अथवा वृश्चिक राशिके नवांश किंवा वृश्चिकराशिके गुणक अंश§मेंगयहोवे तथा अग्निराशिमें त हस्तकला कुशलराशि [६]मे तथा ३।६ राशिके अंशमें होवेतो डाक्टर होवेगा.

वैय्याकरणयोग.

अर्थस्तुवपो रंशाज्जीवे वैयाकरणः ३६

बलिनिगुरौवेद्मे रविगुरुदृष्टेशाब्दिकः ३७

§ मेषराशिका ८-२०-२१ वृषभका ७-१७-२९ मिथुनका [illegible] कर्कका ९-१०-२९ सिंहका ४-१६-२८ कन्याका १-१५-२७ तुलाका २-१[illegible] वृश्चिकका ४-१२-२१ धनका १४-२४ मकरका ११-२१ कुंभका १०-२२ मीन ९-११ [illegible]

टीका—कारकांशलग्नसे धनभावमें तथा पांचमें गुरुगया होवेतो वैयाकरण होवे ३६

धनभावका स्वामी गुरु पूर्णबलवान्होवे और उसको रवि, शुक्र देखते होवेतो वैयाकरण होवे ३७

मीमांसकयोग.

धनेसोत्थे शुतेंशाज्ज्ञेज्यौ मीमांसकः ३८

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें स्थानमें बुध गुरु गयेहोवे तो मीमांसा शास्त्रज्ञहोवे ३८

तर्कज्ञयोग.

अंशात्सुतार्थसोत्थे जीवारौ तार्किकः ३९

जीवाच्छौधनेशौरव्यार दृष्टौतार्किकः ४०

जीवाच्छौतुङ्गस्वर्क्षे त्रिकोणगौ तार्किकः ४१

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भावमें गुरु मंगल गयेहोवेतो तर्कशास्त्री होवे ३९

द्वितीय भावका स्वामि गुरु अथवा शुक्र होवे और उसको रवि मंगल देखते होवेतो न्याय शास्त्री होवे ४०

गुरु और शुक्र ये दोनो अपनी उच्च, स्व, अथवा मूलत्रिकोण राशिमे गये होवेतो न्यायशास्त्रज्ञ होवे ४१

सांख्यज्ञयोग.

अंशाद्धने पुत्रे सोत्थे जीवेन्दू सांख्यज्ञः ४२

टीका—कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भावमें गुरु चंद्र गयेहोवेतो सांख्यशास्त्रज्ञ होवे ४२

गणितज्ञयोग.

अंशात्सोत्थे सुतेर्थे केतुजीवौ गणितज्ञः ४३

धनेभौमे शुभदृष्टे गणितज्ञः ४४

चंद्राद्धने शुक्रदृष्टे केन्द्रेबुधे वा कुजे गणितज्ञः ४५

धनेशेन्तस्त्रोच्चे गुरोलग्नेऽष्टमे मंदे गणितज्ञः ४६

जीवेकेन्द्रकोणे स्वोच्चेशुकेज्ञेथेंशे वा धने गणितज्ञः ४७

टीका–कारकांश लग्नसे दूसरे, तीसरे अथवा पांचमें भावमें केतु और गुरु गये होवे तो गणितशास्त्र का जाननेवाला होवे ४३

धनभावमे मंगलगया होवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो गणित शास्त्रका जानने वालाहोवे ४४

धनभावमे चंद्र मंगल का योग होवे और उनको बुध देखताहोवे ? अथवा केंद्रस्थानमे बुध किंवा मंगल गयाहोवे तो गणित शास्त्रका जाननेवाला होवे ४५

धनभावका स्वामि बुध अपनी उच्चराशि (कन्या राशिमे १५ अंश तक) में, गुरुलग्नमें, और शनि आठमें भावमें गयाहोवेतो गणित शास्त्र जानने वालाहोवे ४६

गुरुकेंद्र त्रिकोणस्थानमें शुक्र अपनी उच्चराशि (मीन) में और बुध धनभावकास्वामीहोवे वा धनभाव मे गया होवे तो गणितशास्त्र जाननेवाला होवे ४७

जिसके गणितज्ञ योग होताहै वह गणितका जाननवाला ज्योतिषी अथवा गणितशास्त्री किंवा हिसाबतपासनेवाला [अकाउन्टेन्टजनर वा इंजनियर, ओवरसीयर, सेटलमेन्टआफीसर, रेव्हेन्युआफि साइन्सजाननेवाला, पैमायशजाननेवाला, रोकड्या, खजानची, हि बरखनेवाला, जमाखर्चनविश, आदि गणितसे संबंधरखनेवालेका से ग्रहयोग के बलाबल तारतम्यभेदके अनुसार कोईभी गणितका करनेवाला होवेगा ।

ज्योतिर्विद योग.

ज्ञाच्छौ सोत्यार्थगौ ज्योतिर्विदांश्रेष्ठः ४८

धनेशेबलिनि केन्द्रायकोणेज्ञे ज्योतिर्विदांश्रेष्ठः ४९

स्वोच्चेधनेजीवे ज्योतिर्विदांश्रेष्ठः ५०

टीका–बुध शुक्र का योग दूसरे तथा तीसरे भावमे होवे अथवा दोनोमे से एक दूसरे और दूसरा तीसरे भावमे गयाहोवे तो ज्योति षोमे श्रेष्ठहोवे ४८

धनभावका स्वामि पलवान् होवे और केंद्रत्रिकोण स्थानमे बुध गया होता ज्योतिर्विदोमें श्रेष्ठहोवे ४९

कर्कराशी (कर्क) का गुरु धनभावमें गयाहोतो ज्योतिर्विदोमें उत्तम ज्योतिषी होवे ५०

सर्वार्थमें एक यह भी योगलिखाहै कि धनभावका स्वामि सूर्य या मंगल होवे और यह गुरु शुक्र से दृष्टहोवे बुध पारावतांशमे गया होवे तो ज्योतिष की युक्ती जाननेमे तत्परहोवे ५१

भविष्यवक्तायोग.

धीकारके केंद्र कोणे शुभदृष्टे भविष्यद्वक्ता ५१

टीका-बुद्धिकारकग्रह (गुरु) केन्द्रत्रिकोणस्थान में गयाहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवेतो भविष्यफल कहनेवाला ज्योतिषीहोवे ५१

त्रिकालज्ञयोग.

जीवेस्वांशेमृदंशे त्रिकालज्ञः ५२

जीवेगोपुरे शुभदृष्टे त्रिकालज्ञः ५३

टीका-गुरु अपनि स्वराशी ९।१२ के नवांशमेहोवे और मृदुसंज्ञकअंशमे गयाहोवेतो त्रिकालज्ञ(भूत भविष्य वर्तमान तीनोकाल के फल जानने वाला) ज्योतिर्विद होव ५२

गुरु गोपुरांशमे गयाहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो भूत भविष्य वर्तमान कालका फल जाननेवाला त्रिकालज्ञ होवे ५३

वेदांतसंगीतज्ञयोग.

अंशात्स्वेपुत्रेसौत्ये जीवार्कौवेदांत संगीतज्ञः ५४

टीका-कारकांश लग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचवें भावमें गुरु सूर्य गये होवे तो वेदान्त शास्त्र और संगीतशास्त्र (गायन शास्त्र) जानने वाला होवे ५४

वेदांतज्ञयोग.

धनेधर्मेतुंगे गोपुरेर्कजे सिंहासनेजीवेच वेदान्तज्ञः ५५

पारावतेमन्दे येन गुरौदृष्टे वेदान्तज्ञः ५६

केंद्रकोणेजीवे वेदान्तज्ञः ५७

उत्तमांशे भृगौलग्ने वेदान्तज्ञः ५८

देवलोकेचंद्रे उत्तमांशेभृगौकेन्द्रे वेदान्तज्ञः ५९

कोशेगेशे कोशेशे पारावते वेदान्ती ६०

स्वोच्चेगेज्ञे कोशेशे परावते व्ययेशुक्रेवेदांती ६१

टीका-धनेशबुध अपनी उच्चराशि (कन्याके १५) में, शनि गोपुरांशमें, और गुरु सिंहासनांशमें, गयाहोवे तो वेदांत शास्त्र जानने वाला होवे ५५

परावतांशमें शनि होवे और गुरुकों बुध देखता होवेतो वेदान्त शास्त्रज्ञहोवे ५६

गुरु केन्द्र त्रिकोण स्थानमें गयाहोवे तो वेदान्त शास्त्रज्ञ होवे (इस योगमें यदि गुरु स्व, उच्च वा मित्र राशिकाहोवेतो येयोग मिलेगा) ५७

उत्तमांशमें गयाहुआ शुक्र लग्नमें गयाहोवे तो वेदान्त शास्त्र जानने वालाहोवे ५८

देवलोकांशमे चंद्रमा, और उत्तमांशमें गयाहुवा शुक्र ये दोनो केंद्र स्थानमें गयेहोवे तो वेदान्त शास्त्र जाननेवाला होवे ५९

लग्नेशधनमें और धनेशपारावतांशमें होवे तो वेदांती होवे ६०

अथवा उच्चराशि मे गयाहुवा बुध लग्नमें, और पारावतांशमें, गयाहुवा धनेश शुक्र बारमें भावमें गयाहोवे तो वेदान्तीहोवे (ये योग कन्या लग्न में जन्महोवे उसके होवेगा) ६१

महानिष्टयोग.

रोगेशेदेवलोके शुभदृष्टे महानिष्टः ६२

भाग्येशे पारावते शुभदृष्टे महानिष्टः ६३

टीका-लग्न भावका स्वामि देवलोकांशमे गयाहोवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो महानिष्टहोवे ६२

भाग्य भावका स्वामि पारावतांशमें होवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे तो महानिष्टहोवे ६३

कवियोग.

खेशेगेकविः ६४

लाभेशे लाभेकविः ६५

टीका–दशमेभावका स्वामि लग्नमे गयाहोवे तो कवि (कविता करने वाला) होवे ६४

लाभेश लाभ भावमे होवेतो कविहोवे.६५

विदुषांरंजकः

सारेज्ञे शुभर्क्षे विदुषां रञ्जकः ६६

ज्ञारोमंदभे केदृष्टौ राजविदुषो रञ्जकः ६७

टीका–शुभग्रहकी राशीमें बुध मंगल का योग होवेतो विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६६

शनिकी राशि (१० वा ११) में गयेहुवे बुध मंगल को सूर्य देखता होवेतो राजा और विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६७

इन दोनो योगो म मंगल बुध का योग का स्थान नही बताया है परंतु यदि ये योग धन अथवा पंचम भावमे होवेतो अधिक बलवान् होवेगा।

विद्वान.तथा पंडित योग.

बलीसुतेशे केन्द्रकोणे विद्वान् ६८

धनेलाभेङ्गेशे पण्डितोधर्मवित् ६९

खेलाभेसुतेशे पंडितः ७०

टीका–स्व, उच्च, मित्र राशिमें गयाहुवा बलवान् पंचमेश केन्द्र वा त्रिकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमें गया होवेतो विद्वानहोवे ६८

लग्नेश धन में अथवा लाभ भावमें गया होवे तो धर्मका जानने वाला पण्डित होवे ६९

पंचमेश दशमें अथवा लाभ भावमें गयाहोवे तो पण्डितहोवे ७०

पट्शास्त्रवल्लभयोग.

केन्द्रेजीवे सिंहासनेशुक्रे धनस्थामांशे ज्ञेगोपुरे षट्शास्त्रवल्लभः ७१

कोशेशस्थानेश्वरांशेशेमंदे वा भौमेसपापे केंद्रकोणे षट्शास्त्रवल्लभः ७२

सूर्यांशेशो वैशेषिकांशे बलिन्यर्थे षट्शास्त्रवल्लभः ७३

गुरौबलिन्यर्थेधने शांशेशेकेंद्रे शुभदृष्टे षट्शास्त्रवल्लभः ७४

टीका–गुरुकेन्द्रस्थानमें, शुक्रसिंहासनांशमें, और धनभावमें जो राशि होवे उसराशिके नवांशमें गयाहुवा बुध गोपुरांशमें होवेतो षट्शास्त्र जाननेवाला विद्वान् होवे ७१

धनेश जिसराशिमें स्थितहोवे उसके स्वामिका नवांशका स्वामि शनि अथवा मंगल होवे और वह पापग्रहसे युतहोकर केन्द्र त्रिकोण (१।४।७।१०।९।५।) स्थानमें गयाहोवे तो छहों शास्त्रोंके जाननेवाला विद्वान् होवे ७२

सूर्य जिसराशिके नवांशमे हो उसका स्वामि वैशेषिकांशमें गया होवे और धनभाव बलवान् (अपनेस्वामि वा शुभग्रहसे युत) होवेतो षट्शास्त्रज्ञहोवे ७३

स्व, उच्च, मित्र राशिमें गयाहुवा बलवान् गुरु धनभावमें और धनेशके नवांशका स्वामि केंद्रमें शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो षट्शास्त्र वेत्ता विद्वान् होवे ७४

ग्रंथकर्तायोग.

अंशात्सुते सपापौ चंद्रेज्यौ ग्रंथकृत् ७५

टीका–कारकांश लग्नसें पांचमे भावमें पापग्रहसें युत चंद्र गुरु गये होवेतो ग्रंथकर्ताहोवे ७५

शूद्रोपि विद्वान् योग.

ध्वजाहिमंदैः सहितेज्ये शुक्रेक्षिते शूद्रोपिविद्वान् ७६

टीका-राहु अथवा केतु औरशनिसें युतगुरु शुक्रसें दृष्टहो तो शूद्रजातिमें उत्पन्नहुवा हो तोभी विद्वान् होवे ७६

सर्वविद्यायोग.

चंद्रात्कोणेजीवे ज्ञात्कोणेभौमे सर्वविद्याः ७७

टीका-चन्द्रमासें ९-५ भावमें गुरु और बुधसे ९-५ भावमें मंगल गयाहोतो सर्वविद्या जाननेवाला होवे ७८

इंग्रेजी पारसी अरबी विद्यायोग.

पंचमेरविमामभौमे कविमंदतमाअपि पापग्रहेण संदृष्टाविद्या ताम्रमुखी भवेत् १ लग्नस्थितोनिशानाथः सुतेशेपापसंयुते पंचमेभवने पापः पारसी मारबीं पठेत् २ ज्योतिषश्याम संग्रह पत्र १०२

ज्योतिषश्यामसंग्रहमें लिखाहै कि—रविसें पांचमें भावमें मंगल शुक्र, शनि, और राहु इनचारो में से कोईभी अेक, दो वा तीन ग्रह गयेहो और पापग्रह से दृष्टहो तो इंग्रेजी विद्या जानने वालाहोवे। लग्नमें चंद्रमाआवे पंचमभाव और पंचमेशपापग्रहसे युतहोवेतो पारसी अथवा अरबी विद्या जाननेवाला होवे। २

जज, बेरिस्टर, प्लीडर, किंवा वकील योगः

कुंडलीविज्ञानमेंलिखाहैकि–जिनके जन्मलग्नसे १-७-२-८-५-११।३-९ स्थानमें से कोईभी स्थानमें गुरु और शनि एकराशिमें अतिसमीप के अंशोंमे गयेहोवे १ अथवा परस्पर (शनि से गुरु) सातमे स्थानमें गयेहोंय २ अथवा परस्पर नवमें पांचवे स्थानमें उपरोक्त भावोमें गयेहोवे ३ और मेष, तुल, मिथुन, धन, कुंभ, किंवा सिंहराशिके हो तो जज, बेरिस्टर, सोलिसीटर, प्लीडर किंवा वकील बीए एल. एल बी. आदि ऊंचीपरिक्षामेंपास*कियाहुवा मनुष्य होवे।

जैसा गुरु शनि के योग का फल है वैसाही शनि बुध के योगका भी फल उपरोक्त स्थान और राशी में गुरु शनिकी स्थितिके समान हो तो होताहै परंतु शनि और बुध इनकायोग वक्तृत्वताके लिये उत्तम नहींहोता कारण यह है कि बुध वाणीकारकग्रहहै उसका शनिसे योग होवेतो मनुष्य अच्छा वक्ता होनेवालानही इसलिये जिसके जन्म

* परीक्षामें पासहोने न होने का समय जानना हो तो हमारी लिखी "परीक्षा विचार" पुस्तक मंगा देखिये।

कुंडलीमे ये योग होताहैवह वकील अल्पभाषी होताहै।

उपरोक्त (गुरु शनि वा बुध शनि) इन्होंका योग पंचमस्थान में स मोत्तम होताहै ९ मेस्थान में हो तो मध्यम और लग्नमें वा धनभावमें होवो कनिष्ट होताहै।

सभामूकयोग.

तुर्येशेगेस्ते पंडितोपिसभामूकः ७८

टीका–चतुर्थेश लग्न.अथवा सप्तम भावमें गया होतो पंडित होते हुवे भी सभामे मूकऐसनान होजावे अर्थात् सभामें बोलनही सके (सभाक्षोभ होजावे) ७८

अनपत्ययोग.

विविर्योः सर्वेनपत्यता ७९

टीका – सर्वग्रहनिर्बली (नीच, शत्रु, राशीमें, वाअस्तंगत तथा ६। ८।१२ स्थानमें गये हो वा केशवीमे कहे हुवे षड्बल में हीन बली) हो तो पुत्र किंवा पुत्री कोई भी संतान नहि होवे (संतान रहीत होवे) ७९

गर्भानुत्पादयोग.

लग्नेर्के स्तेमन्दे वा द्यूनेर्कशनी खेजीवदृष्टे गर्भानुत्पादः८०

मन्दारौ षष्ठे वा तुर्ये गर्भानुत्पादः ८१

सारीशो केजः षष्ठे चन्द्रे चास्ते गर्भानुत्पादः ८२

टीका – लग्नमें सूर्य, और सातमें शनि गया हो १ अथवा सातमे भावमें रवि शनी गये हो और दशमे भाव कों गुरुदेखता हो तो गर्भ ही उत्पन्न नहि होवे (गर्भोत्पत्ती भी नहि होवे) ८०

छठे अथवा चतुर्थ भावम शनि मंगल का योग हो तो गर्भोत्पत्ती भी नहिंहोवे ८१

छठे भाव का स्वामी और शनी येदोनो छठे भावमे जावे और सात में भावमें चंद्रमा गया हो तो गर्भोत्पत्ति भी नहींहोवे ८२

गर्भच्युतियोग.

सुतेपापयुतदृष्टे गर्भच्युतिः ८३

पुत्रस्थनवांशो यावत्पापदृष्टः शुभादृष्ट स्तावद्गर्भपातः ८४

टीका-पंचमभाव पापग्रह (मू. मं. श. रा. के. ह. ने. और इनसे युत बुध) से युत और दृष्टहो तो गर्भपातहोजावेगा ८३

पंचमभावमें जिसराशी का नवांशहोवे उसराशीको यदि कोई शुभग्रह देखता नहीं हो तो जितने पापग्रह देखते होवे उतनेही गर्भका नाश [पात] होवे ८४

सर्पशापादिपुत्रयोग.

सुतेराहौ भौमदृष्टे भौमभे वा सर्पशापाद्विपुत्रः ८५

यमेसुते चन्द्रदृष्टे सुतेशेराहुयुते सर्पशापाद्विपुत्रः ८६

सराहौपुत्रकारकेपुत्रेशेऽबलेभौमगेशेयुतौसर्पशापाद्विपुत्रः८७

सुतकारकेस्तारे राहुगे पुत्रेशेत्रिके सर्पशापाद्विपुत्रः ८८

पुत्रेशेज्ञे सारेकुजांशे राहुमांदियुते गेचसर्पशापाद्विपुत्रः८९

सुतेशेभौमे सुतेराहौ सौम्यदृष्टे सर्पशापाद्विपुत्रः ९०

सुतांगेशौविबलौ सजेज्यासुतेपापाः सर्पशापाद्विपुत्रः ९१

लग्नेशेराहुयुते पुत्रेशेभौमयुते कारकेराहुदृष्टे सर्पशापाद्विपुत्रः ९२

टीका-पंचम भावमें गयाहुवा राहू मंगल से दृष्टहो किंवा पंचमभावमें मंगलकी (मेष, वृश्चिक) राशीमें राहूगयाहो तो सर्पके शापसे पुत्रनही होवे ८५

पंचम भावमें गयाहुवा शनि चन्द्रसें दृष्टहो और पंचमेश राहूसें युतहो तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ८६

पुत्रकारकग्रह [गुरु] राहूसें युतहो, पंचमेश निर्बली हो, और लग्नेश मंगलसें युतहो तो सर्प के शापसे पुत्ररहितहोवे ८७

पुत्रकारकग्रह (गुरु) मंगलसें युतहो लग्नमेंराहू, और पंचमेश ६।८।१२ भावमें गयाहो तो सर्प के शापसे पुत्रहीनहोवे ८८

पंचमभावका स्वामि बुध, मंगल सें युतहो कर मंगलके ही नवांशमे गयाहो और राहु गुलिक स्थानमे गयेहोवेतो सर्पके शापसे पुत्रहीन होवे ८९

पंचमभावका स्वामि मंगलहोवे और पंचम भावमें गयाहुआ राहु बुधसे युत किंवा दृष्टहो तो सर्पके शापसे पुत्रहीन होवे ९०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनो निर्बल होवे पंचमभावमें सर्वग्रह बुध गुरु से युत होकर गयेहो (पांचमें र. मं श. रा. बु. गु. गयेहो) तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९१

लग्नेश राहुसे व पंचमेश मंगलसे युतहो और पुत्रकारकग्रह [गुरु] राहुसे दृष्टहो तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९२

पितृशापादिपुत्रयोग.

पुत्रपेर्के क्रूरांतरे त्रिकोणगपयुतदृष्टे पितृशापादिपुत्रः ९३
सुतेर्केपापान्तरे मन्दांशेनीचगे पितृशापादिपुत्रः ९४
सिंहेज्ये पुत्रपेर्कयुते पुत्राङ्गगौपापौ पितृशापादिपुत्रः ९५
सूर्येरन्ध्रेसुतेमन्दे पुत्रेशेराहुयुते पितृशापादिपुत्रः ९६
व्ययपेङ्गेरन्ध्रपेपुत्रे खपेरन्ध्रे पितृशापादिपुत्रः ९७

टीका-पंचमभावकास्वामि सूर्य ९ में तथा ५ में भावमें पापग्रहोंके बीचमें गयाहो और पापग्रहोंसे युतदृष्टहो तो पितृकेशापसे पुत्रहीन होवे ९३

पंचमभावमें नीचराशिका सूर्य, शनिके नवांशमें (तुल राशीके ४-५ में नवांशमें) गयाहो और पापग्रहोंके मध्यमें स्थितहो तो (पितृ) के शापसे पुत्रहीन होवे ९४

सिंहराशीमें गुरुगयाहो, पंचमेश सूर्यसे युतहोवे और पंचमभाव व लग्नमें पापग्रहगये होतो पितृकेशापसे पुत्रनहींहोवे ९५

आठमेंभावमें रवि, व पंचमभावमें शनि, गयाहो और पंचमेश राहुसे युतहो तो पितृकेशापसे पुत्रनहींहोवे ९६

बारवेंभावकास्वामि लग्नमें, अष्टमभावकास्वामी पंचम भावमें और दशमभावकास्वामी आठमेभावमें गयाहो तो पितृके शापसे पुत्रहीनहोवे ९७

मातृशापादिपुत्रयोग.

पुत्रपेचन्द्रेनीचंगेवापापान्तरेसुतामुगौपापौमातृशापादिपुत्रः ९८

लाभेमन्दे तुर्यपापाः पुत्रेनीचगेचन्द्रे मातृशापाद्विपुत्रः ९९

सुतेशेत्रिकेलग्नेशेनीचेपापयुतेचन्द्रेमातृशापाद्विपुत्रः १००

सुतेशेचन्द्रे मन्दराह्वारयुते मातृशापाद्विपुत्रः १०१

सुखेशेभौमेराह्वर्कजयुतेलग्नेपुष्पवन्तौमातृशापाद्विपुत्रः १०२

सुखेशेष्टमेपुत्राङ्गेशौषष्ठखारीशौलग्नेमातृशापाद्विपुत्रः १०३

पुत्राङ्गाष्टारिगाराह्वर्कारमंदालग्नेशेत्रिकेमातृशापाद्विपुत्रः १०४

राह्वारेज्यात्रिकस्था मन्दचन्द्रौपुत्रे मातृशापाद्विपुत्रः १०५

टीका-पंचमभावका स्वामि चंद्रमा नीचराशिका हो अथवा पापग्रहोंके मध्यमे (पापाकर्तरीमे) हो और चतुर्थ व पंचमभावमे पापग्रह गयेहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे ९८

लाभभावमे शनी, व चतुर्थभावमें २।३ पापग्रह गयेहो और पंचम भावमे नीचराशी (८) का चन्द्रमा गयाहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे ९९

पंचमेश ६।८।१२ भावमें गयाहो लग्नेश नीचराशी का हो और चंद्रमा पापग्रह सें युतहो तो माताके शापसें पुत्रहीनहोवे १००

पंचमेश चंद्रमाहोवे और वह शनि राहु व मंगल से युतहो तो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०१

सुखेश मंगल हो और वह राहु व शनि सें युतहो और लग्नमे सूर्य, चंद्रमा, ये दोनो गयेहोतो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०२

सुखेशआठमे भावमें, पंचमेश व लग्नेश ये दोनो छठेभावमें तथा दशमेश और षष्ठेश ये दोनो लग्नमे गयेहोतो माताके शापसे पुत्रहीन होवे १०३

राहु सूर्य मंगल और शनि ५।१।८।६ इनभावोमें यथाक्रम कींवा व्युत्क्रम गयेहो और लग्नेश ६।८।१२ भावमें गयाहो तो माताके शापसे पुत्रहीन होवे १०४

राहु मंगल और गुरु ये तीनो ६।८।१२ भावमेंगयेहो और पंचम भावमें शनि चन्द्रमाका योग हो तो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०५

कुलदेवदोषा द्विपुत्रयोग.

मन्दोरिगेहे ज्ञेन्दुसूर्यदृष्टेलग्नेपापदृष्ट कुलदेवदोषाद्विपुत्रः।'

मन्दर्क्षेसूर्येपापदृष्टे वा पापवर्गेङ्के कुलदेवदोषाद्विपुत्रः १०७

टाक-छठेभावमेंगयाहुवाशनि, बुध चंद्र और सूर्य से दृष्टहो लग्नको पापग्रह देखतेहोतो कुलदेवकेदोषसे पुत्रहीनहोवे १०६

शनि की राशी (१०।११) मे गयाहुवा सूर्य पापग्रहसे दृष्टहोवे अथवा लग्नमे पापग्रहोका वर्ग अधिक होतो कुलदेवके दोषसे पुत्र हीनहोवे १०७

सुतहीनयोग.

सूर्येङ्के सुतेभौमे सुतहीनः १०८

जीवात्सुतेशेरिकेपुत्रङ्काङ्केशाल्लग्नात्त्रिकस्थाःसुतहीनः१०९

जीवेपञ्चमे जीवात्सुतेक्रूरे सुतहीनः ११०

दाराङ्केपुत्रेबलिनि षष्ठेशयुतदृष्टेऽपुत्रः १११

धीधर्मशौ सदारेशौ दुस्थानगौ हीनबलौ सुभादृष्टेसुते बहुदारोप्यपुत्रः ११२

मन्दारौखेधर्मेवाऽपुत्रता ११३

मन्दारशुक्रादारगा अपुत्रः ११४

शत्रुभेलग्नेशे ज्ञेन्दुदृष्टे षष्ठार्थे सूर्ये विपुत्रः ११५

सुतेशेस्तांशे पापयुते विपुत्रः ११६

गुरौसुतेशे सपापेऽबलेविपुत्रः ११७

सपापेङ्कौशे त्रिकेसुतेशे विपुत्रः ११८

कोणेगुरौ पापयुतेविपुत्रः ११९

लग्नेशेकुजर्क्षेपष्ठेपुत्रेशे विपुत्रः १२०

व्ययेशेसपापेविपुत्रः १२१

कन्याङ्गेसूर्ये भौमेसुतेविपुत्रः १२२
सुतेशुक्रभौमान्यतराऽऽदृष्टे द्वित्रिविवाहेप्यप्य संतानः १२३
लाभेसेन्दौमन्देऽप्रजत्वमः १२४

टीका–लग्नमें सूर्य और पांचमे मंगल गयाहोतो सुतहीनहोवे १०८
जिसराशीमे गुरु स्थितहो उसराशीसें पंचम भावका स्वामि जो ग्रहहो वह ६।८।१२ भावमे गयाहो और जन्मलग्नसे भी पंचम नवम व लग्नके स्वामी ६।८।१२ भावमें गयेहो तो पुत्रहीनहोवे १०९
पंचम भावमें गुरुगयाहो और गुरूसे पांचमे भावमें पापग्रह गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११०
पंचमेश सप्तमभावमें अथवा लग्नमे गयाहो और वह बलवान् षष्टेश से युतदृष्टहो तो पुत्रहीनहोवे १११
नवम, पंचम और सप्तम भावके स्वामी निर्बली होकर ६।८।१२ भावमें गयेहो और पापग्रहो सें युतदृष्टहो तो बहुतस्त्रियेहोवे तोभी पुत्र-नहीहोवे ११२
शनि और मंगल ये दोनो नवमे तथा दशमें भावमें गयेहो तो पुत्र-हीनहोवे ११३
शनि मंगल और शुक्र येतीनो सातमें भावमें गयेहो तो पुत्रहीन होवे ११४
लग्नेश छठे स्थानमें शत्रुग्रहकी राशीमें हो, और वह बुधचंद्र सें दृष्टहो छठे अथवा दूसरे भावमे सूर्यगयाहो तो अपुत्रहोवे ११५
पंचमेश के नवांश कास्वामी अस्तकाहो और वह पापग्रहसें युतहो तो पुत्रहीनहोवे ११६
पंचम भावका स्वामि गुरु पापग्रहसेयुत हो और निर्बली हो तो पुत्रहीनहोवे (पंचम भावमे धन मीन राशीहोवेतो ये योगहोताहै) ११७
लग्नेश पापग्रह सें युतहो और पंचमेश ६।८।१२ में गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११८
पापग्रहसें युतहोकर गुरु ९ में तथा ५ में भावमे गयाहोतो पुत्र-हीनहोवे ११९
लग्नेश मंगलकी राशी (१।८) में गयाहो और पंचमेश छठे भाव-मे होतो पुत्रहीनहोवे १२०

भाग्यें भाग्यकारकस्वामी दशमे किंवा लग्नमें गयाहो तो पुत्रहीनहोवे १२
कन्याराशीके लग्नमें सूर्यहो और पांचमें भावमें मंगळ गयाहो तो पुत्रहीनहोवे १२२

शुक्र किंवा मंगळ इनदोनोंमेसे यदि एक भी पंचमभावकों नहीं देख ताहो तो दो तीन विवाह करलेनेपरभी संतान नहीं होवे १२३ तात्पर्यपह है कि पंचम भावकों शुक्र किंवा मगळ किंवा दोनों देखो होतो संततीहोवेगा । कारण-विर्यका स्वामि शुक्रहै और रितुका स्वामि मंगल है जब रितु रेत के स्वामिकी दृष्टि गर्भस्थान (पंचम) पर होवेगा तभी गर्भ रहेगा और इन की दृष्टि नहींहो तो ५ कि वा १० स्त्रियोसे विवाह करलेने परभी संततीहोना असंभवहै ।
लाभभावमें चंद्र शनी का योग (युती) हो तो संतती नहीहोवे १२४

पुत्रनाशयोग.

पापांतरेसुतभेन्नावदीशे वाकारके पापसंयुते पुत्रनाशः १२५
स्त्रीधर्मेपुत्रेशांशपाः पापांशगाः पापयुताः पुत्रनाशः १२६
पुत्रेशेकूरांशे नीचास्तभे पापदृष्टे पुत्रनाशः १२७
व्ययेशांशेशास्य व्ययेशेनयुते वा दृष्टेसुतेशे पुत्रनाशः १२८
पुत्रेर्केप्रकाशे जातंजातंम्रियते १२९
पापाःपञ्चमे जातंजातंम्रियते १३०
सुतेसूर्ये मृतापत्यः १३१
कोणगाःपापाः क्षीणेन्दङ्गे मन्दर्क्षेजीवेमूढे पुत्रसुखंभूत्वा नश्यति १३२
ज्ञेपश्चमेलग्नेसुखेपापे पुत्रसुखं भूत्वानश्यति १३३

टीका-पंचमभाव, अथवा पंचमेश, किंवा पंचमभावका कारक गुरु] पापग्रहोके मध्यमें (पापकर्तरीमें) हो और पापग्रहसे ... तो पुत्रनाशहोवे (पुत्रप्राप्ती तो होवेगा किंतु जीवेगानहीं) १

पंचमेश, सप्तमेश, और नवमेश, ये तीनोग्रह जिस जिस ग्रहके नवांशमेंहोवे वेग्रह पापग्रहके नवांशमें गयेहो और पापग्रहसे युतहो तो पुत्रनाशहोवे [पुत्रहोकर मरजावे] १२६

पंचमेश क्रूरग्रह के नवांशमे गयाहो और वह नीचराशी का वा अस्तंगतहोकर पापग्रह से दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२७

व्ययेशके नवांशका स्वामि जिसराशीके द्रेष्काण मे हो उसराशीके स्वामी सें पंचमेश युत किंवा दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२८

प्रकाशावस्थामें गयाहुआ सूर्य पंचमभावमे गयाहो तो जितने संतान जन्मतेजाय उतनेही मरतेजाय (संतान जीवित रहेनही) १२९

तीन चार पापग्रह पंचमभावमे गयेहो तो जितने संतान जन्मतेजावे उतनेही मरतेजाय १३०

पंचमभावमे सूर्य गयाहो तो मृतापत्य होवे १३१

नवमे पाचमें भावमे पापग्रह, लग्नमे क्षीणचंद्रमा, और शनि की राशी (१०–११) में गयाहुवा गुरु अस्तका हो तो पुत्रकासुख होकर नाशहोजावे १३२

पंचमभावमें बुध गयाहोवे और लग्न तथा सुख इनदोनो भावमे पाप ग्रह गयेहोतो पुत्रका सुखहोके नाशहोजावे १३३ येसर्वयोग अल्पायुप्रजाहोनेकेहै ।

पुत्रार्ति वा पुत्रसुख रहित योग ।

क्रूर षष्ठ्यंशे पुत्रपे पाप दृष्टयुते पुत्रार्तिः १३४
सोऽस्थेश चंद्रौ केन्द्रकोणगौ पुत्रसुखंन. १३५
सिंहेर्कजारौ सुतगौ सुतेशेषष्ठे सुतसौख्यंन १३६
भौमर्क्षेसुतेराहौ भौमदृष्टे सुतसौख्यंन. १३७
नीचेगुरौ भृगौवा समेज्ञे विषमेर्के सुतसौख्यंन १३८
धीस्थेमंदे पुत्र सुखंन १३९
व्यन्त्यांङ्गार्थे सुतेसहजपे सुतसुखंन १४०
पञ्चपे जीवर्क्षे सुतसुखंन १४१

मन्दज्ञावर्क्के लौशुक्रेज्यौ सुतसुखंन १४२
जीवात्सुतेपापे सन्तान सुखाभावो नान्यथा १४३

टीका-पंचमेश क्रूरषष्ठ्यंशमे होवे और पापग्रहसे युतकिंवा दृष्ट होतो पुत्र कासुख नहीहोवे (पुत्रहोते हुवेभीउसका सुखनही होवे) १३४

तृतीयेश और चंद्रमा ये दोनो १।४।७,१०।९।५ भावमेंगये होतो पुत्रसुखनही होवे १३५

सिंहराशिमे गयेहुवे शनि मंगल पंचमभावमे स्थितहोवे और पंचमेश छठे भावमे हो तो पुत्र सुखनही होवे १३६

पंचम भावमें मंगल की राशि (१—८) में गया हुवाहो, मंगलसे दृष्टहोवे तो पुत्रका सुख नही होवे १३७

गुरु और शुक्र अपनी नीचराशी (१०-६) मे गयेहोवे अथवा बुध समराशी (२-४-६-८-१०-१२) में और सूर्य विषम राशी (१-३-५-७-९-११) में गयाहोवे तो पुत्रका सुखनहीहोवे १३८

पंचम भावमें शनिगया हो तो पुत्रका सुखनही होवे १३९

तृतीयभावका स्वामी (३-१२-१-२-५) भावमेंगया होतो पुत्रका सुखनहीहोवे १४०

पंचम भावमे गुरुकी राशी (९।१२) होतो पुत्रकासुखनही होवे १४१

बुध शनि लग्नमे गयेहो और वृश्चिक राशीमें गुरु शुक्रका योग होतो पुत्रका सुखनही होवे १४२

गुरु से पाचमें भावमें पापग्रह गयाहो तो संतान सुख नहीहोवे और शुभग्रह गयेहोय तो संतानका सुखहोवेगा १४३

पुत्रसुखहीनयोग में पुत्रहोवेनही, १ किंवा पुत्रहोकर मरजावे २ अथवा पुत्रहोनेहुवे भी पुत्रका सुखनहीहोवे ३ (पुत्रहुआ और नहीहुआ सरीखाहोवे) ये तीनप्रकारके पुत्रसुख नहीहोनेके भेदहै इनसे जिनके पुत्रहीन किंवा पुत्रनाश, किंवा वंशविच्छेदयोग, प्रबलहुवा होवे उनके तो पुत्रहोवेगाहीनही किंवा होके मरजावेगा। और केवल पुत्रसुखहीन योग ही होवे और दूसरे उपरोक्त योग नही हो तो पुत्रहोने परभी पुत्रका सुखनहीहोवेगा।

वंशविच्छेदयोग.

ज्ञाङ्गपौ लग्नेतर केन्द्रगौवंशविच्छेदः १४४

पापग्रहा व्ययसुताष्टमगा वंशविच्छेदः १४५

चन्द्रेज्यौलग्ने द्यूनेमन्दे वा भौमे वंशविच्छेदः १४६

सुखेपापा वंशविच्छेदः १४७

लग्नान्त्य सुताष्टमगैः पापैर्वंशच्छेदः १४८

सुतेचन्द्रे पापारन्ध्राङ्गान्त्यगा वंशविच्छेदः १४९

ज्ञाच्छौमदे सुखेपापे सुतेजीवे वंशविच्छेदः १५०

चन्द्राष्टमेपापा वंशविच्छेदः १५१

पापेङ्गेसुखेचन्द्रेसुतेङ्गेशे सुतपेऽल्पबले वंशविच्छेदः १५२

पञ्चमेपापा वंशविच्छेदः १५३

शुक्रेस्मरे खेचन्द्रेसुखेपापा वंशविच्छेदः १५४

भौमेङ्गे मन्देरन्ध्रे सुतेर्के वंशविच्छेदः १५५

टीका–बुध और लग्नेश ये दोनो लग्नके विना दूसरे केन्द्रस्थान (४।७।१०) में गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४४

बारमे, पांचमे, और आठमे, भावमें पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेदहोवे १४५

लग्नमें चंद्र गुरु का योगहोवे और सातमें भावमें शनि किंवा मंगल गयाहो तो वंशविच्छेद होवे १४६

संपूर्ण पापग्रह चतुर्थ भावमें गयेहोवे तो वंशविच्छेद होवे १४७

जन्मलग्नमें, बारमें, पांचमें, और आठमें भावमे संपुर्ण पापग्रह गये है, सो वंशविच्छेद होवे १४८

पंचम भावमे चंद्रमा गयाहोवे और आठमें, लग्नमे, बारमे, भावमें संपूर्ण पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४९

सातमें भावमें बुध शुक्र, चतुर्थ में पापग्रह, और पंचम भावमें गुरु गयाहोवे तो वंशविच्छेद होवे १५०

चंद्रमासे आठमे स्थानमें पापग्रह गयेहोतो वंशविच्छेदहोवे १५१

लग्नमें पापग्रह, सुखमेंचन्द्रमा पंचममें लग्नेश, गयाहोवे और पंचमेश अल्पबली होतो वंशविच्छेद (वंशकानाश करनेवाला योगहोवे) १५२

संपूर्ण पापग्रह पंचम भावमेगयेहोवेतो वंशकानाशहोवे १५३

सप्तम भावमेंशुक्र, दशमभावमें चंद्रमा, और सुख भावमें पापग्रह ३-४ गयेहोवे तो वंशकानाहोवे १५४

लग्नमें मंगल, आठमे शनी, पाचमें भावमे सूर्य, गयाहो तो वंशकानाशहोवे १५५

वंशविच्छेदयोगमें पुत्रकिंवा पुत्री कोई भी संततीनहीरहे (वंशकानाश होजावेगा)

विलंबतःप्रजायोग ।

सशुभा अङ्गाङ्क सुतेशा त्रिकस्थाविलम्बतःप्रजा १५६

खभेसौम्या सुतेपापाः सुतसुखं विलम्बात १५७

पापोजीवो वा तुर्येसुतेऽष्टमेचन्द्रे त्रिंशद्वर्षोर्ध्वं संततिः १५८

पापर्क्षेपापयुतेलग्नेसूर्येऽबलेयुग्मर्क्षेकुजेत्रिंशद्वर्षो र्ध्वसन्ततिः १५९

कर्केचन्द्रे पापयुतदृष्टेच मन्ददृष्टेसूर्ये षष्टिवमेऽब्देपुत्राप्तिः १६०

राहौलाभे वार्द्धके पुत्रसुखम् १६१

टीका-लग्न, नवम, और पंचम भावके स्वामी शुभग्रहसे युतहोकर ६।८।१२ भावमेंगयेहो तो विलम्बसे संतानहोवेगा १५६

दशम भावमे सर्वशुभग्राहगयेहोवे और पंचमभावमें संपूर्ण पापग्रह गयेहो तो पुत्रका सुख विलम्ब स(देरीसे) होवेगा १५७

पापग्रह किंवा गुरु चतुर्थ अथवा पंचम भावमेगयाहोवे और अष्टम भावमें चंद्रमाहोतो तीसवर्षकि उमरहोनेके पश्चात्सन्तान होवेगा १५८

पापग्रहकी राशी [१।८।५।१०।११]के लग्नमें पापग्रह युतहो, सूर्यनिर्बलीहोवे और मंगल समराशी [२।४।६।८।१०।१२] में स्थित, तो तीसवर्षकी उमरहोनेके पश्चात्सन्तान होवेगा १५९

कर्कराशी में गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहसें युत व दृष्टहोवे और सूर्य, शनी देखताहो तो ६० में वर्षमे पुत्रकी प्राप्तिहोवेगा १६०

लाभभावमें राहुगयाहो तो वृद्धावस्थामें पुत्रकासुखहोवेगा १६१

इनकेसिवाय और भी विशषयोग बृहत्पाराशरीमें इस प्रकार लिखे है कि।

पंचम में गुरुजावे और पंचमेश शुक्रसेयुतहोतो ३२ तथा ३३ मे वर्षमे पुत्रप्राप्तिहोवेगा।

पंचमेश और पंचमकाकारक (गुरु) ये दोनो केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमे युक्तहो तो ३० तथा ३६ मे वर्षमे पुत्रप्राप्तिहोवेगा।

जन्मलग्नसे नवमे गुरु गयाहोवे और गुरुसे नवमे स्थानमें गयाहुवा शुक्र, लग्नेश से युतहो तो ४० मे वर्षमे पुत्रप्राप्तिहोवेगा।

कष्टात्पुत्राप्तियोग.।

राहुकर्कागाः सुतगाः शान्तितः सुतसौख्यदाः १६२
सुतेशेनीचे धर्मशेऽङ्गे ज्ञकेतू पुत्रे कष्टात्पुत्राप्तिः १६३

टीका-राहु, रवि, और मंगल ये तीनो पंचम भावमे गयेहोतो शांति करने से पुत्र सुखकी प्राप्तिहोवेगा १६२

पंचमेश अपनी नीचराशीमे गयाहो, नवमेश लग्नमें और बुध केतु पंचमें भावमें गयेहो तो कष्टसे (शांति आदि अनेक प्रयत्न करनेसे) पुत्रकी प्राप्ती होवेगा १६३

*विलम्बसंतानोत्पत्तियोग.

सुतेगोजकर्के राहु केतू सन्तानोत्पत्तौविलम्बः १६४

टीका-पंचम भावमे मेष वृषभ किंवा कर्क राशी मे राहु अथवा केतु गयाहो तो संतानकी प्राप्ती होनेमे विलम्बनहीहोवेगा १६४

पुत्रप्राप्तियोग.।

सप्तमेशांशेशेलग्नाथे धर्मेशेद्दष्टेपुत्राप्तिः १६५
सुतेशेशुभयुतदृष्टे वा सुतभेजीवे वा पुत्राप्तिः १६६
लग्नेशेपुत्रे पुत्रेशेज्यौ बलिनौ पुत्राप्तिः १६७
पुत्रेशेज्ये ऽलिनि लग्नेशद्दष्टे पुत्राप्तिः १६८

---

* संतान प्राप्ति के समय निर्णय का विषय स्वतंत्र जानना होतो " संतानोत्पत्तिविचार " नामकी पुस्तक हमारे पास से मंगवालिये कीमत —)

वैशेषिकांशेजीवे तथा पुत्रेशेच शुभदृष्टेपुत्राप्तिः १६९
वित्तेशेसुते बलाढ्ये गुरुदृष्टे पुत्राप्तिः १७०
पुत्राङ्गपौपरस्परं पश्यतः पुत्राप्तिः १७१
पुत्राङ्गपावन्योन्यभगौ वा युतौ पुत्राप्तिः १७२
सुताङ्गेशौ केन्द्रगौशुभान्वितौ धनपेबलिनिपुत्राप्तिः १७३
पुत्रेशांशे शुभयुतदृष्टे पुत्राप्तिः १७४
धर्माङ्गेशौसप्तमे धनेशेङ्गे पुत्राप्तिः १७५
सुतेशेमृदुंशादिगे पुत्राप्तिः १७६
गोपुरादौसुतेशे पुत्राप्तिः १७७
पुत्रांशेशेङ्गे लग्नेशांशेसुते पुत्राप्तिः १७८
जीवांशेशेकेन्द्रे पुत्राप्तिः १७९
धर्माद्यसुतेशाः पारावतादिगाः शुभदृष्टाः पुत्राप्तिः १८
लग्नाद्वाचन्द्रात्पंचमे शुभर्क्षेशुभसम्बन्धे पुत्रसम्भवोनान्यथा।

टीका–सप्तमेश के नवांशका स्वामी लग्नेश, धनेश, और नवमे इन तीनों ग्रहोंसे दृष्टहो तो पुत्रप्राप्ती होवेगा १६५

पंचमेश किंवा पंचमभाव अथवा पंचमका कारकग्रह (गुरु) शु ग्रहसे युत और दृष्टहो तो पुत्रप्राप्तिहोवेगा १६६

लग्नेश पंचम भावमेंगयाहो, पंचमेश और गुरु ये दोनों परिपू -लवान् होवे तो पुत्रप्राप्तिहोवेगा १६७

[illegible]शगुरु पूर्णबलवान् होवे और उसको लग्नेश देखताहो तो [illegible]पप्राप्तिहोवेगा १६८

[illegible] पंचमभावका स्वामि वैशेषिकांशमें गयाहोवे और शुभ [illegible] तो पुत्राप्तिहोवेगा १६९

[illegible]स्वामि बलवान होकर पंचमभावमेंगया हो और गुरुसें [illegible]प्राप्तिहोवेगा १७०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनोपरस्पर अेक दूसरे को देखते होतो पुत्राप्तिहोवेगा १७१

पंचमेश और लग्नेश ये दोनो अन्योन्यराशीमे (पंचमेशकी राशीमे लग्नेश और लग्नेशकी राशीमे पंचमेश) गयाहो अथवा पंचमेश और लग्नेश ये दोनो अेकराशीमे युतहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७२

लग्नेश और पंचमेश ये दोनो शुभग्रहसे युतहो कर केन्द्र [१।४। ७।१०] स्थानमे गयेहो, और धनेशबलवानहों तो पुत्राप्तिहोवेगा १७३

पंचमेश के नवांशका स्वामी शुभग्रहसेयुत और दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७४

नवमेश और लग्नेश ये दोनो सप्तम भावमें गयेहो और धनेशलग्न में गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७५

पंचमेश मृद्वंशादि शुभांशमे गयाहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७६

पंचमेश गोपुरादि अंशमेगयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७७

पंचमभावका नवांशका स्वामी लग्नमे और लग्नेश के नवांशका स्वामी पंचमभावमें गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७८

गुरुके नवांशका स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) मे गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७९

नवम, लग्न, और पंचमेश, ये तीनोग्रह पारावतादि अंशमेगयेहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १८०

लग्नसे अथवा चन्द्रमासे पाचमे भावमेशुभग्रह की राशि शुभग्रह से युत दृष्ट होतो पुत्रहोवेगा और इससे विपरीत होवेतो नही होवेगा १८१

कन्या प्राप्तीयोग।

सुतभे समर्क्षवर्गे शुभन्द्रान्यतरयुते शुक्रचंद्रान्यतर दृष्टे कन्या प्रजावान् १८२

पुत्रेशे नेत्रपाणौ पुत्रहानिः कन्याप्तिश्च १८३

पुत्रेपुत्रेशे समभावस्थाने कन्याधिक्यं १८४

शुक्राब्जवर्गे सुतभे समर्क्षे शुक्राब्जदृष्टे बहुकन्यावान् १८५

सुतेशेऽष्टमे बहुकन्या १८६

लाभेज्ञे शुक्रेचन्द्रेवा कन्याप्रजाः १८७
ज्ञेन्दुच्छानामन्यतमे सुते कन्योत्पादः १८८

टिका—पंचम भाव मे समराशी (२।४।६।८।१०।१२) और सम राशिका नवांश बुध किंवा शनी से युतहोवे और शुक्र अथवा चंद्रसे किंवा इनदोनोंसे दृष्टहो तो कन्या प्रजा वाला होवे १८२

नेत्र पाणि अवस्था में गयाहुवा बुध पंचमभावमे गयाहो तो पुत्रकी हानी और कन्याकी प्राप्ती होवेगा १८३

सभावस्था मे गयाहुवा बुध पांचमे अथवा सातमे भावमे गयाहो तो बहुत कन्या होवेगा १८४

पंचम भाव समराशी (२।४।६।८।१०।१२) का होवे और वह शुक्र चंद्र के दशवर्ग मे होकर शुक्र चन्द्रसे ही दृष्टहो तो बहुत कन्याओं का होवे १८५

पंचमेश धनमे अथवा आठमे भावमे गयाहोतो बहुत कन्या होवेगा १८६

लाभभावमे बुध, शुक्र, किंवा चंद्रमा इनतीनोमेसे (अेकभी ग्रह गया होतो कन्याप्रजावाला होवे १८७ (जितने अधिक ग्रह पडे होवे उतनाही योग बलवान होताहै)

बुध, चंद्र, और शुक्र इन तीनोमेसे एकभी पांचमे भावमे गयाहो तो कन्या प्रजा का जन्म होवेगा १८८

अल्पापत्य योग।

कर्केचन्द्रेसुते कन्यावान्स्वल्पसंततयः १८९
नीचे बुधे पष्ठादिवर्गे पापयुते काकवन्ध्या १९०
बुधे नीचे मन्दयुते काकवन्ध्या १९१

टीका—कर्क राशी का चन्द्रमा पंचम भावमें गयाहो तो कन्याओं का किंवा अल्प संतान वाला होवे १८९

पंचमेश नीचका होकर ६।८।१२ मे भावमें गया हो और पाप ग्रहके युत हो तो काकवन्ध्या होवे (अेकवार संतान होकर फिर नहीं होवे) १९०

पंचमेश नीचका होकर शनीसे युतहो तो काकवन्ध्या होवे १९१

बहुप्रज योग.

सुतेशुक्रभांशौ वा शुक्रदृष्टेबहुप्रजः १९२

टीका-पंचम भावमें शुक्र की राशी (२-७) और नवांश होवें किंवा बलवान् शुक्र पंचम भाव को देखता हो तो बहुप्रज (बहुत संतान वाला) होताहै १९२

पुत्र पुत्री संख्या योग.

पुत्रे यावत्पुंग्रहदृष्टि स्तावत्पुत्राः १९३

कोणशुक्रर्क्षगेन्दावेकपुत्रः १९४

सुतेराहु केतु कुपुत्रः १९५

धीस्थेर्के शुभदृष्टे त्रिपुत्रः १९६

मृगेर्कजेसुते त्रिपुत्रः १९७

सुते मृगगे भौमे त्रिपुत्रः १९८

कुंभेमन्दे सुते पञ्चपुत्रः १९९

सुतेसूर्यभौमगुर्वन्यतमेक्रमा देक त्रि पञ्च पुत्रोत्पत्तिः २००

सितेन्दुवर्गेपुत्रर्क्षे ओजभे सितेन्दुयुते बहुपुत्रः २०१

पुत्रेस्त्रीग्रह दृक्तुल्या कन्या २०२

सुते चन्द्रज्ञ सितशनयो द्वित्रि पञ्चसप्तकन्योत्पत्तिः२०३

टीका- पंचम भावपर जितने पुरुष ग्रह की दृष्टिहोवे उतनेही पुत्र होवेंगे १९३ (जिस ग्रहकी दृष्टी होवे वह स्व राशिका होतो द्विगुण उच्च मूल त्रिकोण राशी का होतो, त्रिगुण संख्या कहना) अथवा पंचम भावमे जितने नवांश गयेहोवे उतने संतान कहना शुभ ग्रहसेदृष्ट होतो उससे द्विगुण संख्या मानना। अथवा कितनेक विद्वान पुत्र स्थान में गई हुई राशी के अंकाकि संख्याके समान किंवा पुत्रस्थानेश की किरण की संख्या के समान भी संतानकी संख्या कहते है।

शुक्रकीराशी (७-२) मे गयाहुवा चंद्रमा नवम किंवा पंचम भावमें गयाहोतो एकपुत्र होवेगा १९४

पंचम भावमे राहु अथवा केतु गयाहै ये तो एक कुपुत्र होवे १९५
पंचम भावमे गयाहुवा सूर्य शुभ ग्रहसे दृष्ट होतो तीनपुत्रहोवे १९६
मकर राशी मे गयाहुवा मंगल पंचमभावमे होतो तीनपुत्रहोवे १९७
मकर राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो तीनपुत्रहोवे १९८

कुंभ राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो पांचपुत्र होवेंगे परंतु सूत्र २०९ के अनुसार इसी योगमे दत्तपुत्र योगभी होजाताहै इस कारण यदि मकर राशीका पंचम भाव ६ अंश४० कलासे अधिक अंश का होवे और उसमे शनीगया होतो तीन पुत्र होवेंगे एवं कुंभराशीका पंचम भाव १० अंश०कलासे १६ अंश ४० कला पर्यंत के ६ अंश४० कलाके अति रिक्त शेष अंशका होवे और उसमे शनिगयाहोतो पांच पुत्र होवेंगे अन्यथा नही होवेंगे । तात्पर्य यहहै कि मकरके ६अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमे मकर का शनि, तथा कुंभ के १०हीअंश से १६ अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमे कुंभकाशनि, जावेगा तो दत्त पुत्र ही लाना पडेगा तीन तथा पांच पुत्र नही होवेंगे १९९

पंचम भावमें सूर्य गया होतो १ एक पुत्र, मंगल गयाहोतो ३ तीन पुत्र, गुरु गया होतो ५ पांचपुत्र, होगा । सूर्य मंगल होवेहोवे तो ४ सूर्य गुरु होवें तो ६ मंगल गुरु होवेतो ८ सूर्य मंगल गुरु ये तीनों गये होवेतो ९ पुत्र का जन्म होवेगा २००

विषम राशी १।३।५।७।९।११।का पंचमभाव शुक्र और चंद्रके दृशाणमें गया होवे और वह शुक्र चंद्रसे युत होवेतो बहुत पुत्रवाला होवेगा २०१

पंचम भावपर जितने स्त्री ग्रहकी दृष्टी होवे उतनीहीकन्याहोवेगा२०२

पंचमभावमें, चंद्रगयाहोतो ३ शुक्र गया होतो ५ शनीगयाहोवेतो ७ कन्याका जन्महोवेगा (और ये ग्रह दो तीन संयुक्त होवे तो उनकी संख्या के ऐक्यके अनुसार कन्याका जन्म समझना) २०३

बृहत्पाराशरीमे संतान संख्याके औरभीविशेष योग इसप्रकार लिखेहैंकि

लग्नमेराहु, पांचमेगुरु, नवमेशनि, गयाहोतो १ पुत्र होवेगा ।

धनेश पंचमेशका योग पंचम भावमे हुवा होतो ६ पुत्र होवेगा उनमे ३ मरजावेगा ।

नवमे भावमे शनि गया होवे और नवमेश पंचम मे होतो ७ पुत्र होवेगा जिनमे दो गर्भ यमल (जोडले) बालकके होवेंगे ।

गुरु ९ मे किंवा ५ में भावमे व धनेश १० मे भावमे गयाहो और पंचमेश बलवान होवेतो ८ पुत्र होवेगा।

परमोच्चराशी का गुरुहो व धनेश राहुसे युत होवे और नवमेश ९ मे गयाहोतो ९ पुत्र होवेगा।

परमोच्चराशी मे गया हुवा पंचमेश लग्नेशसे युतहोवे और गुरु शुभग्रहसे युतहोतो १० पुत्र होवेगा।

पंचम भावमे पापग्रह गयाहोवे और गुरुसे पांचमे शनीगया हो तो दूसरा विवाह करने से (दूसरी स्त्री के) पुत्र होवेगा और २ स्त्री का सुख रहेगा.

प्रथम पुत्र किंवा पुत्री जन्म योग।

त्र्यर्थाङ्के लग्नपे प्रथमः सुतः २०४

द्विस्व भावगा श्चन्द्रारशुक्राः प्रथमः सुतः २०५

लाभेपापे पंचमे चन्द्राच्छौ प्रथमः कन्याः २०६

पुत्रेशे पुंभागे पुंग्रहे प्रथमं पुत्रोन्यथा कन्या २०७

टीका-लग्नेश लग्नमे किंवा दूसरे तीसरे भावमें गयाहोतो प्रथम पुत्रहोवेगा.२०४

चंद्र, मंगळ, और शुक्र. ये तीनो द्विस्वभाव राशी में गयेहोतो प्रथम पुत्र होवेगा. २०५

लाभ (११) भावमे पापग्रह गयाहोवे और पांचमे भावमे चंद्र शुक्र का योग होतो प्रथम कन्या होवेगा २०६

पंचमेश पुरुष ग्रह होवे और वह पुरुष राशी (१।३।५।७।९।११) मे, पुरुष कीराशी के ही नवांश मे गया होवे तो प्रथम पुत्रहोवेगा। और पंचमेश यदि स्त्री ग्रह हो वे और स्त्री राशी (२।४।६।८।१०।१२) मे स्त्री राशी के ही नवांशमे गया होतो प्रथम कन्या होवेगा २०७

औरस पुत्र योग।

पंचवेएकनमे गुरुवर्गे शुभराशावौरसः पुत्रः २०८

टीका-पंचमभावमे केवल गुरु का दशवर्ग होवे किंवा पंचम मे शुभ ग्रह की राशी शुभग्रह के वर्ग मे शुभग्रह से दृष्ट होतो और सपुत्र (संग पुत्र) का सुख होवेगा २०८

दत्तपुत्र योग।

मन्दर्क्षांशेसुते चन्द्रमन्दान्यतरयुतेदत्तपुत्रः २०९

तुर्ये मन्दारौ दत्तपुत्रः २१०

वंशविच्छेदयोगे दत्तपुत्रः २११

टीका-पंचमभावमे शनीकी राशी (१०-११) और शनीकी राशी काही नवांशगयाहो और उसमे चंद्र अथवा शनी युतहोतो दत्तपुत्र लेना पडेगा। २०९

चतुर्थ भावमें शनि मंगल का योग होतो दत्तपुत्र लेनापडेगा २१०

वंश विच्छेदके जितने योग कहेहैं उनमें से कोईभी योग होवेतो दत्तपुत्र लेना पडेगा २११

दासीपुत्र योग।

सकेता वंशेज्ञशुक्र दृष्टे दासीपुत्रः २१२

शुक्रेन्त्ये सौरांशे दासीपुत्रः २१३

टीका-कारकांश लग्नमे गयाहुवा केतु, बुध, शुक्रसेदृष्ट होतो दासी सें उत्पन्नहुवा पुत्र होवेगा २१२

बारमे भावमे गयाहुवा शुक्र शनी के नवांशमे होवेतो दासीसे उत्पन्न हुवा पुत्र होवेगा २१३

क्रीत पुत्र योग।

धीस्थेमन्दे ज्ञेन्दुयुते क्रीतपुत्रः २१४

टीका-पंचम भावमे गया हुवा शनि, बुधचन्द्रसे युतहोतो क्रीत पुत्र कीमत देके खरीदाहुवा(पुत्र) होवेगा २१४

पुत्रेणसह मित्रो दासिन्य योग.।

सुताङ्गेशामित्रत्वे पुत्रोमित्रम्. २१५

सुतांगेशौ समौ पुत्रेण सहौदासीन्यम् २१६

टीका-पंचमेश और लग्नेश के परस्पर मित्रताहोवे तोपुत्रके साथ मित्रता (प्रीति) रहेगा २१५

लग्नेश पंचमेश परस्पर समग्रह होवेतो पुत्रके साथ उदासीनता (समभाव) रहेगा २१६

आज्ञानुवर्ती सुतयोग।

लग्नपुत्रेशयो रन्योन्यदृष्टौ सुतआज्ञानुवर्ती २१७

पुत्रांगेशा वन्योन्य भांशगौ सुतआज्ञानुवर्ती २१८

टीका—लग्नेश पंचमेशको और पंचमेश लग्नेशको देखता होतो पिताकी आज्ञापालन करने वाला पुत्र होवेगा २१७

पंचमेश लग्नेश की राशि में किंवा लग्नेशके नवांशमें और लग्नेश पंचमेश की राशि में अथवा पंचमेश के नवांशमें गयाहोतो पिताकी आज्ञापालन करने वाला होवेगा २१८

पुत्र वाक्य वश्य योग।

पुत्रपेऽङ्गेऽङ्गपे पुत्रे पुत्रवाक्यवश्यः २१९

सुतेशदृष्टेऽङ्गे सुतेऽङ्गेशदृष्टे पुत्रवाक्यवश्यः २२०

इतिपंचमविवेकः

टीका—पंचमेश लग्नमें और लग्नेश पंचममें गयाहो तो पुत्रके कहने माफिक चलने वाला होवे २१९

पंचमेश लग्नको और लग्नेश पंचमको देखता होवो पुत्रके कहने में होवे २२०

इन विचारो के सिवाय भाईका छोटाभाई, भाईकासालेकीकी, मित्रका धन कुटुम्ब, माता का धन कुटुम्ब, पुत्रकेपुत्रकाशाला, स्त्रीको लाभ, नोकरका भाई, पेटकापुत्रसुख, पिताकामृत्यु, दादाको लाभ, का विचार भी इसी पंचम भाव से करना।

इति पंचम विवेकस्पटीका समाप्तः।



अथ षष्ठविवेकः ।

ज्ञातिशत्रु योग।

षष्ठेशे षष्ठे ज्ञातिः शत्रुः १

टीका–छठे भाव का स्वामी छठे भावमेंही जावेतो जातिके लोग शत्रुहोवे १

सुतः शत्रुयोग. ।

अन्त्यारिगे सुतेशेसुतःशत्रुः २

पुत्रोदयेश शात्रवे वा पुत्रेपषष्ठे लग्नेशदृष्टे पुत्रःशत्रुः ३

टीका–पंचमेश छठे अथवा बारमे भावमे जावेतो पुत्र शत्रु होवे २
लग्नेश पंचमेश के परस्पर शत्रुता होवे अथवा पंचमेश छठेभाव में गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पुत्र शत्रुहोवे ३

मातृवैरयोग ।

लग्नेशस्य सुखाधिपेशो शत्रु चेन्मातृवैरम् ४

सुखपे पापदृग्युते मातृवैरम् ५

तुर्यपे लग्नपतः षष्ठे वा तुर्येशे षष्ठे मातृवैरम् ६

टीका–सुख और लाभ भावके स्वामी लग्नेशके शत्रु होवो माता से वैरहोवे ४
सुखेश पापग्रहसे युत दृष्टहोतो मातासे वैरहोवे ५
सुखेश लग्नेशसे छठे भावमें गयाहो अथवा सुखेश छठभावमेंगयाहो वो मातासे वैर होवे ६

पिता शत्रु योग ।

लग्नखेशयोः शात्रवं वाखेशे लग्नतो लग्नपतो वा षष्ठे पिताशत्रुः ७

सुतेशेत्रिके लग्नेशदृष्टे पितृदूषकः ८

पुत्रेशे त्रिकेराव्हार दृष्टे पितृदूषकः ९

टीका–लग्नेश दशमेश के परस्पर शत्रुताहो अथवा दशभावका स्वामी लग्नसें वा लग्नेशसेंछठेभावमे गया होतो पिता शत्रुहोवे ७

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पिताकों दूषण लगाने वाला होवे ८

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और वह राहु मंगल इन दोनों ग्रहो से दृष्टहो तो पिताको दूषण लगाने वालाहोवे ९

शत्रुपीडायोग.

षष्ठेशेकेंद्रे पापदृष्टे शत्रुपीडा १०

षष्ठपापा वा लग्नेशः षष्ठे षष्ठेशेलग्ने शत्रुपीडा ११

षष्ठपेऽबले पापदृष्टे पापांतरे वा शत्रुपीडा १२

टीका–षष्ठेश केंद्रमे गयाहो और पापग्रह से दृष्टहो तो शत्रुकी पीडा होवेगा १०

छठे भावमे पापग्रह युतहो अथवा लग्नेश छठेभावमे और षष्ठेशलग्न में गयाहोतो शत्रुकी पीडाहोवेगा ११

षष्ठेश निर्बली होकर पापग्रह से दृष्टहोवे अथवा पापग्रहोंके मध्यगत हो तो शत्रुकी पीडाहोवेगा १२

स्त्री शत्रु योग।

लग्नदारपयोः शात्रवे स्त्रीशत्रुः १३

टीका–लग्नेश सप्तमेश के परस्पर शत्रुता होतो स्त्री शत्रुहोवे १३

वैरिहन्ता तथा शत्रुनाश योग।

षष्ठेशेंगे वैरिहन्ता १४

षष्ठेशे बलाढ्ये वैरिहन्ता १५

षष्ठेशुभ दृष्ट्या थिक्ये वैरिहन्ता १६

षष्ठेशेत्रिके नीचमूढारियुते लग्नेशेबलिनि शत्रुनाशः १७

लग्नेशादरीशेल्पबले शत्रुनाशः १८

षष्ठेके कौतुके शत्रुनाशः १९

टीका–षष्ठेश लग्नमे गयाहोतो वैरिकानाश करनेवाला होवे १४
षष्ठेश बलवान होवेतो वैरिहन्ता होवे १५
षष्ठस्थानपर शुभग्रहों कि दृष्टि अधिकहोतो वैरिहन्ताहोवे १६
षष्ठेश (६।८।१२) त्रिकस्थानमे हो नीच, अस्त तथा शत्रुराशी के ग्रहसे युतहोवे और लग्नेश बलवान होतो शत्रुका नाश होवे १७
लग्नेश से षष्ठेश अल्प बली होतो शत्रु का नाश होवे १८
छठे भावमे सूर्य कौतुकावस्थामें गया होतो शत्रुका नाशहोवे १९

व्रणपिटिकादि पीडायोग.।

भौमेलौ गुरुसितदर्शाने व्रणपिठिकापीड़ा २०
केत्वर्कजा वस्ते व्रणपीठिका पीड़ा २१
लग्नपारौ त्रिके ग्रन्थिशस्त्रज व्रणपीड़ा २२
सपापेरीशे लग्नेत्रिके शरीरेव्रणः २३
मंदारा वरिगो वा व्ययगो व्रणः २४
सार्केरीशेङ्के वाष्टमे शिरोव्रणः २५
लग्नेशेकुजेपुत्रेपापान्वितेपापदृष्टेशिलाशस्त्रजंव्रणंमस्तके२६
भौमेंगे धूनेजीवे वा शुक्रे व्रणांकितशिरः २७
सचंद्रेरीशेंगे वाष्टमे मुखव्रणः २८
भौमारीशायंगे वाष्टमे कंठव्रणः २९
जीवारीशा वंगे वाष्टमे नाभिमूलेव्रणः ३०
शारीशौरंध्रेवा हृदय व्रणः ३१
शुक्रारीशो लग्नेरंध्रे नेत्रमूले व्रणः ३२
मंदारीशौ रंध्र देहे पादव्रणः ३३
राहु केतु युतारीशोष्टमे देहे अधरव्रणः ३४
व्यापारिगेभौमे व्ययेशुक्रे पादपार्श्वेव्रणः ३५

व्ययेगुरौविधौ ज्ञे व्यायारिगेगुदा व्रणः ३६
षष्ठेत्येवाराऽर्कियोगे सौम्यादृष्टे गंडपाठादयः ३७
सपापे कर्मगेरिशे पापदृष्टे वा यदंगराशौ तदंगे व्रणः ३८

टीका-वृश्चिक राशिमे गयेहुवे मंगलको गुरु शुक्र नहीं देखते होवेतो जखम फोड़ा फुनसी की पीड़ाहोवे २०

केतु और शनि ये दोनो सातमे भावमें गयेहोतो जखम फोड़ा वगेरा की पीड़ाहोवेगा २१

लग्नेश और मंगल ये दोनो ६।८।१२ भावमे गयेहोवेतो गठान की और शस्त्र के जखमकी पीड़ा होवेगा २२

पापग्रहसें युत षष्ठेश लग्नमे तथा त्रिकस्थानमें गयाहोतो शरीरमे घाव (जखम) होवेगा २३

शनि और मंगल ये दोनो छठे अथवा बारमे भावमें गयेहोतो घावकी पीड़ा होवेगा २४

षष्ठेश सूर्यसें युतहोकर लग्नमें वा आठमें भावमें जावेतो मस्तक में जखमहोवेगा २५

लग्नेश मंगल होवे और वह पंचम भावमें पापग्रह सें युतदृष्टहो तो पाषाण तथा शस्त्र से मस्तकमें जखम होवेगा २६

लग्नमें मंगलहो और सातमें भावमें गुरु अथवा शुक्र गयाहोतो व्रणांकित शिरहोवे अर्थात् मस्तकमें बहुत जखमो के चिन्ह होवे २७

षष्ठेश चंद्रसे युतहोकर लग्नमें अथवा आठमें भावमे गया होवेतो मुखपर व्रण (घाव) होवे २८

मंगल सें युत होकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भावमे गयाहोवेतो कंठमे जखम होवे २९

गुरुसें युतहोकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भावमें जावेतो नाभीके नीचे व्रण होवेगा ३०

बुधसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भाव में गयाहोवेतो हृदयमें व्रणहोवेगा ३१

शुक्रसे युत होकर षष्ठेश लग्नमे वा आठमें भावमे गया होवेतो नेत्र के मूलमें जखम होवे ३२

शनीसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमेंवा आठमें भावमें गयाहोवेतो पांव मे व्रण होवे ३३

राहु वा केतुसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमें अथवा आठमें भावमें गया होतो आष्ठ पर व्रग होवेगा ३४

मंगल ३-११-६ भावमें गयाहो और बारमें भावमे शुक्रहोवो वाम पार्श्व में व्रण होवे ३५

बारमे भावमे गुरु और चंद्र दोनों गये हो और बुध ३-६-११ भावमे होतो गुदा के समीप व्रग होवे ३६

मंगल और शनि का योग छठे अथवा बारमें भावमें होवे और उनको शुभग्रह नहीं देखते होतो गंडमाला रोग (कंठमे होताहै वह) होवे ३७

पापग्रहसे युत अथवा दृष्ट षष्ठेश दशमें भावमे जिसराशिमें जावे वह राशिकालपुरुष के अंगमें जिस अंगकी होवे उसी अंगमे जखम (घाव) होवेगा अर्थात् मेषराशी होतो मस्तक में वृषभ होतोमुखपर इत्यादि क्रमसे राशीके अंग के अनुसार व्रणका स्थान मानना ३८

तापगण्ड योग ।

लग्नेशार्कौ त्रिके तापगण्डः ३९

टीका–लग्नेश और रवि इन दोनो का योग ६।८।१२ भावमें हों तो तापगंड (दाहयुक्त गलगंड) रोगहोवे ३९

जलज गंड योग ।

चंद्राङ्गेशौ त्रिके जलज गण्डः ४०

लग्नषष्टेशचंद्रास्त्रिके जलगंजण्डः ४१

मकरांशे दुष्टग्रन्थि गण्डादि ४२

टीका–चंद्र और लग्नेश इनदोनोंका योग ६।८।१२ भावमें होतो जलसे उत्पन्न हुवा गलगण्ड रोगहोवे ४०

लग्नेश, षष्ठेश, और चंद्रमा ये तीनों ६।८।१२ भावमे गयेहोवेतो जलगंड (कफजनितगलगंड) रोग होवे ४१

कारकांशलग्न मकर राशीका होतो दुष्टग्रंथि रोग वा गलगंड रोगादि होवे ४२

पित्तरोगीयोग.

लग्नेशज्ञौ त्रिके पित्तरोगी ४३

टीका-लग्नेश और बुध का योग ६।८।१२ भावमें होतो पित्तका रोग होवे ४३

आमरोगीयोग.

जीवांगेशौत्रिके आमरोगी ४४

टीका-गुरु और लग्नेश का योग ६।८।१२ भावमें हो तो आम रोगी होवे ४४

क्षय रोगी योग।

शुक्रांगेशौ त्रिके क्षयरोगी ४५
अंशात्तुर्यात्यगौ क्रमात्कुजराहू क्षयरोगी ४६
भौमार्क्यै दृष्टे लग्ने श्वासक्षयादिः ४७
चंद्रार्कौ अन्योन्य भांशगौ क्षयी ४८
सिंहेवा कर्केचंद्रार्कौ क्षयी ४९
क्षयपे चंद्रे भौमदृष्टे महणिजः क्षयी ५०
कर्केशे क्षयी ५१

टीका-शुक्र और लग्नेशका योग ६।८।१२ भावमें होतो क्षयरोगी होवे ४५

कारकांश लग्नसे चतुर्थभावमें मंगल और बारमें भावमें राहू पड़े हो तो क्षयरोगी होवे ४६

मंगल और शनि लग्नको देखते होतो श्वास क्षयादिरोग होवे ४७

चंद्र और रवि परस्पर अन्योन्य राशी और नवांशमें पड़ेहोंवे अर्थात् चंद्रको (कर्क) राशीमें व राशीके नवांशका रविहो और रविहो (सिंह) राशीमें सिंह राशीके नवांशका चंद्रमा हो तो क्षय रोगी होवे ४८

सिंह राशीमें अथवा कर्कराशी में रवि चंद्रकायोग होवो क्षयरोगी होवे ४९

शनिसे युक्त चंद्रमा कों भौम देखता हो तो संग्रहणी रोग जनित क्षय रोग होवे ५०

कर्कराशी मे बुध गया होवे तो क्षयरोगी होवे ५१

चौरांत्यज जनित रोगयोग ।

लग्नेशेनसह शनि राहु केत्वन्यतमाष्टिके चौरांत्यज जनितो रोगः ५२

टीका–लग्नेश से शनि, राहू. किंवा केतु इन तीनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह युत होकर (६।८।१२) त्रिकस्थानमे गया होतो चोर तथा अंत्यज जाति के मनुष्य के भय से रोग होवेगा । ५२

हृद्रोगयोग ।

तुर्यगा इज्यारार्किजाहृद्रोगी ५३

टीका–गुरु रवि और शनि ये तीनों ग्रह चतुर्थ भावमे गये होंतो हृद्रोगी होवे ५३

व्याधियुत नित्यरोगी तथा नाना रोगवान् योग.

मंदे पापयुतदृष्टेन्त्ये वा त्रिकोणे व्याधियुतः ५४

त्रिकेष्टमेशे नित्यरोगी ५५

लाभेशेषष्ठे नानारोगवान् ५६

टीका–पापग्रहसे युत दृष्ट होकर शनि बारवें भावमें हो किंवा ९।५ भाव में गया होतो व्याधियुत (रोगी) होवे ५४

आठवें भावका स्वामी ६।८।१२ स्थानमें गया होतो नित्य रोगी होवे ५५

लाभेश छठे भावमें गया हो तो अनेक रोग वाला होताहै ५६

स्त्री रोग योग ।

शुक्रारौ मदने स्त्री रोगः ५७

टीका–शुक्र और मंगल का योग सप्तम भाव में होतो स्त्री के गुह्य रोग होवे ५७

दीर्घ रोगी योग ।

मन्दारोपेते राहुर्के दृष्टे लग्नेशेऽष्टे दीर्घ रोगी ५८

टीका-छठेभावमें गयेहुवे शनि मंगल रवि व राहु से दृष्टहो और लग्नेश बलहीन होतो बहुत दिनतक आराम नहीं होनेवाला (दीर्घ) रोग होवे ५८

उदर रोगी योग ।

मंदेराहु केतु उदररोगः ५९

रंध्रेमंदे लग्ने चंद्रे उदररोगः ६०

टीका-सातमें भावमें राहु किंवाकेतु गयाहोतो उदर (पेटमे) रोगहोवे ५९

आठमें भाव में शनि और लग्न में चंद्रगया होतो उदर रोग (पेटका रोग अर्थात मंदाग्नी पेटमे दुखना जलोदर कठोदर आदिरोग)होवे६०

दंतरोगी योग.

लग्ने गुरु राहु दन्तरोगी ६१

षष्ठे राहु केतू दन्ते धरे वारोगी ६२

टीका-लग्नमे गुरु राहु का योगहो तो दंतरोगी (दांतके रोगवाला) होवे ६१

छटेभावमे राहु किंवा केतुगया होतो दांतमे वा ओष्ठमेरोगहोवे ६२

स्मररोगी योग.

मन्दाराकैन्दुषु रंध्रारिवित्तान्त्यस्थेषु स्मररोगी ६३

टीका-शनि, मंगळ, रवि, और चंद्रमा ये चारोग्रह ८।६।२।१२ इनचारो भावो में क्रमसे वा कोईभी स्थान में चारों अंक राशा में वा न्यारे न्यारे गये होतो काम संबंधी (वीर्य विकार का) रोगहोवे ६३

नाभिरोगी योग ।

गोत्ये रोगेशे नाभिरोगी ६४

टीका-छटभाव का स्वामी ३ तीसरे भाव में गयाहोतो नाभिरोगी (नाभी मे रोगहो वा नामसरकने की पीडा) होवे ६४

पाद रोगीयोग

मंदेरिगे पादरोगी ६५

टीका-छठेभाव में शनिगयाहोतो पांव में रोगवाला होताहै ६५

गुदरोगी वा गुह्यरोगी योग।

क्षारर्क्षेक्षेशो शत्रुदृष्टे गुदसमीपे धांक्षितरोगः ६६

क्षारांगेशाः सिंहगाः सुखेवा व्यये गुदरोगः ६७

कर्काल्यंशे चंद्रे पापैर्युते गुह्यरोगः ६८

रंध्रेपापा गुह्यरोगः ६९

जीवेंत्ये गुह्यरोगः ७०

सारौषष्ठेशज्ञौ लिंगरोगः ७१

टीका–लग्नेश बुधकी राशी (३।६में) किंवा मंगलकी राशी (१।८) मे गयाहो और अपने शत्रुग्रहसे दृष्टहो तो गुदाके समीपमें वा भगांग मे रोगहोवे ६६

बुध, मंगल और लग्नेश ये तीनो ग्रह सिंहराशी मे गयेहो और सुख(४) में किंवा बा.रवें भाव मे स्थितहो तो गुदा मे रोग होवे ६७

कर्क अथवा वृश्चिक राशिके नवांशमे गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंसे युतहोवेतो गुप्तांग मे रोगहोवे ६८

आठ में स्थानमें ३।४ पापग्रह गयेहोवेतो गुप्तांगमे रोगहोवे ६९

बारमें भाव में गुरु गया होवेतो गुप्तांग मे रोगहोवे ७०

षष्ठेश और बुधये दोनो मंगलसे युतहोतो जननेंद्रियमें रोगहोवे ७१

शस्त्रादिपीडायोग।

लग्नेकुजे शन्यर्क दृष्टे शस्त्रादिपीड़ा ७२

टीका–लग्नमें गया हुवा मंगल शनि और रविसे दृष्टहोतो शस्त्रादिक से पीडाहोवें ७२

अपस्मारी योग।

सार्कजेचंद्रे भौमदृष्टे पस्मारी ७३

रंध्रेचंद्रराहु अपस्मारी ७४

रंध्रे पापाश्चंद्राच्छो संयुतो केन्द्रेपस्मारी ७५

षष्ठाष्टमे मंदे कुजयुते पस्मारी ७६

चंद्रार्कौ लग्नमृतिगाः क्रूरदृष्टा अपस्मारी ७७
ग्रहणकालेयमारौ रंध्रेषष्ठे वा गुरुहीनेलग्नेत्रिकोणेपस्मारी७८
इन्दौषष्ठे क्रूराहौ अपस्मारी ७९

टीका-शनी से युत चंद्रमा भौम से दृष्टहोतो अपस्मार (मृगी) रोगवाला होवे ७३

आठमें भाव में चंद्र राहु का योगहोतो मृगी रोगवाला होवे ७४

अठमे भाव में ३।४ पापग्रह गये हो और चंद्र शुक्र का योग केंद्रस्थानमें हुवाहोतो अपस्मार (मृगी) रोगवाला होवे ७५

छठे किंवा आठ में भावमें शनि मंगल का योग होतो अपस्मारी होवे ७६

चंद्र मंगल और सूर्य ये तीनोग्रह लग्नमे किंवा अष्टम भावमे गये हो और पापग्रह से दृष्टहोतो अपस्मार रोगी होवे ७७

ग्रहण समयका जन्महो शनि मंगल का योग छठे अथवा आठवे भावमे हो और लग्नमे किंवा ९।५ मे भावमे गुरु का योग नहींहोतो अपस्मार रोगवाला होवे ७८

छठेभावमें चंद्रमा और लग्नमें राहु गयाहोतो अपस्मार रोगवाला होवे ७९

तालुरोग योग।

शार्थेशौ सराहुकेत्वोः षष्ठ तमस्थर्क्षेशयुतौ तालुरोगः ८०

टीका-धनेश और बुध राहु किंवा केतु से युत होकर छठे भाव में गयेहो और जिसराशी में राहु स्थितहोवे उसराशी के स्वामी से युतहो तो तालुरोगी (तालु स्थानमे रोगवाला) होवे ८०

गलरोग योग।

सज्ञेसौत्ये गलरोगः ८१
पापेसौत्ये गलरोगः ८२
सौत्येगुलिके त्रिशेषाद्गलरोगः ८३
सपापेचंद्रे सुते कंठ रोगः ८४

टीका–तीसरे भाव का स्वामि बुधसे युत होतो गलेमें रोगहोवे ८१
तीसरे भाव में पापग्रह गयेहोतो गलेमे रोगहोवे ८२
तीसरे भाव में गुलिक गयाहोतो अवश्य गलरोग होवे ८३
पापग्रह सें युतचंद्रमा सुखभाव में गयाहोतो कंठमें रोगहोवे ८४

मस्तक रोग योग ।

सोत्थेशेंशेश्वरांशेशे केंद्रेपापयुत दृष्टे मस्तकरोगः ८५

यमारराहव एकर्क्षगा मस्तकरोगः ८६

टीका–तीसरे भावके स्वामी के नवांश का स्वामी जिसराशि के नवांश में होवे उसका स्वामि १।४।७।१० भाव में गयाहो और पापग्रह सें युत दृष्ट होतो मस्तकमें रोग होवे ८५

शनि, मंगल, और राहु ये तीनोंग्रह एकराशीमें गयेहोतो मस्तक मे रोगहोवें ८६

मुखरोगयोग.

कुजर्क्षगेशे ज्ञयुते मुखरोगः ८७

कोशेर्कारौ मुखरोगः ८८

टीका–मंगलकी राशी (१।८) में गया हुवा लग्नेश बुध से युत होतो मुख मे रोग होवे ८७

धनभावमे रवि मंगलका योग होना मुख में रोग होवे ८८

कर्णरोग योग

सोत्थे प्रेत पुरीषांशे भौमे कर्णरोगः ८९

सोत्थे गुलिकार्कजौ शुभदृग्घीनौ कर्णरोगः ९०

सोत्थपे क्रूरषष्ठ्यंशे कर्णरोगः ९१

अंशे केतौ पापदृष्टे कर्णच्छेदः कर्णरोगो वा ९२

टीका– प्रेत पुरीष संज्ञक षष्ठ्यंशमें गयाहुवा मंगल तीसरे भाव गया होतो कानमें रोग होवे ८९

तीसरे भावमें गुलिक और शनि गये हो और इनको कोइ शुभ ग्रह नहीं देखता होतो कानमें रोगहोवे ९०

तीसरे भावका स्वामिक्रूरषष्ठ्यंशमेंगयाहो तोकानमेंरोगहोवे ९१
कारकांश लग्नमें गयेहुवे केतुको पाप ग्रह देखते होतो कानकटजावे अथवा कानमें रोग होवे ९२

पीनसरोग योग.

षष्ठेचंद्रे रंध्रेमंदे व्ययपापेलग्नेपापांशे पीनसरोगः ९३

टीका-छठे चंद्रमा, आठमे शनि, व बारमें पापग्रह, गये हो और लग्नांश पापग्रहके नवांशम होतो पीनस रोग होवे ९३

पिशाच पीडायोग.

रंध्रचंद्रे समंदे बले पिशाचपीडा ९४

तमोर्केजो लग्ने पिशाचपीडा ९५

टीका-आठमें भावमें चंद्रमा शनीसे युत हो और निर्बली होतो पिशाचपीडा होवे ९४
राहु और शनि का योग लग्नमे होतो पिशाचपीडाहोवे ९५

चातुर्थिक ज्वरयोग.

रंध्रेशेसराहुकेतौचातुर्थिकज्वरः ९६

टीका-अष्टमेश राहु किंवा केतुसे युत हो तो चातुर्थिक ज्वरका रोग होवे ९६

देहवैकल्य योग।

व्ययेशे बले क्रूरभांशे नीचांशे वा देहवैकल्यम् ९७

व्ययेपापा वा व्ययेशः पापयुतो देह वैकल्यम् ९८

सूर्या द्वितीयेमंदे खेचंद्रे सप्तमेभौमे देहवैकल्यम् ९९

टीका-बारमें भावका स्वामि निर्बली हो और पापग्रहकी राशीमें नवांशमे अथवा नीचराशी के नवांशमें होतो देह मे विकलताहोवे ९७
बारमें भावमें पापग्रह गये हो अथवा व्ययेश पापग्रहोंसे युतहोतो देहमें विकलता होवे ९८
सूर्यसे दुसरे भावमे शनि, दशमेचंद्रमा, और सातमें भावमे मंगल गया होतो देहमें विकलता होवे ९९

तनुशोष, गुल्म, संग्रहणी, अतिसार रोग योगाः

चंद्रार्कौ वन्योन्यर्क्षगौ तनुशोषः १००

कर्कालिघटांशे चंद्रे समंदे गुल्मरोगः १०१

अंशात्सुते केतौ संग्रहणी १०२

कोशेमंदे वा राहौ संग्रहणी १०३

लग्नेतमोज्ञौ द्यूनेयमारौ अतिसाररोगः १०४

टीका–चंद्रकी राशी (४) में रवि और रविकी राशी (५) में चंद्रमागयाहो तो तनुशोषरोग (शरीरसूखताजावे यह रोग) होवे १००

कर्क वृश्चिक किंवा कुंभराशीके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा शनिसे युत होतो गुल्म रोग (गोला चढनेकी विमारी) होवे १०१

कारकांश लग्नसे पाचमें भावमें केतु गयाहोतो संग्रहणीरोग होवे १०२

धनभावमें शनि किंवा राहु गयाहोतो संग्रहणी रोग होवे १०३

लग्नमें राहुबुध और सातमे भावमे शनि मंगल गये होतो अतिसाररोग होवे १०४

अग्नि विषार्दित तथा शीत रुक् योग.

धर्मे कुजेग्निविषार्दितः १०५

सपापे पापदृष्टे चंद्रे लग्ने शीतरुक् १०६

टीका–नवमे भावमे मंगलगयाहोतो अग्नि तथा विषके सबब से दुखी होवे १०५

पापग्रहसे युत और दृष्ट चंद्रमा लग्नमें गयाहोतो सरदीका होवे १०६

प्रमेहरोग योग.

मंदार्कशुक्राः पंचमस्थाः प्रमेहः १०७

लग्नेर्के मदेभौमे प्रमेहः १०८

खेभौमे शनि युत दृष्टे प्रमेहः १०९

टीका–शनि, रवि, और शुक्र ये तीनो ग्रह पंचमस्थानमे गये होतो प्रमेहरोग (सुजाक या परमिया) होवे १०७

लग्नमे रवि और सातमे मंगल गयाहोतो प्रमेह रोग होवे१०८

दशमे भावमे मंगल शनिसे युत किंवा दृष्ट होतो प्रमेहका रोग होवे १०९

वातरोग योग

समंदेरीशे नीचे ऽनिलरोगः ११०

द्व्येङ्के मंदे मंदे वाताधिक्यं १११

त्रिकोणास्ते भौमे मंदेङ्के वाताधिक्यं ११२

क्षीणेन्दु मन्दौ व्ययगौ वाताधिक्यं ११३

टीका–नीचराशीमे गयाहुवा षष्ठेश शनीसे युत होतो वात रोग होवे अर्थात् ८४ प्रकारके वायुके रोग है उनमेसे कोईभी रोग होवे ११०

लग्नमें गुरु और सातमें भावमें शनिगयाहोतो वायु अधिकहोवे १११

नवमें पांचमे तथा सातमे भावमे मंगल और लग्नमे शनिगया होतो वात रोग अधिक होवे ११२

क्षीणचंद्र और शनीका योग बारमें भावमे होतो वात रोग अधिक होवे ११३

मूत्र कृच्छ्ररोग योग।

जलभेचंद्रे तत्पेषष्ठे जलर्क्षगे ज्ञदृष्टे मूत्रकृच्छ्ररोगः ११४

पापाः षष्ठे वा सप्तमे मूत्र कृच्छ्ररोगः ११५

टीका–जलराशीका चंद्रहो उसचंद्रकी राशीका स्वामी छठे भाव में गयाहो और उसको जलराशी मे गयाहुवा बुधदेखताहोतो मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब महाकष्ट से उतरे वह रोग।) होवे ११४

छठे अथवा सात म भावमे ३.४ पापग्रह गयेहोवो मूत्र कृच्छ्ररोग होवे ११५

कुष्टयोग

मेषेशे खेऽब्जे शनि भौम योगे कुष्टी ११६

युग्मकर्क मीनांशे चंद्र यमार दृष्टयुते कुष्टी ११७
कर्कालि वृष मृगगैः पापै त्रिकोणे दृष्टे वायुते कुष्टी ११८
ज्ञेन्दु लग्नपा राहु केतु युताः कुष्टी ११९
कुजेज्ञे रन्ध्रेर्के तुर्येर्कजे कुष्टी १२०
मंदारेन्द्वच्छेषु क्रूरार्दितेषु जलभगेषुसजलकुष्टी १२१
मंदार्कार युतौ रक्तकृष्णाख्य कुष्टी १२२
षष्ठेशे सारेंगे पित्तकुष्टी १२३
समन्देरीरोज्ञे कफकुष्टी १२४
सूर्य षष्ठेशाव्गे रक्तकुष्टी १२५
अंशात्तुर्येचंद्रे केतुदृष्टे नीलकुष्टी १२६
अंशात्तुर्येचंद्रे कुजदृष्टे महाकुष्टी १२७
चंद्राच्छौ सपापौ जलभगौ श्वित्रि १२८
अंशात्सुखे चंद्रे शुक्र दृष्टेश्वित्रि १२९
लग्नेश इन्द्वारौ वा राहुकेत्वन्यतर युतौ एकत्राश्वित्रि १३०
मंदारचंद्रा मेषेवा वृषे श्वित्रि १३१
सौरारयोरिः फथनरथयोः क्रमा ल्लग्नेचंद्रे सूर्येस्ते श्वित्रि१३२

टीका–मेषराशी का बुध, दशमे चंद्रमा, और शनि भौमका एकराशिमें योगहोतो कुष्टरोग वाला होवे इसयोग में शनि भौमके योग का स्थाननहीं कहाहै परंतु यदि ये योग दशमें भावमे चंद्रमा से युतहोतो विशेष बलवान होवेगा ११६

मिथुन, कर्क, तथा मीन राशी के नवांश में गयाहुवा चंद्रमा शनि मंगल से युत किंवा दृष्टहोतो कुष्ट रोगवाला होवे ११७

कर्क, वृश्चिक, और मकर, राशी में पापग्रह गये हो और उनसे ?र भावयुत अथवा दृष्टहो तो कुष्टरोगी होवे ११८

बुध, चंद्र, और लग्नका स्वामी ये तीनो राहु किंवा केतु से युत हो तो कुष्ट रोगी होवे ११९

लग्नमें मंगल, आठमे भावमें रवि और चतुर्थभावमें शनि गया होतो कुष्ट रोगी होवे १२०

शनि, मंगल, चंद्र, और शुक्र ये चारो ग्रह पापग्रहसे युत वा दृष्ट हो और जलराशी में गये हो तो जिस कुष्टरोगमे पानी चुयाकरे वैसा सजल कुष्ट रोगवाला होवे १२१

शनि रवि और मंगल का योग हो तो रक्तकृष्ण नामका कुष्ट होवे। इस योग में स्थान नहीं कहा है परंतु ये योग १।४।८ भाव में होतो बलवान् जानना १२२

षष्ठेश लग्न में मंगल सें युत होतो पित्तकुष्टी होवे १२३

षष्ठेश लग्नमें शनि सें युत होतो कफ कुष्टी होवे १२४

षष्ठेश लग्नमें सूर्य से युत हो तो रक्तकुष्टी होवे १२५

कारकांशलग्नसें चतुर्थ भाव में चंद्रमा केतुसें दृष्टहोतो नील कुष्टी होवे १२६

कारकांशलग्नसे चतुर्थभाव में गयाहुवा चंद्रमा मंगल से दृष्ट होतो महा कुष्टी होवे १२७

जलराशी मे गये हुवे चंद्र शुक्र पापग्रहो से युतहोतो सफेद कोढ़ का रोग होवे १२८

कारकांश लग्नसे चतुर्थभाव में चंद्रमा शुक्रसेदृष्ट होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १२९

लग्नेश किंवा चंद्र मंगल, राहु अथवा केतुसे युत होतो कोईभी शरीरके एक भागमे सफेद कुष्ट होवेगा १३०

शनि मंगल और चंद्रमा ये तीनो मेष अथवा वृषभ राशी मे गये होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १३१

बारमे शनि, धनमें मंगल, लग्न में चंद्रमा, और सातमें सूर्य क्रमसे गये होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १३२

कुष्टरोग १८ प्रकारका होता है उनमेसे ग्रहयोगोंके बलानुसार कोईभी जातका कुष्ट रोग होता है।

शूलरोगी योग ।

षष्ठान्त्यगौ मन्दारौ शूलरोगी १३३

सिंहे चंद्रे पापार्दिते शूलरोगी १३४

लाभेशे सोत्थे शूलरोगी १३५

केंद्र कोणे सिंहगेशुक्रे सोत्थेजीवे शूलरोगी १३६

टीका–छठे किंवा बारमें भावमें शनि मंगल गयेहो तो शूलरोग वाला होता है १३३

सिंहराशीमें गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंसे युत दृष्ट होतो शूलरोगी होवे १३४

लाभेश तीसरे भावमे गया होतो शूलरोगी होवे १३५

सिंहराशीमें गयाहुवा शुक्र केंद्रकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में और गुरु तीसरे भावमें गया होतो शूल रोगी होवे १३६

पामान योग।

सपाप चंद्रे नवमे पामानः १३७

टीका–पापग्रहसे युत चंद्रमा नवमे भावमें गयाहोतो पाम (खाज) रोग वाला होवे १३७

अर्शरोग योग।

मन्देन्त्ये पाप दृष्टेऽर्शसः १३८

मन्दे लग्ने कुजेस्तेऽर्शसः १३९

द्यूनेशंशेशे क्रूरे शुभादृष्टेऽर्शसः १४०

मंदेस्तेलेशे भौमेक्षितेऽर्शसः १४१

मन्देन्त्ये द्यूनगौ लग्नशारौ अर्शसः १४२

व्ययेर्क्रजे भौमागेशदृष्टेऽर्शसः १४३

टीका–बारमें भावमें शनि पापग्रहसे दृष्ट होतो अर्श (बवासीरका रोग होवे १३८

शनि लग्नमें और मंगल सातमें भावमें होतो अर्श रोगी होवे १३९

अष्टमेश क्रूरग्रह होकर सातमें भावमें गयाहो और शुभग्रहसें दृष्ट नहो तो अर्शरोगी होवे १४०

शनि सप्तमभावमें और वृश्चिकराशीका मंगलनवमे भावमें गया हो तो अर्श रोगी होवे १४१

शनिवारमें भावमें और लग्नेश व मंगल ये दोनो सप्तम भाव में गये होतो अर्श रोगी होवे १४२

बारवे भाव में गयाहुवा शनि, मंगल और लग्नेश दोनोसे दृष्टहोतो अर्शरोगी अर्थात् बवासीर के रोगवाला होवे १४३

कफरोग योग।

मंदार्के योगे कफरोगः १४४

टीका-शनि सूर्यका योगहोतो कफका रोगहोवे १४४

प्लीहरोग योग।

षष्ठेशेचंद्रे पापयुते प्लीहरोगः १४५

लग्नेशेऽस्ते क्रूरदृष्टे शुभदृग्घीने प्लीहरोगः १४६

चंद्रेश षष्ठेशौ क्रूरमात्रदृष्टौ प्लीहरोगः १४७

कामांगेशे चंद्रेक्रूरमात्र दृष्टे प्लीहरोगः १४८

सौरारमध्यगे चंद्रे मृगेऽर्के प्लीहश्वासादिः १४९

सुतगौमंदचंद्रौ प्लीहरोगी १५०

टीका-षष्ठेश चंद्रमा पापयुत होतो प्लीहरोगी (तिल्लीबढनेका रोग) होवे १४५

लग्नेश सप्तम भावमें क्रूर ग्रहसे दृष्टहो और किसी शुभग्रहसे दृष्ट नहिंहोतो प्लीहरोगहोवे १४६

चंद्रमा जिसराशिमें गयाहो उसराशी का स्वामि और षष्ठेश ये दोनो क्रूर ग्रहमात्र सें दृष्ट होतो प्लीहरोग होवे १४७

सप्तम भावका किंवा लग्नका स्वामी चंद्रमा हो और वह क्रूरग्रह मात्र सें दृष्टहोतो प्लीह रोगहोवे १४८

शनि और मंगल के मध्यमे चंद्रमा गयाहो और मकरराशीकारवि होतो प्लीह (तिल्ली बढनेका) वा श्वास कास का रोगहोवे १४९

पंचम भाव में शनि चंद्रमा गयेहोतो प्लीहरोगवाला होवे १५०

दद्रुरोग योग ।

कोशेजलर्क्षे चन्द्रे मन्ददृष्टे दद्रुः १५१

लग्नेर्के दद्रुः १५२

टीका–जलराशीमे गयाहुवा चंद्रमा धनभावमे गयाहो और इसको शनि देखता हो तो दद्र [दादका] रोगहोवे १५१

लग्नमें रवि गयाहोतो दद्ररोग होवे १५२

जलभययोग ।

कर्कांशे जलभयम् १५३

अष्टमे चन्द्रे जलभयम् १५४

लग्नेऽब्जे पापदृष्टे जलभीः १५५

टीका–कारकांश लग्न कर्कराशी का होतो जलका भय (जलपात) होवे १५३

आठमे भाव में चंद्रमा गयाहोतो जलका भय होवे १५४

लग्नमे गायहुवा चंद्रमा पापग्रह से दृष्टहोतो जलका भयहोवे १५५

सर्प भययोग ।

चंद्रारौपष्ठेऽष्टमेवा सर्पभयम् १५६

तमस्पर्थे गुलिकयुतदृष्टे सर्पभयम् १५७

सोत्येशे राहुयुतेङ्के सर्पभयम् १५८

टीका–चंद्र और मंगल छठे अथवा आठ में भाव में गये होतो सर्प का भयहोविगा १५६

धनभावमे गयाहुवा राहु गुलिक से युतदृष्टहोतो सर्पका भयहोवेगा १५७

तीसरे भाव का स्वामि और राहु कायोग लग्न में होतो सांपका भयहोवे १५८

चौर तथा अग्नि भय योग

पापेङ्के त्रिकोणे गुलिके चोर भयम् १५९

केतावङ्गे पापयुत दृष्टे पिशाचचौरभयं १६०
सराहुकेतौ षष्ठेशे सर्वपीडाचौराग्निभीर्वा १६१
धर्मेशे षष्ठे षष्ठेश दृष्टे चौराग्निभीः १६२
षष्ठेशे मंदारयुते चौराग्निर्भीः १६३

टीका–लग्नमें पापग्रह, और ९-५ भावमे गुलिक गया होतो चौरका भय होवे १५९
लग्नमे गयाहुवा केतु पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो पिशाचका तथा चौरकाभय होवे १६०
षष्ठेशराहु से किंवा केतुसे युत होतो सर्व पीडा अथवा चौरभय वा अग्निका भय होवे १६१
नवमें भावका स्वामि छठे भाव में षष्ठेशसे दृष्ट होतो चौर किंवा अग्निका भय होवे १६२
षष्ठेश शनि मंगलसे युत होतो चौर किंवा अग्निका भय होवे १६३

स्फोट अग्नि तथा खल भय योग.

लग्नाष्टास्तेर्के भौमदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६४
सप्ताष्टाद्यार्थे भौमे सूर्यदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६५
लग्नान्त्यारिमदे गुलिकारौ सूर्यदृष्टौस्फोटाग्निखलभीः१६६
सारेषष्ठेशेऽग्निभीः १६७
क्रूरांगे पापयुतदृष्टेऽग्निभीः १६८

टीका–लग्नमे आठमे अथवा सातमे भावमें गयाहुवारवि मंगल से दृष्ट होतो फोडाफुन्सिका तथा अग्निका वा दुष्ट मनुष्यका भय होवे १६४
सातमे आठमे लग्नमे अथवा धनभावमें गयाहुवामंगलसूर्यसे दृष्ट हो तो फोडा फुन्सिका तथा अग्नीका अथवा दुष्ट मनुष्यकाभय होवे १६५
लग्नमें बारमें छठे अथवा सातमे भावमें गुलिक मंगलका योग हो और उनको रवि देखता होतो फोडाफुन्सि तथा अग्नीका अथवा दुष्टमनुष्यका भय होवे १६६

षष्ठेश मंगल से युत होतो अग्निका भय होवे १६७

लग्नमें गये हुवे क्रूर ग्रह पापग्रहसे युत और दृष्ट हों तो अग्नीका भय होवे १६८

श्वान भय योग.

धनेमन्देपापदृष्टयुते शुनोभयम् १६९

मन्देधनेशयुक्तदृष्टे शुनोभयम् १७०

टीका-धनभावमें शनि पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो श्वानका (कुत्तेका) भय होवे १६९

शनि धनेशसे युत और दृष्टहोतो श्वानका भय होवे १७०

शृगालादि भय योग.

गुलिकारौ धनेष्टमे वा धनेश दृष्टौ शृगालादिभिः १७१

यमे षष्ठेशे सूर्ययुते शृगालादिभीः १७२

टीका-गुलिक और मंगल धनमें अथवा आठमें भावमें गये हों और धनेशसें दृष्ट होतो शियाल लोमडी आदि जंगली जानवरोंका भय होवे १७१

धनभावमें षष्ठेश सूर्यसे युतहोतो शियाल वगेरा जंगली जानवरों का भयहोवे १७२

चतुष्पदभययोग.

लग्नेजीवसोत्थपौ चतुष्पदभीः १७३

चंद्रार्कभेराहौ चंद्रार्कयुतेवशुभीः १७४

टीका-गुरु और तीसरे भावका स्वामी ये दोनो लग्नमें गयेहोतो चतुष्पद (गाय भैंस गधा आदि) का भयहोवे १७३

कर्क किंवासिंह राशीमें गयाहुवा राहु रविचंद्रसे युतहोतो पशूका भयहोवे १७४

मृगभययोग.

षष्ठेशे मन्दे राहुकेतुयुते मृगभीः १७५

टीका-षष्ठेशशनि, राहुकिंवा केतुसे युतहोतो हरिणका भयहोवे १७५

गजभययोग.

षष्ठांगपौजीवयुतौगजभीः १७६

टीका-षष्ठेश और लग्नेश ये दोनो गुरुसे युतहोतो गजका भयहोवे १७६

अश्वभययोग.

लग्नारीशौ चंद्रयुतौ अश्वभीः १७७

टीका-लग्नेश और षष्ठेश ये दोनो चंद्रमासें युतहोतो अश्वकाभय-होवे १७७

गेहशैथिल्यभययोग.

रंध्रेकोणेर्केगेहशैथिल्यभयम् १७८

टीका-रवि आठमें नवमें किंवा पांचमें भावमें गयाहो तो पुरानेघरका पडनेका भयहोवे १७८

क्षेत्रचिंतायोग.

खे भौमेक्षेत्रचिंता १७९

टीका-दशमे भावमे मंगल गया होतो क्षेत्रसंबंधकी चिंता रहे१७९

सौख्यचिंता योग.

त्रिके भौमे सौख्यचिंता १८०

टीका-मंगल ६।८।१२ भावमे गया हो तो सुखकी चिंता रहे १८०

वाहनाभरणवस्त्रचिंतायोग.

जीवेत्रिके वाहनाभरणवस्त्रचिंता १८१

टीका-गुरु ६।८।१२ भावमें गया होतो वाहन आभूषण और वस्त्रा-दिकको चिंता रहेगा १८१

छत्र चामर चिंता योग.

त्रिके चंद्रे वा सिते चामर छत्र चिंता १८२

टीका-चंद्र अथवा गुरु ६।८।१२ में भावमे गया होतो चामर (चँवर) व छत्रकी चिंता रहे १८२

पुत्र चिंता योग.

पुत्रे कोणे जीवे पुत्रचिंता १८३

टीका-गुरु सातमे किंवा ९।५ भावमें गयाहो तो पुत्रसंबंधी चिंता रहे १८३

धी चिंतायोग.

ज्ञेसुते धी चिन्ता १८४

टीका-बुधपंचमभावमें गयाहो तो बुद्धिसंबंधी चिंता रहे १८४

तात बंधु चिन्तायोग।

सूर्ये कोणे तात बन्धुचिन्ता १८५

टीका-नवमे पांचमें भाव में सूर्यगयाहोतो पिता तथा बंधु संबंधी चिंता रहे १८५

यात्रा चितायोग।

सुतेयूने शुक्रे यात्रा चिंता १८६

टीका-पांचमे अथवा सातमें भाव मे शुक्र गयाहोतो यात्रा (मुसाफरी) संबंधी चिन्तारहे १८६

मातुल सुखाभाव योग।

खेधर्मे पापदृष्टेभौमे मातुलाभावः १८७

ज्ञात्पष्ठे पापे मातुल सुखंन १८८

टीका-नवमे किंवा दशमें भावमे मंगळ पापग्रहसे दृष्टहो तो मामा का सुखनहीहोवे १८७

बुधसे छठे भावमे पापग्रह गयेहोतो मामाका सुख नहीहोवे १८८

मातुल सुखयोग।

षष्ठेशुभदृष्टयाधिक्ये मातुल सुखम् १८९

षष्ठेशुभे मातुल सुखम् १९०

ज्ञेशुभयुते मातुल सुखम् १९१

इतिषष्ठविवेकः

टीका-छठे भावपर शुभग्रहोंकि अधिक दृष्टीहो तो मामाका सुख अच्छा होवेगा १८९

छठेभाव मे शुभग्रह गयेहोतो मामाका सुख होवे १९०

अष्टमेश लग्नेश और दशमेश ये तीनो ग्रह केन्द्रकोण वा लाभ स्थान (१।४।७।१०।९।५।११) में गये हो तो दीर्घायु होवे ४

शनि अपनी स्वराशि किंवा उच्चराशी में स्थित होकर उपचय स्थान (३।६।१०।११) में गया हो १ अथवा अष्टमेश शनि पंचम भाव में गया हो तो दीर्घायु होवे ५

अष्टमेश और लग्नेश अष्टम भाव में गये हो १ अथवा अष्टमेश लग्नेश दोनो लाभ भावमें गये हो २ तो दीर्घायु होवे ६

षष्ठेश और व्ययेश ये दोनो लग्नमें गयेहो १ अथवा दशमेश केंद्र में गयाहो २ किंवा लग्नेश केंद्रमें गया हो ३ तो दीर्घायु होवे ७ इससूत्रमें तीन योग कहे है।

दशमेश अपनी उच्चराशी में स्थित होकर पंचमभाव में गया हो १ अथवा अष्टमेश केंद्र में गया हो २ किंवा केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह गये हो ३ तो दीर्घायु होवे ८ इस सूत्रमें भी तीन योग है।

दशमेश लग्नेश और अष्टमेश ये तीनो ग्रह शनि से युक्त होकर केंद्रस्थान में गये हो तो दीर्घायु होवे ९

सर्वपापग्रह तीसरे ग्यारवे तथा छठे भावमें और सर्व शुभग्रह केंद्रकोण स्थानमें गये हो तो दीर्घायु होवे १०

सर्वशुभग्रह छठे सातमें और आठमें भावमे और सर्व पापग्रह तीसरे छठे ग्यारमे भावमे गये हो तो दीर्घायु होवे ११

लग्नमें गयाहुवा अष्टमेश गुरुशुक्र से दृष्ट हो तो दीर्घायु होवे १२

सर्वशुभ ग्रह केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमें गये हो और पापग्रह पारावतांश में गये हो तो दीर्घायु होवे १३

मध्यायु योग।

पापाः पणफरतुर्ये त्रिस्थ मध्यायुः १४

अङ्गेशेऽबले जीवेकेंद्रकोणे त्रिकेपापे मध्यायुः १५

शुभे केंद्रकोणे मन्देषाष्टिनि षष्ठेष्टमे वा पापे मध्यायुः १६

त्रिकोणे केंद्रे वा मिश्रा मध्यायुः १७

टीका–सर्वपापग्रह पणफर (२।५।८।११) स्थानमें अथवा तीसरे और चतुर्थ भाव मे गये हो तो मध्यायु होवे १४

लग्नेशनिर्बली होवे, गुरु केंद्र किंवा त्रिकोण स्थानमें होवे और पापग्रह ६।८।१२ में भावमे गये हो तो मध्यायु होवे १५

सर्वशुभग्रहकेंद्र या त्रिकोणस्थान में गये हों और शनि बलवान् होकर छठे किंवा आठ में भाव में गया हो १ अथवा पापग्रह बलवान् होकर छठे या आठ में भाव मे गये हो तो मध्यायु होवे १६

केन्द्र त्रिकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में शुभ और पाप (दोनों मिश्र ग्रह गये हो तो मध्यायु होवे १७

अल्पायु-योग ।

सपापे रन्ध्रेशेन्त्ये षष्ठे वा अल्पायुः १८

पापाआपोक्लिमस्था अल्पायुः १९

लग्नाष्टमेशौव्यये रिंगे वाऽल्पायुः २०

धनेशेङ्के रवेर्कजे लाभे इज्याच्छौ अल्पायुः २१

लग्नेर्कजारौ चन्द्रो रन्ध्रगः षष्टे जीवेऽल्पायुः २२

लग्नेशेष्टमे ल्पायुः २३

त्रिकेपापेङ्क्षेशे ऽबलेल्पायुः २४

क्रूरषष्ठयंशे मन्दरन्ध्रेशौ सपापौ पापदृष्टौवाल्पायुः २५

पापेकेन्द्रे शुभदृग्घीनेङ्क्षेशेऽबलेल्पायुः २६

व्ययार्थगौपापौ शुभदृग्घीनौ अल्पायुः २७

टीका-अष्टमेश पापग्रहसे युतहोकर बारवे भाव में किंवा छठे स्थान में गयाहो तो अल्पायु होवे १८

सर्व पापग्रह आपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थानमें गयेहो तोअल्पायु होवे १९

लग्नेश और अष्टमेश ये दोनो ग्रह बारवे भाव मे अथवा छठेभावमें गये होतो अल्पायुहोवे २०

धनेश नवमें भाव में शनि सातवे भावमें और गुरु शुक्र लाभ (ग्यारवें) भाव में गयेहो तो अल्पायुहोवे २१

लग्नमें शनि मंगल, आठमें भावमें चंद्रमा और छठेस्थान मे गुरु गयाहोतो अल्पायुहोवे २२

लग्नेश अष्टम भावमे गयाहोतो अल्पायुहोवे २३

पापग्रह ६।८।१२ में भाव में गयेहो और लग्नेश निर्बली होतो अल्पायुहोवे २४

शनि और अष्टमेश ये दोनो क्रूरषष्ठ्यंशमें गयेहो और पापग्रहो सें युत किंवा दृष्टहोवेतो अल्पायु होवे २५

केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गयेहुवे सर्व पापग्रहोको शुभग्रह देखते नहींहो और लग्नेश बलहीन होतो अल्पायु होवे २६

बारवे और दुसरे भाव में पापग्रह गये हो और उनको शुभग्रह नही देखते होतो अल्पायु होवे २७

सद्यो मृत्यु योग।

लग्नेराहुः षष्ठाष्टमे चन्द्रे सद्योमृत्युः २८

टीका-लग्नमे राहु और छठे किंवा आठ में भाव मे चंद्रमा गयाहो तो तुरंत मृत्युहोवेगा २८

वर्षांतरे मृत्युयोग.

मन्दार्कारा: षष्ठेष्टमे वर्षान्तरे मृतिः २९

टीका-शनि, रवि, और मंगल छठे आठमे भाव में गये होतो एक वर्षकी उमर होनेके पश्चात् मृत्यु होवे २९

अर्कावदे मृत्यु योग.

सूर्यर्क्षेमन्देमन्दर्क्षेर्केर्काब्दे मृतिः ३०

टीका-सूर्यकी राशी (५) मे शनि और शनिकी राशी (१०।११) में रवि गया हो तो बार में वर्ष में मरण होवेगा ३०

एवं सर्वार्थ चिंतामणीमें योगायुके अन्य विशेष योग लिखे है उन-काभी आयुर्दायमें विचारकरना आवश्यक है अतएव उन योगोंको उधृत करने में आते हैं।

चंद्रमाकी राशीका स्वामि सूर्य पापग्रहसे युक्त होकर ६।८ मे भाव में जावे शुभग्रहोंकी दृष्टी से रहित हो और लग्नेश आपोक्लिमस्था-नमें ३।६।९।१२ गया हो तो १६ वर्ष मे मृत्यु होवे १

लग्नेशकी राशी में अष्टमेश और अष्टमेशकी राशीमे लग्नेश हो शुभ ग्रहसे युक्त न हो अथवा लग्नेश अष्टमेश ६।१२ भावमेंपंचमसे युक्तहोतो १८ मे वर्ष मरणहोवेगा २

केंद्रस्थान मे पापग्रह शुभग्रहोंकि दृष्टिसे रहितहो और चंद्रमा १२ मेभावमे गयाहोतो २० मे वर्ष मरणहोवे ३

बृहस्पतिसे युत सूर्य ४ कर्क राशी के लग्नमे गया हो और अष्टमेश केंद्र ने हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ४

राहुसे युत चंद्रमा ७ मे तथा ८ में भाव में गया हो और लग्न में गुरु हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ५

दो पापग्रहोंके बीचमें गया हुवा लग्नेश शुभ ग्रहसे युत न हो और जिस लग्न में पिता का जन्म होवे उसी राशी के लग्न में जन्म हुवा हो तो २५ मे वर्ष मरण होवे ६

अपनि शत्रु राशि में गया हुवा शनि लग्नमें गया हो और सर्व शुभ ग्रह ३।६।९।१२ भाव में हो तो २६ वा २७ में वर्ष मरण होवे ७

रवि और चंद्रमा शनिसे संबंधी होकर अष्टम भाव मे गये हो तो२९ में वर्ष मरण होवे ८

पापग्रह १।८।७ में भावमें गये हो और शुभग्रह पणफर वा आपोक्लिमस्थानमें हो तो २८ मे वर्ष मरण होवे ९

लग्नेश और अष्टमेश के बीचमें चंद्रमा गया हो और गुरु बारहवे भावमे हो तो २७ वा ३० में वर्ष मरण होवे १०

अष्टमेश पापग्रह युतसे और पापग्रहो से दृष्टहोवे अथवा लग्नेशअष्टम में गयाहोतो २८ मे वर्ष मरण होवे ११

अष्टमेश बलवान होकर केंद्र मे अथवा लग्नमे गयाहोतो ३० अथवा ३२ मे वर्ष मरण होवे १२

चंद्रमा सूर्य से युतहो अष्टमेश केंद्रमेंहो, पापग्रह अष्टमभावमेंहो, और पापग्रह से युक्त कोई भी निर्बली ग्रह लग्नमें गयाहोतो ३२ मे वर्ष मृत्यु होवे १३

बुध सहित चंद्रमा बारवें भाव में हो और निर्बली अष्टमेश शुभग्रहसे युत वा दृष्ट होकर केंद्रस्थानमें गया हो तो ३० में वर्ष मृत्यु होवे १४

अष्टमेश १।२।१ भावों मे से किसी भाव में हो और लग्नेश अष्टम स्थानमें पापयुत दृष्ट हो तो २४ में वर्षमेंही मृत्यु होवे १५

अष्टमेश लग्नमें और लग्नेश बलरहित होवे तो ३० वर्षकी ही आयु होवे १६

चंद्रमा और लग्नेश पापग्रहोंसे दृष्ट तथा बलहीन होकर आपोक्लि. मस्थान मे गये हो तो ३० वर्ष से अधिक नही जीवे १७

गुरुशुक्र केंद्र मे हो पापयुत लग्नेश आपोक्लिम में हो और संध्या कालमें जन्म होवे तो ३६ वर्षकी परमायु होवे १८

पापग्रहोंके बीचमें गयाहुवा शत्रुराशी में स्थित निर्बली रवि लग्नमें गया हो और शुभग्रह उसको नही देखते हो तो ३६ वर्षकी परमायु होवे १९

लग्न में चंद्रमंगलगयेहो केंद्र तथा अष्टम भावमें शुभग्रह नहो और लग्न मे गलिक हो तो ३६ वर्षकी परमायु होवे २०

मंगलकी राशी (१।८) मे गयाहुवा चंद्रमा लग्न में पापग्रहोंसे दृष्ट हो और शुभग्रह केंद्र मे नही गये हो तो ३३ वर्षकी आयु होवे२१

अष्टमेश पापग्रह चंद्रमासे युत होकर केंद्र किंवा त्रिकोणस्थानमें गया हो और वह दशमस्थान स्थितपापग्रहोंसे दृष्ट हो तो ३३ वर्षकी आयुहोवे २२

चंद्रमा सेयुक्त शनि लग्न में गया हो और शुभराशी में मंगल हो तो ३३ वर्षकी आयु होवे २३

पापग्रहोके बीचमें लग्न गया हो और लग्नेश मिथुनराशीका होवे और गुरु चतुर्थभाव मे हो तो ३७ वर्षकी आयु होवे २४

मंगलसे युक्त अष्टमेश लग्न में गया हो यद्वास्थिरराशी में गयाहुवा मंगल आठवें वा बारह में भावमे स्थितहो तो ४२ मे वर्ष मरण होवे२५

केंद्र मे गुरु, दश मे शनि, और लग्नचरराशीका हो तो ४४ वर्षकी आयु होवे २६

उच्चराशीका शनि लग्न मे, गुरुसप्तमभावमें, और शनि दशमे, भावमे गया होतो ४४ वर्ष की आयुहोवे २७

लग्नेश पापग्रहसे युतहोकर अष्टम भावमें गयाहो और शुभग्रह केंद्र मे नहीहोतो ४० वर्ष की आयुहोवे २८

पापग्रह से युक्तलग्नेश अष्टमभावमे और पापग्रहसे युत अष्टमेश छठे भाव मे बलवान होवे वा शुभदृष्टि रहित होतो ४५ मे वर्षमेमरण होवे २९

मेषराशी का पूर्ण चंद्रमा लग्नमे शुभग्रहोसे दृष्टहोवेतो ४८ मे वर्ष मृत्यु होवे ३०

किसीभी ग्रहसे युक्तहोकर शनिलग्न में गयाहो और चंद्रमा ८।६।१२ मे भावमे होतो ५२ मे वर्ष मरण होवे ३१

धनराशिकागुरु लग्नमें गयाहो और राहुसे युक्त मंगल आठवें भावमें होतो ५७मे वर्ष मृत्यु होवे ३२

अष्टमेश सप्तम भावमे और पापयुत चंद्रमा ६।८ मे भावमे गयाहो तो ५८ में वर्ष मृत्यु होवे ३३

अष्टमेश से युक्त गुरुलग्नमे गयाहो अथवा कुंभराशीका गुरु पापग्रह सहित केंद्रमे होतो ६० मे वर्ष मृत्युहोवे ३४

लग्नमे शनि, चतुर्थ मे चंद्रमा, सप्तममे मंगल, दशममें सूर्य गयाहो और बुध गुरु शुक्र मेसे किसीएक से भी युक्तहो तो राजाहोवे ६० वर्ष पर्यंत जीवितरहे ३५

लग्नमे गयाहुवा शुक्र, चंद्र बुध और गुरुसे दृष्टहोवे तथा पंचम भावमे गुरु गयाहोतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३६

लग्नमे शुक्र केंद्रमें बुध शनि और ३।११ मे भावमेंपरमोच्चराशी गत ग्रह गया, होतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३७

लग्नेश तथा द्रेष्काण होरा लग्नेश ये दोनो आठमे भाव में हो और अष्टमेश केंद्रमे गया होतो ६६ किंवा ६० वर्ष की आयुहोवे ३८

चंद्रमा सहित रवि दशमे भावमें, शनि लाभमें और गुरु चतुर्थ भाव में गयाहोतो ६८ वर्ष की आयुहोवे ३९

लग्नमेंगुरु व मीन राशी में बुध सूर्य शनिकायोग किसी भी भाव में होवे और बारवे भाव में चंद्रमा गया हो तो ६६ वर्षकी आयु होवे ४०

लग्न में चंद्रमा, कर्क राशीका नीचका शनि दशमें, और सातवें भावमें सूर्य गया हो तो ६५ वर्षकी आयु होवे ४१

मीनराशीका शनि केंद्र वा त्रिकोणमें हो और शुभ ग्रह केंद्र में हो अथवा बुध सहित सूर्य केंद्रमे गया हो तो ७० वर्ष पर्यंत जीवितरहे ४२

बलवान् शुभग्रह केंद्र म गये हो और अष्टम मे कोइ शुभग्रह नही होवे तथा लग्नेश पापग्रहों से दृष्ट नही हो तो ७० वर्ष तक जीवित रहे४३

पंचम भावमें मंगल नीचराशी में शनि और सप्तमभावमें सूर्य गया हो तो ७० वर्षकी आय होवे ४४

सर्व शुभाशुभ ग्रह लग्न से छठे भावपर्यंत हो अथवा सप्तम सेव्यय पर्यंत क्रम से गये हो तो ७० वर्ष से ऊपर दीर्घायु होवे ४५

लग्नसे छठे भाव पर्यंत बलवान् सर्वशुभग्रह और सप्तम भाव से १२ भावमें पर्यंत बलवान् सर्व पापग्रह गये हो तो ८० वर्ष मे मृत्यु होवे४६

चंद्रमा से युत होकर गुरुकेंद्रमें शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे और अन्य सर्व ग्रह दशम भाव से ऊपर के भाव (११।१२) में गयेहोतो ८६ में वर्ष मृत्युहोवे ४७

केंद्र में शुभग्रह तथैव अष्टमभाव के विना अन्यभावमे पापग्रहहो और लग्नसे छठे भावमें चंद्रमा गयाहोतो ८६ मे वर्ष मृत्युहोवे ४८

लग्नेशसे केंद्रस्थानमें गुरुगयाहो और (३।६।११।१२) में भावमें पापग्रह स्थित होतो १०० सो वर्ष जीवितरहे ४९

केवल गुरु लग्नेशसे केंद्रमे गयाहोतो ७० वर्ष की आयुहोवे ५०

तीनग्रह अपनी उच्चराशीमेंहो वृषभ किंवा कर्क राशीके लग्नमें गुरुहो मकरका मंगलहो और अन्यसर्व ग्रहकेंद्र में गयेहोतो परमा १२० वर्षकी होवे ५१ इत्यादि और भी अनेक योगहे वे ग्रंथांतरोसे जानना।

सिंहान्मृत्युयोग।

चंद्रार्कौषष्ठेऽष्टमे सिंहान्मृतिः ३१

तुर्येभौमे खेर्कजे सिंहान्मृतिः ३२

टीका-सूर्य चंद्रमाकायोग छठे किंवा आठमे भावमें होतो सिंहसे मृत्युहोवेगा ३१

चतुर्थ भावमें मंगल और दशमे भावमें शनिगयाहो तो सिंहसे मृत्यु होवेगा ३२

सर्पान्मृतियोग.

राहुच्छौखे सर्पान्मृतिः ३३

राव्हर्कार्यिंरोपापेक्षितौ सर्पान्मृतिः ३४
खेर्केसुखेभौमे मन्देष्टमे सर्पान्मृतिः ३५
द्यूनेशन्यर्कराहुषुसर्पपीडातो मृत्युः ३६

टीका-राहु और शुक्रका योग दशमें भावमें होतो सर्प दंश से मृत्यु होवे ३३
कारकांशलग्नमें गयाहुवासूर्य पापग्रहसैं दृष्टहोतो सर्पदंशसें मृत्युहोवे ३४
दशमें रवि चतुर्थभावमें मंगल और आठमें शनिगयाहोतो सर्पदंशसें मृत्युहोवे ३५
शनि रवि और राहु सातमें भावमें गयेहोतो सर्पदंशसें मृत्युहोवे ३६

शस्त्रान्मृतियोग।

कुजार्कजावंगे चाष्टमेचंद्रेशस्त्रान्मृतिः ३७
केतुसुखेशौषष्ठे शस्त्रेणमृत्युः ३८
पापयोर्मध्ये कुजर्क्षगेचंद्रे शस्त्रेणाग्निना वा मृत्युः ३९
रंध्रस्थौ यमारौ राहुयुतौ शस्त्रतोमृत्युः ४०
शुकर्क्षे चन्द्रमन्दौ शस्त्रतोमृत्युः ४१

टीका-लग्नमें शनि मंगल और अष्टम भाव में चंद्रमा गया हो तो शस्त्र से मृत्यु होवे ३७
सुखेश और केतु छठे भाव में गये हो तो शस्त्र सें (तलवार बंदूक छुरी कटारी आदिके लगने से) मृत्यु होवे ३८
मंगलकी राशी (१।८) में गया हुवा चंद्रमा पापग्रहों के बीचमें स्थितहो तो शस्त्र से अथवा अग्निमे जलजानेसे मृत्यु होवे ३९
आठमेंभावमे शनिमंगल राहुसे युक्त हो तो शस्त्रसें मृत्यु होवे ४०
चन्द्रशनि, शुक्रकीराशी (२।७) मे गये हो तो शस्त्र से मृत्यु होवे ४१

द्रवदंशान्मृति योग।

जीवारौखेर्केद्यूनेश्वदंशान्मृत्युः ४२

टीका-दशमें गुरुमंगल और सातमें भावमें रवि गया हो तो कुत्तेके काटने से मृत्यु होवे ४२

राजगेहे मृत्यु योग ।

द्वादशांशे खेसुखे सूर्ये राजगेहे मृत्युः ४३

टीका-द्वादशांश कुंडली मे दशमे तथा चतुर्थ भाव में सूर्य गया हो तोराजाके मकानमें मृत्यु होवे ४३

कुमृत्यु योग ।

कुजेन्त्ये मंदेष्टमे कुमृत्युः ४४

भौमेरिगेदुर्मृत्युः ४५

टीका-बारमें भाव में मंगल और आठ में शनि गया हो तो खरा रीतसे मरण होवे ४४

मंगलछठे गया हो तो दुर्मरण होवे ४५

तीर्थे वा पर्वते मरण योग ।

राहुसूर्ययोगे तीर्थे वा पर्वते मृत्युः ४६

जीवेङ्के तीर्थे मृत्युः ४७

ज्ञाच्छौ धर्मे द्वारावत्यांमृत्युः ४८

ज्ञार्कौधर्मे मार्गे वा शिवालये मृत्युः४९

लग्नेधर्मेशे तीर्थे मृत्युः ५०

चंद्रधर्मेशावष्टमे सन्मृत्युः ५१

सौम्येरंध्रे शुभदृष्टे वा धर्मपे सौम्ये तीर्थेमृत्युः ५२

टीका-राहु और सूर्यका एक राशी में योग हो तो तीर्थ में वा पर्वतप मरण होवे ४६

नवमें भावमें गुरु गयाहोतो तीर्थमें मरण होवे ४७

बुध शुक्र नवमें भावमें गये होतो द्वारावतीपुरी (द्वारीका) मरण होवे ४८

बुध सूर्य नवमें भाव में गयेहोतो मार्ग में किंवा शिवालयममे मरण होवे ४९

धर्मेश लग्नमे गयाहोतो तीर्थमे मरण होवे ५०

मंद और नवमेश ये दोनो आठमेभाव मे गये होतो समरगहांते (बिनाकष्टपावे अच्छी तरह मरणहोवेगा) ५१

अष्टम भाव मे गयाहुवा बुध शुभग्रह से दृष्टहो अथवा नवमेश बुधहोतो तीर्थमे मरण होवेगा ५२

कफादातिसाराद्वामृत्यु योग।

भौमेरिगेर्कदृष्टे कफादतिसाराद्वामृत्युः ५३

टीका–छठे भाव मे गयाहुवा मंगल रविसे दृष्ट हो तो कफसे किंवा अतिसाररोग से मरण होवे ५३

शकटान्मरण योग।

मन्देष्टमे शकटान्मृत्युः ५४

टीका–शनि आठमे भावमें गया हो तो गाड़ी से मरण होवे ५४ यदि यह शनि पापग्रहसे युत दृष्ट हो तो यह योग बलवान् समझना केवल शनिके ८ आठमे होने से फल मिलना असंभव है।

कारागारे वा शूलेनमृत्यु योग.

ज्ञार्कजावष्टमे कारागारे शूलेवा मृत्यु ५५

टीका–बुध शनि का अष्टम भावमे योग हो तो जहलखानेमे किंवा शूल (शूलीपर चढनेसें) मृत्यु होवे ५५

वर्तमान समयमे शुलीपर चढानेंकी शिक्षाके बदले फांसीकी सजाहु आ करतीहे।

शय्यायां वा अंतराले मरण योग

शुक्रज्ञावष्टमे शय्यायां वान्तराले मृत्युः ५६

टीका–शुक्र और बुध आठ मे भाव में गये होतो पलंगपर बिछोनेमे अथवा अंतराल में (मंजिलपर) मरणहोवे ५६

विभुतिरोगान्मरण योग।

मन्दार्क योगे विभूति रोगान्मृत्युः ५७

टीका–शनि रवि का योग आठमें भावमें होतो विभुति रोगसेमरण होवे५७

उर्ध्वबंधनान्मरणयोग।

मन्दारौ मृतिगौ उर्ध्ववंधनान्मृत्युः ५८

धनाङ्गपौत्रिके सराहु केतू उद्बंधनान्मृत्युः ५९

टीका-शनि मंगल आठ मे भावमें गये हो तो ऊंचा बंधनेसे मरण होवे५८

धनेश और लग्नेश ये दोनो राहु किंवा केतुसे युतहोकर ६।८।१२ भाव में गये हो तो उद्बंधन (फाशीसे) मरण होवे ५९

विद्युत्पाततो मृत्यु योग ।

मन्दर्क्षेर्केङ्गेशयुते विद्युत्पातान्मृत्युः ६०

टीका-शनिकी राशी (१०।११) में गयाहुआ रवि लग्नेशसें युक्त होवो बिजली के गिरनेसे मरण होवे ६०

वाहनान्मरण योग ।

सुखेशेषष्ठे मन्दयुते यानान्मृत्युः ६१

भौमेंबुगे खेर्के वाहनपाततो मृत्युः ६२

रंध्रांगपौ तुर्यपयुतौ वाहनतो मृत्युः ६३

टीका—सुखेश छठे भावमे शनि से युक्त होवो वाहनपरसे पड़ने से मरण होवे ६१

मंगल चतुर्थ भावमे और रवि दशमे भावमे गयाहो तो वाहनपर से पड़ने से मरण होवे ६२

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो चतुर्थेश से युक्त होतो वाहन से मरण होवे ६३

वाहन-हाथी, घोड़ा, गाड़ी, रेल, मोटर, साइकल, उंट, वगेरा वाहन गिनेजाते है।

स्वदेशे विदेशे वा मार्गे मरण योग ।

चरर्क्षेङ्गे स्वदेशे द्विस्वभावेङ्गे विदेशेऽन्यथा मार्गे मृत्युः ६४

टीका-जन्म लग्न चरराशीकाहोतो स्वदेशमें द्विस्वभाव राशी ३।६।९।१२ का होतो विदेश में और स्थिर राशी २।५।८।११ काहोतो मार्गमे मरण होवेगा ६४

चौरान्मरण योग ।

राहुतुर्येशौषष्ठे चौरन्मृत्युः ६५

रन्ध्रांगपौषष्ठे सराहुकेतू चौरशस्त्रघाततोमृत्युः ६६

टीका-चतुर्थेश राहुसे युतहोकर छठे भावमे गयाहोतो चोरसे मरण होवेगा ६५

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो राहु किंवा केतुसे युक्तहोकर छठे भावमे गये होतो चोरके शस्त्रघातसे मरणहोवे ६६

शिलाप्रपातान्मरण योग.

अर्कारौखेवा सुखे शिलाप्रपातान्मृत्युः ६७

टीका-रवि मंगल दशमें किंवा चतुर्थ भाव में गये होतो शिलाके पड़नेसें मरणहोवे ६७

कूपपातान्मरण योग।

सौरेन्द्वारैः क्रमाद्बन्धुस्त्वकर्मगैः कूपपातान्मृत्युः ६८

चंद्रार्कौ वुभयोदये जलनिमज्जनान्मृत्युः ६९

टीका-चतुर्थ भाव मे शनि, सातमें चन्द्रमा, दशमे मंगल क्रमसेहोवे होतो कुए में गिरनेसे मरण होवेगा ६८

चन्द्रमाओरसूर्यकायोगमीनराशिमेंहोतोजलमेंडूबजानेसेमरणहोवेगा।

स्वजनेन हनन योग।

कन्यास्थ चंद्रार्कौ पापदृष्टौ स्वजनेन हन्यते ७०

टीका-कन्याराशि में गये हुवे चंद्र रवि पापग्रहोसे दृष्टहोतो अपने कुटुम्ब के (सगोत्रके) मनुष्यके हात से मारनेके कारण मरणहोवेगा

जलोदरेण मरण योग।

मृगेचंद्रेकर्केमन्दे जलोदरेण मृत्युः ७१

टीका-मकर राशीमें चंद्रमा और कर्कराशी में शनि गयाहो तो जलोदर रोग से मरण होवे ७१

रक्तोत्थशोषरोगान्मरणयोग।

कन्यांगेचंद्रे पापयोर्मध्ये रक्तोत्थशोषान्मृत्युः ७२

टीका-कन्या राशी में गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंके बीच में हो तो रुधिर जन्य शोषरोग से मरणहोवे ७२

रज्जु अग्नि पाताद्यमरणम योग.

सौरर्क्षेचंद्रेपापयोर्मध्येरज्ज्वग्निपाते मृत्युः ७३

टीका-शनि की राशी (१०।११) मे गया हुवा चंद्रमा पापग्रहो के बीचमे तो रस्सी से वा अग्नी से किंवा गिरजाने से मरण होवेगा ७३

स्त्री हेतुक मरण होगा।

सपापे इन्दावस्ते मेषेशुक्रे सूर्येङ्गे स्त्री हेतुक मृत्युः ७४

टीका--सप्तम भावमे पापग्रह से युक्त चंद्रमा, मेष राशी मे शुक्र और ग्नमें सूर्य गयाहोतो स्त्रीके कारण मृत्यु होवेगा ७४

शूलरोगेण मृत्यु योग।

सूर्यारौतुर्ये खेयमे शूलेन मृत्युः ७५

त्रिकोणायगैस्सक्षीणेन्दु पापैः शूलेन मृत्युः ७६

तुर्येऽर्के खेकुजे क्षीणेन्दुदृष्टे शूलेन मृत्युः ७७

टीका-चतुर्थ भाव में रवि मंगल और दशमे भाव में शनि गयाहोतो ल रोगसे मृत्युहोवेगा ७५

क्षीण चंद्रमा से युक्त होकर पापग्रह नवमें पांचमें किंवा लग्नमें गये तो शूलरोग से मृत्यु होवे ७६

चतुर्थ भाव में रवि और दशमे मंगल गया हो इनको क्षीण चंद्रमा खता होतो शूलरोग से मृत्यु होवे ७७

काष्ठादि घाततो मृत्युयोग।

खेभौमे तुर्येऽर्के मन्ददृष्टे काष्ठाभिघाततो मृत्युः ७८

रंध्रखाम्बुतनुगैः क्रमात्क्षीणेन्द्वारार्कजार्के र्लगुटघाततो मृत्युः ७९

क्षीणेन्द्वारार्कजार्कैः खाङ्कायेषुगै धूमाग्निबन्धनकाष्ठादिप्रहारान्मृत्युः ८०

खास्ताम्बुगै मेन्दार्कारैरायुधाग्नि नृप कोपतो मृत्युः ८१

टीका-दशमें मंगल, व चतुर्थ भावमे रवि गयाहो और इनको शनिदे

सताहोतो लकडीकी चोटलगने से मृत्युहोवे ७८

आठमें भावमें क्षीणचंद्रमा, दशमे मंगल, चतुर्थ भावमे शनि, और लग्नमे रवि क्रम से गयेहोतो लकडी लगने से मृत्युहोवेगा ७९

दशमे क्षीण चंद्रमा नवमें मंगल ग्यार मे भान में शनि और पंचम भावमे रवि गयेहोतो धुएँसे घयराजाने के कारण या आग्नी मे मलजा ने से या वधन मे पड़ने से किंवा काष्टादिक के प्रहारसे (घावसे) मरण होवेगा ८०

दशमे शनि सात मे रवि और सुखमे मंगल गयाहोतो शस्त्रसे अग्नि से किंवाराजाके कोपसे मरणहोवेगा ८१

क्रमिपाततो मरण योग।

मन्देन्दारे र्व्यंछिघ दशमग च्छिद्रे क्रमिपाततो मृत्युः ८२

टीका–धनमें शनि सुखमे क्षीणचंद्रमा दशमें मंगल गयाहोतो शस्र के छिद्रोमे कीड़े पड़जानेसे मरणहोवे ८२

यंत्रपीड़नान्मरण योग।

चूनेभौमे चंद्रार्कजावङ्गे यंत्रपीड़नान्मृत्युः ८३

टीका–सातमें मंगल और लग्न मे चंद्र शनि गये होतो किसी यंत्रमे दबजानेसे किंवा कटजानेसे मरण होवे ८३

विण्मध्ये पतितस्य मरणयोग।

भौमार्किचन्द्रैस्तुलाजयमर्क्षगैर्विण्मध्येपतितस्यमृत्युः ८४

सप्तांबुव्योमगैः सूर्यारक्षीणेन्दु भिर्विण्मध्येपतितस्यमृत्युः८५

टीका–तुलराशि मे मंगल मेषराशीमेशनि,शनिकीराशि (१०।११) मे चंद्रमा गये होतो विष्टामें पड़ेहुवे का मरण होवे (मरते समय विष्टामे पडारहे और मरण होवे) ८४

सातमे रवि चतुर्थ मे मंगल और दशमे क्षीण चंद्रमा गयेहोतो विष्टा मे पड़े हुवे का मरण होवेगा ८५

प्रेतः पक्षिभिर्भेस्यति योग।

सूर्यारावस्ते मन्देष्टमे क्षीणेन्दौतुर्ये पक्षिभिर्भेस्यतेप्रेतः ८६

टीका–रवि मंगल सात मे, शनि आठ में, और क्षीण चंद्रमा चतुर्थ

भावमे गये होतो उस के देहको पक्षि भक्षण करेंगे अर्थात् उसके शवका अग्नि संस्कार नहीं होवेगा और जंगल मे पड़ेहुवे को पक्षीखावेंगे ८६

शैल शिखरा शनि कुड्यपाततो मरण योग ।

चन्द्रेनारयमैनेवायात्मजाष्टमगैःशैलशिखराशनिकुड्यपाततो मृत्युः ८७

रन्ध्रलग्नाधिपौ वबलौ भौमषष्ठेशयुतौ शैल शिखराशनिकुड्यपाततो मृत्युः ८८

टीका-नवमेक्षीण चंद्रमा, लग्न में रवि, पांच में मंगल, और आठ में शनि गये हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे, बिजली वा बिजली के संबंधी अशनि उल्का आदिके पड़ने से किंवा भीतके गिरनेसेनीचे दबके मरण होवेगा ८७

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो निर्बली होकर मंगल और षष्ठेश से युक्त हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे वा बिजलीके पडनेसे किंवा दीवालके गिरनेसे दबके मरण होवेगा ८८

रणे तथा शत्रुकोपतः मृत्यु योग ।

रन्ध्रेशुभः पापारिवीक्षितोरणे मृत्युः ८९

निद्रितः शयानो वा पापयुतोष्टमे शत्रुकोपतो मृत्यु ९०

टीका-अष्टमभावमे गयाहुवा शुभग्रह पापग्रह से किंवा अपने शत्रु ग्रहसे दृष्ट हो तो संग्राम मे मरण होवे ८९ सर्वार्थ मे लिखा है कि षष्ठेश अष्टमेश किंवा मंगल पराक्रमेश से युक्त हो और शनि गुलिक से युतहोकर क्रूरांशक में स्थित हो तो युद्धसे मरण होवे १

शनि जिसके द्रेष्काण में गया है वहग्रह मंगल से युक्त वा दृष्ट हो और मंगलकी राशीमें वा नवांशमेंही गयाहो तो युद्धसे मरण होवे २

निद्रा तथा शयनावस्था मे गयाहुवा पापग्रह अष्टम भावमें गया हो तो शत्रुके कोपसे मृत्यु होवे ९०

वृषभेण मृत्यु योग ।

भौमार्कदृष्टं लग्नं शुक्रेज्यावदृष्टं चेद्वृषभेण मृत्युः ९१

टीका-मंगल और रवि से दृष्ट जन्म लग्न यदि गुरु शुक्रसे दृष्ट न हो तो वृषभ से मरण होवेगा ९१

वृक्षपाततो मृत्युयोग

मन्दार्कौलग्ने राहु दृष्टौ वृक्षपाततो मृत्युः ९२

टीका-लग्नमें गये हुवे शनि रवि राहुसे दृष्ट हो तो वृक्षके गिरनेसे मरण होवेगा ९२

व्याघ्रतो मरण योग।

जीवर्क्षज्ञे मंदर्क्षे कुजे व्याघ्रतो मृत्युः ९३

टीका-गुरुकी राशी ९।१२ में बुध और शनिकी राशी १०।११ में मंगल गयाहो तो सिंहकी जातिके छोटे बाघ से मरण होवे ९३

शरेण मरण योग।

धर्मपापाः शुभादृष्टाः शरेण मृत्युः ९४

टीका-नवम भाव मे गयेहुवे पापग्रह शुभग्रहसे अदृष्टहो तो शरसे (बाणसे) मरण होवेगा ९४

विषेण मरण योग।

चंद्रज्ञौ षष्ठाष्टमे वा विषेण मृत्युः ९५

टीका-छठे किंवा आठ मे भाव मे चंद्र बुध गये होंतो विष (जहरखाने वा खिलाने) से मरण होवे ९५

गजतः मरण योग

पुष्पवंतौ षष्ठाष्टमे वा गजतो मृत्युः ९६

टीका-छठे अथवा आठमे भाव मे रवि चंद्रकायोग होतो गजसे मरण होवेगा ९६

रंध्रगत ग्रहदोष वशान्मरणयोग।

रंध्रेरवौवन्हे श्चंद्रेजलयोगा त्क्रौमेशस्त्रतो बुधेज्वरतो गुरौ

त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया शनौ तृषया मृत्युः ९७

योबलवान्निधनंपश्यते तद्धातुकोपतोमृत्युः ९८

उक्तयोगाभावेष्टम भावाधिष्ठितत्र्यंशेश स्योक्ताग्न्यम्ब्वादि स्वगुण हेतुतोमृत्युः ९९

निधनग द्रेष्काणतोमृत्युः १००

टीका-आठमें भावमें यदि रवि गयाहोतो अग्निमें जलनेसे, चंद्रगया होतो जलमें डूबने से, वा जलके संबधसे, मंगल गयाहोतो शस्त्रसे, बुध गयाहोतो ज्वर, की पीडासे, गुरु गयाहोतो सन्निपात दोषसे, शुक्रगयाहो तो क्षुधाके दुखः से, शनिगयाहोतो तृषार्त होनेसे मरण होवेगा ९७

यदिकोई भी ग्रह आठ में भावमें नहीं गयाहोतो जो बलवान ग्रह अष्टम भावको देखताहो उसीकी उपरोक्त धातु के कोपसे मरण होवेगा अर्थात् यदि बलवान् रवि अष्टम भावको देखता हो तो अग्नि से, चंद्र देखताहो तो जल से, मंगल देखता हो तो शस्त्रसे, बुध देखता हो तो ज्वर से गुरुदेखताहो तो सन्निपातरोगसे, शुक्र देखता हो तो क्षुधासे, शनि देखता हो तो तृषासे मृत्यु होवेगा ९८

यदि अष्टम भावमें कोई भीग्रह गया नहो या कोई ग्रह अष्टम भावको देखता भि नहो तो अष्टम भावमें जिसराशीका द्रेष्काण हो उसके स्वामि के अग्नि जल शस्त्रादिदोषके अनुसार मरण होवेगा अर्थात् यदि अष्टम भावके द्रेष्काण का स्वामी रवि होतो अग्निसे, चंद्र होतो जलसे, मंगल होतो शस्त्रसे, बुधहोतो ज्वरसे गुरुहोतो त्रिदोषसे, शुक्रहोतो क्षुधासे शनि होतो तृषासे मरण होवेगा ९९

अथवा अष्टमभावमें जोद्रेष्काणहो उसकेअनुसार मरणहोवेगा १००

अष्टमभावमें गईहुई प्रत्येक राशिके ३ तीन द्रेष्काणो काफल भिन्नर नीचे लिखाहै तदनुसार जानना।

द्रेष्काण फल।

मेषाद्यत्र्यंशे प्लीहजो वा विषजो वा पित्तजो मध्ये जलजो न्त्येकूपादिपाततो मृत्युः १०१

वृषादिम्यंशे खराश्वादितो मध्ये पित्ताग्निचोरतो न्त्येउच्च स्थलादश्वादितो मृत्युः १०२

गुग्माद्ये वातशूलतो मध्येत्रिदोषा दन्त्येयानपर्वत पाततो
वारण्ये मृत्युः १०३

कर्काद्येऽपेयपानारकण्टकाद्यामध्ये विषातिसारतोन्त्ये महा-
भ्रमप्लीह गुल्मादितो मृत्युः १०४

सिंहाद्ये विषांबुरोगेण मध्ये श्वसनाम्बुरोगेणान्त्येयानपी-
डाविपशस्त्रेण मृत्युः १०५

कन्याद्ये वातमस्तकरोगेण मध्येदुर्गाद्रिपाताद्गृरकोरवोन्त्ये
खरोष्ट्र शस्त्राम्बुपाततो मृत्युः १०६

तुलाद्ये पतनात्स्त्रीतः पशुतो मध्येजठररोगेणान्त्येप्याव
जलान्मृत्युः १०७

अल्याद्ये विषशस्त्रतो मध्ये भारश्रमाद्वा काष्ठिविज रोगवोन्त्ये
लोष्टकाष्ट पाषणतो मृत्युः १०८

चापाद्ये वातगुदामया न्मध्ये विषबाणाभ्यामन्त्ये जलजल
चार्युदरामयान्मृत्युः १०९

मृगाद्ये सिंहवराह वृश्चिकतो मध्ये भुजंगतोन्त्ये चौराग्नि
शस्त्रज्वरतः मृत्युः ११०

कुम्भाद्ये हृयक्षजोदर व्याधितो मध्येगुह्यरोगादन्त्येविषा-
न्मृत्युः १११

मीनाद्येग्रहिणी प्रमेहगुल्मजो मध्येजलोदरगजभाद्वा
न्तेप्रभेदा दन्त्ये कुरोगा न्मृत्युः ११२

टीका-मेषराशीके प्रथम द्रेष्काणमें अष्टमभावहो तो क्षीहसे (क्षिये
के रोगसे) वा विषसे अथवा पित्तके रोगसे मध्यद्रेष्काणहो तो मद्यमें

डूबनेसे वा जलके संबंधसे अंत्यद्रेष्काणहो तो कुआ बावड़ी तालाव नदी वगैरामें गिरजानेसे मृत्यु होवेगा १०१

अष्टमभाव वृषभ राशीके प्रथम द्रेष्काणमेंहो तो गधा घोड़ा आदि चतुष्पद परसे पड़नेसे वा इनके मारनेसे मध्यद्रेष्काणमेंहो तो पित्तके कोपसे अग्निमे जलनेसे चोरकी चपेटसे तीसरे द्रेष्काणमेंहो तो ऊंची जगहसे (पहाड़ ऊंचे मकान आदि परसे गिरपड़ने से) वा कुत्ते बिल्ली बन्दर सियाल वगहरे आदि के काटनेसे मरण होवेगा १०२

अष्टम भाव मिथुनराशिके प्रथम द्रेष्काणमेंहो तो ८४ प्रकारके वात संबंधी वायुरोगसे वा श्वाससे [दमेके रोगसे] मध्यद्रेष्काणमेंहो तो त्रिदोषकेकोपसे [सन्निपातसे]तीसरे द्रेष्काणमेंहो तो गाड़ि घोड़ा हाथी मोटर साईकल रेल आदि वाहनपरसे गिरजानेसे वा इनकी लगनेसे वा पर्वतपरसे गिरपड़नेसे अथवा पर्वतका कोई भाग अपने ऊपर गिरपड़ने से वा जंगलमें मरण होवेग। १०३

अष्टम भाव कर्क राशी के प्रथम द्रेष्काण मे हो तो नही पीने योग्य पीनेकी वस्तुको पानकरने से अथवा कांटो से बिंधजाने से मध्यद्रेष्काण मे हो तो विषसे वा अतिसाररोगसे अंत्यद्रेष्काण में हो तो चक्र आनेके महारोगसे प्लीहरोगसे वा गोलके रोगसे वा विशूचिका (हेजा) आदिरोगसे मरण होवेगा १०४

अष्टमभाव सिंहराशी के प्रथम द्रेष्काणमें हो तोविषसे वा जहरीलि हवाकेमहामारी (प्लेग) हेजा आदिरोगसे तथा जलोदर अथवा जल संबंधी विकारके रोगसे मध्यद्रेष्काण हो तो श्वासरोगसे वा जलसंबंधी रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो वाहनकी पीड़ासे वा विषसे वा शस्त्राघात से मरण होवेग। १०५

अष्टमभाव कन्याराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो ८४ प्रकारकी वायु के रोग से वा मस्तक के रोग से अर्थात् मस्तकमें दर्द पीड़ा होने से या मस्तिष्कमें उन्मादादि कोई दुष्ट रोग उत्पन्न होने से मध्यद्रेष्काण हो तो बिलेपरसे वा पर्वतपरसे गिरपडने से वा राजाके कोपसे, तीसरा द्रेष्काण हो तो गधे परसे वा ऊंट परसे पड़ने से शस्त्राघातसे वा जलमे पड़ने से मरण होवेगा १०६

अष्टम भावमे तुलराशीका प्रथम द्रेष्काण हो तो गिरपड़ने से स्त्री के सबब से (स्त्री स्वयं मारडाले वा स्त्री मरवाडाले) अथवा गाय

भैंस आदि पशु के मारबैठने से दूसरा द्रेष्काण हो तो जलोदर कठोर मंदाग्नि अजीर्ण विशूचिका आदिपेटके ८ प्रकारके रोग होतेहै उनमें किसी भी पेटके रोगसे, तीसरा द्रेष्काण हो तो सांपके काटने सेवा जलमे गिरनेसे मरण होवेगा १०७

अष्टम भाव मे वृश्चिकराशिका प्रथम द्रेष्काण हो तो विष (जहर) से शस्त्र से दूसरा द्रेष्काण हो तो बोझा उठानेसे अथवा मिहनतके कामसे या कमर पेटू आदि स्थानोंके रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो मिट्टीके ढेलेकी या काष्टकी या पाषाणकी चोट लगनेसे मरण होवेगा।०

अष्टम भाव धनराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो वादीके अर्शादि गुदाके रोगसे, मध्य द्रेष्काण हो तो विषसे वा बाणके (तीरके) लगनेसे तीसरा द्रेष्काण हो तो जलसे वा जलचारी मगरमच्छ कछुभे आदिजीवों से वा पेटकी पीड़ा आठ प्रकारकी होती है उनमें से कोइभी पेटके रोगसे मरण होवेगा १०९

अष्टमभाव मकरराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो सिंहसे वा सुअर से वा बिच्छुके काटने से मध्य द्रेष्काणमें हो तो सांपके काटने से तीसरे द्रेष्काणमें हो तो चोर अग्नि शस्त्र किंवा ज्वरके रोगसे मरण होवेगा ११०

अष्टम भाव कुंभराशी के प्रथम द्रेष्काण मे होतो स्त्री के वा पुत्र के बंधसे किंवा पेट के रोगसे मध्यद्रेष्काण में होतो गुप्त स्थान (जननेंद्रिय) में गरमी सुजाक प्रमेह आदि गुप्त रोगोंसे तीसरा द्रेष्काण होतो विष (जहर) से मरण होवेगा १११

अष्टम भाव मीन राशी के प्रथम द्रेष्काण में होतो संग्रहणी रोगसे वा प्रमेह गुल्म रोगसे मध्यद्रेष्काणमे होतो जलोदर रोगसे वा मगरसे वा मगरसे वा नाव स्टीमर जहाज आदिमे से जलमें गिरजानेसे तीसरे द्रेष्काण में हो तो प्लेग हैजा वगेरा जितने अनेक प्रकार दुष्ट रोग है उनमें से किसीभी दुष्टरोगसे मरण होवेगा ११२

पतिसहगामिनी योग।

धर्मपाराकौ धर्मगा लग्नास्तेशौमित्रे पत्नी सहगामिनी ११३

टीका–नवमेश, मंगल और रवि ये तीनों नवमें भाव में गये हो और लग्नेश सप्तमेश मित्र होवे तो स्त्री सती होवेगा ११३

शुभलोकाप्ति योग।

अंशाद्वालग्नाद्रन्ध्रेशुभे शुभलोकाप्तिः ११४

टीका–कारकांश लग्नसे अथवा जन्म लग्नसे आठ में भावमें शुभग्रह गया हो तो मरणानंतर शुभलोककी प्राप्ति होवेगा ११४

ब्रह्म सायुज्ययोग।

सिंहासनेचन्द्रेपारिजातेगुरौऐरावतेशुक्रेब्रह्मसायुज्यं ११५

अन्त्येशारकेतौ ब्रह्मसायुज्यं ११६

अंशादन्त्ये मेषचापगशुभे ब्रह्मसायुज्यं ११७

एकस्थानगानां चतुर्णामधिष्ठितराशीशेकेन्द्रकोणे ब्रह्मसायुज्यं ११८

माने मीनेसौम्ये वा भौमे ब्रह्मसायुज्यं ११९

रन्ध्रेशेपाने निद्रिते वा शुभयुतदृष्टे ब्रह्मसायुज्यं १२०

लग्नेशोर्द्धधर्मेशोधर्मरन्ध्रेशोरन्ध्रंपश्यतिचेद्ब्रह्मसायुज्यं १२१

नवमे केवलशुभद्वये ब्रह्मसायुज्यं १२२

टीका–सिंहासनांश में चंद्रमा, पारिजातांश में गुरु और ऐरावतांश में शुक्र गया हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति) प्राप्ति होवेगा ११५

कारकांश लग्न से बारवे भावमें केतु गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११६

कारकांश लग्न से बारमे भावमें मेष किंवा धनराशि में शुभग्रह गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११७

एकस्थानमें गये हुवे चारग्रह जिस राशीमें गये हो उस राशीका स्वामि केंद्र किंवा त्रिकोणस्थान में गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११८

मीन राशीका बुध दशा में किंवा मीनराशीका मंगल दशामें गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११९

निद्रावस्था में गया हुवा अष्टमेश सुखभाव में गया हो अथवा नि-

द्रावस्था में गया हुवा अष्टमेश शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्त होवेगा १२०

लग्नेश लग्नको धर्मेश धर्मको अष्टमेश अष्टमको देखताहो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा १२१

नवमें भावमें केवल दो शुभग्रह गये हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति) प्राप्त होवेगा १२२

विष, पाषाण, अग्नि जलघात योगा।

षष्ठेष्टमे वा चंद्रज्ञौ विषघातः १२३

ज्ञार्कावष्टमे विषाग्निघातः १२४

लाभेभौमार्कौ विषाग्निशस्त्रघातः १२५

खेर्के सुखेकुजे पाषाणघातः १२६

भौमार्कौ सुखे पाषाणघातः १२७

सुखेश युत दृष्टे खेशे पाषाणघातः १२८

सुखपेतमोर्कि युते कुजेक्षिते पाषाणघातः १२९

राहौ मदे वा लाभे काष्ठपाषाणघातः १३०

कुजेष्टमेग्निघातः १३१

क्षीणेन्दावष्टमे जलघातः १३२

तुर्यशे जलर्क्षे नीचारि मूढहीन बले तुर्यारिगे जलघातः१३३

लग्नेशे बले सुखे पापे जलघातः १३४

सुखेगेऽबले सुखपापे जलघातः १३५

सुखपे सपापे केन्द्रे जलघातः १३६

लग्नसुखेशौ सुखे कर्मेशदृष्टौ जलघातः १३७

सुखेशरपेश्वरेण सुखपे युत दृष्टे जलघातः १३८

टीका–छठे किंवा आठ में भाव में चंद्र बुध गये हो तो विषकी घात र्थात् जहर से मरणांत कष्ट होवेगा १२३

अष्टम भाव मे बुध सूर्य गये हो तो जहर किंवा अग्निकी घात हो–ा (जहरसे वा अग्निसे मरते मरते बचेगा) १२४

रवि मंगल लाभ भावमें गये हों तो विष, अग्नि, वा शस्त्रकी घात वेगा १२५

दशोंमें रवि और सुखमें मंगल गया हो तो पाषाण (पत्थर) से घात होवे मरते मरते बचेगा) १२६

रवि और मंगल दोनो सुखभावमें गये हो तो पाषाणकी घात होवे ११७

सुखेश से युक्त किंवा दृष्ट दशमेशहो तो पाषाणकी घात होवे १२८

सुखेश, शनि व राहुसे युत होवे और मंगलसे दृष्टहो तो पाषाणकी त होवेगा १२९

सातमें किंवा ग्यारमे भावमें राहु गया हो तो काष्ट तथा पाषाणकी ात होवेगा १३०

मंगल आठमे भावमें गयाहोतो अग्नि की घात अर्थात अग्निसे जल ानेका भयहो वेगा १३१

क्षीण चंद्रमा अष्टम भावमे गयाहोतो जलघात होवे (जलसे मरता रता बचे) १३२

चतुर्थेश जलराशीमे अपनी नीच शत्रु किंवा अस्तराशी का हीन बली ाकर चतुर्थ मे अथवा छठे भावमे गया होतो जलकी घातहोवे १३३

लग्नेश निर्बलीहो और सुखमे पापग्रह गयाहोतो जलकीघातहोवे १३४

सुखेश निर्बली हो और सुखमे पापग्रह गयाहोतो जलघातहोवे १३५

सुखेश पापग्रह से युतहोकर केंद्रस्थान मे जावेतो जलघात होवे १३६

लग्नेश और सुखेश ये दोनो सुखभावमे गयेहो और दशमेश इनको खता होतो जलघात होवे १३७

सुखेश जिसराशी मे गयाहो उसके स्वामी से सुखेश युत किंवा दृष्ट ोतो जलघात होवे १३८

नोट—घात उसको कहते है जिसको व्यवहारमे लोग " घातका " अर्थात् मरते रते बचा या प्राणांत कष्ट हुवा कहते है।

शृंगि, नखि, दंष्ट्री, घात वा वाहनात तथा उच्चप्रदेश तोपतनघात योगाः।

राह्वारावष्टमे शृंगि नखि दंष्ट्री घातः १३९

चापांशे वाहना दुच्चप्रदेशातो वा पतनम् १४०

टीका–राहु और मंगल आठमे भावमे गयेहोतो गायभेंस मेंढा हरिन आदि सींगवाले पशुओंसें वा सिंह वाघ कुत्ता बिल्ली बन्दर रीछ आदि नखवाले जानवरोंसे वा साप बिच्छु भ्रमर सूवर आदि काटनें वाले जानवरोंसे घातहोवे १३९

कारकांश लग्न धनराशी का होतो वाहनपर से गिरपड़नेसें अथवा ऊंचेमकानादिस्थान पर सें गिरने की घात होवे १४०

वाहन भययोग।

चंद्रारौकेन्द्रे वाष्टमे वाहन भयम् १४१

सुखे क्षीणेन्दौ वाहन भयम् १४२

टीका–चंद्र मंगल केंद्रस्थानमें वा आठ मे भाव में गयें होंवों वाहन सें भयहोवेगा १४१

सुखस्थान में क्षीणचंद्रमा गयाहोतो वाहन से भयहोवेगा १४२

भुज, कर, पाद, मस्तक, कर्ण, च्छेद योगाः।

सपापे भौमार्कर्क्षे मंदे भुजच्छेदः १४३

शत्रुभे मन्दे शुक्रयुत दृष्टे करच्छेदः १४४

चंद्रार्कतमोभौमा अष्टमे करपादच्छेदः १४५

मन्दर्क्षे राहौ सिंहेचंद्रेष्टमे मस्तकच्छेदः १४६

भौमार्कौ रंध्रे मस्तकच्छेदः १४७

मन्दारधनेशालग्ने कर्णच्छेदः १४८

पष्ठार्थशौलग्ने मन्दारौषष्ठे कर्णच्छेदः १४९

टीका–मंगलकी (१।८) किंवा सूर्यकी राशी (५) में शनि पापें सहित गया हो तो भुजच्छेद होवेगा १४३

अपने शत्रुकी राशीमें गया हुआ शनि शुक से युत किंवा दृष्ट हो तो हाथ कटजावेगा १४४

चंद्र सूर्य राहु और मंगल ये चारो ग्रह आठ में भाव में गये हों तो हाथ तथा पांव कट जावेगा १४५

शनिकी राशी (१०।११) मे राहु गया हो और सिंहराशीका चंद्रमा आठमे भाव मे हो तो मस्तक कटेगा १४६

मंगल और सूर्यका योग आठमे भावमे हो तो मस्तक कटेगा १४७ केवल अकेडरे योग से फलमिलना असंभवहै अतएव यदि ये मंगल रवि पापयुत दृष्ट हो तो ये योग मिलेगा।

शनि मंगल और धनेश ये तीनोंलग्नमे गयेहोतो कानकटजावेगा १४८

षष्ठेश और धनेश लग्न में गये हो और शनि मंगलछठे भाव में हो तो कान कटजावेगा १४९

ब्रह्म इत्यादि योग।

पापर्क्षे चंद्रे भौमार्कदृष्टे ब्रह्महत्या १५०

यमार्कारयोगे ब्रह्महत्या १५१

जीवार्कारयोगे ब्रह्महत्या १५२

पापर्क्षे चंद्रे मन्दार्कार दृष्टे गोहत्या १५३

लग्नपारावेकांशगो क्रूरहत्या १५४

पापयुते गुरौ नीचे वा रवौ बालहत्या १५५

पापे केंद्रे रन्ध्रेभृगौ पापदृष्टे गो मृगहत्या १५६

चन्द्रशौरे पापदृष्टौ वा नीचांशगौ शुभदृग्धीनौ नित्यं पक्षिहत्या १५७

इत्यष्टम विवेकः।

टीका–पापग्रहकी राशी में गया हुआ चंद्रमा मंगल और सूर्य से दृष्ट हो तो ब्रह्महत्या करने वाला होवे १५०

शनि रवि और मंगल इन तीनोंका योग एकराशी में हो तो ब्रह्महत्या करने वाला होवे १५१

गुरु रवि और मंगल इन तीनोका योग*एक राशी में हो तो ब्रह्महत्याकरने वाला होता है १५२

पापराशि में गया हुवाचंद्रमा शनि रवि और मंगल इन तीनो ग्रहों से दृष्ट हो तो गो हत्या करने वाला होता है १५३

लग्नेश और मंगल ये दोनों अेकराशी मे अेकही अंश मे गये हो अर्थात् लग्नेशकी और मंगलकी पूर्ण युति जिसदिन हो उस दिनका जन्म होतो दुष्ट हत्या करने वाला होता है १५४

पापग्रहसे युत गुरु नीच राशी मे गयाहो किंवा पापग्रहसे युत रवि नीच राशी मे गया हो तो बाल हत्या करने वाला होता है १५५

केंद्रस्थानमे पापग्रह और आठ मे भाव मे गयाहुवा शुक्र पापग्रहसे दृष्ट हो तो गौ तथा मृगकी हत्या करने वाला होता है १५६

दशमे भाव मे गये हुवे चंद्र बुध पापग्रहो से दृष्ट हो अथवा नीच-राशी के नवांशमे गये हो और शुभग्रहों से दृष्ट नहो तो नित्य पक्षियो की हत्या करने वाला होता है १५७

इन के सिवाय भाईकी स्त्रीकिमामाकीस्त्रीका, भाईकेकाकीसुसरेका, भाइके रोगवा शत्रुका, मामिकेभाईका, मित्रकेपुत्रका, पुत्रके सुसरेका, पुत्रके मित्रका, शत्रुकेभाईका, स्त्रीकेधन वामृत्युका, गुप्तेंद्रीका, दादाके धनका, दादिकीमृत्युका, विचारभी इसीअष्टमभावमे करना।

इति अष्टम विवेकस्य टीका समाप्ताः।

अथ नवम विवेकः ।

पुण्यवान् योग ।

सुखे ज्ञाच्छौ पुण्यवान् १
सौम्यान्तरे सुखे पुण्यवान् २
गोपुरांशे सिते पुण्यवान् ३
मृदंशे जीवे पुण्यवान् ४

---

* नोट—एकराशीमें गयेहुवे ग्रहोके अंशोका अंतर ५ पांच अंशसे न्यूनहोतो योग समझा जाता है।

भोजनेऽर्के पुण्ये पुण्यवान् ५

धर्मेऽगे निद्रिते राहौ पुण्यक्षेत्रवासी पुण्यवांश्च ६

धर्मेशुभदृष्टयाधिक्ये पुण्यवान् ७

टीका-बुध शुक्र सुख भाव में गये होतो पुण्यवान् होवे १
सुख भाव शुभग्रहों के बीचमे होतो पुण्यवान् होवे २
शुक्रगोपुरादि शुभ अंशोमे गया होतो पुण्यवान् होवे ३
गुरु मृदु संज्ञक शुभषष्ठ्यंशमे गयाहोतो पुण्यवान् होवे ४
भोजनावस्था मे गया हुवा रवि नवमें भाव में गया होतो पुण्यवान् होवे ५
निद्रावस्था मे गया हुवा राहु नवमे अथवा सातमे भाव मे गयाहो तो उत्तम तीर्थोमे रहनेवाला किंवा पुण्यवान् होवे ६
नवमें भावपर शुभग्रहोकि अधिक दृष्टी होतो पुण्यवान् होवे ७

पातकी योग ।

चंद्रारावङ्के शनौद्यूनेपातकी ८

लग्नेशे सभौमे सपापेन्दौ षष्ठे पातकी ९

एकांशगौ पुण्यवन्तौ सपापौ महापातकी १०

अष्टमेशाङ्के पातकी ११

भौमार्कौ येकत्र पातकी १२

पापान्तरे पापदृष्ट युते तुर्येवा तदीशे पातकी १३

सुखगैः पापैः सुखेशे बले गुलिक युते पातकी १४

धर्मे पापे पातकी १५

धर्मपे पापयुते वा क्रूरषष्ठ्यंशे वा पापांतरे पातकी १६

मन्दतमसी धर्मे गुलिक दृष्टेऽतिपापी १७

सराहुचंद्रे सपापगुरुदृष्टेपि पातकी १८

यूने चंद्रार्कौ मन्ददृष्टौ पातकी १९
कर्शेक्षार योगेपातकी २०
सपापौ गुलिक धनेशौ पातकी २१
जीवेज्ञे मदेमन्दे पातकी २२
षष्ठेचंद्रे सपापे भौमे पातकी २३
व्यये मंदे गुरुदोषी व्यसनीच २४

टीका–लग्नमें चंद्र मंगल और सातमे भावमे शनि गयाहोतो पात की (हत्या वा पाप करने वाला) होताहै ८

लग्नेश मंगलसे युतहो और पापग्रह से युतहो कर चंद्रमा छठे भाव मे गया होतो पात की होताहै ९

सूर्य चंद्रमा एक राशी मे एकही अंशमें (समान अंशमे) गये हो और पाप ग्रह से युक्त होतो महा पापी होताहै १०

अष्टमेश नवमें भावमे गायहो तो पापी होताहै ११

मंगल और सूर्य दोनो एक राशी मे युक्त होतो पापी होताहै १२

चतुर्थ भाव किंवा चतुर्थेश पापग्रहो के बीचमे होवे और पापग्रह से युतदृष्ट होतो पातकी होताहै १३

सुखस्थानमे पापग्रह गयेहो और सुखेश निर्बली होकर गुलिकसे युत होतो पातकी होताहै १४

नवमे भावमे पापग्रह गये होतो पातकी होताहै १५

नवमेश पापग्रहसे युतहो १ अथवा क्रूरषष्ठ्यंशमेगयाहो २ अथवा नवमेश पापग्रहोंके बीचमे गयाहो ३ तो पातकी होताहै (इससूत्रमे ३ योग कहेहै) १६

गुलिक से देखेहुवे शनिराहु नवमे भावमेगयेहो तो महापापीहोताहै१७

राहुसेयुत चंद्रमा पापग्रहसे और गुरुसेदृष्ट होतो महापापीहोताहै १८

सप्तभाव में गये हुवे चंद्रसूर्यको शनि देखता हो तो पापी होता है१९

क्षीणचंद्र और मंगल इन दोनोंका योग किसीभी स्थानमें हो तो पापी होता है २०

गुलिक और धनेश ये दोनों एक राशी मे पापग्रह से युक्त हो तो पातकी होता है २१

लग्नमे गुरु और सातमे भाव मे शनि गया हो तो पातकी होताहै२२

छठेभाव में चन्द्रमा गया हो और पापग्रहसे युत मंगल हो तो पातकी होता है २३

बारवें भाव में शनि गया हो तो गुप्तपाप करनेवाला और कामजनित तथा कोपजनित दोष वाला होता है २४

शंकर भक्तियोग।

केत्वर्कांशे शिवभक्तः २५

अंशेकेत्वीज्यौ शिवभक्तः २६ ।

सुते सूर्य युतदृष्टे सूर्य शङ्करभक्तः २७

टीका-कारकांश लग्न में केतु और सूर्य गये हो तो शिवकी भक्ति करने वाला होवे २५

कारकांश लग्नमें केतु और गुरुगये हो तो शिवकी भक्ति करने वाला होवे २६

पंचम भाव सूर्य से युत वा दृष्ट हो तो सूर्य तथा शंकरकी भक्ति करने वाला होवे २७

गौरी तथा लक्ष्मी आदि देवीभक्ति योग।

अंशेकेतु चन्द्रौ गौरीभक्तः २८

अंशे शिखिशुक्रौ लक्ष्मी भक्तः २९

सुते गुरु सम्बन्धे शारदाभक्तः ३०

सुते शुक्र संबंधे चामुंडाभक्तः

पंचमे भृगुचंद्रसंबंधे स्त्री देवभक्तः ३२

टीका-कारकांश लग्न मे केतु और चंद्रमा गये हो तो गौरी (पार्वति) वा पार्वतीके देहसे उत्पन्न हुई महाकालि महासरस्वति आदि शक्तियोंकी भक्तिकरने वाला देवीभक्त होवे २८

कारकांश लग्न में केतु और शुक्र गये हो तो महालक्ष्मी तथा महा

लक्ष्मी संबंधी दशमहाविद्याओंकी भक्तिकरने वाला होवे २९

पंचमभाव गुरुसे युत दृष्ट हो तो शारदा (सरस्वती) की भक्ति करने वाला होवे ३०

पंचमभाव शुक्रसे युत दृष्ट हो तो चामुंडा देवीकी भक्ति करने वाला होवे ३१

पंचमभाव में शुक्र चंद्रका संबंध (शुक्र तथा चंद्रसे युत दृष्ट पंच भाव) हो तो स्त्री देवता (शक्तियों) कि भक्ति करने वाला होवे ३२

विष्णु तथा सात्विकदेव तथा स्कंद भैरवादि पुरुषदेव भक्ति योग।

अंशेज्ञार्कजौ विष्णु भक्तः ३३

तुर्येशे सुते विष्णु भक्तः ३४

व्ययेशे धनाष्टमे सुतेशा संबंधे सात्विक देवभक्तः ३५

अंशे केत्वारौ स्कंद भक्तः ३६

पुत्रे भौम संबंधे स्कंद भैरवभक्तः ३७

सुतेज्ञ संबंधे सर्वदेवभक्तः ३८

पुत्रे पुंग्रह सम्बन्धे पुन्देव भक्तः ३९

टीका—कारकांश लग्नमें बुध शनि गये हो तो विष्णु कि भक्ति करने वाला होवे ३३

चतुर्थेश पंचम भाव में गया हो तो विष्णु तथा विष्णु के दशावतारके देवताकी भक्ति करने वाला होवे ३४

व्ययेश धन तथा अष्टमभाव मे गया हो और पंचमेश से संबंध करता हो तो सात्विक देवताकि भक्ति करने वाला होवे ३५

कारकांश लग्नमें केतु और मंगल गये हो तो कार्तिक स्वामिके भक्त होवे ३६

पंचमभाव मे मंगलका संबंध हो (मंगल युत दृष्ट हो) तो कार्तिक स्वामिका तथा भैरवका भक्त होवे ३७

पंचमभावमें बुधका संबंध (बुधसे पंचमभावयुतदृष्ट) हो तो सर्व देवताओं कि भक्ति करने वाला होवे ३८

पंचम भावमे पुरुष ग्रह का संबंधहो तो पुरुष देवताओं कि भक्ति करने वाला होवे ३९

गुरु भक्ति योग.

जीवेशर्यांशेशे गुरुशुक्रदृष्टे गुरुभक्तः ४०

नन्देशुभे गुरुयुतदृष्टे गुरु भक्तः ४१

धर्मेपे मृद्वंशादौ गुरुभक्तः ४२

टीका-जिसराशिमे गुरु गयाहो उसके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुओर शुक्र से दृष्ट होतो गुरुकी भक्ती करनेवाला होवे ४०

नवमें शुभग्रह गयाहो और वह गुरुसे युतवा दृष्टहोतो गुरुको भक्ती करनेवाला होवे ४१

नवमेश मृदु संज्ञक शुभषष्ठ्यंशमे गयाहोतो गुरु कि भाक्तिकरनेवाला होवे ४२

यक्षिणी तथा प्रेताशन्यादि भक्ति योग.

नन्दने चंद्र संबंधे यक्षिणी भक्तः ४३

सुते मन्द सम्बंधे प्रेताशन्यादिभक्तः ४४

टीका-पंचम भावमे चंद्रका संबधहो (चंद्रसे युतदृष्ट पंचम भावहो) तो यक्षिणी की भाक्ति करनेवाला होताहै ४३

पंचम भावमे शनिका संबंधहोतो प्रेत शाकिनी आदि क्षुद्रदेवियो किभाक्ति करने वालाहोवे ४४

परपीड़क देवभक्तियोग।

तमःसंबंधेपुत्रे परपीड़क देवताभक्तः ४५

टीका-पंचमभाव मे राहुका संबंध (राहुसे युतदृष्ट पंचम भाव) होते दूसरेको पीड़ा देनेवाले देवताओ कि भक्ति करने वाला होवाहै४५

धर्माध्यक्ष योग।

गुरौ वा भृगौ स्वोच्चशुभवर्गे धर्मेशे सबले धर्माध्यक्षः४६

ईज्याच्छौ ज्ञांशे धर्माध्यक्षः ४७

धर्मेपेशुभयुतदृष्टे धर्माध्यक्षः ४८

टीका–गुरु अथवा शुक्र अपनि उच्चराशी मे और शुभग्रहोंके वर्गमे गया हो और नवमेश बलवान् हो तो धर्माध्यक्ष (धर्माचार्य वा अधिक धर्म करनेकराने वाला) होता है ४६

गुरु शुक्र ये दोनो बुधके नवांशमें गये हो तो धर्माचार्य वा अधिक धर्म करने कराने वाला होता है ४७

नवमेश शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो धर्माचार्य या धर्म करने कराने वाला होता है ४८

कूप तडाग तथा जीर्णोद्धार तथा सुस्थानादि कर्ता योग ।

खेशे गोपुरे कूपादिकर्ता ४९

भाग्यपे मृद्वंशे शुभदृष्टे कूपादिकर्ता ५०

कुंभांशे तडागादिकर्ता ५१

खे सुखेशे जीर्णोद्धारादि कर्ता ५२

सजीवेज्ञे गोपुरे वा सभौमे सुस्थानकर्ता ५३

टीका–दशमेश गोपुरांश मे गया होतो कुवा, बांवडी आदि जलाशय करने वाला होवे ४९

नवमेश मृदु संज्ञक शुभ षष्ठ्यंश मे गयाहो और शुभ ग्रहसे दृष्ट होवो कुवा बावडी आदि जलाशय करने वाला होवे ५०

कारकांश लग्नमे कुंभराशी होतो तलाव बावडी कुवा आदि करने वाला होताहै ५१

सुखेश दशमे भावमे गया होसो देवालय तथा जलाशयो का जीर्णोद्धार करने वाला होताहै ५२

गुरुसे युक्त बुध गोपुरांश मे गयाहो अथवा मंगलसे युक्त बुध गोपुरांश मे होतो उत्तम(सार्वजनिक लाभार्थ) स्थान करनेवाला होताहै ५३

यज्ञ कर्ता योग ।

ज्ञेज्यकर्मपाः सबला यज्ञकर्ता ५४

खेशे खपेक्षे शुभांशे शुभ दृष्टे यज्ञकर्ता ५५

धर्मे शे स्वोच्चे पापदृग्हीने यज्ञकर्ता ५६

ज्ञेज्यखेशाः सबलाः शुभदृष्टा विशेषेण यज्ञकर्ता ५७

टीका—बुध गुरु और दशमेश येतीनो ग्रह बलवान् होतो यज्ञ करने वाला होवे ५४

दशमे भावमें बुध गयाहो और शुभग्रह के नवांश मे गयाहुवा शुभग्रह से दृष्ट दशमेश नवमे भावमें स्थित होतो यज्ञकरने वाला होवे ५५

अपनी उच्च राशी मे (कन्या राशी के १५ अंशमे) गयाहुवा बुध नवमे भावमे गयाहो और पाप ग्रह से दृष्ट नहो तो यज्ञ करने वाला होवे ५६

बुध गुरु और दशमेश ये तीनो ग्रह बलवान् होकर शुभग्रहसे दृष्ट हो तो अवश्य यज्ञादि शुभधर्म कार्य करने वाला होवे ५७

यज्ञे विघ्नयोग–

खपे स्वोच्चे सपापे नीचांशगे दुस्थे यज्ञारंभोत्तर विघ्नः५८

टीका–अपनी उच्चराशी में गयाहुवा दशमेश पापग्रहसे युत होकर नीचराशीके नवांशमें और ६।८।१२ भावमे गयाहो तो यज्ञका आरंभ होनेके पश्चात् यज्ञमें विघ्न उपस्थित होवेगा ५८

अयश योग।

चन्द्राद्वा शुक्राद्धने मन्देऽयशः ५९

चन्द्राच्छौ लग्ने मन्ददृष्टेऽयशः ६०

टीका–चंद्रसे अथवा शुक्रसे धनभाव मे शनि गयाहो तो यशहीन (अपयश वाला) होता है ५९

चंद्र और शुक्र लग्नमे गये हो और उनको शनि देखता हो तो यश हीन (अपयशवाला) होता है ६०

भाग्यहीन योग।

तुर्येशेऽष्टमे भाग्यहीनः ६१

लग्नाधिदारपादुस्थाविवाहात्परतोऽभाग्यम् ६२

धर्मेशेषष्ठे शत्रुनीचदृष्टेऽभाग्यम् ६३

भाग्येशे क्रूरांशे नीचभांशेऽभाग्यम् ६४

भाग्यपेऽबले धर्मे पापा अभाग्यं ६५

लग्नपेऽबलेऽभाग्यम् ६६

केन्द्रेशनौ जीवचन्द्रान्यतरादृष्टेऽभाग्यं ६७

टीका–सुखेश आठमें भावमें गया हो तो भाग्यहीन होवे ६१

लग्न धन और सप्तमभावका स्वामि ये तीनो ग्रह छठे आठ में किंवा बारमें भावमें गये हो तो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यहीन होवे ६२

नवमेश छठे भाव में गया हो और अपने शत्रुग्रहसे किंवा नीचराशिमें गये हुये ग्रह से दृष्ट हो तो भाग्यहीन होवे ६३

नवमेश क्रूरग्रहकेनवांशमें वा नीचराशिअंशमे गया हो तो भाग्यहीन होवे ६४

नवमेश बलरहितहो और धर्मभावमें पापग्रहगयेहोवेतो भाग्यहीनहोवे६५

लग्नेश निर्बली हो तो भाग्यहीन होवे ६६

केंद्र में गयाहुवाशनि, गुरु किंवा चंद्रमा से दृष्टनहोतो भाग्यहीनहोवे६७

भाग्यवान् योग।

धनेशे लाभे कर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ६८

लाभेशेऽङ्के कर्मपयुतदृष्टेभाग्यवान् ६९

धर्मपेर्थेकर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ७०

लाभपेऽङ्के धनपेलाभे धर्मेशेर्थे लपयुतदृष्टे महाभाग्यवान्७१

भाग्येड्ज्याच्छयुतदृष्टे भाग्यवान् ७२

धर्मेशेऽकेज्ययुतदृष्टे भाग्यवान् ७३

लग्नार्थेशौ पुत्रे भाग्यवान् ७४

लग्नेशेऽङ्केङ्केशेऽङ्के भाग्यवान् ७५

भाग्येशे लाभे भाग्यवान् ७६

भाग्यायपयोगे भाग्यवान् ७७

भाग्येशेर्थे भाग्यवान् ७८

सौत्थपुत्राङ्के सबलग्रहे भाग्यवान् ७९

टीका–धनेश लाभ भावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हों तो भाग्यवान् होवे ६८

लाभेश नवम भावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ६९

नवमेश धनभाव मे गयाहो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७०

लाभेश नवमे भाव मे, धनेश लाभभावमें, नवमेश धनभावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो महाभाग्यवान् होवे ७१

नवम भाव गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७२

भाग्येश गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७३

लग्नेश और धनेश ये दोनो पंचम भावमें गयेहोतोभाग्यवान् होवे ७४

लग्नेश नवमें भावमें और नवमेश लग्नमें गयाहोतोभाग्यवान् होवे ७५

भाग्येश लाभ भाव में गया हो तो भाग्यवान् होवे ७६

भाग्येश और लाभेश इन दोनोंका एकराशी में योग हो तो भाग्यवान होवे ७७

भाग्येश धन भाव में गयाहो तो भाग्यवान् होवे ७८

तीसरे पांचमें और लग्नमें बलवान् शुभग्रह गयेहोतोभाग्यवान्होवे७९

भाग्योदय योग।

चरेङ्के तदीशे चतथा चरखेट दृष्टे विदेशे भाग्योदयः ८०

स्थिरे लग्नाङ्केशौस्थिरखेटदृष्टौ स्वदेशे भाग्योदयः ८१

अन्यथा सर्वत्र भाग्योदयः ८२

धर्मे शुभदृष्टयाधिक्ये सर्वदेशे भाग्योदयः ८३

शुक्रे उपचये सप्तमेवाविवाहोत्तरंभाग्योदयः ८४

जायेशे सप्तमोपचये विवाहोत्तरं भाग्योदयः ८५

सेत्थाङ्केशेशुभयुतदृष्टेवाशुभांशगेभ्रातृधनतो भाग्योदयः८६

पुत्राङ्केशयोगे शुभयुतदृष्टे सुततो भाग्योदयः ८७

त्रिकोणे भाग्यपयुतदृष्टे सुततो भग्योदयः ८८

टीका–चरराशिका लग्न और लग्नेश हो और चरग्रह (चंद्र) से दृष्टहो तो विदेशमे भाग्योदयहोवेगा ८०

स्थिर राशि का लग्न और लग्नेश हो और स्थिरग्रह (सूर्य) से दृष्टहो तो स्वदशमे ही भाग्योदय होवेगा ८१

द्विस्वभाव राशिका लग्न और लग्नेशहो और शुभग्रहसे युत दृष्टहो तो सर्वदशमे भाग्यो दयहोवेगा ८२

नवमभावपर शुभग्रहोंकि अधिकदृष्टिहोतो सर्वदेश मे भाग्योदय होवेगा ८३

शुक्र उपचयस्थान [३।६।१०।११] मे अथावा सप्तम भावमें गया होतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ८४

सप्तमेश सात मेभावमे अथवा उपचय स्थान (३।६।१०।११) मे गयाहोतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यो दय होवेगा ८५

तृतीयेश और नवमेश का योगहो और शुभग्रहसे युत वा दृष्टहो अथवा तृतीयेश नवमेश शुभग्रहों के नवांश मे गये हो और दोनोयुतहो तो भाई के धनसे भाग्योदय होवेगा ८६

पंचमेश नवमेश का योगहोओर वह शुभग्रह से युत व दृष्ट होवोपुत्र से भाग्योदय होवेगा ८७

नवम पंचम भाव भाग्येश से युत और दृष्टहोतो पुत्रसे भाग्योदय होवेगा ८८

भाग्योदयके वर्षका विचार बृहत्पाराशरीमे लिखा है कि भाग्यस्थान में गुरुगयाहो और भाग्येश केंद्र मे हो तो २० वर्षके बाद भाग्योदय होवेगा १

बुधपरमोच्चाशमें गयाहो और भाग्येश भाग्यमेही हो तो ३६ मे वर्षके बाद भाग्योदय होवेगा २

भाग्येश धनभाव मे गयाहो और धनेश भाग्य में गय हो तो ३२ वर्षके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ३

यदि अधिक बलवान् और षड्वर्ग शुद्ध होकर अपनी स्वराशी किंवा

उच्चराशि में गयाहुवा भाग्येश रवि होतो २२ मेंवर्ष चंद्रहोतो २४ मेंवर्ष मंगल हो तो २८ मे, बुध हो तो ३२ में, गुरु होतो १६ में, शुक्र हो तो २५ में शनि हो तो ३६ मे राहु होतो ४२ मे वर्ष मे भाग्यो दय होवेगा। इसी प्रकार अन्य भावोंके स्वामीभी जो अधिक बलवान होकर अपनी स्व वा उच्चराशी मे गयेहो उनकेवर्षमें भाग्योदय और उसभावके फलकी वृद्धि होवेगा।

गंगास्नान योग।

खेराहौ वा सूर्ये गंगास्नानम् ८९

खे पूर्णेन्दौज्यौ गंगास्नानम् ९०

खे जीवे गंगास्नानम् ९१

शुक्रेज्यौ केंद्रे युक्तौ गंगास्नानं ९२

धनेश शुक्रेज्यास्तुंगे गंगास्नानम् ९३

खे वा वर्गोत्तमस्थे गंगास्नानम् ९४

चंद्रे सौम्ये शुभदृष्टे जलर्क्षे गंगास्नानम् ९५

धर्मेशे जलर्क्षे केन्द्रे शुभदृष्टे गंगास्नानम् ९६

धर्मे जीवदृष्टे गंगास्नानम् ९७

रन्ध्रगेशे शुभदृष्टेऽनेकतीर्थ दर्शनम् ९८

टीका-दशमे भाव में राहु अथवा सूर्य

होगा ८९। गंगाजीमें स्नान करनेको

दशमें भाव में पूर्णचंद्रमा और

दशमें

जलराशी का चंद्रमा तीसरे भावमे गयाहो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो गंगास्नान होवेगा. ९५

जलराशी मे गयाहुवा नवमेश केंद्रस्थान मे गयाहो और शुभग्रह दृष्टहोतो गंगास्नानहोवेगा ९६

नवम भाव को गुरुदेखता होतो गंगास्नान होवेगा ९७

आठमें भाव में गया हुवा बुध शुभग्रह से दृष्टहोतो अनेक तीर्थस्थानों के दर्शन होवेगा ९८

महायात्रा योग ।

धर्मे कर्मप योगे महायात्रा ९९

धर्मे शुभदृष्टयाधिक्ये धर्मपे केंद्रायकोणे महायात्रा १००

चंद्राद्धर्मेशे केन्द्रे महायात्रा १०१

चंद्राद्धर्मे शुभदृष्टयाधिक्ये वा शुभयुते महायात्रा १०२

टीका–नवमेश दशमेश का एक राशिमेयोगहोतो महायात्रा होवेगा९९ नवम भावपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि हो और नवमेश १।४।७। १०।११।९।५ भावमे गयाहो तो महायात्रा होवेगा १००

चंद्रमासे नवमेभावका स्वामि केन्द्रमे गया होतो महायात्रा होवेगा१०१

चंद्रमा से नवमे भावपर शुभग्रहों कि अधिकदृष्टि हो अथवा अधिक शुभग्रहो से नवम भावयुत होतो महायात्रा होवेगा १०२

प्रव्रज्या योग ।

ग्रहचतुष्टयादि एकर्क्षगंप्रव्रज्या करम् १०३

यावन्तो बलिनस्तावन्तः स्व स्व प्रव्रज्या कराः १०४

तापसः कापालिकोरक्तपट आजीवी त्रिदंडी चक्रधरो नग्नः सूर्योदितः १०५

अस्तगास्तु तद्भक्तिमात्रम् १०६

मन्द त्र्यंशे वा मंदारांशे चंद्रेमन्दमात्र दृष्टे संन्यासी १०७

र्धर्मपे बली संन्यासी १०८

चंद्रेज्याङ्केष्वर्किदृष्टेषुधर्मेजीवेराजयोगजेमलगुत्त काणादा दिसपः १०९

टीका—एक राशी मे चार पांच छ सात ग्रहो का योग होने से मह ा धर्म को त्याग करके सन्यासी होताहै १०३

एक राशी मे गये हुवे चार से अधिक प्रव्रज्या योग करने वाले ग्रहो जितने अधिक बलवान् ग्रह होवे उतने हि ग्रह अपने अपने आधि य की प्रव्रज्या करवे है १०४

यदि प्रव्रज्या करने वाले ग्रहो मे रवि अधिक बलवान हो तो तपस्वी अग्नि होत्र, वा गायत्री का उपासक किंवा सूर्य की भक्ति करने वा ा वा नैष्ठिक ब्रह्मचारी) होताहै ।

चंद्र बलवानहो तो कापालिक (कपालको धारण करनेवाला वा नग्न त के धारणेवाला वा शिवकी दीक्षावाले व्रतोपवासादि करनेवाला पस्वी) होताहै ।

मंगल बलवान होतो लालवस्त्र धारणकरनेवाला वा बुद्धिके आश्रयवसहों वोपासना करनेवाला जितेंद्रिशिखासूत्ररहित काषायांबरधारीहोताहै। बुध बलवान् होतो आजीवी अर्थात् कपट करके जीविका करने वा ा वा गारुड मंत्रोसे दीक्षित होताहै ।

गुरुबलवान् हो तो त्रिदंड धारण करनेवाला काषायांबरधारी सन्यासी होताहै ।

शुक्र बलवान् हो तो चक्रको धारण करनेवाला अथवा बहुत सा- धुसन्यासियों कि जमातकामालिक ठाटपाटसे साधुओंकी मंडली चलनेवाला और पशुपतिदीक्षामे स्थित होता है ।

शनि बलवान हो तो नग्नरहनेवाला बहिरकठिनतपस्याके व्रतको धारणकरनेवाला दिगंबर तपस्वी होता है १०५

यदि प्रव्रज्या योग करने वालेग्रह अस्तंगत हो तो केवल संन्यासि योकी भक्ति करने वाला होवेगा (प्रव्रज्या नही होवेगा) १०६

चंद्रमा शनिके द्रेष्काणमे गया हो किंवा शनि मंगलके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा केवलशनिसेदृष्ट हो तो संन्यासी होता है १०७

लग्नेश और शनि बलहीन होवे तो संन्यासी होता है १०८

चंद्र, गुरु, और लग्न इन तीनोंको शनि देखता होवे और नवम भाव में गुरुगयाहो तो राजयोगका भोगानुभव करनेवाला ब्रह्मगुप्त काणादादि मुनियोके समान प्रतिष्ठावाला अथवा आचार्य पदधारी तपस्वी होवेगा १०९

प्रव्रज्याभ्रष्ट योग।

प्रव्रज्याकरे पराजिते प्रव्रज्याभ्रष्टः ११०
जन्मेशे मन्दमात्र दृष्टे प्रव्रज्या भ्रष्टः १११
चंद्रराहुयोगे क्रूरांशे सगुलिके संन्यासभ्रष्टः ११२
अंशेकेतौमन्दमात्रदृष्टे सन्यसाभासः ११३
जीवेरिगेर्केम्बुगे तपोहीनसंन्यासी ११४

इति नवम विवेकः।

टीका–संन्यासयोग करने वालाग्रह पराजित (ग्रहयुद्धमे हाराहुआ) होतो प्रव्रज्या भ्रष्टहोवेगा ११०

जन्मराशी के स्वामी को केवलशनीही देखताहो और अन्य कोई भीग्रहदेखतेनहो तो प्रवज्या भ्रष्टहोवेगा १११

क्रूरग्रहोंकेनवांशमे गयेहुवे चंद्र और राहुका एकराशीमेंयोगहो और यह गुलिकसे युतहो तो संन्यास सेभ्रष्ट [संन्यासग्रहण करके त्यागदेगा वा संन्या सके नियम पालननही करनेवाला नाममात्रका संन्यासी] होवेगा। ११२

कारकांशलग्नमे गयाहुवा केतू केवलशनीसेदृष्ट हो तो संन्यासिका केवल वेषधारण करनेवाला होवे अर्थात् खरासंन्यासी नहींहोवे।११३

छठे भावमे गुरु और सुखभावमे रविगयाहो तो तपरहित (यम नियम रहित वा तपस्याहीन) संन्यासी होवेगा ११४

इत्यादिविचारोंके सिवाय गुरु, भाईकीस्त्री, भाईकेपुत्र केशालेकीस्त्री, मामा कीमाता, माताकामामा, मित्रका मामा, मित्रकीकाकी, पुत्रका पुत्र, पुत्रकीविद्या, श्वशुरकिमाता, शालक, नोकरकीस्त्री, ऊदस्थान, दादाका भाई, आदिबातोकाविचारभी इसनवम भावसेही करना।

इति नवमविवेकस्य टीकाप्रस्तः। ९

अथदशमविवेकः ।

व्यापारीयोग ।

राज्ये शुभदृष्ट्याधिक्ये व्यापारी १

खेज्ञेऽव्यापारी २

खाङ्गेशयोगे व्यापारी ३

खेङ्गेशे व्यापारी ४

खेशेकेन्द्रायकोणे शुभदृष्टे व्यापारी ५

खेशे स्वर्क्षे शुभयुते व्यापारी मानशीलः ६

टीका-दशमभावपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि हो तो व्यापारी मनुष्य होवे १

दशमें भाव मे बुधगया हो तो व्यापारी होवे २

दशमेश और लग्नेशका एकराशी में योग हो तो व्यापारी होवेगा ३

लग्नेश दशमभावमें गयाहो तो व्यापारी होवेगा ४

दशमेश १।४।७।१०।११।९।५ भाव में गयाहो और शुभग्रहसे दृष्ट हो तो व्यापारी होवेगा ५

दशमेश अपनी स्वराशी मे गयाहो और शुभग्रहसें युत हो तो व्यापारी और अभिमानी होवेगा ६

मानीयोग ।

खेशे शुभसंबंधे मानी ७

खेशेशुभवर्गे वा स्वोचे दृढमानी ८

शुभांतरे माने मानी ९

खेशे वैशेषिकांशे मानी १०

धर्मेशेङ्गे गुरुदृष्टे राजमान्यः ११

जीवज्ञयोगे राजमान्यः १२

धर्मेशेऽत्र लाभे राजवन्द्यः १३

धर्मपे पारावतादौ राजवन्द्यः १४

लग्नेशे शुभवर्गे वा गोपुरादौ राजवन्द्यः १५

टीका-दशमेश शुभग्रहसे सम्बंध करता हो तो मानवाला होवेगा ७
दशमेश शुभग्रहके वर्गमें गयाहो अथवा अपनी उच्चराशी में गया हो तो द्रव्यवान और मानवाला होता है ८
दशमभाव शुभग्रहोंके मध्यमें गया हो तो मानवाला होता है ९
दशमेश वैशेषिकांश में गयाहो तो मान (प्रतिष्ठा) वाला होताहै १०
लग्नमें गयाहुवा नवमेश गुरुसेदृष्टहोतो राजमेंमानवाला होताहै ११
बुध गुरुका योग एकराशिमें हो तो राजमें मानप्रतिष्ठा वाल होवेहै १२
नवमेश लाभ भावमें गयाहो तो राजवंद्य (राजालोग जिसको झुकें) वैसा मान वाला होवे १३
नवत्रमें भावका स्वामि पारावतादि अंशमें गयाहो तो राजवन्द्य होवे १४
लग्नेश शुभग्रहों के वर्गमें किंवा गोपुरादिशुभांशो में गया हो तो राजवंद्य होवेगा १५

मानहीन योग।

खपे पापसंबंधे मानहीनः १६

खपे पापवर्गे क्रूरषष्ठ्यंशे वा मानहीनः १७

टीका-दशमेश पापग्रहोसे संबंध (संज्ञातत्वमें संबंध ४ प्रकारका कहा है तदनुसार) करता हो तो मानहीन होवेगा १६
दशमेश पापग्रहके दशवर्गमें गया हो अथवा पापषष्ठ्यंशमें गया हो तो मानप्रतिष्ठा हीन होवेगा १७

कर्मादि वैकल्य योग।

खेशेऽबलेसपापे कर्मादिवैकल्यम् १८

लेऽपशुक्रादुस्थाः पापदृष्टाः कर्मादिवैकल्यं १९

खेपापदृष्ट्याधिक्ये कर्मादिवैकल्यं २०

कर्मपेदुस्थे कर्मादिवैकल्यं २१

टीका–पापग्रहसे युत दशमेश बलहीन हो तो जोकोई व्यापार धंधा या काम करेगा उसमे सफलता नहोगी और विकलता वा व्यग्रता होवेगा१८

बुध गुरु और शुक्र ये तीनों ६।८।१२ में भाव में गये हो और पापग्रहसे दृष्टहोतो प्रत्येक काम मे सफलतानहोगी और उसमे विकलता विघ्न व्यग्रतादि होवेगा १९

दशमभावपर पापग्रहों कि अधिक दृष्टि हो तो प्रत्येक काम करनेमें विकलता होवेगा २०

दशमेश ६।८।१२ में भावमें गया होतो जो काम करेगा उसी मे विकलता व्यग्रता वा हानि होगा और सफलता प्राप्तन होवेगा २१

सत्कीर्तियोग।

कर्के चंद्रे पारावतांशे शुक्रेज्येक्षिते सत्कीर्तिः २२

खेशेपारावतादौ सत्कीर्तिः २३

शुभयुते खेशे सत्कीर्तिः २४

शुभांशखेशे शुभदृष्टे सत्कीर्तिः २५

खपेशुभांशे सत्कीर्तिः २६

लग्नपे बलाढ्ये खपेदेवलोके धर्मपे सिंहासने सत्कीर्तिः २७

टीका–कर्कराशीमे गयाहुआ चंद्रमा पारावतांशमे हो और वह गुरु शुक्रसे दृष्ट हो तो सत्कीर्ति (उत्तमकीर्ति वाला) होवेगा २२

दशमेश पारावतादि शुभवर्ग मे गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २३

दशमेश शुभग्रह से युत होतो सत्कीर्ति वाला होवे २४

दशमेश शुभग्रहोंके मध्यमेगयाहो और शुभग्रहोंसे दृष्टहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २५

दशमेश शुभग्रहोंकी राशी के नवांश में गयाहोतो सत्कीर्तिवालाहोवे२६

लग्नेश बलवान् हो दशमेश देवलोकांश में गयाहो और नवमेश सिंहासनांश मे गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २७

असत्कीर्ति योग।

खपेपापसंबंधे ऽसत्कीर्तिः २८

स्वपे पापवर्गे असत्कीर्तिः २९

खेमंदार्कौ असत्कीर्तिः ३०

पातांतरे कर्मणी असत्कीर्तिः ३०

टीका–दशमेश पापग्रह से संबंध करताहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे२८ दशमेश पापग्रहो के दशवर्गमें गयाहो तो असत्कीर्ति वाला होवे २९ शनि और रविका योग दशमें भावमे हो तो असत्कीर्ति वाला होवे३० दशम भावपापग्रहोके बीचमे गयाहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे ३१

आज्ञाकर्ता तथा क्रूर सौम्याज्ञा कर्तायोगाः ।

खेशे शुभे शुभदृष्टयुते आज्ञाकर्ता ३२

खेशे मृदंशे वा शुभांशे वा केन्द्रे बलाढ्ये आज्ञाकर्ता३३

खेर्के वा भौमे आज्ञाकर्ता ३४

खेशे केन्द्रे शुभयुतदृष्टे क्रूरषष्ठ्यंशे सौम्याज्ञाकर्ता ३५

समन्देकर्मपे रन्ध्रपयुते क्रूरांशे केन्द्रेक्रूराज्ञाकर्ता ३६

राहु गुलिकौमाने क्रूराज्ञाकर्ता ३७

धने राहु केतु क्रूराज्ञाकर्ता ३८

धर्मपेनीचे क्रूराज्ञाकर्ता ३९

टीका–दशमेश शुभग्रह हो और शुभग्रहसे युत और दृष्ट होतोआज्ञा (हुकुम) करने वाला होवे ३२

दशमेश मृदु संज्ञकशुभषष्ठ्यंशमे गयाहो १ अथवा दशमेश शुभग्रह की राशिके नवांशमे गयाहो २ किंवा दशमेश बलवान होकर केंद्र (१।४।७।१०) स्थान मे गया हो तो आज्ञाकरने वालाहोवे ३३ (इस सूत्र मे ३ योग है)

दशमे भावमें रवि अथवा मंगल गयाहोतो आज्ञाकरने वालाहोवे ३४

दशमेश शुभग्रह से युतदृष्ट होकर केंद्रमें गयाहो और क्रूर षष्ठ्यंश मे गयाहोतो सौम्य [शांतीकेसाथ] आज्ञा करने वाला होवे ३५

शनि और अष्टमेश से युतहोकर दशमेश पापग्रहकी राशी के नवांश मे हो और केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गयाहो तो क्रूराज्ञा करनेवालाहोवे ३६

दशमे भावमे राहुऔर गुलिक गयेहोतो क्रूरआज्ञा करनेवालाहोवे ३७

धनभावमें राहु किंवा केतुगयाहोतो क्रूर आज्ञा करनेवाला होवे ३८

नवमेश नीचराशी में गयाहोतो क्रूर(कठोर)आज्ञा करनेवालाहोवे ३९

राज कार्य कर्तायोग।

सार्केंशे राजकार्य कर्ता ४०

केन्द्रेऽर्के राजकार्य कर्ता ४१

केन्द्रे कोणे चंद्रे राजकार्य कर्ता ४२

राज्येशे लाभे केन्द्रे वा राजकार्य कर्ता ४३

लग्नांबुगे जीवे राजकार्य कर्ता ४४

टीका—कारकांश लग्नमें रवि गयाहोतो राजकार्य करनेवालाहोवे४०

केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में रवि गयाहोतो राज्यकार्य करने वाला होवे ४१

चंद्रमा केंद्र वा त्रिकोण स्थानमें (१।४।७।१०।९।५) गयाहोतो राज मे काम करने वाला होवे ४२

राज्येश लाभ भावमें गयाहो अथवा दशमेश केंद्र में गयाहोतो राजकार्य करने वाला होवे ४३

लग्न किंवा चतुर्थ भावमें गुरुगयाहोतो राजकार्य करनेवालाहोवे४४

कुल मुख्य कुल तुल्यादि योग।

अंशे ग्रहद्वये कुल मुख्यः ४५

एकःस्वर्क्षे कुलतुल्यः ४६

द्वौस्वर्क्षे स्वकुला धिकः ४७

सोत्येगुरौ लाभेचंद्रे कुलदीपकः ४८

भौमेंद्रेवंदे सुमेचंद्रे व्ययेराहौ कुलदीपकः ४९

टीका—कारकांश लग्नमें शुभ किंवा पाप कोईभी दोग्रह गयेहोतो अपने कुलमें मुख्य मनुष्यहोवेगा ४५

कोईभी एकग्रह अपनी स्वराशी मे गयाहोतो अपने कुलके बराबर प्रतिष्ठा वालाहोवेगा ४६

दोग्रह अपनी स्वराशी मे गयेहोतो अपने कुलसे अधिकप्रतिष्ठावाला होवे ४७

तीसरेभावमे गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहोतो कुल दीपक होवे ४८

लग्नमेसिंह राशी का मंगल, पांचमे चंद्रमा और बारवें भावमे राहु गयाहोतो कुलदीपक होवे ४९

प्रतापीयोग।

रन्ध्रारीशा वन्योन्यस्थानगौ वा केन्द्रगौ प्रतापी ५०

षष्ठेगुरौ लाभेचन्द्रे प्रतापी ५१

लाभपे शुभभांशे प्रतापी ५२

टीका-अष्टमेश छठे भाव में और षष्ठेश आठमें भाव में गयाहो अथवा अष्टमेश और षष्ठेश ये दोनों केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गये हों तो प्रतापी होवे ५०

छठे भावमें गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहो तो प्रतापी होवे५१

लाभेश शुभग्रहकी राशी और शुभग्रहकेही नवांशमें हो तो प्रतापी होवे ५२

श्रीमान् योग।

लाभेबलाढ्येशुभग्रहे शुभदृष्टे वा श्रीमान् ५३

धनगाश्चन्द्रेज्याच्छाः श्रीमान् ५४

टीका-बलवान् शुभग्रह लाभभाव में गयाहो अथवा शुभग्रह लाभ भावको देखता हो तो श्रीमान् होवे ५३

धनभाव में चंद्र गुरु और शुक्र गये हो तो श्रीमान् होवे ५४

पितृसुख योग।

खेशे शुभे शुभयुतदृष्टे पितृसुखम् ५५

खेशे पारावतादौ पितृसुखम् ५६

खेशे शुभांतरे गुरु शुक्र युते वा पितृसुखम् ५७

गोपुरादौ पितृकारके पितृसुखम् ५८

टीका-दशमेश शुभग्रहहो और वह शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा (पिताकी दीर्घायु होगा) ५५
दशमेश पारावतादि शुभवर्गमें गया हो तो पिताका सुख उत्तमरहेगा५६
दशमेश शुभग्रहोंके मध्यमें (बीचमें) गया हो अथवा दशमेश गुरु शुक्रसे युत हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा ५७
पितृकारक ग्रह (रवि) गोपुरादि शुभांशमे गयाहो तो पिताका सुख अच्छा रहेगा ५८ बृहत्पाराशरी में लिखा है कि भाग्येश परमोच्चांशमें गया हो भाग्यस्थानगतराशीके नवांशमे गुरुगयाहो और जन्मलग्न से केंद्रस्थानमे शुक्रगया होतो पिताकी दीर्घायु होवे १

पिता परस्त्रीगामी योग।

खारिपौ खगो पितापरस्त्री गामी ५९

लग्नेशे सपापे धने वा धनारियूनेशाः सपापाः कोशगाः पितासज्जन स्त्री गामी ६०

टीका-दशमेश और षष्ठेश ये दोनों दशम भाव में गये हो तो पिता परस्त्री गामी होवे ५९
पापग्रहसे युत होकर लग्नेश धन भाव में गयाहो १ अथवा धनेश षष्ठेश और सप्तमेश ये तीनो पापग्रहसे युक्त होकर धनभाव में गये होतो पिता सज्जन परस्त्री से गमन करनेवाला होवे ६०

पिता, धूर्त योग।

सुखारिशावङ्के जनको विटः ६१

भाग्याम्बुपौ सुखे जनको विटः ६२

टीका-सुखेश और षष्ठेश ये दोनो नवमें भाव में गये हो तो पिता धूर्त किंवा ठगाईका काम करने वाला होवे ६१
नवमेश और सुखेश ये दोनो सुखभाव में गये हो तो पिता धूर्त वा ठगाई करने वाला होवे ६२

पितृ दुःख योग।

खेशे पापसंबंधे पापान्तरे पितृ दुःखम् ६३

अर्कादृशमेशे पापयुतदृष्टे पितादुःखी ६४

टीका–दशमेश पाप ग्रहसे संबंध करता हो पापग्रहोंके बीचमें गया होतो पिताका दुःख होगा या पिता दुःखी रहेगा ६३

रवि से दशम भावका स्वामि पापग्रहसे युत और दृष्टहोतो पिता दुःखी रहेगा ६४

पितृसुखादि अल्प योग।

सुखेशे त्रिके पितृसुखमल्पम् ६५

सूर्यारौखे धर्मे वा शीघ्रं पितृमृतिः ६६

सपापसूर्ये द्यूने शीघ्रं पितृमृतिः ६७

सार्कारेखेशे शीघ्रं पितृमृतिः ६८

द्यूनेर्के खेभौमेन्त्येराहौ पितानजीवति ६९

खे शत्रुभे भौमे पितानजीवति ७०

लग्नेजीवे धने ज्ञारयमा विवाहे पितृमृतिः ७१

चन्द्रार्कावङ्के पितुर्जलेमृतिः ७२

चन्द्रार्कौझषे पापदृष्टौ पितुर्जलेमृतिः ७३

शुक्रार्कौ चरे भौमदृष्ट्युतौ पितुरन्यदेशे मृतिः ७४

टीका–सुखेश ६।८।१२ में भाव में गया हो तो पिताका सुख अल्प रहेगा ६५

सूर्य और मंगल दशमभाव में अथवा नवमे भावमे गयेहोतो शीघ्र (अपनी छोटी उमरमेंही) पिताकि मृत्यु होवेगा ६६

पापग्रहसे युक्त सूर्य सातमे भाव मे गया हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६७

दशमेश रवि और मंगल से युक्त हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६८

सात मे सूर्य दशमे मंगल और बारवे भावमें राहुगया होतो पिता जीवे नहीं ६९ (शीघ्र पिता कि मृत्यु होवेगा)

दशम भावमे शत्रुराशी मे गयाहुवा मंगल होवे तो पिता जीवेनही (शीघ्रपिता का मृत्युहोवेगा) ७०

लग्नमेगुरु धनभावमें बुध, मंगल और शनि ये तीनो ग्रह गयेहो तो विवाह के समय पिताकि मृत्यु होवेगा ७१

चंद्र और रवि येदोनो नवमे भावमे गयेहोतो पिताकी जलमे डूबने से मृत्युहोवेगा ७२

चंद्र और रवि मीनराशी मे गये हो और पापग्रह से दृष्ट होतो पिता कि जलमे डूबने से मृत्यु होवेगा ७३

चरराशी मे गयेहुवे शुक्र और रवि, मंगलसे युक्त किंवा दृष्ट होतो पिताकि अन्य देशमे मृत्यु होवेगा ७४

पितुर्दहनयोग ।

चरेर्के केन्द्रे वा चन्द्रे पितरौ नदहेत् ७५

टीका—चरराशी का रवि केंद्रमे गयाहोतो पिताका और चरराशी का चंद्रमा केंद्रमे गयाहोतो माता का अग्नि संस्कार अपनेहातसे न ही करने पावेगा ७५

जन्मतः प्राक्पितृ मरणयोग.

भौमार्कावजे खे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७६

मन्दारौ खे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७७

टीका-मेष राशी में गयेहुवे मंगल और रवि दशम भावमे गये होतो जन्महोनेके पहिले हि पिता का मरण कहना ७६

शनि मंगल दशम भावमे गयेहोतो जन्महोनेके पूर्व ही पिता का मरण कहना ७७

बृहत्पाराशरी मे लिखाहै कि छठे आठमे किंवा बारवे भावमें रवि नवमभावमे अष्टमेश लग्नमे व्ययेश और छठेस्थानमे जिसराशी का नवांशहो वहराशी पंचमभावमें गई होतो जन्महोने के पहिले ही पिता कि मृत्यु होवेऐसाजानना १

आठमे रवि और अष्टमेश नवम भावमें गयाहोतो पहिले वर्ष मे पिता कि मृत्यु होवेगा २

व्ययेशनवमेभावमें और नवमेश नीचराशीमें गयाहोतो ३ तीस रे किंवा १६ मे वर्ष मे पिता कि मृत्यु होवेगा ३

लग्नेश आठमेभावमें और अष्टमेश रविसें युक्त होतो २ दूसरे अथवा बारवे वर्ष मे पिताकि मृत्यु होवेगा ४

जन्म लगनसे चतुर्थ भावमे राहु और पंचम भावमे रवि गयाहोतो सोलहमे अथवा अठारह मे (१८) वर्ष मे पिता कि मृत्यु कहना ५

राहुसे युत सूर्य होवे और चंद्रमासे नवमे भावमे शनि गया हो तो सातमे अथवा उन्नईस (१९) मे वर्षमे पिताका मरण होवेगा ६

भाग्येश व्ययभावमे और व्ययेश भाग्यभाव मे गया हो तो ४४ चु-म्मालीस मे वर्ष मे पिताका मरण होवेगा ७

सूर्यके नवांशमे चंद्रमा गया हो और लग्नेश अष्टम भावमे हो तो ३१ मे तथा ४१ मे वर्ष मे पिताका मरण होवेगा ८

दशमस्थानका स्वामि सूर्य, चंद्र और मंगलसे युक्त हो तो ५० मे वर्ष पिताकी मृत्यु होवेगा ९

तीसरे भावमें रवि और तीसरे तथा सातमे भाव मे राहु गयाहोतो ६ छठे वर्ष में अथवा पचीस में वर्ष मे पिताका मरण जानना १०

धनभाव मे शनि और आठमे भाव में रवि गयाहोतो ३० मे तथा २१ में किंवा २६ मे वर्ष पिताका मरण होवेगा. ११

भाग्येश नीचराशी में गयाहो और उसनीचराशिका स्वामी नवमे भाव में गयाहोतो २६ मे तथा ३३ मे वर्ष पिताका मरण होवेगा १२

सिंहासनाप्तियोग ।

सुखार्थाङ्गेशाः स्वर्क्षे धर्मेशेङ्गे सिंहासनाप्तिः ७८

धर्माङ्गसुखेशाः कर्मगाः बलिखेशयुताः सिंहा० ७९

धर्मेम्बुपे शुक्रेज्यौ तुर्ये धर्मेशे केंद्रकोणे सिंहासनाप्तिः८०

वित्तपे केन्द्रे स्वोच्चे शुभदृष्टे सिंहासनाप्तिः ८१

शुभाःकेन्द्रे स्वरीशगाः पापाः सिंहासनाप्तिः ८२

टीका—सुखेश धनेश और लग्नेश अपनि स्वराशिमे गयेहो औरनव मेश लग्नमे स्थितहोतो सिंहासनकी प्राप्ती होवेगा अर्थात् किसीवडे राजाकी गद्दीपर बैठनेका सौभाग्य प्राप्त होवेगा ७८

नवमेश लग्नेश और सुखेश ये तीनो दशम भावमे गयेहो और बलवान् दशमेश से युक्त होतो सिंहासन की प्राप्तिहोवेगा ७९

सुखेश नवमे, गुरु शुक्र चतुर्थ भावमे और नवमेश केंद्रकोंवा त्रिकोण स्थानमे गयाहोतो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८०

अपनि उच्चराशि मे गयाहुवा धनेश केंद्रमे गयाहो और शुभग्रह से दृष्टहोतो सिंहासन की प्राप्तिहोवेगा ८१

संपूर्ण शुभग्रह केंद्रमे गयेहो और संपूर्ण पापग्रह तीसरे छठे ग्यारमे भावमें स्थित होतो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८२

इन योगोंमें जन्माहुवा किसी राजाके यहां दत्तक जायगा वा अपनी वीरतासे राज्य संपादन करेगा ।

नृपतुल्य योग ।

षट्स्वर्क्षगाः वा शुभषष्ठयंशेर्के नृपतुल्यः ८३

चंद्रेज्यौसुते वोत्तमांशे नृपतुल्यः ८४

चन्द्रेज्ञे गुरौसुखे खेशुक्रे मन्देस्वर्क्षोच्चे नृपतुल्यः८५

दशमादासोत्थगाः सौम्यानृपतुल्यः ८६

सौम्याःकेंद्रकोणेपापाङ्गयारिगालग्नेनेशसबलेनृपतुल्यः८७

नीचगभेशोच्चेशः केन्द्रेनृपतुल्यः ८८

बलिनिचंद्रे लग्नेतर केन्द्रकोणे शुक्रजीवान्यतरदृष्टे नृप तुल्यः ८९

नीचगाः स्वोच्चांशगाः नृपतुल्यः ९०

देहेजीवे ज्ञेकेन्द्रे भाग्यपदृष्टे नृपतुल्यः ९१

खेशेस्वोच्चमित्रांशे पारावतादौ नृपतुल्यः ९२

नीचे जीवेज्ञे धर्मपेरन्ध्रे शुभांशे नृपतुल्यः ९३

जीवेन्त्ये लाभेमंदे सोरथपेर्के नृपतुल्यः ९४

टीका—छग्रह अपनी स्वराशी मे गये हो १ अथवा रवि शुभषष्ठयंश

में गयाहो तो राजाके समान होवे ८३

चंद्र और गुरु ये दोनो पंचम भावमें गये हो अथवा सप्तमांश में गये होतो राजाके समान होवेगा ८४

लग्नमें चंद्रमा सुखमेगुरु दशमेशुक्र गयाहो और शनि अपनि स्व-तथा उच्चराशीमें स्थितहो तो राजाके समान होवेगा ८५

दशम भावसे तीसरे भावपर्यंत (१०।११।१२।१।२।३) के छ भावों मे संपूर्ण शुभग्रह गयेहोतो राजाके समान होवे ८६

संपूर्ण शुभग्रह केंद्र या त्रिकोणस्थान में और संपूर्ण पापग्रह ३।६।११ भावमें गये हो लग्नेश बलवान् होतो राजाके समान होवेगा ८७

नीचराशीमें जो ग्रहगयाहो उसराशी के स्वामीकी जो उच्चराशी हो उसका स्वामी यदि केंद्र (१।४।७।१०) मे गया हो तो राजाके स-मान होवेगा ८८

बलवान् चंद्रमा लग्नकेविना अन्य केंद्रकोणस्थानमें (४।७।१०।९।५) गयाहो और शुक्र किंवा गुरुसे दृष्ट हो वो राजाके समान होवे ८९

नीचराशीमे गये हुवे ग्रह अपनि उच्चराशीके नवांशमें गये हो तो राजाके समान होवेगा ९०

लग्नमे गुरु और केंद्रमे गयाहुवा बुध भाग्येश से दृष्टहो तो राजाके समान होवेगा ९१

दशमेश अपनी स्व, उच्च तथा मित्रराशीके नवांशमे और पारा-तादि शुभांशमें गया होतो राजाके समान होवेगा ९२

नीचराशीका गुरुलग्नमे और भाग्येश अष्टमभाव मे शुभग्रहकी रा-शीके नवांशमे गया हो तो राजाके समान होवेगा ९३

बारवे भावमे गुरु व ग्यारमेभावमेशनि गयेहो और तीसरे भावका स्वामि सुर्यहो तो राजाके समान होवेगा ९४

राजाधिराज योग।

षट्ग्रहाः स्वोच्चगाराजाधिराजः ९५

स्वशेसुतेतुलेगेसे कोणादृष्टे राजाधिराजः ९६

धर्मास्तदर्पोपूनोन केन्द्रे लग्नयुतौ राजाधिराजः ९७

चंद्रास्तोत्ये मंदार्कौ तुर्येस्थाच्छौ लाभेजीवे राजाधिराजः९८

गुरावङ्गे युनाम्बुगेसूर्ये वक्रगेशुक्रेसुते राजाधिराजः९९
जीवार्कावजे खेकुजे धर्मगाङ्गेन्द्वच्छाराजाधिराजः१००
कन्याङ्गेज्ञे शेपेर्जावे लाभेमंदे हयेशुक्रेवक्रार्कावलौ राजाधिराजः १०१
धर्ममन्दे उच्चे कुजे ङेज्याच्छाः सुते राजाधिराजः १०२
सकलाश्वरेषु राजाधिराजः १०३
सोत्थेशनौ षष्ठेभौमे खे शुक्रे धर्मस्वोच्चेर्के राजाधिराजः१०४
सुतेशे सबले स्वाङ्गेशयोगे केन्द्रे राजधिराजः १०५
खेशेदेवलोके स्वाङ्गेशौभारावते लाभपेगोपुरे राजाधिराजः १०६
गो मीनालिकन्यासु सर्वे राजाधिराजः १०७
घट सिंह युग्म धनुःषु सर्वे राजाधिराजः १०८
तुलाङ्गना हय मृग हरिषु सर्वे राजाधिराजः १०९
ज्ञारार्कज्यर्क्षेषु सघटेषु सर्वे राजाधिराजः ११०
ज्ञेन्दु जीवभेषु सर्वे राजाधिराजः १११

टीका–छग्रह अपनी उच्चराशी में गयेहों तो राजाधिराज होताहै ९९
दशमेश पंचममें सुखेश दशम भावमें गया हो और नवम पंचन भावके स्वामियों से दृष्ट होतो राजाधिराज होवे ९६
नवम और पंचनभावकेस्वामी लग्नेशते युत होकर सप्तम स्थानके विना अन्यकेन्द्रस्थान (१।४।१०) में गये होतो राजाधिराज होवेगा९७
चंद्रमासे तीसरे भावमें शनि रवि, चतुर्थभावमें बुधशुक्र और लाभ भाव मे गुरु गया हो तो राजाधिराज (बडाराजा) होवेगा ९८
लग्नमेगुरु सप्तम किंवा चतुर्थभावमे रवि और वक्रगती का शुक्र पंचमभाव मे गयाहो तो राजाधिराज होवे ९९
मेषराशी मेगुरुभोर रवि, दशमेमंगल और नवम भावमे बुध चंद्र व शुक्र ये तीनोंमहगयेहो तो राजाधिराज होवे १००

कन्याराशी के लग्न मे बुध, मीनराशी में गुरु, लाभ भावमे शनी, धन राशी में शुक्र, गयेहो और मंगल व रवि वृश्चिक राशि में होतो राजाधिराज होवेगा १०१

नवमे भावमे शनि हो भवानि उच्चराशीमे मंगल हो और गुरु शुक्र ये तीनो पंचम भावमे गये होतो राजाधिराज होवे । ये योग यदि वृषभ वा वृश्चिक लग्नमे होतो भाग्यवान होवेगा १०२

शुभ और पाप संपूर्ण ग्रह यदि चरराशि १।४।७।१० मे गये होतो राजाधिराज होवे १०३

तीसरे भावमे शनि छठे मंगल दशमे गुरु और नवमे भावमे भवानि उच्चराशी मे गया हुवा रवि गयाहोतो राजाधिराज होवेगा । ये योग सिंह लग्नमे जन्म होने वाले की कुंडली मे होना संभव है १०४

केंद्रस्थान १।४।७।१० मे नवमेश और दशमेश का योग हो और पंचमेश बलवान होवेतो राजाधिराज होवे १०५

दशमेश देवलोकांशमे धनेश व नवमेश ये दोनो पारावतांशमे और लाभेश गोपुरांश मे गयाहोतो राजाधिराज होवे १०६

वृषभ मीन वृश्चिक और कन्या इनचार राशियोंमे यादि शुभपापसर्व ग्रह गयेहोतो राजाधिराज होवेगा १०७

कुंभ, सिंह, मिथुन और धन इनचारराशीयो मे यदि संपूर्ण शुभपापग्र गयेहोतो राजाधिराज होवेगा १०८

तुल, कन्या, धन मकर और सिंह इनपांचराशियोने सकल शुभ पापग्रह यदि गये होतो राजाधिराज होवेगा १०९

बुधमंगलसूर्य औरगुरु इनचारो ग्रहो की राशिने तथा कुंभ राशीमे (३।६।१।८।५।९।१२।११) सर्व शुभ पाप ग्रह यदि गये हो तो राजाधिराज होवेगा ११०

बुध चंद्र और गुरु की राशि (३।६।४।९।१२) में सर्व शुभपाप ग्रहयदि गयेहोतो राजाधिराज होवेगा । १११

भूपति योग ।

लग्नाद्वाचंद्राद्धर्मकर्मपावन्योन्यगौ भूपतिः ११२

स्वर्क्षगाः सप्त भूपतिः ११३

सप्तसुहृद्गा भूपतिः ११४

त्र्याद्यिग्रहास्स्वोच्चगा भूपवंशजो भूपतिः ११५

क्रूरेषु स्वोच्चेषु क्रूरो भूपतिः ११६

स्वोच्चेषु शुभेषु शुभमतिर्मिश्रेषु मिश्रमतिः भूपतिः ११७

पञ्चादयो ग्रहाउच्चगा अन्यकुलजो भूपतिः ११८

चरेङ्गे मन्दार्कारेज्याः स्वोच्चगाभूपतिः ११९

मृगोनचरेङ्गे मन्दार्केज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२०

तुलोनचरेङ्गे भौमेज्यार्काः स्वोच्चगाभूपतिः १२१

कर्कोनचरेङ्गे मन्दारार्काः स्वोच्चगा भूपतिः १२२

मेषोनचरेङ्गे मन्दारेज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२३

टीका-लग्न से अथवा चंद्रमासे नवम और दशम भावके स्वामि परस्पर अन्योन्यस्थानमे [नवमेश दशम भावमे और दशमेश नवने भावमे] गये होतो राजा होवे ११९

सातग्रह अपनि स्वराशिमे यदि गये हो तो राजाहोवे ११३

यदि सातग्रह अपने मित्रग्रहकी राशिमे गयेहोतो राजाहोवे ११४

तीन से अधिक ग्रह अपनी उच्चराशी मे गयेहो तो राजाके वंशमे उत्पन्न हुवाहोगातो राजाहोवेगा ११५ अर्थात् अन्य वंशमे उत्पन्नहो तो राजाके समान वा प्रधान आदि होवेगा ।

क्रूर ग्रह अपनि उच्चराशिमे गये होतो क्रूरस्वभावका राजा होवेगा ११६

शुभग्रह अपनि उच्चराशिमे गयेहो तो शुभ (शांत) स्वभावका तथा शुभ और पाप दोनो ग्रह (मिश्र ग्रह) अपनि उच्चराशि मे गये हो तो मिश्र स्वभावका राजा होवेगा ११७

पांचसे अधिक ग्रह (पाच छ सात) यदि अपनि उच्चराशि मे हो तो अन्यके कुलमे उत्पन्न हुवा मनुष्यभी राजा होवेगा ११८

चरराशि १।४।७।१० का लग्नहो और शनि रवि मंगल गुरु ये चारो ग्रह अपनि उच्चराशिमे गये हो तो राजा होवे ११९

मकरराशिके विना अन्य चर राशि (१।४।७) का लग्न हो और शनि रवि गुरु ये तीनो ग्रह अपनी उच्चराशी मे गये हो तो राजा होवेगा १२०

तुलराशिके विना अन्य चरराशि [१।४।१०] का लग्नहो और मंगल गुरु रवि ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशी मे गये हो तो राजा होवे १२१

कर्कराशिके विना अन्य चरराशी [१।७।१०] का लग्नहो और शनि मंगल रवि ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशी मे गये हो तो राजा होवे १२२

मेषराशी के विना अन्य चरराशी (४।७।१०) का लग्न हो और शनि मंगल गुरु ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशि मे गये होतो राजाहोवे १२३

कर्कचंद्रे स्वोचग जीवार्कयोरन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२४

स्वर्क्षचंद्रेस्वोचग दमार्कयोरन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२५

कर्कचंद्रे स्वोचग सूर्यारयोरन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२६

कर्के चंद्रे स्वोच्चगयो र्यमेज्ययो रन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२७

कर्कचंद्रे स्वोच्चग जीवारयोरन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२८

कर्कचंद्रे स्वोच्चग यमारयोरन्यतरेऽङ्गे भूपतिः १२९

मेषेऽङ्गेर्के कर्कचन्द्रे भूपतिः १३०

चन्द्रेज्यौ कर्कङ्गे भूपतिः १३१

तुलेऽङ्गेर्कजे कर्कचन्द्रे भूपतिः १३२

भौमेमृगेऽङ्गे कर्कचन्द्रे भूपतिः १३३

टीका–कर्क राशिका चंद्रहो और अपनि उच्चराशि मे गयाहुवा गुरु तथा सूर्य लग्नमे गयाहो अर्थात् मेषकिंवा कर्कराशी का लग्नहो और रवि गुरु ये दोनो उच्चराशी के होचंद्र कर्क राशी का होतो राजा होवेगा १२४

कर्कराशी का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशी मे गयाहुवा शनि तथा रवि लग्न मे गयाहोतो राजा होवे अर्थात तुल किंवा मेषलग्न हो शनि रवि उच्चके और चन्द्रमा कर्कका होतो राजा होवे १२५

कर्क राशि का चंद्रमाहो और अपनि उच्चराशी मे गयाहुवा रवि मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् मेष किंवा मकर राशी का लग्नहो रवि मंगल उच्च के हो और कर्कका चंद्रमाहो तो राजा होवेगा १२६

कर्क राशीका चंद्रमा हो और अपनि उच्चराशी मे गया हुआ शनि तथा गुरु लग्नमें गयाहो अर्थात तुल किंवा कर्क राशी का लग्न हो शनि व गुरु उच्चराशी के और चंद्रमा कर्कराशी का होतो राजाहोवेगा १२७

कर्कराशी का चंद्रमाहो और अपनि उच्चराशीमे गया हुवा गुरु तथा मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् कर्ककिंवा मकरराशी के लग्नहो गुरु मंगल उच्चके और चंद्रमा कर्कका होतो राजा होवेगा १२८

कर्क राशिका चंद्रमा हो और अपनि उच्चराशीमे गया हुवा शनि तथा मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् तुलकिंवा मकर लग्नहो शनि मंगल उच्चके और कर्क क चन्द्रमा होतो राजा होवेगा १२९

मेषराशी के लग्नमे रवि गयाहो और कर्क राशी मे चंद्रमा होतो राजा होवेगा १३०

कर्क राशी के लग्न मे चंद्र गुरु गयेहोतो राजा होवे १३१

तुललग्न मे शनि गयाहो और कर्कका चन्द्र होतो राजा होवे १३२

मकर राशी के लग्नमे मंगल हो तो राजा होवे १३३

लग्नेवर्गोत्तमे चन्द्रेऽग्रहे चतुष्टयादिदृष्टे भूपतिः १३४

वर्गोत्तमेचन्द्रे ग्रहचतुष्टयादिदृष्टे भूपतिः १३५

कुंभेर्कजे मेषेर्के वृषेचंद्रे न्यतमेङ्क युग्मसिंहालिगेषु श्चेज्या रेषु भूपतिः १३६

शार्कोऽपिष्टे यमेन्द्वन्यतरे उच्चगे लग्नेऽ जेकुजे तुलेशुक्रे कर्केजीवे भूपतिः १३७

लग्नेर्कजे भौमेमृगे चापे चन्द्रार्कौ भूपतिः १३८

चन्द्रारौ मृगेङ्गे चापेर्के भूपतिः १३९
चन्द्रार्की यूने सूर्येङ्गे चापेजीवे भूपतिः १४०
तुङ्गेचंद्रे सिंहेर्के खेयमे यूनेजीवे भूपतिः १४१
मृगङ्गेमन्देसोत्थेचन्द्रे युग्मेभौमेधर्मेज्ञव्ययेजीवेपृथुयशो गुणी भूपतिः १४२
चापेचन्द्रेज्यौ मृगमुखेभौमे तुङ्गगज्ञाच्छान्यतरेङ्गे भूपतिः१४३
ज्ञेतुङ्गेङ्गे यमारौसुते चन्द्रेज्य सितास्तुर्ये गुणी भूपतिः १४४
कुंभेमंदे तुङ्गेभौमे स्वर्क्षेर्के मीनेङ्गे चंद्रे भूपतिः १४५

टीका--वर्गोतमांशमे (जिसराशी का लग्नहो उसीराशी के नवांश मे) गया हुवा लग्न, चंद्र के विना अन्य चार पांचग्रहों से दृष्ट हो तो भूपति होवे १३४

वर्गोत्तमांशमे गयाहुवा चंद्रमा चार पांच ग्रहो से दृष्ट हो तो राजा होवे १३५

कुंभराशीका शनि मेषकारवि वृषभका चंद्रमा इन तीनों मे से कोइभीएकलग्न मे गया हो और मिथुनमे बुध, सिंहमेगुरु और वृश्चिक राशि मे मंगल हो तो राजा होवे १३६

छठेभावमे बुध सूर्य और भपनि उच्चराशिमे गयाहुवा शनि किंवा चंद्रमा लग्नमे हो मेषराशी मे मंगल तुल मे शुक्र व कर्कराशी मे गुरु गयाहो तो राजा होवे १३७

लग्नमे शनि मकरराशीमे मंगल और धन राशी मे चंद्र व रवि गयेहो तो राजा होवे १३८

मकर राशी के लग्न मे चंद्रमंगल गये हो और धन राशीका रवि हो तो राजा होवे १३९

सातमे भावमे चंद्र शनि लग्नमे सूर्य और धनराशिमे गुरु गयाहो तो राजा होवे १४०

उच्चराशी (२) मे गयाहुवा चंद्रमा लग्नमे गया हो और सिंहराशीमेसूर्य, दशमे शनि, सातमे भावमे गुरु, गया हो तो राजा होवे १४१

मकरराशीके लग्नमे शनि, तीसरे भावमे चंद्रमा मिथुनराशी मे मंगल नवमे बुध और बारेमे भावमे गुरु गयाहो तो बडीकीर्तिवाला गुणवान् राजा होवे १४२

धन राशीमे चंद्र गुरु व मकरराशी के पूर्वार्द्ध मे मंगळ गया हो और अपनी उच्च राशीमें गया हुवा बुध किंवा शुक्र लग्नमे गया हो तो राजाहोवे १४३

उच्चराशी (६) मे गयाहुवाबुध लग्नमेगयाहो शनिमंगल पंचम भावमें (मकर राशी मे) और चंद्र गुरुव शुक्रये तीनो चतुर्थ भावमे गयेहोतो गुणवान् राजाहोवे १४४

कुंभराशी का शनि मकरराशी १० का मंगल सिंहराशी ५ कारवि हो और मीनराशी के लग्नमे चंद्रमा गयाहोतो राजा होवे १४५

तुङ्गेजीवे मषेभौमे तदन्यतरेङ्गे भूपतिः १४६

मेषेर्के चन्द्राच्छन्नेषु लाभगेषु तुङ्गगे जीवे भूपतिः १४७

मृगेर्कजेङ्गे चंद्रार्कोस्त्रर्षे भौमेजे झेयुग्मे तुलेशुक्रे पृथुयशो भूपतिः १४८

झेतुङ्गेङ्गे खेशुक्रे च देज्यौयूने मन्दारौसुते भूपतिः १४९

आत्मकारकाद्धने तुर्ये सुते शुभे भूपतिः १५०

आत्मकारकाद्रिपु सोत्यगौ पापौ भूपतिः १५१

कर्केङ्गे तुर्येर्कजारौ खे झेज्यार्कशुका भूपतिः १५२

कुंभेङ्गेशुक्रे चतुर्षु स्वोच्चगेषु भूपतिः १५३

बलाढ्याः स्वोच्चगाः पूर्वपे पूर्वदलेनृपो न्यथापरदछे १५४

पूर्णेन्दु युक्तौ मन्दारौ भाग्ये भूपतिः १५५

टीका--उच्चराशी मे गुरुऔर मेषराशि मे मंगल गयाहो और इनदोनो मे से भेक लग्नमे गयाहोतो राजाहोवेगा १४६

मेष राशी का रवि दशमे चंद्र शुक्र बबुध ये तीनो लाभ भावमें और अपनी उच्चराशी ४ मे गया हुवा गुरु लग्नमे गयाहोतो राजा होवेगा १४७

मकर राशीके लग्नमे शनि, चंद्र और रवि ये दोनो अपनी अपनी स्वराशी में (४ में चंद्र ५ मे रवि) मेषराशि मे मंगल मिथुनराशीमे बुध और तुलराशी मे शुक्र गया हो तो यह यश और कीर्तिवाला राजा होवेगा १४८

लग्नमे अपनी उच्चराशी (६) में गया हुआ बुध, दशम भावमे गुरु सप्तमभावमे चंद्र व गुरु और पंचमभावमे शनि मंगल गये होतो राजा होवेगा १४९

आत्मकारक ग्रहसे दूसरे चोथे और पांच में भावमें शुभग्रह गये हैं तो राजा होवेगा १५०

आत्मकारक ग्रहसे छठे और तीसरे भावमे पापग्रह गये होतो राजा होवे १५१

कर्कराशीका लग्नहो चतुर्थभाव मे शनि मंगल हो और दशमे भावमें बुध गुरु सूर्य व शुक्र ये चारों ग्रह गये होतो राजा होवे १५२

कुंभराशिके लग्नमे शुक्र गया हो और कोईभी चार ग्रह अपनि स्वराशिमे गये हो तो राजा होवे १५३

लग्न से छठे भाव पर्यंत के पूर्वषट्क मे अपनि उच्चराशि मे गयेहुवे बलवान् ग्रहगये होतो आयु के पूर्व दलमे राजा होवेगा और सप्तम भावसे लग्न पर्यंत के परषट्क मे यदि उच्चराशी मे गये हुवे बलवानग्रह गये होतो आयु के उत्तरार्द्धमे राजा होवेगा १५४

शनि और मंगल ये दोनो पूर्णचंद्रसे युक्तहोकर भाग्यभाव (नवम) मे गये हो तो राजा होवेगा १५५

लग्नपसौम्या उपचये राजा १५६

राव्हारचंद्राः पञ्चमे राजा १५७

उदयेचरे भाग्यपेसिंहासने केंद्रे राजा १५८

लेस्थिराङ्केशेकेंद्रजीवे राजा १५९

भाग्येशांशे सुखे पुत्रे राजा १६०

टीका–लग्नेश और शुभग्रह उपचय ३।६।१०।११ स्थानमे गये होतो राजा होवे १५६

राहु मंगल और चंद्रमा ये तीनो पंचम भावमे गये होतो राजाहोवे १५७

चरराशि १।४।७।१० का लग्न हो और सिंहासनांश मे गया हुवा भाग्येश केंद्रस्थानमें गयाहोतो राजा होवे १५८

स्थिरराशी २।५।८।११ के लग्नका स्वामि दशम भावमे गयाहो और गुरु केंद्रमे होतो राजा होवे १५९

भाग्येश के नवांश का स्वामि सुख मे वा पंचम भावमे गयाहोतो राजा होवे १६०

भूपति तथा मंत्रीयोग।

जीवर्क्षे तुलेऽर्कजे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६१

खेमार्कौ राहुहारीपष्ठे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६२

सोरधेजीवेरन्ध्रेशुक्रे भूपजोभू० १६३

सिंहेकुजे युग्मे राहौ भूपजोभू० १६४

चंद्रारावर्क्ते वा दशमे भूपजोभू० १६५

शुभषष्ठचंद्रोर्के केंद्रायकोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १६६

सुतेशेऽङ्के धर्मपेसुते भूपजोभू० १६७

कोणाम्बु राज्याङ्ग्या युक्ता भूपजोभू० १६८

चंद्राद्दशमेशे सबले केन्द्रनवमार्थे भूपजोभू० १६९

एकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टो भूपजोभू० १७०

धर्मेशे जीवर्क्षे खेशुक्रे पुत्रेशदृष्टे भूपजोभू० १७१

शुक्रेऽप्यौतुर्ये भूपजोभू० १७२

टीका-तुलराशी का जन्म लग्न हो और गुरुकी राशी ९।१२ मे शनि गयाहोतो राजा के यहां जन्मपायाहोतो राजा और अन्यके यहाजन्म पायाहोतो मंत्री होताहै १६१

दशमे भावमे बुध रवि, और छठे भावमे राहु मंगल गये होतो राजाके यहां जन्म पायाहोतो राजा और अन्यके घरजन्म पाया हुवा प्रधान वामंत्री होताहै १६२

तीसरे भाव मे गुरु और आठमे भावमें शुक्र गयाहो तो राजाके यहां जन्म पाया होतो राजा और अन्य के यहांजन्म पाया हो वहमंत्री होताहै १६३

सिंहराशीमे मंगल और मिथुन राशी में राहुगयाहोतो राजाके यहा जन्म पायाहो तो राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मंत्री होताहै १६४

यहयोग कर्क वा सिंह राशी के लग्नमे जन्म होनेवाले के बलवानहोताहै

चंद्रऔर मंगल ये दोनो लग्न मे अथवा दशमे भावमे गयेहोतो राजा के यहा जन्मपायाहो वहराजा और अन्यके यहा जन्म पायाहो तो मंत्री होता है १६५

शुभषष्ठयंशमें गयाहुवा रवि १।४।७।१०।११।९।५ भाव में से किसी भावमें गया हो तो राजाके यहा जन्मपायाहो तो राजा और अन्यके यहा जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६६

पंचमेश नवमभावमे और नवमेश पंचम भावमे गयाहोतो राजा के यहां जन्मपायाहुवा राजा और अन्यकेयहाजन्मपाया होतो मंत्री होताहै १६७

नवम पंचम चतुर्थ दशम और लग्न इनपांचो भावोके स्वामि एकराशिमे युक्त होतो राजा केयहा जन्म हुवाहोतो राजा और अन्य केयहां जन्मपाया होतो मंत्री होवेगा १६८

चन्द्रमासे दशम भावमे जो राशी हो उस का स्वामि बलवान होकर १।४।७।१०।९।२भावमें गयाहोतो राजाके यहाजन्मपायाहोतो राजा और अन्य के यहाजन्मपायाहो तो मंत्री होताहै १६९

उच्चराशीमे गयाहुवा एकभीग्रह अपने मित्रग्रहसे दृष्टहोतो राजाके यहाजन्मपायाहोतो राजा व अन्यके यहांजन्मपायाहो तो मंत्रीहोताहै १७०

नवमेशगुरु कीराशी ९।१२ मे गयाहो और दशमभावमे गयाहुवा शुक्र पंचमेश से दृष्टहोतो राजाके यहांजन्मपायाहोतो राजा व अन्यके यहांजन्मपायाहो तो मंत्रीहोताहै १७१

शुक्र और गुरु येदोनो चतुर्थ भावमेगयेहोतो राजा के यहा जन्म पाया होतो राजा और अन्यकेयहां जन्मपाया होतो मंत्रीहोताहै १७२

चंद्रेज्यौ कर्के नृपजोभूपान्यजो मंत्री १७३

कन्यायां चंद्रज्ञौ नृपजोभूपान्यजो मंत्री १७४

तुङ्गर्के सबलमन्दयुते भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७५
शुक्रज्यौ तुङ्गगौ केन्द्र कोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७६
नगार्थाङ्गान्त्येषु सर्वेषु भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७७
यूनोन केंद्रकोणे सुखेशे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७८
गुरावुच्चगे केन्द्रे खे शुक्रे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७९
केन्द्रकोणार्थे खेशे शुभदृष्टे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८०
सशुभे खेशे सुखे पुत्रपेचापे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८१
धर्मेशे पारावते शुभदृष्टे चन्द्रात्पुण्यपे देवलोके भूप०१८२
लग्नेशेंके खेशेङ्के भूपजो भूपान्यजोमंत्री १८३
पुण्यवन्तावङ्के खेभौमे यमेआये धर्मेचापगे जीवे भू०१८४
स्वर्क्षेशुक्रेतुर्ये धर्मेचंद्रे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८५
■मेङ्के तुर्ये जीवे पुण्यवन्तौ दशमे लाभेज्ञारात्छाभूप०१८६
दशापोदयगार्थंद्रार्किजीवा ज्ञारौधने शुक्रार्कौ तुर्ये भूप-
जोभूपान्यजो मंत्री १८७
गुरौगोपुरांशेत्रालिनि सुतेश युते भूपजोभूपान्यजोमंत्री१८८
टी.का–कर्कराशी में चंद्र और गुरुगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो
[राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७३
कन्याराशी में चंद्र बुधगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा
अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७४
उच्चराशी में गयाहुवा रवि बलवान् शनिसे युतहो तो राजाके यहां
न्मपायाहो वहराजा व अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है१७५
अपनी उच्चराशी मे गये हुवे शुक्र गुरु [मीनमेशुक्र कर्कमे गुरु गया
और ये दोनो] केन्द्र वा त्रिकोण स्थान मे गये हो तो राजा के यहा
न्म पायाहो वह राजा व अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १७६

सप्तम धन लग्न और व्यय ७।२।१।१२ इन चारो भावो मे सर्वशुभ पाप ग्रह गये हो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा व अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १७७

सप्तमस्थान के विना अन्य केंद्रत्रिकोणस्थान (१।४।१०।९।५) में सुखेश गया होतो राजा के यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७८

उच्चराशी में गयाहुवा गुरु केंद्रमें और शुक्र दशमेंभावमें गयाहो तो राजा के यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७९

शुभग्रहसे देखाहुआ दशमेश केंद्रत्रिकोण में तथा धनभाव में गया हो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८०

शुभग्रह से युत दशमेश पंचमभाव में गयाहो और पंचमेश धनराशी में होतो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८१

पारावताशमें गयाहुवा धनेश शुभग्रहसे दृष्ट हो और चंद्रमा से नवमे स्थानका स्वामि देवलोकांश में गयाहो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८२

लग्नेश नवमें भावमें हो और दशमेश लग्नमें गया होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८३

रवि चंद्र लग्नमे हो, दशमें मंगल, ग्यारमें भावमे शनि, नवमें भावमें धनराशीमें गयाहुवा गुरु गयाहो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८४ ये योग मेष राशीके लग्न मे होवेगा ।

अपनी स्वराशी ७।२ मे गयाहुवा शुक्र चतुर्थभावमे और चंद्रमा नवमे भावमे गयाहोतो राजाके यहा जन्मपायाहो वहराजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८५ यह योग कर्क या कुंभ लग्नमे होवेगा ।

लग्नमे शनि, चतुर्थभावमे गुरु, दशम भावमे सूर्य व चंद्रमा और (११)भावमें बुध मंगल शुक्र ये तीनोग्रह गये हो तो राजाके यहा

जन्मपाया हो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपाया हो वह मंत्री होताहै १८६

दशमे चंद्रमा ग्यारमेशनि लग्नमेगुरु धनमेबुधमंगल और चतुर्थभावमे रवि शुक्र गये हो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८७

गोपुरादि शुभांश में गुरु गयाहो और बलवान् होकर पंचमेशसे युत हो तो राजाके यहां जन्मपाया हो तो राजाहोताहै और अन्यके यहां जन्महुवाहो वह मंत्री होता है १८८

राजयोगभंग योगाः।

नवांशेखेशानीचगा व्यर्थाराजयोगाः १८९

भद्रायांव्यतीपाते क्रांतिशते जन्मनिव्यर्था राजयोगाः १९०

परमनीचांशे चंद्रे व्यर्थाराजयोगाः १९१

उच्चगाः खेटानीचांशगाव्यर्थाराजयोगाः १९२

उच्चेर्के नीचांशे राजपुत्रोपि नीचतांगच्छति १९३

परमनीचगेर्के व्यर्थाराजयोगाः १९४

नीचगेशुक्रे सिंहांशे वा स्वांशे व्यर्थाराजयोगाः १९५

राज्यदानीचारात्यस्तगाव्यर्थाराजयोगाः १९६

उत्पातदिने जन्मनि व्यर्थाराजयोगाः १९७

दशमेनीचखगे व्यर्थाराजयोगाः १९८

चतुर्षु खगेषु शत्रुभगेषु वा नीचांशभगेषु व्यर्थाराजयोगाः १९९

ग्रहमात्रादृष्टश्चंद्रो वा लग्नो व्यर्थाराजयोगाः २००

सिंहांशेर्के पापयुते क्षीणेन्दौ सौम्यादृष्टे व्यर्थाराजयोगाः २०१

परमनीचांशे जीवे वा शुक्रे व्यर्थाराजयोगाः २०२

पापानीचगास्सर्वे कण्टकगाः सौम्यास्त्रिकगाव्यर्थाराजयोगाः २०३

सौम्याअस्तगा केन्द्रहीना लग्नेराहौचन्द्रदृष्टे पापाःषट्

ऽयायगाऽपर्थाराजयोगाः २०४

इति दशम विवेकः ।

टीका—नवमेश दशमेश और लाभेश ये तीनों अपनी नीचराशी में गये होतो उपरोक्त राजयोग व्यर्थ होवेगा अर्थात् यद्यपि राजयोग उत्तम बनाहोगा तथापि राजयोगका भंगयोग बलवान् आजायगा तो यह उपरोक्त सर्व राजयोग निष्फल होजावेगा। अतएव उभययोगों के बलाबलका विचार करके राजयोगका फलाफल कहना १८९

भद्रामें व्यतीपातयोगमें क्रांतिपात (महापात) दोष में जन्म हो जैसे राज योग व्यर्थ होवेगा १९०

परमनीचांश में (वृश्चिकराशीके ३ अंशका) चंद्रमा होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९१

उच्चराशीमें गये हुये ग्रह यदि नीचराशीके नवांशमें गयेहोतो राज योग व्यर्थ होवेगा १९२

उच्चराशीमे गयाहुवासूर्य नीचराशीके नवांशमें गयाहोतो राजा कार्भिपुत्रहोतो नीचताको प्राप्त होवेगा अर्थात् वह राज्यच्युत होजावेगा १९३

परमनीच राशी में (तुलराशीके१०अंशमें) रवि गयाहो तो राजयोगव्यर्थ होवेगा १९४

नीचराशीमें (६ राशी में) गयाहुवा शुक्र सिंहराशीके अथवा स्वराशी ७।२ के नवांशमे गया होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९५

राजयोग करनेवाले ग्रह यदि नीच, शत्रु राशी मे गयेहो किंवा अस्तंगतहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९६

उत्पातके दिन अर्थात् जिसदिन भूकंप विद्युत्पात गंधर्वनगरदर्शन दिग्दाह परिवेषादिदिव्यभौमांतरिक्षके उत्पातहो उसदिन यदि जन्म होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९७

दशमभावमे नीचराशीका ग्रहगया होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९८

कोईभी चारग्रह अपने शत्रु ग्रहकी राशीमे गये हो अथवा चारग्रह नीचराशी के नवांशमें गये हो तो राजयोग व्यर्थ होजावेगा १९९

चंद्रमा अथवा लग्न किसीभी ग्रहसे दृष्ट न हो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा २००

सिंहराशीके नवांशमें गयाहुवाराबि पापग्रहसे युत हो और क्षीण चंद्रमा किसी शुभग्रहसे दृष्ट नही तो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०१
गुरु अथवा शुक्र अपने परमनीचराशीके अंशमें (गुरु मकरके ५ अंशमें किंवा शुक्र कन्याके २७ अंश मे) गयाहोतो राजयोग व्यर्थ होगा २०२
नीचराशिमें गये हुये सर्व पापग्रह केंद्रमें गये हो और सर्व शुभग्रह त्रिकस्थान ६।८।१२ में गये होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०३
शुभग्रह अस्तंगत होवे और केंद्रमें नही गयेहो चंद्रसेद्दष्टराहु लग्नमें हो सर्वपापग्रह ६।३।११ मे भावमें स्थितहोतो सर्व राजयोग व्यर्थहोवेगा २०४
इत्यादि विचारों के सिवाय भाईकीमृत्यु, स्त्रीकीमाता (सासु) मातुलिक, मातृस्थान [घुटने] पुत्रकारोग शत्रु, दादाके मित्र, ग्रह. चतुष्पदादि विषयोका विचारभी इसी दशमभावमें करना–

इति दशम विवेकस्य टीका समाप्ताः



अथैकादशविवेकः

बहु लाभयोग ।

लाभेशुभान्यापतोलाभोन्यथा न्यायतो मिश्राउभयथा १

लाभेशुभदृष्ट्याधिक्ये बहुलाभः २

लाभपेकेंद्रकोणे बहुलाभः ३

लाभपे शुभ संबंधे बहुलाभः ४

टीका–लाभ (ग्यारमें) भावमे शुभग्रहगये हो तो न्यायमार्ग से धनका लाभ होवेगा । और पापग्रह लाभ भावमें गये होतो अन्यायमार्गसे धनका लाभ होवेगा । तथा शुभ व पापदोनो (मिश्रग्रह) लाभ भावमें गये होतो न्याय और अन्याय दोनो से अर्थात् मिश्रमार्ग से धनका लाभ होवेगा १

लाभभावपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि होतो धनकालाभ बहुत होवेगा २

लाभेश केंद्रकिंवा त्रिकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में गया होतो धनका बहुत लाभ होवेगा ३

लाभेश शुभग्रहसे संबंध (संबंधचारप्रकारका सँज्ञातावकेसूत्र ६४ मे कहा है) करता होतो धनका लाभ बहुत होवेगा ४

यादनवान्योग

चंद्राद्द्यूने शुक्रे यानवान् ५

चंद्रात्सिते सोत्थायेयानवान् ६

सुखेशेऽलाभे गुरुदृष्टे बहुयानवान् ७

गुरुदृष्टसुखेशेन सुखेदृष्टे यानवान् ८

जीवाच्छौ सुखेश युतौ केंद्रकोणायगौ यानव्यूनाथः ९

इज्याच्छौ धर्मपयुतौ भाग्ये वा तुर्ये यानव्यूहनाथः १०

धनपयुतेन्त्येशे तुङ्गे भाग्यदृष्टे यानव्यूहनाथः ११

टीका-चंद्रमासे सप्तमस्थान में शुक्र गयाहो तो गाड़ी घोड़ा मोटर साइकल आदि वाहनवाला होवे ५

चंद्रमासे शुक्र तीसरे किंवा ग्यार में भावमें गयाहो तो वाहनका मालिक होवे अर्थात वाहन अपने घरू रखने वाला होवे ६

गुरुसे देखाहुआ सुख भावेश लाभभवामें गयाहो तो बहुत वाहनो वाला होवे ७

गुरुसे देखे हुवे सुखेशसे सुखभाव संदृष्ट होतो वाहनवाला होवे ८

गुरु व शुक्र से युक्त होकर सुखेश केंद्रत्रिकोण अथवा लाभ भाव में गयाहो तो वाहनोंके समूह [झुंड] का मालिक होवे अर्थात् बहुत वाहनों वाला होवे ९

गुरु व शुक्र नवमेशसे युक्त होकर भाग्य (नवम) भाव में किंवा सुख भावमें गयेहो तो अनेक वाहनोका मालिक होवे १०

अपनी उच्चराशी में गयाहुआ व्ययेश धनेशसे युतहोकर नवम भावको देखता होतो बहुत वाहनोंके झुंडका मालिक होवे ११

जिनके वाहनव्यूहनाथ योग होता है उनके घरमे बहुत वाहन होवे

ड़ागाड़ी मोटर आदि होवेंगे किंवा इन वाहनोंका धंधा करने वाला
गा ट्रामवे अथवा रेलवे कंपनीके भागीदार वा निजके वाहनके
का व्यापार करनेवाले लोगोंकोभी येही योग बलवान् हुवे नजर आवेंगे।

वाहन सुखयोग।

धर्मपसेशास्तुर्ये वाहनसुखम् १२
सेउच्चगेखेटे धर्मगेशदृष्टे वाहनसुखम् १३
सिंहासनेंशुकर्मेशौ लग्नेशदृष्टौ वाहनसुखम् १४
सुखेशे सबले शुभदृष्टयुते वाहनसुखम् १५
सुखेशेऽङ्के सशुके वाहनसुखम् १६
सुखेशेऽङ्के जीवयुते वाहनसुखम् १७
चंद्रेज्यशुक्रास्तुर्येयुता अङ्के वाहनसुखम् १८
धर्मपयुतेम्बुपे सबले जीवदृष्टयुते वाहनसुखम् १९
भाग्येशाल्लाभेऽङ्केशे सुखेशेधर्मे वाहनसुखम् २०
सुखपे केंद्रे वर्धीशेऽङ्के वाहनसुखम् २१
शे लग्नेशे सुखेशेऽङ्के वाहनसुखम् २२
ग्नेशेऽङ्के कर्मेशेर्ये तुंगगे कस्मिंश्चिद्ग्रहे वाहनसुखं २३
सुखेशे ऐरावते गजवाहनसुखं २४
सुखेशे केन्द्रेवैशेषिकेवा लाभपेगोपुरे गजवाहनसुखं २५

इत्येकादशमविवेकः ११

१२-नवमेश लाभेश और दशमेश ये तीनोंग्रह चतुर्थ भावमें गये
। वाहनका सुख होवेगा १२
उच्चराशिमें गयाहुवा ग्रह दशमभावमें गयाहो और वह भाग्येश व
न इन दोनोंसे दृष्टहोतो वाहनका सुख होवेगा १३
श और दशमेश ये दोनों सिंहासनांशमेंगयेहो और लग्नेश से
तो वाहनका सुख होवे १४

सुखेशवक्रवान्होकर शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो वाहनकासुखहोवे१५
शुक्रसे युतहोकर सुखेश लग्नमे गयाहो तो वाहनका सुखहोवेगा १६
गुरुसे युत होकर सुखेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा १७
चंद्र गुरु शुक्र और चतुर्थभावका स्वामी ये चारोग्रह लग्नमे गयेहो तो वाहनका सुखहोगा १८

बलवान् सुखेश भाग्येश से युतहोकर गुरुसे युतदृष्ट होतो वाहन का सुखहोवेगा १९

भाग्येशसे लाभभावमे लग्नेश गयाहो और सुखेश भाग्यभावमे गया हो तो वाहनका सुखहोवेगा २०

सुखेश केंद्रस्थानमें जिसराशिमे गयाहो उसराशी का स्वामी लग्नमें गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा २१

लग्नेशदशमे औ दशमेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा२२
लग्नमें धनेश व धनमे दशमेश गयाहो और कोईभी एक ग्रह उच्च राशीमे होतो वाहनका सुखहोवेगा २३

सुखेश एरावतांश मे गयाहोतो गजवाहन का सुखहोवेगा २४
सुखेश केंद्रमेहो वैशेषिकांशमें गयाहो और लाभेश गोपुरांशमे गयाहो तो गज (हाथी) की सवारी का सुखमिलेगा २५ जिनके निजके घर की सवारी नहोतेभी गाड़ी घोड़ा मोटर बग्घी हाथी आदि सवारियोमे बैठके फिरनेका वा उनपर अधिकार रखनेका अवसर मिलतारहता है उनकी जन्मकुंडलीमे वाहनसुख का योग बलवान देखनेमे आवेगा।

इत्यादि विचारोंके सिवाय भाईकेभाईकीस्त्री, भाईके शाला शाली, भाईका भाग्य, माताकी मृत्यु, मित्रकी मृत्यु, पुत्रकीस्त्री, पुत्रके पुत्रकी शालेकी स्त्री, स्त्री कि विद्या, पींढिये (घुटनेके नीचेकी पींडलियो का स्थान) और दादाकी विद्या बुद्धि आदि बातोंका विचारभी लाभभावसे करना।

इत्येकादशम विवेकस्यटीका समाप्ता: ।



अथ द्वादशमविवेकः ।

हानि योग ।

षष्ठेष्टमेचंद्रेद्यूनेमन्दे सर्वहानिः १

व्ययेपापदृष्ट्याधिक्ये धनहानिः पदेपदे २

टीका-छठे किंवा आठमे भावमे चंद्रमागया हो और सप्तम भावमें शनिहो तो सर्वस्वकी हानि होवेगा १

बारमे भावपरपापग्रहों कि अधिक दृष्टिहो तो पदपद पर धनकी हानी होती रहेगा अर्थात कोईभी काम लाभके लिये करेगा उसमे वारंवार हानि होती जावेगा २

त्यागी योग ।

मीनांशे त्यागी ३

टीका-कारकांश लग्नमे मीनराशी हो तो त्यागी पुरुष होवेगा ३

दंभाद्धर्म परिग्रह योग ।

शुभेक्षे धर्मपेपापांशे वा पापषष्ठ्यंशे दम्भाद्धर्मपरिग्रहः ४

टीका-नवमभावमे शुभग्रह गया हो और धर्मेशपापग्रहके नवांश मे हो अथवा नवमे शुभग्रह गयाहो और नवमेश पापषष्ठ्यंशमे होतो कपट से धर्माचरण करने वाला होवेगा ५४

दानशीलयोग ।

धर्मपे स्वोंचे शुभदृष्टे दानशीलः ५

धर्मे शुभदृष्टयुते दानशीलः ६

धर्मपे पारावतादौगुरुदृष्टे लग्नपेभृगुदृष्टे दानशीलः ७

लग्नेधर्मपदृष्टे लग्नपे केंद्रे महादानशीलः ८

दानेशे सिंहासने खाङ्गप दृष्टे माहादानशीलः ९

दानपेभृगुगे खपेकेन्द्रे व्ययेशे गुरुदृष्टे महादानशीलः १०

स्वोच्चगेज्ञे धर्मपदृष्टे लाभे केंद्रे महादान शीलः ११

टीका-नवमेश अपनी उच्चराशी मे गया हो और वह शुभग्रह सेदृष्ट

हो तो दानकरने वाला (दानशील) होवे ५

नवम भाव शुभग्रहसे युत और दृष्टहोतो दानशीलहोवे ६

पारावतादि शुभांशमे गयाहुवा नवमेश गुरुसे दृष्टहो और लग्नेश शुक्र से दृष्ट होतो दानशील होवे ७

धनेशसे लग्नदृष्टहो और लग्नेश केंद्र स्थान में गयाहोतो महादान शील (महादान देनेवाला) होवे ८

नवमेश सिंहासनांश में गयाहो और वह लग्नेश व दशमेश से दृष्ट हो तो महादानशील होवे ९

नवमेश सुखमे व दशमेश केंद्र मे गया हो और व्ययेशको गुरु देख-ताहो तो महादानशील होवे १०

अपनी उच्चराशी मे गयाहुवा बुध नवमेश से दृष्ट होकर लाभमे वा केंद्रमे गयाहोतो महादान शीलहोवे ११

दानप्राप्ति योग ।

सबलेऽङ्गपेलाभे धर्म कर्मपदृष्टे दानप्राप्तिः १२

सुतपेऽङ्गे धर्मकर्मपयुते लग्नपदृष्टे दानप्राप्तिः १३

धर्मपेखपदृष्टे केंद्रकोणे परमोच्चांशेवा दानप्राप्तिः १४

टीका-बलवान् लग्नेश लाभभावमेगयाहो और नवमेश व दशमे इनदोनो से दृष्टहोतो दानकी प्राप्ति होवेगा १२

नवमेश व दशमेशसे युतहो कर पंचमेश नवमे भावमे गयाहो औ लग्नेश सेदृष्ट होतो दानकीप्राप्ति होवेगा १३

दशमेश से दृष्टहोकर नवमेश केंद्र किंवा त्रिकोण मे गयाहो अथ नवमेश अपने परमोच्चांश मे गयाहोतो दानकीप्राप्ति होवेगा १४

धर्मदृढबुद्धि योग ।

धर्मेशे सशुभे शुभांशे धर्मे दृढबुद्धिः १५

धर्मपे वैशेषिके धर्मे दृढबुद्धिः १६

धर्मपे शुभपवर्यंशे धर्मे दृढबुद्धिः १७

टीका-नवमेश शुभ ग्रहसेयुत होकर शुभग्रह के नवांशमे गयाहो तो धर्म मे दृढबुद्धि वालाहोवे १५

धर्मेश वैशेषिकांशमे गयाहोतो धर्ममे दृढबुद्धि वाला होवे १६
नवमेश शुभषष्ठ्यंश मे गयाहोतो धर्म मे दृढ विश्वास वाला होवे १७

अन्नदाता योग ।

शुक्रेज्योधने धनेशे वैशेषिकेऽन्नदाता १८

सबलेधनपे केंद्रोपचये बलिशुभैर्दृष्टेऽन्नदाता १९

टीका–शुक्र व गुरु धनभावमे गयेहो और धनेश वैशेषिकांशमे होतो अन्नदान करनेवाला होताहै १८

बलवान् धनेश केंद्रअथवा उपचय ३।६।१०।११ स्थानमे गयाहो और बलवान शुभग्रहो से दृष्टहोतो अन्नदाता होताहै १९

सद्ऽसद्व्ययोग ।

व्ययेशुभेसद्व्ययोऽशुभेऽसद्व्ययो मिश्रेमिश्रः २०

व्यये रवि राहुशुक्र योगे राजमूलोव्ययः २१

जीवेन्त्ये करव्याजेन व्ययः २२

क्षीणेन्दु सूर्यौ व्यये राजद्राव्यं हरेत् २३

अन्त्ये मंदारौ भ्रातृद्वारा व्ययः २४

टीका–बारमे भावमेशुभग्रह गयेहोतो सन्मार्गमे धनका खर्चहोवेगा पाप ग्रह गये होतो असन्मार्ग मे और शुभपाप दोनो [मिश्र] ग्रह गयेहोतो मिश्र मार्ग [अच्छे और बुरे दोनों मार्ग] मे धनका खर्च होवेगा २०

रवि राहु और शुक्र इन तीनोका योग बारमे भावमे होवो राज्यके कार्य संबंधमे धनका खर्च होवेगा २१

बारमे भावमे गुरुगयाहोतो कर [महसूल] के बाहने से धनका खर्च होवेगा २२

क्षिण चंद्र और रविषेदोनोबारमे भावमे गयेहोतो राजाधनछीनलेगा२३

बारमे भावमें शनि और मंगल ये दोनो गये होतो भाइके द्वारा धनका खर्चहोवेगा २४

धन संचय कर्तायोग ।

व्यये शुभे धनसंचय संख्या २५

टीका-बारमे भावमे शुभग्रह गयेहोतो धनका संचय होता रहेगा २५

ऋण ग्रस्त योग ।

धनेपापे व्ययेङ्गेशे सेशलाभपयुत दृष्टे ऋणग्रस्तः २६

सपापे धनेशे मूढे धनरंध्रे ऋणग्रस्तः २७

नीचेर्थेशे क्रूरषष्ठ्यंशे तथा लाभेशे ऋणग्रस्तः २८

सपाप लग्नपास्त्रिकेश युतदृष्ट ऋणग्रस्तः २९

पुत्रपेङ्गे शुभादृष्टे ऋणग्रस्तः ३०

लाभेशांशेशे शुभयुते क्रूरषष्ठ्यंशे ऋणग्रस्तः ३१

लग्नपे मूढारिनीचत्रिके मारकेशयुते भाग्यपे शुभैरदृष्टे

नरेशोपि ऋणग्रस्तः ३२

टीका-पापग्रह धन भावमें व लग्नेश बारमेभावमें गयाहो और दशमेश लाभेशसे युत दृष्टहो तो ऋणग्रस्त होवेगा २६

पापग्रहसे युत धनेश अस्तंगत होकर धनभावमे किंवा आठमें भावमे गयाहो तो ऋणग्रस्त [कर्ज से पीडित] होवेगा २७

नीचराशीमें गयाहुवा धनेश क्रूरषष्ठ्यंशमे गयाहो और लाभेशभी नीचराशीमे स्थितहोकर क्रूरषष्ठ्यंशमे स्थितहो तो ऋणग्रस्त होवेगा२८

पापग्रहसे युतलग्नेश छठे आठमे किंवा बारमें भावके स्वामि से युत अथवा दृष्ट हो तो ऋणग्रस्त होवेगा २९

पंचमेश लग्नमे गयाहो और वह शुभग्रहो से दृष्टनहो तो ऋणग्रस्त होवेगा ३०

लाभेशके नवांशका स्वामि शुभग्रहसे युतहो और क्रूरषष्ठ्यंशमे गयाहो तो ऋणग्रस्त होवे ३१

लग्नेश अस्तका वा अपनी शत्रु किंवा नीचराशीमे स्थितहोकर६।८।१२ मे भावमे गयाहो और भाग्येश [नवमेश] मारकेशसे (धनेश वा सप्तमेश से) युतहोवे और वह शुभग्रहोंसे दृष्ट नहो तो यदि राजा वा राजा के समान मनुष्य हो तथापि ऋणग्रस्त होवेगा अर्थात् ये योग राजाके होतो वहभी अवश्य ऋणग्रस्त हुये विना रहता नहीं तो साधारण मनुष्य की क्या कथा है ।

ऋणदाता योग।

धनायेशयोर्द्व्यंशेशस्यांशेशोवैशेषिकांशे केंद्रकोणे ऋणदाता ३३

लग्नेशांशेशो मृदंशादौ जीवदृष्ट ऋणदाता ३४

टीका-धन और लाभ इन दोनों भावोंके स्वामियोंके द्रेष्काणके स्वामिके नवांशके स्वामि यदि वैशेषिकांश में स्थितहोकर केंद्र किंवा त्रिकोणस्थानमें गये हो तो लोगोंको उधारद्रव्यसे व्याजपर देने वाला (करजा देने वाला) होता है ३३

लग्नेशके नवांशका स्वामि मृदुसंज्ञकादि शुभ षष्ठ्यंशमें गयाहो और गुरु उसको देखता होतो ऋणदेनेवाला (करजा देनेवाला) होताहै ३४

बंधन योग।

व्ययत्रिकोणार्थगेषु पापेषु बन्धनम् ३५

स्वान्त्ययोः सुताङ्कयोः षष्ठान्त्ययोः सोत्थाययोश्चतुर्थदश मयोर्वाग्रहसाम्ये बंधनम् ३६

वृषाजहयो दये पापाद्यन्त्याङ्कसुतगारज्जुबंधनं ३७

वृश्चिकोदये द्व्यन्त्याङ्क सुतगाः पापाः भूम्हे बंधनं ३८

युग्मतुलाजकन्योदये द्व्यंत्याङ्कपुत्रगाः पापानिगडबंधनं ३९

झषकर्कमृगोदये द्व्यन्त्याङ्क सुतगाःपापा दुर्गप्रवेशो निगडरहितः ४०

लग्नारीशौ समन्दौ केन्द्रकोणे बंधनं ४१

टीका-बारमें दूसरे नवमें और पांचमे इनचारो भावोंमे पापग्रह गये होतो बंधन होवेगा ३५

धन में और बारमें, वा नवमें व पांच मे, किंवा छठे व बारमे, अथवा तीसरे व ग्यारमे, वा चौथे व दशमे, भावमे समान ग्रह अर्थात् अेक धनमें गयाहो तो एक व्ययमेभी वा दो ग्रहधन मे गये हो तो दोही व्यय मे गये हो ऐसे जितने एक भाव में उतनेही दूसरे भावमे ग्रहगये होतो बंधन होवेगा।

इससूत्रमें बंधनके पांच योग कहे हैं इनमें से एकभी योग बनने से बंधन योग होताहै किंतु जितने अधिकयोग होंगे उतनाहि योग अधिक बलवान समझा जावेगा ३६

वृषभ मेष वा धनराशीका लग्नहो और उसमे दूसरे बारमें औरनवमें पांच में इनचारोंही भावमें पापग्रह गये होतो रस्सी से बंधन होगा ३७

वृश्चिकराशिका लग्नहो और २-१२-९-५ इन चारों स्थान में पापग्रहगये होतो गुफा वा जमीन के नीचे के तलघरमे बंधनमे रहेगा ३८

मिथुन तुल मेष किंवा कन्याराशी का जन्म लग्नहो और २-१२-९-५ इनचारोंभावोमे पाप ग्रहगयेहोतो जंजीर से बंधनहोगा (पावमे बेडीपडेगा) ३९

मीन कर्क किंवा मकर राशी का लग्नहो और दूसरे बारमे नवमे पांचमे इनचारों भावोमे पापग्रह गयेहो तो किलेमे सादि (साधारण) केदहोगा ४०

लग्नेश और षष्ठेश ये दोनो शनि से युक्त होकर केंद्र किंवा त्रिकोण स्थानमे गयेहोतो बंधन (केद) होवेगा ४१

योगानांफलपरिपाकसमयः।

योगकर्तृषु योधिकबलस्तदीयदशांतर्दशायां परिपाकः४१

इतिद्वादशमविवेकः।

टीका-जितने योग कहेगये हैं उनयोगोके योगकर्ताग्रहोमेसे जो अधिकबलवान् ग्रहहोताहै उसग्रहकी दशा अंतर्दशामे उस योगके फलकी प्राप्ति होवेगा ४२

इसप्रकार योगोकेफल परिपाक का समयजानना।

व्यय भावने उपरोक्त फलविचारोंके सिवाय भाईकीसासु भाईकी राजयसुख मामी माताकाभाग्य मित्रकेभाईकीस्त्री काका (पिताका भाई) मित्रकाभाग्य पुत्रकामृत्यु स्त्रीकामामा स्त्री की काकी मालिकका भाई, दूरकीमुसाफरी, पांव व नेत्रस्थान सुसराका भाग्य, दादाकारोग शत्रु आदि, सर्व बातोका विशेष विचारभी इसी भावमें करना।

इतिद्वादशमविवेकस्यटीका समाप्ताः। १२

अथमिश्रविवेकः

वन्हिजीवियोग।

अंशेभौमे धातुवादिकोन्तिको वन्हिजीवीच १

टीका-कारकांश लग्नमे मंगलगयाहो तो धातुवपधातुका कामकरने वालावा रसायनशास्त्र जाननेवाला भयवा शस्त्रवनानेवाला किंवा अग्निके संबंधसे कामकरनेवाले लुहार सुनार आदिके कामकरके उप-जीविकाकरनेवाला होता है १

वाग्विद्याहीन योग।

सुतपत्रिके वाग्घीनो विद्याहीनश्च २

सुतेशो ज्ञेज्ययुतास्त्रिके वाग्विद्या प्रबंधहीनः ३

टीका-पंचमेशत्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयाहोतो वाक् और विद्याहीन पुरुषहोताहै २

पंचमेश, बुध और गुरुसेयुतहोकर त्रिकस्थान ६।८।१२ में गयाहोतो वाक्विद्या और प्रबंधहीन मनुष्यहोता है ३

विरक्तयोग।

द्यूनेशेऽन्त्ये भार्यानजीवति वाविरक्तः ४

लग्नेपापे शुभादृष्टयुते संन्यासीस्त्रीनाशोवा ५

टीका-सप्तमेशलग्नमे गयाहोतो भार्या (स्त्री) जीवेनही किंवाविरक्त (संन्यासी) होता है ४

लग्नमें गयाहुवा पापग्रह शुभग्रहसे युत किंवादृष्ट नहोतो संन्यासी होवे अथवा स्त्रीकानाशहोवे अर्थात् स्त्री जीवित नहींरहेगा ५

लग्नेशभावेशयोः संबंधफलं।

लग्नेशेऽङ्गे भाग्यवान् वैष्णवःपटुश्च ६

धनेशेऽङ्गेऽङ्गेशेधने धनीमानीगुणीदानीच ७

सोदर्येशेऽङ्गेऽङ्गेशे सोदर्येऽल्पपर्यायः कुल्टसुखदः ८

सुखेशेऽङ्गेऽङ्गेशे सुखे क्षमावान् सद्बुद्धिमनस्वीपितृभाक्तिमांश्च९

भोगनेवाला और विद्याके संबंध से (पढ़ने पढ़ाने से) जीविका करनेवाला होताहै २४

कारकांश लग्नमे गुरुगयाहोतो मीमांसा शास्त्र जाननेवाला कर्मज्ञानी वेदविद्या जाननेवाला और दातापुरुष होताहै २५

नवमेश शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोकर केंद्र किंवा त्रिकोण ९।५ स्थान मे गयाहोतो धन विद्या और भाग्य से युतहोताहै २६

नीचराशिमे गयाहुवारवि क्रूर ग्रहसेदृष्टहोकर छठे तथा आठवे भाव मे गयाहोतो राजाके कोपसे पिताका मरण और धनकानाश होताहै २७

बलवान नवमेश पारावतादिशुभांशमे गयाहोतो मानी गुणी धर्मशील और धनवान पुरुषहोताहै २८

जपध्यान समाधिमान् तथा धर्मनिरत योग।

खेशेङ्केङ्केशेप्रबले शुक्रेज्ययुतदृष्टे जपध्यान समाधिमान् २९

खेशस्यांशेशांशेशेसबले खेशेङ्के जपध्यान समाधिमान् ३०

अंशाद्धर्मे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्तश्चान्यथातुपापदृष्टयुते ३१

व्ययेशेङ्के पात्रावान्धार्मिकोधनी ३२

टीका-दशमेश नवमे हो और नवमेश बलवानहोकर शुक्र और गुरु से युत किंवा दृष्टहोतो जपध्यान या समाधि साधन करनेवाला होताहै २९

दशमेश के नवांशका स्वामि जिसराशीके नवांशमे गयाहो उसराशिका स्वामि बलवानहो और दशमेश नवमे भावमगयाहो तो जपध्यान समाधिवालाहोताहै ३०

कारकांशलग्नसे नवम स्थान शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो धर्मनिरत सत्यवादी और गुरुभक्त होताहै पापग्रहसेयुत दृष्टहोतो इससे उलटा अर्थात् यदि कारकांशलग्नसे नवमभाव पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो पापरत असत्यवादी और गुरुद्वेषी होताहै ३१

व्ययेश नवमे भावमे गयाहोतो यात्रा (तीर्थयात्रा वगैरहका करनेवाला) धर्म करनेवाला (धार्मिक) और धनवान् मनुष्य होताहै ३२

दशमेशलग्नमे और लग्नेश दशम मे गयाहोतो राजा, प्रख्यात गुणवाला, सुंदररूप और सत्कीर्तिवाला होताहै १५
लग्नेशलाभमे और लाभेश लग्नमे गयाहोतो सत्कर्म करनेवाला दीर्घायु राजा और विद्वान होताहै १६
लग्नेश बारमे और व्ययेश लग्नमे गयाहोतो सर्वका शत्रु बुद्धिहीन और कृपण मनुष्य होताहै १७

लग्नेशे सोत्थेषष्ठे विक्रमी मानीदयावांश्च १८
राग्बुगेहेशे कामीसुखीच १९
अन्त्येधेशे मानीधनहीनश्च २०
सर्जीवेसोत्थेपधीरः शास्त्रविशारदश्च २१
सारेसोत्थपे जडःप्रचण्डःकोपीच २२
सगुलिके सोत्थपेदृढो जड़ोधीरश्च २३
अंशेपूर्णेन्दुशुक्रौ भोगीविद्याजीवीच २४
अंशेजीवे कर्मज्ञानी वेदविद्यावाच २५
भाग्यपेकेंद्रकोणे शुभयुतदृष्टे धनविद्याभाग्ययुतः २६
नीचेर्केषष्ठेऽष्टमे क्रूरदृष्टे नृपकोपात्तिनृमरणंवित्तनाशश्च२७
सषष्ठेभाग्यपे पारावतादौ मानीगुणी धर्मशीलो धनीच २८

टीका-लग्नेश तीसरे किंवा छठे भावमे गयाहो तो पराक्रमी मानी और दयावान होताहै १८
लग्नेशदशमे किंवा चतुर्थभावमे गयाहोतो कामी और सुखी होताहै १९
धनेश बारमे भावमे गयाहोतो मानी और धनहीन होता है २०
तृतीयेश गुरुसे युतहोतो धीर [धैर्यवान्] और शास्त्र विशारदहोताहै २१
तृतीयेश मंगलसेयुतहोतो जड प्रचण्ड और कोपी मनुष्यहोताहै २२
तृतीयेश गुलिकसे युतहोतो दृढ़, मंदबुद्धि वा मनस्वी और धीर पुरुष होताहै २३
बारकोश लग्नमे पूर्ण चन्द्रमा और शुक्र गयेहोवे ... भोग

भोगनेवाला और विद्याके संबंध से (पढ़ने पढ़ाने से) जीविका करने वाला होताहै २४

कारकांश लग्नमे गुरुगयाहोतो मीमांसा शास्त्र जाननेवाला कर्मज्ञानी वेदविद्या जाननेवाला और दातापुरुष होताहै २५

नवमेश शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोकर केंद्र किंवा त्रिकोण १।५ स्थान मे गयाहोतो धन विद्या और भाग्य से युतहोताहै २६

नीचराशिमे गयाहुवारवि क्रूर ग्रहसेदृष्टहोकर छठे तथा आठमे भाव मे गयाहोतो राजाके कोपसे पिताका मरण और धनकानाश होताहै २७

बलवान नवमेश पारावतादिशुभांशमे गयाहोतो मानी गुणीधर्मशील और धनवान पुरुषहोताहै २८

जपध्यान समाधिमान् तथा धर्मनिरत योग ।

खेशेङ्केशेसबले शुकेज्ययुतदृष्टे जपध्यान समाधिमान् २९

खेशस्यांशेशांशेशेसबले खेशेङ्के जपध्यान समाधिमान् ३०

अंशाद्धर्मे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्तश्चान्य

थातुपापदृष्टयुते ३१

व्ययेशेङ्के यात्रावान्धार्मिकोधनी ३२

टीका–दशमेश नवमे हो और नवमेश बलवानहोकर शुक्र और गुरु से युत किंवा दृष्टहोतो जपध्यान वा समाधि साधन करनेवाला होताहै २९

दशमेश के नवांशका स्वामि जिसराशीके नवांशमे गयाहो उसका स्वामि बलवानहो और दशमेश नवमे भावमगयाहो तो जपध्यान स- माधिवालाहोताहै ३०

कारकांशलग्नसे नवम स्थान शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो धर्मनिरत ...हो और गुरुभक्त होताहै पापग्रहसेयुत दृष्टहोतो उलटा फल ...गा अर्थात् यदि कारकांशलग्नसे नवमभाव पापग्रहसे युत और ...होतो पापरत असत्यवादी और गुरुद्वेषी होताहै ३१

व्ययेश नवमे भावमे गयाहोतो यात्रा (तीर्थयात्रा वा देशांतरगमन) करनेवाला धर्म करनेवाला (धार्मिक) और धनवान् मनु

धनी कृपण तथा प्रतापी योग ।

स्वर्क्षेन्त्येशे धनी कृपणो बहुपशुमांश्च ३३

कर्माङ्गेशावन्योन्यभगौ ख्यातःप्रतापीच ३४

टीका-बारेमभावका स्वामी अपनी स्वराशिमें गयाहोतो धनवान् कृपण (कंजूस) और बहुत गाय भेस आदि पशुओंवाला होताहै ३३

दशमेश और लग्नेश परस्पर अन्योन्यराशी मे अर्थात् दशमेशकी राशी मे लग्नेश और लग्नेशकी राशीमें दशमेश गयाहोतो प्रख्याति-वाला और प्रतापी मनुष्य होताहै ३४

कुलघ्न बहुस्त्रीरत योग ।

दारे कुजे बहुस्त्रीरतः कुलघ्नश्च ३५

अंशादस्तेर्के पतिव्रता विकलाङ्गी स्त्री ३६

पापालग्नान्त्यास्तगा सुत स्त्री नाशकाः ३७

मदेर्के कुटुम्बी बहुस्त्रीरतः ३८

धर्मेशेन्त्येन्त्येशेर्थे सोत्थे पापेकुभोजीदुष्कर्मान्यगामी ३९

नीचभांशे जीवेजीवांशेर्केऽतिदुःखी सुतदारहीनः ४०

टीका-सप्तमभावमें मंगलगयाहो तो बहुतस्त्रियो से सहवास करने वाला और कुलघ्न मनुष्य होता है ३५

कारकांशलग्न से सप्तमभावमें सूर्य गयाहो तो पतिव्रतास्त्रीहोवेगा किंतु वह विकलदेह वाली होवे ३६

लग्न में बारवे और सातमे भावमें पापग्रहगये होतो पुत्रका और स्त्रीका नाश करते है ३७

सप्तमभावमें सूर्य गयाहोतो बडे कुटुम्ब वाला और बहुतस्त्रीयोसे सहवास करनेवाला होता है ३८

नवमेश बारमें व्ययेशधनभावमें और पापग्रह तीसरे भावमें गये होतो दुष्टान्न भोजनकरनेवाला दुष्टकर्म करनेवाला परस्त्रीगामी नर होता है ३९

नीचराशी तथा नीचराशीके नवांशमें गुरुगयाहो और गुरुकी राशी

के नवांशमे रवि होतो। महादुःखी पुत्र तथा स्त्री हीनमनुष्य होता है४०

द्विग्रह योग।

चन्द्रार्कयोगे यन्त्राश्मकर्ता ४१
ज्ञार्कयोगे क्रियापटुर्धीकीर्तिसौख्यान्वितः ४२
जीवार्कयोगे क्रूरोन्यकार्य निरतः ४३
शुक्रार्कयोगेङ्गायुधैर्लब्धस्वः ४४
मंदार्कयोगे धातुनैपुण्यं ४५
चंद्रारयोगे लुब्धकश्चलचितः ४६
चंद्रज्ञयोगे प्रियवागर्थपटुः सौभाग्यकीर्त्यन्वितः ४७
चंद्रेज्ययोगे शत्रुजेता कुलमुख्यश्चपलो धनी ४८
चंद्राच्छयोगे वस्त्रादिक्रियापटुः ४९
चंद्रमंदयोगे परुषवाक्कपटी ५०
सपन्देज्ये परवञ्चनदक्षो गुरुवचनातिक्रामीच ५१
शुक्रेज्ययोगे सद्विद्या धनदारगुणयुक्तः ५२
ज्ञाच्छयोगे वाग्मी विद्वान्भूपगणपः ५३
ज्ञेज्ययोगे गीतप्रियो नृत्यविन्मल्लः ५४
मन्दारयोगे दुःख्यनृतभाषी निन्दितश्च ५५
यमाच्छयोगेल्पदृष्टिर्लिपिपुस्ताचित्रवेत्ता ५६
शुक्रारयोगे गोपालकमल्लदक्षपराङ्गना गामी ५७
आरेज्ययोग पुराध्यक्षो नृपःमानविद्योद्विजः ५८

टीका-रविचंद्रका एकराशी में योगहोतो यन्त्र (कलोंके काकाम और पत्थरका कामकरने वालाहोता है ४१

बुध रविकायोगहोतो काम करने में कुशलबुद्धिवान् सत्कीर्ति और सुखसे युतहोता है ४२

गुरुरविका योगहो तो क्रूरस्वभावका और दूसरेका कामकरने वाला होता है ४३

शुक्ररविका योगहोतो अपने शरीरके बलसे और शस्त्रादिकसेधन प्राप्त होता है ४४

शनिरविका योग होतो रसायनशास्त्रके काममें निपुणता अथवाधातु उपधातुओंसे बननेवाले कार्योंको करनेमे निपुण होता है ४५

चंद्र मंगलका योगहोतो लोभी और चलचित्तवाला होता है (स्थिर चित्तरहतानहीं) ४६

चंद्रबुधका योगहोतो प्रियवचन बोलनेवाला द्रव्योपार्जनके काममें चतुर भाग्यवान् और सत्कीर्तिवालाहोता है ४७

चंद्रगुरुका योगहोतो शत्रुको जीतनेवाला अपने कुलमें मुख्यपुरुष चपलबुद्धिवाला और बड़ाधनवान होताहै ४८

चंद्रशुक्रका योगहोतो वस्त्रसीवनाबुनना नयावनाना इत्यादि वस्त्रनिर्माणके काममें कुशलहोता है ४९

चंद्रशनिका योग होतो कठोरवचन बोलने वाला और कपटी स्वभावका पुरुष होता है ५०

शनिबुधका एक राशीमे योग होतो दूसरे को ठगनेमे चतुर और गुरुके वचन को उल्लंघन करनेवाला होताहै ५१

शुक्रगुरु का एकराशीमे योगहोतो सद्विद्यान्वित धन,स्त्री, और गुण युक्तमनुष्य होताहै ५२

बुधशुक्र का योगहोतो अच्छा बोलनेवाला (वक्ता) विद्वान् और राजाओंके समूहका अधिपति होताहै ५३

बुधगुरुका योगहोतो गायनमे प्रीतिरखनेवाला नृत्यकलाको जाननेवाला और मल्ल [कुस्तीकरनेवाला] होताहै ५४

शनिमंगलका योगहोतो दुःखी झूठबोलनेवाला और निन्दित मनुष्य होताहै ५५

शनिशुक्रका योगहोतो अल्पदृष्टि अर्थात् भद्ददृष्टि या अंग्रेजीमें जिस्को शोर्टसाईट कहतेहै ऐसीदृष्टीवाला होताहै लिखनेके कामको

या छीपनेपोतने रंगाईकरनेके कामको और चित्र कलाको जाननेवाला होताहै ५६

शुक्रमंगल का योगहोतो गौभोपालनेवाला, मल्ल, चतुर और परांगनागामी मनुष्य होताहै ५६

गुरुमंगलका योगहोतो किसी गाम वा शहरका मालिक वा बडेस्वतंत्र अधिकारवाला राजा और विद्वान् ब्राह्मणहोताहै ५८

परग्रहवासी, मातृपितृघाती, निर्धनी, लोभीयोग।

राव्हर्कान्यतर युतेपष्ठेरोन्त्ये परग्रहवासी नीचवृत्तिश्च ५९

लग्नेन्त्येर्के चन्द्रेपष्ठेभौमेस्ते मातापितृघाती ६०

मेषेचन्द्रेमन्ददृष्टे निर्धनोलोभी ६१

टीका–षष्ठेशराहु तथा रविसे युतहोकर बारमेभावमे गयाहोवो पर येघरमेरहनेवाला और नीचवृत्तिका मनुष्यहोताहै ५९

लग्नमे तथा बारमे भावमे रविगयाहो और चंद्रमा छठे व मंग सातमे भावमे गयाहोतो मातापिताका घात [नाश] करनेवालाहोवे

मेषराशीमे गयाहुवाचंद्रमा शनिसे दृष्टहोतोनिर्धन और लोभीहोताहै

जन्मावसरे पितुर्मातुर्वा मरणयोग।

कर्माम्बुपौत्रिकेऽबलौसबलेऽङ्पेजन्मावसरेपितुर्मातु र्वामरणम्६

टीका–दशमेश और सुखेश ये दोनो निर्बलीहोकर त्रिकस्थान ६।८।१२ में गयेहो और लग्नेशबलवान होतो जन्मके समय पिताका वा माताका मरणहोवेगा ६२

यहयोगहोवे उसके जन्मकालमे मातृपितृ के सद्योमरणयोग भी हुवे होतो अवश्य इस योगका फलमिलेगा।

भ्रातृधनक्षेत्रादिलाभ तथा भाग्यवान् तथा मानीयोग।

सुखेशांशपेकेन्द्रेमित्रदृष्टेवाभौमदृष्टयुतेभ्रातृधनंक्षेत्रंचप्राप्नोति ६३

धर्माम्बुपौ कर्मगौ सर्वार्थवाहनयुतो भाग्यवान् ६४

खेजीवे इङ्गितज्ञोमानीच ६५

टीका– सुखेश के नवांशका स्वामि केंद्रमे गयाहो औ

मित्रग्रहसे दृष्टहो अथवा मंगलसे युत तथा दृष्टहोतो भाईकाधन और जमीन आदि संपत्तिका लाभहोताहै ६३

नवमेश और सुखेश ये दोनो दशमभावमे गयेहोतो सर्व संपत्ति और वाहन सेयुत भाग्यवान् मनुष्यहोताहै ६४

दशमभावमे गुरु गयाहोतो इसारेपरसे मनकी बात जाननेवाला और मानी (अहंकारी) मनुष्यहोताहै ६५

कपटेन विषभक्षण कर्तायोग ।

धनेशे पापदृष्टे कपटादिनाविष भोजनम् ६६

टीका –धनेश पापग्रहसे दृष्टहोतो कपटादिक से विषखावेगा (कोई जहरखिलादेवेगा) ६६

धैर्यान्वित युद्धपटु सत्यवादी कटुप्रियादियोगं ।

शुभर्क्षेभ्रातृकारके शौर्यधैर्यान्वितः ६७

सोत्थेशांशेश्वरांशेशेस्वर्क्षादिवर्गे मानीयुद्ध पटुःकलहप्रियः ६८

लग्नेर्थेजीवे मधुरप्रिय मधुरवाक् सत्यवादी ६९

लग्नेशेङ्के कुजार्कदृष्टे क्रोधीव्यसनी कटुप्रियः ७०

कोशगौज्ञार्कौ सेवारतो स्थिरधनी ७१

सोत्थेराहुमन्दौ कुनखीदक्षकरेघाती वायुरोगी ७२

सोत्थेर्के वा भौमेस्थिभंगो विषभयं वन्हिजं चिन्हम् ७३

खलाम्रतिगा सव्रणचिन्हंगुल्यं भगंदरादिरोगीच ७४

खेचंद्रे सुतांगेजीवे दानीतपस्वी जितेंद्रियश्च ७५

ज्ञेन्दुर्कजाः केन्द्रव्ययधर्मगा ऐश्वर्यज्ञानहीनः ७६

सर्वेग्रहानीचारीभागगा उच्चस्थाअपि सत्कर्महीनो भिक्षाशी ७७

टीका–भ्रातृकारकग्रह [मंगल] शुभग्रहकी राशीमे गयाहोतो शूरता युत और धैर्यान्वित होताहै ६७

तृतीयेशके नवांशका स्वामि जिसराशी के नवांशमे गयाहो उसका

स्वामि स्वउच्च मित्र राशीके शुभवर्गमे गयाहोतो मानी युद्धकलाप्रवीण और कलहप्रिय मनुष्यहोताहै ६८

लग्नमे तथा धनभावमे गुरुगयाहोतो मीठीवस्तुखानेपर प्रेमरखनेवाला मधुरवाणीसे भाषणकरनेवाला और सत्यवादी मनुष्यहोताहै ६९

लग्नेश लग्नमे गयाहो और रवि तथा मंगलसे दृष्टहोतो क्रोधी विपत्ती भोगनेवाला और कटुरस [चरपराखारांपदार्थ] परप्रेमरखनेवालाहोताहै ७०

बुध और रवि धनभावमें गयेहो तो सेवाकरनेमे तत्पर रहनेवाला और स्थिरधनवाला होता है ७१

तीसरेभाव में राहु और शनिगयेहोतो खराब नसवाला दक्षिणहाथमें घात (चोट वा शस्त्रसे घावहोनेका भय). वाला और वायुकेरोगसे युत होता है ७२

तीसरे भाव में रवि अथवा मंगलगया होतो किसी अंगकी हड्डी टुटेगी तथा विषकाभय वा अग्निसे जलजानेका शरीरपर चिन्ह होवेगा७३

पापग्रह अष्टमभाव में गयेहोतो गुप्तस्थानमें किसी जखमका चिन्ह होवे और भगंदरबवासीर आदिरोग वाला होता है ७४

दशमें,आयमें चंद्रमा और पंचमभावमें अथवा लग्नमें गुरुगयाहोतो दानी तपस्वी और जितेन्द्री होता है ७५

बुधकेंद्रमें, चंद्रमाचारमें भावमे और शनि नवमेंभावमें, गयेहोतो ऐश्वर्य और ज्ञानहीन मनुष्य होताहै ७६

उच्चराशिमे गये हुवेभीसर्वग्रह यदि नीच किंवा शत्रुराशीके नवांशमें गयेहोतो सत्कर्महीन और भिक्षामांगके पेटभरनेवालाहोताहै ७७

दद्रु कंडुपीडा, मंदाग्नि भ्रातृहीन कलहशीलादि योग।

लग्नेशेरन्ध्रे क्रूरयुतदृष्टेऽग्निमान्द्यदद्रुकण्डुपीडाश्चिश्री७८

भौमेज्ञे नेत्रपाणौ भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बु भयम् ७९

चंद्राच्चौपष्टेऽष्टमे वा मन्दाग्न्युदररोगी ८०

केचिदूचीत्ये भ्रातृहीनो घनोन ८१

कुजात्सप्ताद्रिपगाभौमगुमन्दा मार्पानिंजाचि.

राहुिंदुसपापौरिःफे उन्मादीकलहशीलः ८३
अंशेराहौ धानुष्कश्चौरोवा ८४
अंशेशुक्रे राजसेवीकामीच ८५
भ्रातृपेशशुक्रे कामीकलही ८६
सलयुतदृष्टे कुजेस्ते मूत्रकृच्छ्री क्लीबः ८७
शुभांशाहीनौज्ञचंद्रौकेन्द्रे विस्मयालुर्भ्रमयुक्तः ८८
लाभांकेर्थेशे उद्यमी धनी गुणी ८९
लग्नेशेन्त्ये खेपापे भौमयुतचंद्रे परदेशी भिक्षाशीदुःखी९०
जीवार्थेशौ पृष्ठान्त्यगौ क्लेशभाग्द्रव्यहीनः ९१

टीका–लग्नेश अष्टमभावमें गयाहो और क्रूरग्रहोसे युत व दृष्टहो तो मंदाग्निरोग, दद्रु [दादकी] पीडा खुजलकी पीडा और सफेद दाग के कुष्ठरोगका भय होता है ७८

नेत्रपाणि अवस्थामे गयाहुआ मंगल लग्नमे गयाहोतो सर्पकेदांतका जखम (सांपकेकाटनेकादुःख) और अग्निका तथा जलकाभयहोवेगा७९

चंद्र और शुक्र येदोनो छठे अथवा आठमे भावमे गयेहोतो मंदाग्नी रोगवाला तथा उदरके रोगवालाहोताहै ८०

केतु और चंद्रमा का योग तीसरे भावमे होतो भ्रातृहीन और धनवान् होताहै ८१

छठेमंगल सातमेभावमेराहु आठमेशनि क्रमसेगयेहोतो स्त्री जीवित नहीरहे और भ्रातृहीनहोवेगा ८२

राहु और चंद्रमापापग्रहसे युतहोकर बारमे भावमें गयेहोतो उन्माद (पागलपनके) रोगवाला और कलहशील [झगडालू] होताहै ८३

कारकांशलग्नमे राहुगयाहोतो धनुष्यरखनेवाला अथवा चोरहोताहै८४

कारकांशलग्नमे शुक्रगयाहोतो राजसेवी (राजमेनोकरी करनेवाला) और कामीहोताहै ८५

तृतीयेश शुक्रसे युतहोतो कामी और कलहकरनेवाला होताहै ८६

सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे युतदृष्टहोतो मूत्रकृच्छ्ररोगवाला तथा नपुंसकहोताहै ८७

पापग्रहोंके नवांशमे गयेहुवे बुधचंद्र केंद्रमें गयेहोतो विस्मयशील, दयालु, और ज्ञानयुक्त होताहै ८८

धनेश लाभमे अथवा नवमभावमे गयाहोतो उद्योगी धनवान् और गुणी होताहै ८९

लग्नेश बारमेभावमे पापग्रह दशमेभावमे और चंद्रमा मंगलसे युतहोकर कोईभीभावमे गयाहोतो परदेशमे रहनेवाला भीखमांगके खानेवाला दुःखी मनुष्यहोताहै ९०

गुरु और धनेश ये दोनो छठे तथा बारमे भावमे गयेहोतो क्लेश भोगनेवाला और द्रव्यहीन मनुष्यहोताहै ९१

अधियोग ।

चंद्रात्सौम्याः पशादिषगाश्चमूप सचिवभूपोबलतारतम्यात् ९२

टीका—चंद्रमासे छठे सातमे आठमे भावमे शुभग्रहगयेहोतो ग्रहोंके बलकेतारतम्यभेदसे सेनापति, मंत्री और राजाहोताहै अर्थात् चंद्रमासे छठेस्थानमे सर्वशुभग्रह गयेहोतो सेनापति और सप्तमस्थानमे सर्व शुभ ग्रहगयेहोतो मंत्री तथैव अष्टमभावमे सर्वशुभग्रह गये होतो राजा होताहै । इनग्रहोंके अधिक बलवान् होनेसे बलवान् और हीनबली होनेसे निर्बल योगसमझना ९२

जैसे चंद्रमे यह अधियोग कहाहै वैसेहि जन्मलग्नसेभी छठे सातमे आठमे भावमेंसर्व शुभग्रहोंके जाननेसे अधियोगहोताहै और इसका फलभी इसीक फलके अनुसारही होताहै ।

अनफा सुनफा दुरुधरा तथा केमद्रुम योगलक्षण ।

चन्द्राद्द्व्यन्त्यो स्वयेसुनफा धनेनफा उभयत्र दुरुधरा-

न्यथा केमद्रुमः ९३

टीका—चंद्रमासे रविके सिवा अन्य कोईग्रह ... मे कोईहो तो ... अनफा और ... और दुरुधरा होतो ... सुनफा होताहै और ... तथा दुरुधरा होताहै और ... कोईभी ग्रह ... नहीं होतो केमद्रुम योगहोताहै ९३

सनुफा योग फल ।

नुफायांराजातत्समो वा धीधनख्यातिमांश्च ९४

ा-सनुफा योगमेंजन्महोतो राजा वा राजाके समान भाग्यशाली
ान धनवान और सत्कीर्तिवाला प्रसिद्धपुरुष होता है ९४

अनुफा योग फलं ।

नुफायां प्रभुः शीलवान् ख्यातो निरोगी ९५

ा-अनुफायोगमे जन्महोतो राजा वा राजाके समान भाग्यवान्
णसम्पन्न प्रसिद्ध और निरोगी पुरुष होता है ९५

दुरुधरायोग फलं ।

रुधरायां धन वाहनाढ्योत्पन्नभोगसुखभुक् ९६

ा-दुरुधरायोगमें जन्महोतो धन और वाहनके सुखसे युत और
ेककी प्राप्तिसे अनेक सुखभोग भोगनेवाला होता है ९६

केमद्रुमयोग फलं ।

ुमद्रुमे मलिन दुःखितनीचनिःस्वो नृपजोपि ९७

ा-केमद्रुमयोगमे जन्महोतो राजाके यहां जन्मपायाहुवा मनुष्य
ालिनस्वभावका वा मैलारहने वाला दुखी नीचप्रकृतिवाला नीचे
ा और निर्धन मनुष्य होता है अर्थात् साधारण मनुष्य के भंग
यह योग होतो वह दरिद्रीहुये विना रहतानहीं ९७

केमद्रुमभंग योग-जातकपारिजातमेलिखा है ।

नेशाकरेकेंद्रगते भगोवा जीवेक्षिते नैवदरिद्रयोगः शुभान्वितेवाशुभ
ध्यगेवा जीवेक्षिते नैवदरिद्रयोगः ३६

ंद्रेतिमित्र निजतुंगगृहांशकस्थे जीवेक्षिते यदि दरिद्रतयाविहीनः
ीतनोशुभयुते विदितुंगजाते जीवेक्षिते हिमकरेनभवेद्दरिद्रः ३७

हरनाराशेः=प्रालेयांशुःसुतिकालियदावासवैःखेटैर्वीक्ष्यमाणःकरोति
ीर्घायुष्यं राजयोगं मनुष्यं सत्कोशाढ्यं इतिकेमद्रु भंच ५७

अर्थात् जिसके जन्म समय मे

(१) चंद्रमा अथवा शुक्र केंद्रस्थानमे स्थितहो और गुरुसेदृष्ट
हो तो केमद्रुमयोगका भंग (दरिद्रयोगनहीं) करताहै ।

(२) चंद्रमा शुभग्रहसेयुतहो अथवा शुभग्रहोके मध्यमे गायहो

सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे युतदृष्ट
बाला तथा नपुंसकहोताहै ८७

पापग्रहोके नवांशमे गयेहुवे बुधचंद्र केंद्रमें गये
दयालु, और भ्रमयुक्त होताहै ८८

धनेश लाभमे अथवा नवमभावमे गयाहोतो
गुणी होताहै ८९

लग्नेश बारमेभावमे पापग्रह दशमेभावमे
युतहोकर कोईभीभावमे गयाहोतो परदेशमे
स्रानेवाला दुखी मनुष्यहोताहै ९०

गुरु और धनेश ये दोनो छठे तथा बार
भोगनेवाला और द्रव्यहीन मनुष्यहोताहै ९

अधियोग ।

चंद्रात्सौम्याः षष्ठादित्रयगाश्चमूप सचि

टीका–चंद्रमासे छठे सातमे आठमे
बलकेतारतम्यभेदसे सेनापति, मंत्री
छठेस्थानमे सर्वशुभग्रह गयेहोतो
शुभ ग्रहगयेहोतो मंत्री तथैव अष्टम
होताहै। इनग्रहोके अधिक बलवान्
निर्बल योगसमझना ९२

जैसे चंद्रसे यह अधियोग क
आठमे भावमेसर्व
फलभी उपरोक्त

अनफा

टीका-इसीप्रकार फलका विचार विवाहसमयमें और प्रश्नसमयमें भी जानना।

इनके सिवाय पंचांगफल ग्रहोंकाभावफल राजयोगादिकफलका विशेषविचारजानना हो तो श्री जातकर्म देखना।

इतिश्री गर्गकपर्दे श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्त्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवास रचिततत्त्वप्रदर्शिनी भाषाटीकायां स्त्रीजाततत्त्वं चतुर्थम ४

अथ दशातत्त्वारम्भः।

दशाविचार।

ग्रहोभावराशिदृग्योगजीविकादिफलं स्वदशांतर्दशायांददाति १

टीका-भावजनित राशिजनित दृष्टिजनित योग तथा सम्बंधजनित तथा जीविकादि जितने शुभाशुभ फल ग्रहों के कहेगये हैं वे सर्वफल ग्रह अपनिदशा अंतर्दशामें देते हैं १

संपूर्णा दशाफलं

अतिबलस्यपरमोच्चगस्य वा दशासंपूर्णाभिधाधनारोग्य विवर्धिनी २

टीका-जो ग्रह अतिबलवानहो अथवा परम उच्चराशीमें गयाहो उसकी दशा संपूर्णानामकीहोतीहैयहदशा धन आरोग्यकोवढानेवाली जानना २

पूर्णादशाफल।

किंचिद्बलोपेतस्योच्चगस्य पूर्णाधनदा ३

टीका-जोग्रह किंचिद्बलवान हो और अपनी उच्चराशीमें गयाहो उसको दशा पूर्णानाम की होती है यह धनलाभ करने वाली जानना ३

रिक्ता दशाफल।

विबलस्य वा नीचगस्य रिक्ता धनहानिदा ४

टीका-जोग्रह निर्बलो हो किंवा अपनी नीचराशीमें गयाहो उसकी दशा रिक्तानाम की होतीहै यह धनहानी देनेवालीजानना ४

और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होताहै ।

(३) चंद्रमा अधिमित्रराशी का किंवा अपनी उच्चराशीका हो अथवा अधिमित्र तथा अपनी उच्चराशीके नवांशमे गया हो और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होवाहै ।

(४) पूर्णचंद्रमा शुभग्रहसे युतहोकर बुधकी उच्चराशीमे गयाहो और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होताहै ।

(५) चंद्रमा सर्वग्रहोसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग का भंग करता है ।

इन पांच योगोमे से भेक भी योग जिसके जन्मसमय मे नही हो उसके केमद्रुम योग का फल अवश्यहोवेगा ।

एकस्मिन्नप्युच्चगे समित्रे प्रचुरधनः सिद्धः ९८

सबलेखेशेकेन्द्रकोणेयज्ञकूपापवनकर्तादेवतातिथिपूजकः९९

शुभावक्रगाराज्यार्थदाः पापाव्यसनधनहानिदाः १००

सर्वेसौम्यास्त्र्यायारिगा बाल्येसुखी तत्रैवपापावयसोन्त्ये १०१

इति महादेवकृत जातकतत्वे प्रकीर्णतत्वं तृतीयम् ३ ।

टीका-यदि भेकभी ग्रह अपनि उच्चराशीमे गयाहो और अपने मित्रग्रहसे युत होतो बहुतधनवाला तथा सिद्धपुरुष होता है ९८

बलवान् दशमेश केंद्रत्रिकोणस्थान [१।४।७।१०।९।५] मे गया

दशा पूर्वार्द्धमे [आधी] शुभ और उत्तरार्द्धमे मध्यम फल देनेवाली होवेगा ८

शुभदशा ।

मित्रोच्चात्मस्वत्रिकोण वर्गोत्तम स्ववर्गस्थशुभा ९

टीका–जोग्रह अपने मित्रग्रह की राशी मे तथा उच्चराशीमे, स्वराशी मे या मूलत्रिकोण राशीमे अथवा वर्गोत्तमांसमे (जन्मकालमे जिस राशीका ग्रहहो उसीराशीका नवांश मे भीहो) अथवा अपनी स्वराशीके दशवर्गमे गयाहो उसग्रह की दशा शुभफल देनेवाली जानना ९

कष्टा दशा

अस्तारि नीच भांशगस्य कष्टा १०

टीका–जोग्रह अस्तकाहो अपने शत्रु ग्रह की राशी और नवांश मे गयाहो अथवा नीचराशी और नीचराशीके नवांश में गयाहो उसकी दशा कष्ट देनेवाली अशुभजानना १०

अवरोहिण्यधमाचेत्कष्टा ११

आरोहिणी मध्याचेत्संपूर्णा १२

सदृष्टयुतस्याधिकरश्मेः केंद्रकोणगस्य शुभान्यथा कष्टा १३

टीका–जिसग्रहकि अधम संज्ञक अवरोहिणी दशा अर्थात् (जोग्रह अपनी उच्चराशिको उल्लंघन करके नीच राशी के सन्मुख जानेवाली छराशी में स्थितहोकर (नीचाभी लाषी होकर) अपनी नीच वा शत्रु राशी के नवाश मे गयाहो उसकी दशा नेष्ट [कष्टदेने वाली समझना]

जिसग्रहकी आरोहिणी दशा मध्यासंज्ञक अर्थात् जोग्रह अपनी नीच राशीको उलंघन करके उच्चराशीके संमुख जानेवाली छराशीमे स्थितहोकर (उच्चाभीलाषी होकर) अपने मित्र ग्रहकी राशी के वा उच्च राशीके वा अपनी स्वराशीके नवांशमे गयाहो उसकी दशा संपूर्ण उत्तम श्रेष्ठफल देनेवाली समझना १२

जोग्रह शुभग्रहसे दृष्ट और युतहो अधिक बलवान् हो जिसकी उच्च राशिमे अधिक अंशहो जोकेंद्र वा त्रिकोण स्थान (१।४।७।१०।९।५) मे गयाहो उसकी दशा शुभफल देनेवाली जानना और इससे विपरी

त स्थितिमें गयाहुवा होतो उसकी दशा कष्टदेनेवाली नेष्टजानना। अर्थात् जो ग्रह पापग्रहसे युत और दृष्टहो निर्बली, अस्तंगत, नीच, वा शत्रुराशी गत किंवा राशिसंधिमें अथवा भावसंधीमें गयाहो क्रूरषष्ट्यंशमें या पापांशमें गयाहो १।३।६।८।११।१२ इनछभावोंमेसे किसी भी भावमें गयाहो उसग्रहकी दशा कष्टदेनेवाली होवेगा १३

लग्नदशाफल.

लग्नदशा चरेभंगे द्रेष्काणक्रमाच्छ्रेष्टमध्याधमा द्विस्वभावेव्यत्ययेन स्थिरेनेष्टेष्टसमा १४

टीका–लग्नकी महादशा यदि चरराशी का लग्नहोतो द्रेष्काणके क्रमसे अर्थात् चरराशीका लग्न प्रथम द्रेष्काणमें होतो उसकीदशा श्रेष्ठ दूसरे द्रेष्काणमें होतो मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें होतो अधम फल देनेवाली, एवं द्विस्वभावराशी का लग्न यदि प्रथम द्रेष्काणमें होतो अधम दूसरेमें मध्यम तीसरे द्रेष्काणमें होतो श्रेष्ठ फलदेनेवाली और स्थिरराशीका लग्नहोतो यदि वह प्रथम द्रेष्काणमेंहोतो नेष्ट. दूसरे द्रेष्काणमें होतो श्रेष्ठ तीसरे द्रेष्काणमें होतो मध्यमफल देनेवाली दशा जानना १४

वक्रगतिस्थग्रहदशाफलं।

वक्रगस्यपाके स्थानमान सौख्याद्यपचयः १५

टीका–जोग्रह वक्रगतीका हो उसकी दशामें स्थानमान सुखादिक का ह्रास होवेगा एसाजानना १५

त्रिकेतरगस्यपाके भीष्टसिद्धिः १६

भाङ्गेशरिपुपाके बुद्धिभ्रंशो राजभयंच १७

राहुयुतस्य दशारिष्टदा १८

रन्ध्रगाङ्गेशस्यपाके तिपीडा १९

इष्टाधिकस्यश्रेष्टा कष्टाधिकस्यनेष्टा समस्यसमा २०

दिग्बलोपेतस्य पाके महाप्रतिष्टास्वदिग्भागे २१

टीका-त्रिकस्थान ६।८।१२ के विना अन्यस्थान मे १।२।३।४।५।७।९।१०।११ गयेहुवे ग्रहकी दशामे अभीष्टकार्य की सिद्धिहोतीहै १६

जन्मराशी और लग्नके स्वामीका जोग्रह शत्रुहो उसकी दशामें बुद्धिभ्रंश और राजभय होताहै १७

जोग्रह राहुसे युतहो उसकी दशा कष्टदेनेवाली होतीहै १८

अष्टम स्थानमे गयेहुवे लग्नेश की दशा शरीरमे अतिपीड़ादायक होतीहै १९

जिसग्रहका इष्ट (केशवीपद्धतीके अनुसार ग्रहो का जो इष्ट कष्ट फल लायाजाता है वह इष्ट) यदि अधिकहोतो उसकी दशा श्रेष्ट और कष्ट फल अधिक होतो उसकी दशा नेष्ट और यदि मध्यम [दोनो इष्टकष्टबलसमान] होतो सामान्य मध्यमफलदेनेवालीहोतीहै २०

जोग्रह दिग्बल से युक्तहोताहै उसकी दशामे महा प्रतिष्ठा और भाग्यकीवृद्धि जिसदिशाका वहग्रह स्वामिहो उसदिशामे होतिहै २१

दिशाके स्वामि बृहज्जातकर्मेलिखेहै 'प्रागाद्या रविशुक्र लोहित तमः शौरिंदु वित्सूरयः अर्थात् पूर्व कास्वामी रवि, अग्नि कोणका शुक, दक्षिणका मंगल, नैऋतकाराहु, पश्चिमका शनि, वायुकोणका चंद्र, उत्तर काबुध, और ईशान कोणका गुरु, स्वामिहै तदनुसार जानना ।

भावेश दशा फल.

लग्नेश दशाबल धनदा २२

धनेशदशा कष्टार्थदा २३

सोत्थपपाके प्रायेण नेष्टफलम् २४

सुखेश पाके गृहादिसुखं २५

सुतेशदशा विद्यार्थदा २६

षष्ठेशदशा रिपु भयदा २७

जायेशदशाशोकदा २८

मृत्युपदशायां मृत्यु २९

धर्मेश दशायां धर्मक्रिया ३०

खेशदशा नृपाश्रयार्थदा ३१

लभेशदशा लाभदा. ३२

व्ययेश दशार्थ हानि कष्टदा ३३

टीका–लग्नेश की दशा बल और धनके देनेवाली श्रेष्ठहोतीहै १ दशामे स्त्री कोपीड़ा भी होतिहै २२

धनेशकी दशा कष्ट (शरीर मे पीड़ा तथा मरण) और धनका देनेवाली तथा स्त्री को पीड़ा करने वाली होतिहै २३

तृतीयेश की दशा बहुधानेष्टफल देनेवाली ही निकलतीहै तथा भाई की स्त्रीकोभी पीड़ादेतीहै २४

सुखेशकी दशामे घर वाहन चतुष्पद माता मित्रा दिक का तथादेह का सुखहोताहै और प्रायः पिताके शरीरमे कष्टभीहोताहै २५

पंचमेशकी दशामे विद्याप्राप्ती और धनकालाभ तथा सन्मान वृद्धि सुबुद्धिवृद्धि माताका मृत्यु वा माताको पीड़ाहोतीहै २६

षष्ठेशकी दशामे शत्रुकाभय औरारोग वृद्धि तथा पुत्रकोपीड़ा होतीहै २७

सप्तमेश की दशा शोकदेन वाली तथा शरीरमे पीड़ाकरनेवाली होतीहै २८

अष्टमेश की दशामे मृत्युभयहोताहै तथा स्त्री कीमृत्यु वा विवादभी होताहै २९

नवमेश की दशामे तीर्थ यात्रा देव दर्शन यज्ञ तथा कन्यादानादि धर्म कार्य और भाग्योदय होताहै ३०

दशमेश की दशामे राज्या श्रय की प्राप्ती और धनकालाभ तथामान आदि सुखोदय होताहै तथा माता के देहमे पीड़ा भी होतीहै ३१

लाभेशकी दशा धनलाभदेनेवाली और पिताकी मृत्यु कारक होतीहै ३२

व्ययेश [बारमे भावके स्वामि] की दशा धनहानी औरकष्टदायक होतीहै ३३

अंतरदशाफल।

पापदशायां पापान्तरे धनहानिर्महाभयम् ३४

अन्योन्यशत्रुग्रहयोरन्तरे महाभयम् ३५

पाकेशात्रिकगस्य भुक्तौ स्थानच्युतिर्हानिश्च ३६

पापपाकेशुभांतरे आदौकष्टंततः सुखम् ३७

शुभपाके शुभांतरे सुखम् ३८

शुभपाके पापांतरे आदौसुखंततोभयम् ३९

रिपुयक्पापस्य पापदशांतरे विपत् ४०

टीका–पापग्रहकी महादशामे पापग्रहकी अंतर्दशा जबआतीहै तबशत्रु के सबबसे धनकी हानि और महाभय होताहै ३४

पूर्णचन्द्रमा शुभयुत बुध और गुरु शुक्र ये शुभग्रह औरक्षीणचन्द्रमा पापयुतबुध व शनि मंगळ राहु केतु ये पापग्रह यद्यपी माने गयेहै तथापि ग्रहोका शुभाशुभ निर्णय उडुदायप्रदीपानुसार उक्तपापग्रहभी केंद्रका स्वामिहोतोशुभ और शुभ पाप सर्वग्रह त्रिकोणके (९।५ के) स्वामिहो तो शुभग्रह मानेजातेहै और तीसरे, छठे, ग्यारमें, तथा आठ मे स्थानके स्वामि पापग्रह तथा दूसरे बारवें स्थानकेस्वामि शुभहोकर पापसंबंधी होतो पाप और पाप होकर भी शुभका संबंधी होतो शुभफल दाता स्थान तथा संबंध से होता है तदनुसार विचार करनेसे जो शुभ पाप ग्रह हो वह शुभ और पाप जानना।

जो ग्रह परस्पर अेकदूसरेसे छठे आठमे स्थानमे गयेहो उसकी अर्थात् जिसग्रहकी महादशाहो उससे छठे किंवा आठमे स्थानमे गयेहुवे ग्रहकी अंतर्दशा मे महाभय कष्टरोग स्थानच्युति आदि नेष्टफल होताहै ३५

जिसग्रहकी महादशाहो उससे त्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयेहुवे ग्रह की अंतर्दशा मे स्थानच्युति (स्थान छूटजाना) और धनकी हानि होतिहै ३६

पापग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो वह अंतर्दशा पहिले आधी कष्टदेनेवाली और उतरती हुई आधी सुखदायक होतिहै ३७

शुभग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो उसमे सुख वृद्धि धनागम होताहै ३८

शुभग्रहकी महादशामे पापग्रह की अंतर्दशाहोतो यह अंतर्दशा पहिले (पूर्वार्द्ध मे बैठती हुई) आधी सुखादि शुभफल और उतरती हुई [उत्तरार्द्धमे] आधीभय देनेवाली होतीहै ३९

पापग्रह की महादशा मे अपने शत्रुग्रह से युक्त पापग्रहकी अंतर्दशा होतो उसमे विपत्ती प्राप्त होतीहै ४०

दशांतर्दशा प्रवेश समय वसात्शुभाशुभ फल विचार ।

दशांतर्दशाप्रवेशेसलग्नाः खेटाःस्फुटाःकार्याः ४१

तत्रपाकेशो वा शुभेलग्नोपचयगे दशाश्रेष्ठा ४२

अंगेपाकपमित्रवर्गे वा शुभवर्गेदशाशुभा ४३

प्रवेशेस्वर्क्षगेचंद्रे मानार्थसुखं सिंहेन्नसुखं भौमभेकलहर्ण ज्ञभेविद्यार्थाप्ति जीवभेऽपिमानार्थसुखं शुक्रभेकुदार मान यशोर्थाप्ति मन्दभेसेवा ४४

त्रिकेतरस्थे सबलेचंद्रेदशाश्रेष्ठा ४५

मुख्यदशेशोच्च मित्रस्वभस्थः सन्दशेशाधिष्ठित राशित उपचय त्रिकोणास्तगश्चेच्चन्द्रः शुभफलदोन्यथानिष्टः४६

चंद्राधिष्ठितो राशिर्जन्मनियन्नाथ गस्तद्भावोत्थंशुभमशुभं वाज्ञेयम् ४७

विपत्कर्तृदशारम्भे सर्वाधिकबलः कोपिसद्वर्गगः शुभमित्रदृष्टश्चेन्नविपत् ४८

टीका–महादशा तथा अंतर्दशाके प्रवेश समयमे अर्थात् दशाअंतर्दशा जिससमय प्रवेश हो उस समयके स्पष्टग्रह लग्न और भाव, चलितादि करना और उसपरसे दशान्तर्दशा का शुभाशुभ फल ज्ञान करना ४१

दशाप्रवेश समयकि लग्न कुंडलीमे दशेश (जिस ग्रहकी दशांतर्दशा प्रवेशहो वह) अथवा शुभग्रह लग्नमे तथा उपचय ३।६।१०।११ स्थानमे गयाहो तो वहदशा श्रेष्ठफल देनेवाली होतीहै ४२

दशाप्रवेश समयके लग्नमे यदि जिसग्रहकी दशाप्रवेशहुई हो उस ग्रहका और उसके मित्रग्रह का वर्गहो अथवा शुभग्रहोकावर्ग होतो वह प्रवेशहुईदशा शुभफल देनेवाली समझना ४३

जिसदिन जिससमय दशाप्रवेश हो उस समयका चंद्रमा यदि स्व-राशी (४) का होतो मान धन और सुखका लाभ होवेगा, यदि सिंह राशीका होतो अन्नका सुख होगा, मंगल की राशी १।८ का होतो कलह [लड़ाई] और ऋण [कर्जा] देवेगा, बुधकी राशीका ३।६ का होतो विद्या की और धनकी प्राप्ती होगा, गुरुकी राशी ९।१२का होतो कृषि[खेती]मान, धन, और सुख, की वृद्धि होगा। शुक्रकी राशी२।७का होतो कुदारा [खरावस्त्री] से संग और मान यश धना दिककी प्राप्तीहोगा। शनि की राशी १०।११ का होतो सेवाका सुख होगा [सेवाकरने करानेका सुख मिलेगा] ४४

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा बलवानहोकर यदि प्रवेशसमय की लग्न कुंडलीमे त्रिकस्थान ६।८।१२ के विना अन्यस्थान १।२।३।४।५-७।९।१०।११ मे गयाहोतो वह दशा श्रेष्ठफल देनेवाली जानना ४५

जिसग्रह की दशा प्रवेशहो वह मुख्यदशाका स्वामी यदि दशाप्रवेश समयमे अपनी उच्चराशी मित्र तथा स्वराशी मे स्थित होकर दशा-प्रवेश लग्न कुंडलीमे जिसभावमे गयाहो उसभावस्थित राशीसे उप चय ३।६।१०।११ तथा त्रिकोण ९।५ स्थानमे तथा सप्तम भावमे चं-द्रमा गयाहो तो वह चंद्रमा दशाका फल [जिस ग्रहीदशातदशा प्रवेशहो उसका फल] शुभदेवेगा और इससे विपरीत [१।२।४।५ ८।९।१२ स्थानमे गया] हो तो नेष्टफल होवेगा ४६

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा जिसराशीमे गयाहो वहराशी जन्म कुंड-लीमे जिसभावमे गईहो उसभावजनित जो शुभ अथवा अशुभफल चंद्रकाहै उसीकेसमान शुभाशुभफल जानना। उदाहरणार्थ कल्पनाकरो वह चंद्रमा धनभावमे गयाहै और धनभावमे चंद्रमा शुभफलदाताहै तो दशाप्रवेशसमय मे भी वह चंद्रमा शुभफलदाता होवेगा। एवं वह चंद्रमा अशुभफलदाताहै तो दशाप्रवेशमेभी अशुभफलदेगा।

विपत्ति करनेवाली [अशुभफलदेनेवाली] दशाप्रवेशहो उससमय यदि कोई ग्रह सर्वग्रहोसे अधिक बलवान होकर शुभग्रहोके वर्गमे गयाहो और शुभ तथा अपने मित्रग्रहसे दृष्ट हो तो विपत्ति नहींहोगा (अशुभफलनहींहोगा) एवं उपरोक्तलक्षणवाला सर्वाधिकबलीयह अशुभफलदायक दशाके स्वामिको देखताहोतो अवश्य अशुभफल-नहींहोगा ४८

ग्रहचारवशेन अष्टवर्गज शुभाशुभफलविचार ।

जन्माङ्गचन्द्रान्यतरतश्चारवशेनोपचयगोग्रहश्चे न्मित्रोच्च
मूलत्रिकोणाश्रितो ष्टवर्गजंशुभंपूर्णमशुभंस्वल्पं दिशतिअन्य
थानेष्टं पूर्णशुभंस्वल्पं तत्रापितारतम्यात्कथनीयम् ४९

टीका-जन्मलग्नसे अथवा जन्मके चंद्रमासे जोग्रहराशीके भ्रमण वशात् उपचयस्थान ३।६।१०।११ मेगयाहो और अपने मित्रग्रहकी राशीमे तथा उच्च अथवा मूलत्रिकोण राशीमेगयाहो वह ग्रहयदि अष्ट वर्गमेभी शुभफलदेनेवाला (अधिकरेखैक्ययुत) होतो शुभफलपूर्णदेवेगा और अशुभफल स्वल्पदेवेगा और विपरीतहोतो अर्थात् जन्मलग्नसे अथवा चंद्रमासे अनुपचयस्थान १।२।४।५।७।८।९।१२ मेगयाहो और शत्रु तथा नीच राशीमे गयाहो अथवा अस्तकाहो पापयुतदृष्टहो और अष्टवर्गमे अशुभफल देनेवाला (स्वल्परेखैक्ययुत) होतो नेष्टफलपूर्ण और शुभफलस्वल्पदेवेगा इनमे शुभाशुभफलके तारतम्यभेदसें विचार करके शुभाशुभफलग्रहोका गोचर विचारसे कहना ४९

इसपद्धतीसेही ग्रहोका राशीभ्रमणद्वारागोचर से शुभाशुभफल विचार जन्मलग्न और जन्मस्थचंद्रसे पाश्चात्य विद्वान गण भी वर्ष मास दिन घटीपर्यंत का करतेहै और वास्तव मे इसप्रकार विचार करना दशाफलविचारकी अपेक्षा अधिकसुगम और सरल व युक्तियुक्त प्रतीत होताहै मेने स्वयंअनुभवकरकेदेखाहै कि उपरोक्त सूत्रानुसार ग्रहोका फल विचारकरनेसे बराबरशुभाशुभफल मिलतेजातेहै ।

अनुभूतिप्रदनाम ज्योतिषंशास्त्रमुत्तमम् ।
निगमागमिगंनं लोकप्रियं विजयतेतराम् १
जैमिन्याद्युक्तिभिः सारंनवनीत मिवोद्धृतं ॥
महादेवेनविदुषा स्वादयन्तुसुबुद्धयः २

टीका-वेदशास्त्रनिकटाहुवा (वेदांग वा वेदकासमुदायनाम) और .होकोसे वंदित (संमानित) प्रत्यक्ष अनुभवको प्रदर्शितकरनेवाला

ज्योतिषनामका जो उत्तम शास्त्रहै वह विजय (विशेषजय) को प्राप्त होतारहो १

ग्रंथकर्ता महादेवजी विद्वद्वर्य्य लिखतेहैं कि जैमिनी आदि मुनिवर्य्यों नेजोफलविचारकेलिये अनेकग्रंथलिखेहैं उनकासार ग्रहण करके जैसेदहीमेंसे मक्खन निकालतेहैं वैसेही अनेकग्रंथोमेंसे नवनीत रूपयह ग्रंथनिकालाहै इसकास्वाद सुबुद्धिवाले विद्वानगण लेतेरहे॥ २

इतिमहादेवकृतजातकतत्वे दशातत्वं पञ्चमम् ५

इतिश्री गणकवर्य्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवासरचित तत्वप्रदर्शिनि भाषाटीकायां दशातत्व पश्चमं ५ समाप्तः।

ग्रंथकर्ताकानिवास स्थान और ग्रंथसमाप्ति का समय वर्णन ।

गद्यम् ।

श्रीमदवन्तिकापरनामधेयाया उज्जयिन्याः पश्चिमतः षड्योजनमिते भूप्रदेशे रत्नलाम नाम पुटभेदनं प्रचण्डकोदण्डपण्डितद्वेषणकठिनकण्ठनिकर्तनकुठारकठोर राठोडवंशावतंस श्रीमद्रत्नवर्तिसिंहपुत्रभैरवसिंहतनुजेन सुकुमारेणापि कुमारविक्रमेणा धीरेणाप्यान्तररिपुविजयधीरेण रणजीतसिंहेन गुप्तनृपकार्यधुरीणस्य धीरातिगम्भीरस्यापि चपलचक्षुषः शहामतअलेः सहायकमुपेयुपा नानादेशानीतवीचित्रचित्रितवरलताराजिविराजितसुधासौधश्रीजुष्टोपवनराजिविराजमानं विविधविधागौरव गर्वशालिनापि जनसौजन्यजननैपुण्यशालिना विबुधबुधवृन्देन विलसितयानर्धपाठयालया कृतभूषणं नक्तंच प्रचुरघण्टापथरथ्यापिवसरलविस्तृतोज्ज्वालितदीपाव-

ल्या जनितश्रीपोत्सवसुखं चन्द्रचुम्बिना प्रसादिना प्रसादेन जनितजननयनानन्द प्रतिकूलक्षद्रपूलेन निरस्तप्रावृषिज वृजिनौघं वर्वर्त्यत्र वसता पराशरवंश्यपाठक रेवाशङ्करसूनुनो दुम्बरेण महादेवेन विष्णुसहायेनाष्टाविंशदधिकैकोनविंशतिश-ततमेविक्रमवत्सरे (१९२८) फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां जातकतत्वं नाम ग्रन्थोनीतः पूर्णताम् ।

तात्पर्य–अवंतिकापुरी जिसको उज्जैन कहतेहै उससे पश्चिममे छयोजन [२४ कोश] पर राठोडकुलभूषण श्रीमद्दलवंतसिंहजी महाराजाके पुत्र भैरवसिंहजीके पुत्र श्रीमद्रणजीतसिंहजी माहाराजासाहवकी राजधानी का रतलाम शहरहै जिसका शासन उक्त माहाराजाकीसुकुमारावस्था होनेकेकारण उनकी औरसे सहायकरूपसे अतीधीर गंभीरस्वभावके सुदूरदर्शीविचारवान । मी० सहामतअलीजी [सुपिन्टेन्डेन्ट] साहव बडीचतुरतासे सुंदरवगीचा तथा उत्तमपाठशाला (संट्रलकालेज) अतिविशाल राजभवन (महल) और बडी बडी अनेक सडके पुले तथा उत्तम रोशनीका प्रबंधादि अनेक दर्शनीय शहरको शोभा देनेवाले मनो रंजक कार्यकी योजनाकर न्यायानुसारकार्यचलारहेहै ऐसे सुन्दर नगर मे निवासकरनेवाले उदुंवर ज्ञातिय पाराशर गोत्रमे उत्पन्न पाठकोपनाम वाले रेवाशंकरजी के पुत्र महादेव शर्माने विष्णुशास्त्रीजी की सहा यतासे विक्रम सम्वत १९२८ के फाल्गुन शुक्ल पंचमीके दिन यह–

जातक तत्व नाम ग्रंथ संपूर्ण किया ।

श्लोक–आसीद्रत्नपुरे पराशर कुलोत्पन्नो द्विजोदुम्बरः। ख्यातःपाठक नामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः ॥ तत्सूनुर्गणितागमज्ञतिलकः श्रीमोतीरामाह्वयो । रेवाशङ्कर आगमेषुनिपुणस्तस्मादभूद्धार्मिकः १ तदात्मजउदारधी र्गणकमौलि चूडामणि । रभूद्धरणिमंडले गुणनिधि-र्महादेववित् ॥ तदङ्गजनुषा मधौ नगगुणाष्टचंद्रैर्मिते शकेविनिरमादिदं

विवरणं सतांप्रीतये २

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१	१७	कोट	कटि
२	१०	राव	रवि
२	१४	चरस्थि	चरास्थि
२	१९	तल	तुल
३	९	ग्द्रावाः	द्रावाः
३	१९	चंर	चर
४	२	हारा	होरा
४	१४	ड्डाइ	अड्डाई
५	३	द्विस्व	द्विस्व
५	१४	टीक	टीका
५	२५	रह	रहे
६	१७	ष्टचंशे	षष्ठ्यंशे
६	१९	प्सात	स्पात
७	२	पष्टचंशेव क्रमसेघोर	षष्ठ्यं- शेशघोर
७	५	गिननेस	गिननेसे
७	५	पष्टचंहोवे	षष्ठ्यंशेश होवेगा
७	६	पष्ट्यं शेष	षष्ठ्यंशेश
७	१९	दष्ट्रा	दंष्ट्रा
८	१८	कहतहै	कहतेहै
८	२०	२९ अंश	२९मा अंश
८	२३	तल	तुल
८	२३	व्रश्चिक	वृश्चिक
९	१६	यपापग्रह	येपापग्रह
९	१९	बुध गुरु	बुधभौ गुरु
?	२१	सज्ञक	संज्ञक
१०	१	चंद्रार्कज्या	चंद्रार्कज्या
११	७	सूर्य हैं	सूर्यहै
१२	१२	दर्शनीवपु	दर्शनीयवपु
१२	२३	४७	४८
१३	४	सुहृद	सुहृदः
१३	१७	भौमशत्रु	भौम]शत्रु
१४	३	मे त्रिसाधन	मैत्रिसाधन
१५	१६	योजनपै ळर्युतो	योजनै पळैर्युतो
१७	११	२ रा०जान	२ रामान
१८	१८	७२	७१
१९	१२	इसकरण	इसकारण
१९	१५	भवस्यानि	भवस्यामे
१९	१७	स्वोच्च- गोदिप्त	स्वोच्चगो दिप्तः
१९	२५	पिडित सज्ञक	पीड़ित संज्ञक
२०	२३	वेष्ठितो	वेष्टितो
२१	३	प्रसंगथे	प्रसंगानुसार
२१	८	होवे	होवे
२१	१०	सिह	सिंह
२१	१०	होता	होतो
२१	१६	मकर पूर्वोद्धे	मकरका पूर्वार्द्धे
२२	२	हाताहै	होवाहै
२२	४	ऽ६ ो पूर्गे	ऽहेत्रपूर्गे
२२	४	जन्न	जन्मः
२२	६	आम्युस्येमलासन्नेजन्मः	

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
२२	२१	रेताकी	रेतीकी
२२	२३	जन्म	जन्मः
२२	२६	देखता हावता	देखता होवेतो
२३	४	गोकला	गोकुला
२३	५	शि पालये	शिल्पालये
२३	८	हावता	होवेतो
२३	२२	हेवे	होवे
२४	१	मद्दमस	मद्दमेसे
२४	७	सर्यपिता	सूर्यपिता
२४	१४	यागः	योगः
२४	१५	सर्वे	सर्वे
२४	२०	दृष्ट	दृष्टे
२४	२२	मार्गेम जान	मार्गेमे मन्ममान
२५	१६	शीर्षा	शीर्षां
२५	२४	चंमासे	चन्द्रमासे
२६	१०	मायद्द	मोणद्द
२६	२७	शिर	शिर
२८	१७	मसद्दुवा	मडयद्दुवा
८	१७	सप्तम- ७नस्या	सप्तम ७स्या
९	१	छटे	छटे
०	१३	पक	शुक
१	८	हेवेता	होवेतो
१	९	पापग्रहे	पापग्रह

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
३१	२७	मर्था २९	मर्थात
३१	३०	धलक	बालक
३२	४	शीघ	शीघ्र
३२	१३	से होवे	सेदृष्ट
३२	१९	तुश्य	तुश्य
३२	२१	सोम्या	सौम्या
३३	५	भार	;और
३४	८	लग्न- द्रेष्का	लग्नके द्रेष्का
३४	२६	९०	९१
,,	२७	९१	९२
३५	५	शराशि	राशी
३५	१७	गुरुस	गुरुसे
३८	८	सबले	सबळे
३८	२३	द्दपापग्र द्दसेदृष्ट	पापग्रह सेदृष्ट
३९	१४	शुक्र	शुक्र
३९	२८	हावे	होवे
३९	३०	सर्योरिष्ट	सर्वारिष्ट
४१	११	स्वभि	स्वामि
४१	१६	भार	और
४४	६	पक	शुक
४४	९	नन्दाशय	नन्दांशय
४४	१७	पृकृतो	प्रकृती
४४	२३	अमग्न	भीमग्न
४७	१०	नवांशम	नवांशमे
४८	६	ना(दुर्बंदा)	होदुर्बंल
,,	,,	देहमनष्य	देहमनुष्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
५०	१८	सूय	सूर्य
५०	२२	ह्रस्वे	ह्रस्व
५१	१	तुय	तुर्ये
५१	१६	वेंशि	वेशि
५३	२४	होताहै	होता है
५४	१६	द्वन्द्वको	द्वन्द्वकों
५६	४	कारकांसश	कारकांश
५६	११	स्वर्वीर्ये	स्ववीर्यें
५६	१९	होविना	होवेतो
५८	१८	होवेते	होवेतो
५९	२२	सः संबंध	सेसंबंध
६०	२२	होतोइ	होताहै
६३	१९	लग्नेशोना	लग्नेशनो
६३	२७	चंद्राको	चंद्राकों
६४	१५	सर्य	सूर्य
६४	२३	विठ्ठल	विठ्ठल
६४	२६	शीघ्रं	शीघ्रं
६४	२७	शीघ्र	शीघ्र
६५	१	गुरू	गुरु
६५	६	होताहै	दिखनेवाला होताहै
६५	१५	विशष	विशेष
६५	२२	स्वामि	स्वामि
६६	२८	चर	चरराशि
६७	८	दखते	देखते
,,	२५	होव	होवे
,,	२७	शभपद	शुभपद
६८	१	धा होताहै	धीरहोताहै
	६	गुनयोग	त्रिगुनयोग
६८	९	पापदृष्टय	पापदृष्टय
६९	१७	छटे	छठे
७०	१०	म्लेच्छों	म्लेच्छों
७२	८	लग्नेसे	लग्नसे
७३	७	बारव- स्थानम	बारवे- स्थानमे
७४	१६	लग्नश	लग्नेश
७५	३	सर्य	सूर्य
७५	१७	कुजेंग	कुजगे
७६	१४	सेक नेसे	सेकनेसे
७७	९	शीन	शनि
,,	११	बा में	बारमें
,,	१४	स्थानम	स्थानमें
७८	८	मगल	मंगल
,,	२२	छ्याहे जावे	ह्याहे जावेगे
७९	७	दखते	देखते
,,	१४	यनेत्र	येनेत्र
,,	२८	गंथकार नेत्र	ग्रंथकारने नेत्र
८०	१	हाताहै	होताहै
,,	१	अतएवएस)	अतएवऐसे
,,	५	पत्र	पुत्र
,,	६	पुत्रकपुत्र	पुत्रकापुत्र
,,	१८	पुर्णेदु	पुर्णेन्दु
८१	२७	बधेर	बधिर
८२	९	ताथ	तथा
८३	२०	द्वितय	द्वितीय
८४	१२	दुमुख	दुर्मुख

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१२४	९	दारिद्री	दरिद्री
,,	११	हावेतो	होवेतो
,,	१३	हावे	होवे
,,	१६	संपत्तमान	संपत्तिमान
१२५	९	पतहोवे	पुतहोवे
,,	१७	चतर्थ	चतुर्थ
१२६	२३	पनेवाला	पानेवाला
१२९	१४	मभी	मेभी
१२९	२८	बदलाता	बदलाती
१२९	३१	तरसे	तरहसे
पृष्ठांक		२२९-२३०	१२९-१३०
		२३१-२३२	१३१-१३२
१३१	७	विवेक टीका	विवेकस्य टीका-
१३२	१	दृष्ट	दृष्टे
,,	२	लाभे	लाभो
,,	२९	आर	और
पृष्ठांक		२३३	१३३
१३४	४	षष्ठचशे	षष्ठचंशे
पृष्ठांक		२३६	१३६
१३६	२२	दर्जेके	दर्जेकेतथा
१३७	४	स्थनमें	स्थानमें
१३८	१९	मेषचंद्र	मेषचंद्रे
,,	२९	हावेतो	होवेतो
१४०	११	धृति	धृत्ति
,,	१४	द्रार्नि	द्रात्तिं
१४१	४	वृतिः	वृत्तिः
	६	वृतिः	वृत्तिः
१४२	२१	कमकांदा	कर्मकांदा
१४४	८	धचनेवाला	धंचनेवाला
,,	१७	इरके	इरेक
,,	२८	राशाका	राशीका
,,	२९	करक	करके
१४५	१४	राशिम	राशिमें
,,	२४	विवेक	विवेकस्य
१४७	१९	होवोतो	होवेतो
१४८	१९	बधगो	बधयोग
१४९	३	होवतो	होवेतो
,,	१४	शुभेक्षित	शुभेक्षित
,,	२२	मतायोग	मातायोग
,,	२६	चतु ष्पद	चतुष्पद
१५०	२५	त्रिशद्वर्षे	त्रिशद्वर्षे
१५१	९	जन्मलसे	जन्मलग्नसे
,,	१२	कद्र	केंद्र
१५२	४	केंद्र	केंद्र
,,	९	वयसोः	वयसी
,,	१५	आर	और
१५३	१९	सुखश	सुखेश
,,	२२	गरु	गुरु
१५४	२	स्तयें	स्तुयें
,,	१७	गुरू	गुरु
१५५	५	स्थानम	स्थानमे
१५५	११	श्वावद्यो	श्वाद्यो
,,	१३	कुंडलीम	कुंडलीमें
,,	२७	लग्नस	लग्नेस
१५६	१९	शनिस	शनिसे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१५८	२०	अनभवार्थ	अनुभवार्थं
१५९	१८	लगनम	लगनमे
,,	२३	इनतीभाव	इनतीनोभाव
१६०	२१	हावतो	होवेतो
१६१	८	चतूथँश	चतुर्थेश
१६२	१६	जावेता	जावेतो
१६४	३	स्वराशिम	स्वराशिमे
,,	१२	काशम	काशमे
१६५	४	चतुथ	चतुर्थं
१६५	८	टीका चतुर्थ	टीका—चतुर्थ
१६६	६	पत्रका	पुत्रको
१६६	८	व्यपार	व्यापार
१६६	२३	गुरू	गुरु
१६७	७	पराक्रित	पराक्रम
,,	१८	दृष्टो	दृष्टो
१६८	२३	सद्दष्ट हावेवुद्धि	सेद्दष्टहोवे-तोबुद्धि
१६८	२४	पचमेश.	पंचमेश
१६८	,,	बुद्दि	बुद्धि
१६९	८	बुद्दि	बुद्धि
१७०	२	दानो	दोनो
१७०	२०	गयहाव	गयेहोवे
नोटमे—पं	१	मे६-१८-३	६-१८-३०
१७१	१	काकोश	कारकाश
,,	१७	होव	होवे
७६	२	धनस्था	धनस्थ
,,	१२	त्रिकाग	त्रिकोण
१८०	१०	मन्दशो	मन्दर्शो
,,	११	पुत्रसे	पुत्रेशे
,,	१२	सुर्यं	सूर्य
,,	१७	सूर्य	सूर्य·
,,	२८	नोचगे	नीचगे
१८१	९	चतर्थ	चतुर्थ
,,	११	भावम	भावमे
,,	२३	शानि	शनि
१८२	४	छटे	छठे
१८२	१८	थें सुर्य	थें सूर्य·
१८२	२३	कुगक्षें	कुमक्षें
१८३	२९	राशा	राशी
१८६	१२	आर	और
,,	२१	सुखहोवे	सुखहोवेगा
,,	२८	पत्रा	पुत्र
१८९	१४	सुखकं	सुखकी
,,	१६	पंचमें	पंचम
नोटमे—पं०	१	मे माप्ति	प्राप्ति
१९०	२४	गय	गया
१९१	१२	पत्राप्ति	पुत्राप्ति
,,	२०	शुभमद	शुभप्रद
१९२	६	हुया	हुवा
,,	८	समापस्ता	समापस्या
,,	२९	नीदका	नीचका
१९३	१८	मनद	मद
१९४	१	केतगपा	केतु
,,	२२	शुक्र	शुक्र
१९५	२८	और स	और
१९७	१९	मारकेषा	मारे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
२००	९	पिठिका	पीठिका
२०१	५	फेडा	फोढा
,,	६	कतु	केतु
,,	१६	जस्र	जस्रम
,	१७	गल	मंगळ
,	२७	वष्ठेश	षष्ठेश
२०२	२४	लग्नेंश	लग्नेश
२०५	१६	छटे	छठे
,	१३	नाभिगेगी	नाभिरोगी.
२०७	७	अठमे	आठमे
२०८	६	पाग्युत	पापयुत
,	९	अैर	और
,	२०	सेत्ये	सोत्ये
२०९	५	न्त्यपाये	न्त्येपाके
,	२२	राशिमें	राशिमेंतथा
	२३	राशीक	राशीके
१४	११	केंन्द	केंद्र
१६	७	दुद्र	दद्रु
२१	२०	षष्ठ्यंशे	षष्ठ्यंशमे
२२	२१	हावे	होवे
	२४	व्यरि-चारी	व्यभिचारी
२४	६	व्यमि-चारी	व्यभिचारी
२८	२२	शुक्रमे	शुक्रसे
३१	२	दाराशा	दारेशा
३१	२७	स्वामी	स्वामी
३१	२१	स्वामीमें	स्वामीसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
२३५	२३	सन्धो	सन्धौ
२३६	११	व्यपेकजे	व्ययेकुजे
२३७	६	ि बाह	विवाह
२३७	११	सयं	सूर्ये
२३८	१३	स्थल	स्थूळ
२४१	२६	मद	मदे
२४३	१४	व्यापर	व्यापार
२४४	९	केन्द्रेषा	केन्द्रेषा
२४५	१३	दीर्घाय	दीर्घायु
२४५	२५	जीवेकेद्र	जीवेकेंद्र
२४८	२१	गरुसे	गुरुसे
२४९	१२	गळिक	गुळिक
२५१	१	केंद्रम	केंद्रमे
२५१	४	आय	आयु
२५१	६	वष	वर्ष
२५१	८	१२भावमें	१२मेंभावमें
२५१	२६	मृत्य	मृत्यु
२५१	२९	राव्हछौ	राव्हचछौ
२५४	२४	विभुति	विभूति
२५४	२६	ोग	योग
२५५	५	मृत्य	मृत्यु
२५५	६	न्मृ युः	न्मृत्युः
२५५	२७	चौर न्मृत्युः	चौरान्मृत्युः
२६०	५	हस	हस्र
२६०	११	शनिका	शनिकी
२६४	२२	मप	मपम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	२३	मेषपद्रे°	मेषद्रे°
,,	२३	जलोदर	जलोदर
२६५	२६	भग्नमश	भग्नमेश
२६६	१५	मदे वा	मदे वा
२७४	२६	यनदृष्ट	गुनदृष्ट
२७५	१	पठप	गुरुप
२७९	३	धनश	धनेश
२८०	२७	गयहोतो	गगाहोतो
२८४	२८	स प्त:	समाप्त:
२८८	१०	शुभांशेषा	शुभांशे षा
२८९	२४	द्रोहर्क्षे	द्रोस्वर्दो
२९९	९	चरेङ्क	चोङ्के
३००	१३	तेरङ्के	तरेङ्के
३०२	४	मृगङ्के	मृगेङ्के
३०३	१२	तरेङ्क	तरेङ्के
३०३	२१	पूर्वेप क	पूर्वषट्के
३०४	१८	पटक	षट्क
३०५	१६	राज्या ङ्केशा	राज्याङ्केशा
३०७	२	शुक्रज्यो	शुक्रेज्यो
३०७	३	नगार्याङ्का	नगार्याङ्का
३१३	१४	तदीशेङ्क	तदीशेङ्के
३१३	१६	धनेशेङ्क	धनेशेङ्के
३१५	७	षारमे:	षारमे
३१७	१३	व्याजन	व्याजेन
३१८	२	याग	योग
३१९	१५	द्वयन्त्याङ्क	द्वयन्ताङ्क

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२०	१	पान्न	पांन्न
३२३	८	साम्बुगेशे	साम्बुगेङ्केशे
३२५	२४	पला	पाला
३२६	२०	भोज्य-गोग	भोज्य योगे
३२८	१७	सबलेङ्वे	सबलेङ्के
,,	२६	इङ्गित	इङ्गित
३३०	४	भार	भौर
३३२	१	यत	युत
,,	९	मनष्य	मनुष्य
३३५	५	स्री स्री	स्री स्रीं
,,	६	दृष्ठे	दृष्टे
,,	२७	साच्चिकि	सात्त्विके
३३७	१०	बधेक	बुधेके
३३८	२२	कुवारी	कुँवारी
,,	,,	सप्तमशे	सप्तमेश
३३९	२१	सदू	सद्
,,	२८	चन्द्रस्री	चन्द्रस्री
३४०	१९	नवश	नवांश
३४२	१६	भावत्रे	भावमे
३४५	६	जाततत्वं	जातकतत्त्वं
३४८	२	निर्बली	निर्बली
जहांजहां		दृष्ठ	दृष्ट
जहांजहां		अष्ठ	अष्ट
जहांजहां		षष्ठ	षष्ट
जहांजहां		षष्ठ्यंश	षष्ट्यंश
जहांजहां		निष्ठ	निष्ट

इतिशुद्धिपत्रम्।

छपने योग्य नवीन तय्यार होगये और छपना शुरुहोगया.

चौघडिया विचार

चौघडिया जिसको मारवाडी लोग दुघडिया कहतेहै वास्तव में यह चौघडियेंाईहे या दुघडिये है वा पोनेचारघडियेहै अथवा कोई औरही चीजहै इनका शास्त्रीय पद्धतीसे कैसे विचार करना और किस काम मे येदेखना इसका विवेचन इस पुस्तकमे भलिभांति हिन्दी भाषामें वर्णन किया गयाहै कीमत -) मात्र

शनिविचार.

इसपुस्तक मे किसराशी मे शनी किसको कैसा कब शुभा शुभ फल अपनी साढेसाती (पनोती) कादेता है वगेरा २ विषयोका शास्त्रीय पद्धती के अनुसार सोपपत्तिक विवेचन हिन्दी भाषामे कियागया है कीमत |-) मात्र है ।

संतति समयविचार.

संतान किस समयमे होगा इस प्रश्नका उत्तर शास्त्रानुसार जानके गर्भ रहनेका समय निश्चय बनाना चाहते हो तो इस पुस्तकको देखिये विचार सरल हिन्दीभाषामे लिखागया है कीमत =।) मात्र

द्वात्रिंशयोगावली जातिक.

यह खास खाना नक्षत्र की बनाई हुई वर्षफल देखने की उत्तम पुस्तकहै इस्मे उन नक्षत्रवालाइवने अपने अनुभव कियेहुवे चमत्कारीक ३२ योग वर्षफल विचारके लिखेहै यही भाषा टीकासहित प्रकाशित कियेहै मूल्य सिर्फ ।) आने मात्रहै.

उड्डीस तंत्रशास्त्र.

बहुत उड्डीस छपचुके है परऐसा उड्डीस अभीतक कहीभि छपानही है इसमे जितने तंत्रमंत्र लिखेहै वे सद्यचमत्कार बतानेवालेहै पुस्तक देखने योग है मूल्य |=) मात्र

विवाह कल्प भाषाटीका

यह वैद्योंके तथा अंगरेजी वालोंके बड़ेही कामकी उपयोगी पुस्तक है इसमें भागकी उत्पत्ति गुण फलप्रमाण तथा शुद्धि बड़ी उत्तम रीतिसे लिखी गई है मूल्य ।)

ॐकार महिमाप्रकाश

यह बड़ी अद्भुतकी पुस्तकहै जिसकी भारत के संपूर्ण समाचार पत्रोंने महाराजा महाराजा धर्माचार्योंने मुक्त कंठसे प्रशंसा कीहै इसमें १ ॐ के ८ टुकड़े को उलट पुलट जोड़नेसे हिंदी अंग्रेजी गुजराती उर्दू की वर्ण माला बालक सहज में सीखसकेहैं देखने योग्य विचित्र पुस्तकहै मूल्य १) मात्रहै.

दशाफलदर्पण टिप्पणिसमेत ।

जातकमें दशाफल विचार का कोईभीग्रंथ स्वतंत्र ऐसा नहीं है कि जिस के द्वारा स्वतंत्र रूपसे दशाका फलविचार उत्तम रीतिसे करसकें। इसत्रुटी के कारणही ज्योतिषीलोग जन्मपत्री तो बड़ी २ बनातेहैं पर दशाका फलविचार जैसा चाहियेवैसा लिखही नहीं सके अतएव इसक्षतीको मिटाने के लियेही यह ग्रंथ समस्त फलित ग्रंथोंमेंसे संग्रह करके दशाफल देखनेका परमोपयोगी बनायागयाहै । इसमें कमसेकम दशहजार श्लोक की संख्या दश विभागोंमें विभक्त कीगईहै. जिसमें

१ प्रथम विभाग में दशा प्रयोजन बैयालीस प्रकार की दशाका भेद और उनके साधन करनेकी उदाहरण सहित रीति और उन दशाओंके चक्र तथा इनमेंसेकौनसीदशामुख्य है उसका निर्णय करकर आगे संपूर्णादि अनेक प्रकार की दशाफलका भेद विस्तार पूर्वक वर्णितहै । तथादशाफलबोधक ग्रहऔरशुभा शुभ मध्यम निकृष्टादशा का निश्चय तथाउच्च नीच मूल त्रिकोणस्वक्षेत्रअतिमित्र मित्रादि पांचोभेद सहित दशाकाविचार तथा अस्त उदित वक्रमार्ग गोचरकाफल एवं ...ल स्वनवांशवलोपेत राहुयुतादि ग्रहोंका विशेष २ दशाफलका विचार और देहसुख, धन भ्रातृ, मातृ, गृह, ग्राम, मित्र, वाहन, बुद्धि,पुत्र, रोग शत्रु, भार्या, मरण, निधिलाभ, भाग्य, धर्म, लाभ व्यय, मुसाफरी, आदि बारोंहीभावजनित फलाफल २